* श्रीः *

अकबर बीरबल विनोद।

शाहन्शाह अकबर कालीन दिवान बीरबल
के चुने हुए हास्यास्पद नीतिप्रद
सदुपदेश।

संग्रहकर्त्ता—

पं० रामानन्द द्विवेदी,

जलालपुर माफी, चुनार।

प्रकाशक—

फर्म—बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा, बनारस।

प्रथमवार २०००] सन् १९३८ [मूल्य २)

प्रकाशक—

फर्म बाबू बैजनाथ प्रसाद बुकसेलर,

राजादरवाजा, बनारस ।
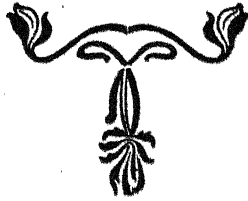
मुद्रक—

बाबू राधेश्याम,

राधेश्याम प्रेस, नन्दनसाहु लेन,

बनारस सिटी ।

भूमिका

प्राचीनकाल के राजदर्बारों में; जहाँ सब प्रकार के गुणियों का आदर रहता था वहाँ एकाध ऐसे भी हास्यरस-कुशल कुशाग्रबुद्धि पुरुषरत्नों का प्रवेश रहता था जो समय समय पर विलक्षण बुद्धि एवं वचनचातुरी से राजाओं को मोह लेते थे और अपनी वचनचातुरी से स्वामी को वश में कर लेते थे।

राजा बीरबल और बादशाह अकबर का ऐसा ही सम्बन्ध रहा है। अकबर के दरबार में वा यों कहिये कि अकबरी राजसभा के नौरत्नों में बीरबल कोहनूर हीरा थे। लड़कपन से ही बीरबल अकबर के साथ थे और दोनों में ऐसा हँसी मजाक हुआ करता था जैसा दो लँगोटिये यारों में होता है।

बीरबल जी केवल हँसोड़ थे सो नहीं वे अच्छे शूर, सामन्त, कवि, पण्डित और सभाचातुर वीरनर थे। बीरबल दानी भी बड़े थे और हाजिरजवाबी में तो अपना सानी नहीं रखते थे। बादशाह अकबर बीरबल को प्राणों से भी अधिक प्रिय मानते थे और क्षण भर भी पृथक रहना नहीं चाहते थे। इसमें किंचितमात्र सन्देह नहीं कि अकबर बीरबल के मजाक बड़े मौके मार्के के और गुदगुदाने वाले होते थे। खेद है कि इनके प्रचलित मजाकों में कुछ मजाक कल्पित सन्निवेशित कर दिये गये हैं। मुल्ला दोप्याजे का नाम भी कल्पित ही सिद्ध हुआ है।

राजा बीरबल को अकबर की आँखों से गिराने का कई बार उनके प्रतिद्वन्द्वियों ने प्रयत्न किया पर वे अपने कौशल से षड्यन्त्रकारियों को नीचा ही दिखाते रहे।

बीरबल की हाजिरजवाबी ऐसी थी जिससे अकबर को भी सिर नीचा कर लेना पड़ता था। बीरबल को अकबर बहुत मानता था। स्वात और बाजोर के युद्ध में बीरबल के मारे जाने पर अकबर को घोर दुःख हुआ। कई रोज तक वह एकान्त में बैठकर रोया किया।

अकबर को यदि बीरबल-सा साथी न मिला होता तो उसका जीवन नीरस हो जाता।

हमारे इस संग्रह में बीरबल और अकबर के वे ही मजाक संग्रहीत हैं जो अधिक प्रचलित हैं और हास्यरस से भरे हुए हैं। आशा है कि इसके पाठकों को इससे कुछ मनोरंजन विशेष होगा। यदि ऐसा हुआ तो हम अपना श्रम सफल समझेंगे।

हमने इसे कई प्रचलित प्रकाशित पुस्तकों से संग्रह किया है। सम्भव है कि हमारी संग्रहीत भाषा में अनेक अक्षम्य अशुद्धियाँ हों अतएव पाठकवृन्द उन अशुद्धियों पर विशेष दृष्टि निक्षेप न करके हमारे प्रयास पर ही ध्यान देंगे और उन्हें सुधार कर ही पठन पाठन करेंगे।

विनीत—

लेखक

अकबर बीरबल विनोद की विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या

विषय	पृष्ठ संख्या

विषय	पृष्ठ संख्या

विषय	पृष्ठ संख्या

विषय	पृष्ठ संख्या

* ॐ विष्णवे नमः *

अकबर बीरबल-विनोद ।

बादशाह का मूल्य ।

—o:**:o—

अकबर बादशाह को बुद्धिमान पुरुषों से बड़ा प्रेम था। यही खास कारण था जिससे उसके दरबार में नवरत्न सदैव विद्यमान रहते थे। एक दिन दरबार लगा हुआ था और बादशाह अपने राज-सम्बन्धी कार्यों को खटा-खट निपटा रहा था उसी के अन्तर्गत एक दरबारी बीरबल को नीचा दिखाने के अभिप्राय से बोला—"शाहन्शाह ! क्षमा हो तो गुलाम कुछ अर्ज करे।" बादशाह ने उसे बोलने की अनुमति दी। वह बोला "गरीब परवर ! आज मुझे रास्ते में एक आदमी से एक अमीर की अजब वार्ता सुनने में आई। वह अमीर अपने भृत्य से कह रहा था-"तूँ मुझे किसी काम का नहीं जान पड़ता कारण कि तूँ बड़ा मूर्ख है।"

दूसरा आदमी उस अमीर का नौकर था, उससे सुनकर चुप न रहा गया और अपने मालिक सेठ से बड़ी विनम्रता से बोला-"सेठजी ! यद्यपि मैं आपका सेवक हूँ, परन्तु फिर भी

कहना पड़ता है कि आपको अभी तक मनुष्य की कीमत-लगाना नहीं मालूम है। यदि आप कुछ भी विचार करते तो स्वयं सिद्ध हो जाता कि मैं आपके लिये कितना लाभदायक हूँ।" उसकी ऐसी बातें सुनकर मैं चक्कर में पड़ गया और अपने तई कुछ भी हल न कर सका कि मनुष्य की क्या कीमत होता है। पृथिवीनाथ! आपसे निवेदन करता हूँ कि इसका निपटारा कराकर आप मेरे सन्देह को दूर कीजिये।

उसके ऐसे प्रश्न को सुनकर बादशाह विचार करने लगा; परन्तु फिर भी कुछ निश्चित न कर सका। उसने सोचा-"आज सेठ का नौकर कहता था कल्ह मेरा कोई दरबारी कह बैठे कि बादशाह क्या चीज है, वह तो हमी लोगों के बैठाने से गद्दी पर बैठा है। तो फिर मैं उसको क्या जवाब दूँगा। अतएव इसी क्षण मुझे भी अपने मूल्य का निपटारा करा लेना चाहिये।"

बादशाह ने उस आदमी के प्रश्न को अपनी सभा में दुहराकर सभासदों से अपना मूल्य पूछा। लोग चकराये कि बादशाह के प्रश्न का क्या उत्तर देना चाहिये? इसी बीच एक वृद्ध पुरुष जो बीरबल से ईर्षा करता था बोला-"गरीबपरवर! इस उपस्थित जनता के बीच बीरबल की ही बुद्धि बड़ी है, अतएव इसका निपटारा उसीके द्वारा होना चाहिये।" वृद्ध की यह युक्ति बादशाह के मनमें बैठ गई और बीरबल से पूछा—"बीरबल! क्या तुम बतला सकते हो कि मेरा मूल्य और वजन क्या है?"

बादशाह का प्रश्न सुनकर बीरबल विचारपूर्वक बोला—" पृथिवीनाथ ! यह जौहरियों का काम है; क्योंकि मूल्य लगाना वे ही जानते हैं। यदि हुक्म हो तो एक आन में शहर के तमाम जौहरी, शर्राफ और साहूकारों को बुलवा लूँ। वृद्ध की मंशा बीरबल को फाँसने को थी, परन्तु बीरबल ने अपनी बुद्धिबल से उसी को फँसा दिया क्योंकि वह भी जौहरी ही था। बादशाह के हुक्म से नगर के सब जौहरी सर्राफ और साहूकार बुलवाये गये, वे सब इस आकस्मिक बुलावे से बहुत घबड़ाये हुए थे। बीरबल बोला-नगर जौहरियो, सर्राफ तथा साहूकारो ! आप लोगों को इस लिये बुलाया गया है कि आप लोग मिलकर बादशाह का वजन और मूल्य निश्चित करें।

यह सुनकर वे जौहरी अवाक हो गये, किसी की समझ में न आया कि बादशाह का मूल्य और वजन कैसे निश्चित किया जावे। अन्तमें उनका सरदार गिड़गिड़ाता हुआ बोला—"गरीब परवर ! इस समय हम लोग सरकारी सूचना पाकर तुरन्त भागे चले आरहे हैं जिस कारण हमारा हृदय भय-विह्वल हो रहा है। हमको कुछ देर की मुहलत मिले तो एक जगह अलग बैठकर आपस में विचार कर उत्तर दें। बादशाह ने उस सरदार की बात स्वीकार करली और उनकी मदद के लिये बीरबल को भी उनके साथ कर दिया। बीरबल उनको लेकर एक अलग कमरे में चला गया। सबों ने मिलकर कोशिश की परन्तु किसी सिद्धान्त पर अटल न हुए। बीरबल बोला—"यह बात इतनी आसान नहीं है जो

पन्द्रहवें दिन प्रातःकाल सब जौहरी बीरबल के मकान पर उपस्थित हुए और अशर्फी का तोड़ा लिए हुये बीरबल भी उनके साथ हो लिया। उधर बादशाह भी पन्द्रहवें दिन की प्रतीक्षा कर रहा था। वह शहर के बाहर बाग में एक बड़ा तंबू खड़ा करवाया। उसमें इतनी कुशादह जमीन रक्खी गयी थी कि जिसमें सर्वसाधारण से लेकर बड़े-बड़े सेठ साहूकार तक के बैठने के लिये अलग-अलग स्थान मिले। पन्द्रहवें दिन उसी बाग में ठीक समय पर दरबार लगा और तमाम लोग जमा होकर किते से बैठ गये। तंबू के मध्य में बादशाह का सिंहासन था। उसके ठीक सामने जौहरियों को बैठनेके लिये जमीन छोड़ी गई थी।

बीरबल जौहरियों के दल से पहिले पहुँचा। थोड़ी देर बाद जौहरियों का दल भी जा पहुँचा। सब लोग किते से खाली स्थान पर बैठाये गये और उनके मध्य अशर्फियों का तोड़ा रख दिया गया, फिर क्या पूछना था; उनमें से प्रत्येक जौहरी एक २ अशर्फी को तराजू पर रखकर बटखरेसे तौलना शुरू किये। कुछ कालोपरान्त एक जौहरी बोला—"मिल गयी! मिल गयी!! मिल गयी!!! जिस बात की तलाश थी वह मिल गयी।" इतने में उनका मुखिया उठा और उस अशर्फी को लेकर बादशाह के कदमोंपर जा रखा। लोगोंको बड़ी प्रसन्नता हुई। बादशाह को एक तरफ विस्मय और दूसरी तरफ हर्ष हुआ वह उस अशर्फी को अपने हाथ में लेकर बोला—"क्या मेरी कीमत यही एक अशर्फी है?"

बूढ़े जौहरी ने गम्भीरता पूर्वक उत्तर दिया—"जी हाँ, यही

अशर्फी आपका मूल्य है और यही श्रीमान् का वजन है। यह अन्य अशर्फियों से एक रत्ती बड़ी है, इस कारण इसके समान दूसरी अशर्फी नहीं है। पृथिवीनाथ! हम प्रजागण साधारण अशर्फी हैं और आप इस बड़ी अशर्फी के समान हैं।

बादशाह ने पूछा—"तो क्या मुझमें और अन्य दूसरे मनुष्यों में केवल एक रत्ती का ही अन्तर है?" शर्राफों का मुखिया बोला—"जी हाँ, गरीबपरवर! इसमें कुछ भी सन्देह करने की बात नहीं है। आप में और आपकी प्रजा में केवल इतना ही अन्तर है कि प्रजा आपके आधीन रहने के लिये बनाई गयी है और आप प्रजा को अपने आधीन रखने के लिये हैं। आप प्रजाओं में जिस प्रकार बड़े समझे जाते हैं उसी प्रकार यह अशर्फी भी अन्य अशर्फियों में श्रेष्ठ साबित हुई है। आपके बैठने को ऊँचा आसन मिलता है और प्रजावर्ग को बैठने के लिये नीचा आसन दिया जाता है। इन्हीं सब कारणों से निश्चित हुआ कि यही अशर्फी आपका मूल्य है।"

जौहरी की उपरोक्त युक्तिभरी वार्ता सुन बादशाह गद्‌गद हो गया और उसको उसके साथियों सहित अच्छा पुरस्कार देने की आज्ञा दी। जौहरी का मुखिया पुरस्कार पाकर मनही मन बीरबल को आशीर्वाद देता हुआ अपनी मण्डली के सहित नगर को चला गया और सभा भंग हुई।

और क्या ! फुर्र ।

अकबर बादशाह को कहानी सुनने का बड़ा शौक था इसलिये वह कुछ चुने हुए दर्बारियों की ऐसी पारी बाँध रक्खी थी जो अपनी अपनी पारी पर रात्रि में बादशाह के मनोरंजनार्थ नित्य नवीन नवीन कहानियाँ सुनाया करते थे। एक दिन बीरबल की बारी आई। यथा समय कहानी शुरू हुई। बादशाह हुँकारी भरने लगा। इस प्रकार बीरबल को कहानी कहने में बड़ी तकलीफ होती थी कारण की बादशाह बड़ी से बड़ी कहानी सुनना चाहता था। जब बीरबल एक सम्पूर्ण वाक्य कह जाता तब बादशाह केवल 'और' कह कर ही छुट्टी पा जाता था। छोटी मोटी कहानियों से बादशाह को सन्तोष नहीं होता था। वह हमेशा बड़ी से बड़ी कहानियाँ सुनने की फिराक में रहता था।

बीरबल को कहानी सुनाते बहुत रात व्यतीत हो गई फिर भी बादशाह से फुरसत मिलने की कोई आशा न दिखाई पड़ी, वह झल्ला उठा और अपने मन में सोचा—'जो कुछ भी परिश्रम है; वह मेरे को है, बादशाह तो केवल एक शब्द कह कर फुरसत पा जाते हैं इसलिये अब कोई ऐसी तरकीब सोचनी चाहिये जिससे बादशाह भी झल्ला उठें।' वह अपनी प्रखर बुद्धि के कारण तुरत एक ऐसी ही तरकीब ढूँढ़ निकाली और उसी के अनुसार दूसरी कहानी शुरू की—"एक धनिक किसान ने अपने अन्न को सुरक्षित रखने के लिये एक कोठली बनवा रक्खी थी, उसमें अनाज भर कर उसके मुँह

पर ढक्कन रखकर उसे भलीभाँति बन्द कर दिया, यहाँ तक कि उसमें हवा आने जाने तक की जगह भी नहीं छूटी थी। विधना का विधान कठिन होता है, दैवात उस कोठली में एक छोटा सा छिद्र छूट गया था जिसके द्वारा एक छोटी चिड़िया उस कोठली में घुस गई और एक दाना अपनी चोंच में लेकर बाहर निकल आई और 'फुर्र' उड़ गई। फिर दूसरी चिड़िया घुसी और अपना भाग लेकर 'फुर्र' उड़ गई। फिर तीसरी चिड़िया आई और भीतर गई, अपना दाना लेकर 'फुर्र' उड़गई। फिर एक चिड़िया आई, भीतर घुसी अपना दाना लेकर 'फुर्र' उड़ गई, फिर और एक चिड़िया आई और भीतर घुसकर अपना दाना लेकर 'फुर्र' उड़ गई। इसी तरह लगातार कहते कहते बीरबल को सैकड़ों बार हो गया जब बादशाह और और कहता कहता थक गया तो झुँझला कर बीरबल से बोला—"यह तो मैं सुन चुका, अब आगे क्या हुआ सो कहो। बीरबल ने गम्भीरता से उत्तर दिया—"पृथ्वीनाथ! दाने के लोभ से वहाँ पर चिड़ियों का जमघट लग गया यहाँ तक कि वहाँ करोड़ों चिड़ियाँ इकट्ठी हो गईं और अपना अपना दाना बारी बारी से लेकर जाने आने लगीं। अभी सौ पचास की ही बारी आई है, जब सब चिड़ियों का पेटभर जायगा तो कहानी आगे चलेगी। क्या अभी खतम हुआ जाता है। इसमें वर्षों का समय लगेगा। बादशाह बोला—"मैं ऐसी कहानी से भर पाया अब इसे यहीं बन्द करो।" बीरबल को अवकाश मिल गया वह मनही मन गाजता हुआ वहाँ से प्रस्थान किया।

बादशाह का तोता।

एक फकीर बड़ा तोते बाज था। वह तोता बाजार से खरीद कर लाता और उसे भली प्रकार शिक्षित कर अमीर उमरावों को देकर द्रव्य उपार्जन करता। एक दिन वह अपने नियम के अनुसार एक बहुत अच्छे तोते को खूब सिखा पढ़ा कर बादशाह को दिया। बादशाह तोते की खूबसूरती और इलिमयत से निहायत खुश हुआ और वह उसे एक सुविज्ञ सेवक को सपुर्द कर उससे बोला—"देखो इस तोते की आब हवा और दाना पानी पर बड़ी सावधानी रखना, इसकी प्रकृति में कुछ अन्तर न पड़ने पावे। इसको जरा भी तकलीफ होते ही फौरन मुझे खबर देना। यदि कोई मेरे पास इसके मरने की खबर लायेगा तो तुरत उसकी गर्दन मार दी जायगी।"

दैवात् तोता मर गया। बिचारा सेवक बहुत डरा, उसे अपने जीवनरक्षा की कोई सूरत नहीं दिखलाई पड़ती थी। दोनों प्रकारसे मृत्यु का सामना था। "कहने पर गर्दन मारी जावेगी और यदि मरने का समाचार न देकर गुप्त रक्खूँ तो किसी दिन भेद खुलने पर और भी दुर्गति होगी।" लाचार अपना कुछ वश न चलते देख बीरबल के पास गया और उससे सारा समाचार कहकर बहुत गिड़गिड़ाया और कष्ट से छुटकारा पाने की तरकीब पूछी। बीरबल बोला—"डरो नहीं, मैं तुमको अभयदान देता हूँ।" इधर नौकर को बिदा कर वह तुरत बादशाह के पास जा पहुँचा और

बड़ी घबड़ाहट के साथ बोला—"गरीब परवर! अपना तो—ता, अपना तो—ता।" उसकी घबराहट देखकर बादशाह बोल उठा—"क्या वह मर गया?" बीरबल बात सँभालते हुए उत्तर दिया—"नहीं पृथ्वीनाथ! वह बड़ा बिरागी हो गया है, आज सुबह से ही अपना मुख ऊपर किये हुए है और कोई अंग नहीं हिलाता, उसकी चोंच और आँखें भी बन्द हैं।" बीरबल की ऊपर कही बातें सुनकर बादशाह ने कहा—"तब क्यों नहीं कहते कि वह मर गया।"

बीरबलने उत्तर दिया—"आप चाहे जो कुछ भी कहें परन्तु मेरी समझ में तो यही आता है कि वह मौन होकर तपस्या कर रहा है। आप चलकर स्वयं देख लेवें तो बहुत अच्छा हो।" बादशाह ने बीरबल की बात मान ली और दोनों तोते के पास पहुँचे, तोते की दशा देखकर बादशाह ने बीरबल से पूछा—"बीरबल! कहने को तो तुम बड़े चतुर बजते हो फिर भी तोते के मरने की तुम्हे खबर न मिली। यदि यही बात मुझसे पहले ही बतला दिये होते। तो मुझको यहाँ तक आने की क्या जरूरत थी?"

बीरबल ने उत्तर दिया—"पृथ्वीनाथ! मैं लाचार था, क्योंकि यदि पहले ही बतला दिये होता तो जान से हाथ धोना पड़ता।

उसकी इस चालाकी से बादशाह बहुत खुश हुआ और उसको अपनी पहली आज्ञा का स्मरण हो आया। उसने बीरबल की बड़ी प्रशंसा की और एक बड़ी रकम पुरस्कार में देकर उसे बिदा किया। बीरबल उसी क्षण उस रकम को

तोते के रक्षक को दे दिया। इस प्रकार विचारे सेवक की प्राणरक्षा हुई और उसे धन भी मिला।

बैल का दूध।

एक दिन की बात है कि अकबर और बीरबल दोनों एक उपवन में बैठे हुये आनन्द मना रहे थे इतने में शाम होगई। जब बीरबल घर जाने को उद्यत हुआ तो बादशाह ने उसे रोककर कहा—"बीरबल! आज कई दिनोंसे मैं एक बात सोच रहा था, परन्तु तुमसे कहना भूल जाता था। एक हकीम दवा बनाता है उसमें बैल के दूध की अनिवार्य आवश्यकता है। यदि तुम कहीं से उसे ला दो तो अति उत्तम हो। "पत्ता खड़का बन्दा भड़का।" बीरबल बादशाह की मन्शा समझ गया और मनमें कहा कि बादशाह इस बहाने मुझे मूर्ख बनाना चाहते हैं।

बीरबल बोला—"इसमें घबड़ाने की कौनसी बात है, मैं एक सप्ताह में बैल का दूध ला दूँगा।" बादशाह ने कहा—"दो-चार दिन और अधिक लग जायें तो कोई चिन्ता की बात नहीं है, परन्तु दूध का आना बहुत लाजिमी है।" "बहुत अच्छा" —कहता हुआ बीरबल वहाँ से बिदा हुआ।

वह घर पहुँच एकान्त स्थान में बैठकर बैल के दूध वाले प्रश्न पर विचार करने लगा। चिन्ताग्रस्त बीरबल को कई घण्टे का समय मिण्टों के समान बीत गया। जब भोजन करने का समय हुआ तो नियमानुसार उसकी लड़की बुलाने

आई। वह अपने पिताका चेहरा उतरा और विचार-मग्न देख कर ठिठक गई। जब उसको खड़े कई मिनट व्यतीत होगये और पिता का ध्यान न टूटा तो वह उद्विग्न होकर पितासे चिन्ता का कारण पूछा। यद्यपि यह बीरबल की बड़ी लड़की थी और वह इसकी बुद्धिमत्ता को कई बार परीक्षा भी ले चुका था। फिर भी ऐसे गूढ़ विषय में उसे सफलता मिलेगी ऐसी आशा स्वप्न में भी न थी। इसलिये कुछ समय तक उसकी बातों को अनसुनी कर टाल-मटोल करता रहा। पुत्री के पुनः पुनः अनुरोध करने पर उसे विवश होकर बादशाह का जटिल प्रश्न सुनाना पड़ा।

कन्या बोली—"पिताजी! यह कौनसी ऐसी कठिन बात है जिसके लिये आप ऐसे चिन्ताकुल हो रहे हैं। चलिये भोजन का समय बीता जा रहा है। मैं उसका उत्तर एक हफ्ते के भीतर ही बादशाह को पहुँचा दूँगी।"

लड़की के ऐसे उत्तरसे बीरबल की चिन्ता घटी और शाह-सकर भोजन करने गया। इस प्रकार जब दो दिन व्यतीत हो गये तो बीरबल की लड़की ने एक नयी तरकीब निकाली। वह ढूँढ़कर बहुतेरे पुराने वस्त्रों को घरसे बाहर निकाल लाई और उनका एक गट्ठर तैयार किया। जब आधी रात का समय हुआ तो उस गट्ठर को सिरपर लादकर नदी तटपर जा पहुँचो और 'छियो-छियो' कर वस्त्र पछारने लगी। बादशाह का महल ठीक नदी तटपर बना हुआ था अर्ध रात्रि के समय नींद के प्रथम प्रहर में जब कपड़ा धोने की आवाज बादशाह के कान में पड़ी तो उसकी निद्रा भंग हो गई और

पहरे वाले सन्तरी को पुकार कर बोला–"देखो इतनी रात्रि में कौन धोबी कपड़ा छाँट रहा है; उसे तुरन्त पकड़कर मेरे पास लाओ ?"

पहरे वाला सिपाही हुक्म पाते ही कई अन्य सिपाहियों के साथ वहाँ पर जा पहुँचा जहाँ से कपड़े धोने की आवाज़ आ रही थी। वे सब बड़े हैरान और परेशान हुए क्योंकि देखते क्या हैं कि एक सिरसे पैर तक अति सुंदरी युवती कपड़े पछाड़ रही है। सिपाहियों ने उसे कई बार पुकार कर बादशाह का हुक्म सुनाया परन्तु वह उनकी बातें अनसुनी कर बराबर अपने काम में व्यस्त रही–आखिर एक सिपाही उसके बिल्कुल समीप पहुँचकर बोला–"अरी तू कौन है जो इतनी धृष्टता कर रही है और पुकारने पर सुनती भी नहीं ! चल तुझे बादशाह ने बुलाया है ?" लड़की तो येनकेन प्रकारेण बादशाह के पास पहुँचना ही चाहती थी। परन्तु फिर भी अपना अभिप्राय छिपाकर बोली–"आप लोग मुझे क्यों दुख देने पर उतारू हुए हैं, लो मैं अपने घर चली जाती हूँ।" सिपाहियों ने कहा–"खबरदार तुम्हारा भला इसी में है कि सीधे हमलोगों के साथ बादशाह के पास चलो।"

लड़की कपड़ों को जहाँ का तहाँ छोड़ उनके पीछे हो ली और जब बादशाह के सन्निकट पहुँची तो बड़े अदब से झुककर सलाम की और डरीसी होकर एक किनारे खड़ी हो बादशाह के हुक्म की प्रतीक्षा करने लगी। बादशाह क्रोध से आग बबूला हो रहा था। उसने अपनी लाल लाल आँखे निकाकर पूछा–"ऐ कम्बख्त ! तूँ कौन है और इस रात्रि के मध्यकाल में यहाँ

कपड़े क्यों धो रही है?" लड़की ने देखा कि बादशाह क्रोध से तमतमा गया है इसलिये काँपती हुई गिड़गिड़ाकर लड़-खड़ाती जुबान से बोली—"श्रीमान ! श्रीमान् ! मैं तो"......!
बादशाह को उसे घबड़ाई हुई देखकर दया आ गई और उसे शान्त्वना देते हुए बोला—"तू इतना घबड़ाती क्यों है, यदि साफ २ बतला देगी तो तुझे माफी दी जायगी अन्यथा बहुत कष्ट उठायेगी।" लड़की ने कहा—"पृथ्वीनाथ ! मुझे इस समय नितान्त आवश्यकता पड़ी है जिस कारण विवश होकर कपड़े धोने आई हूँ।"

बादशाह ने कहा—"ऐ अभागी ! ऐसी कौन सी जरूरत थी जिसके लिये तू इतना परेशान है।" लड़की ने उत्तर दिया—"क्या कहूँ, पृथ्वीनाथ ! आज दोपहर में मेरे पिता को लड़का पैदा हुआ है सो मैं दिन भर तो और और कामों में परेशान थी इस वक्त फुरसत पाने पर कपड़े धोने आई हूँ। क्योंकि साफ कपड़ों की आवश्यकता आन पड़ी है।"

लड़की के ऐसे कौतूहलपूर्ण उत्तर को सुन बादशाह बड़ा आश्चर्य-चकित हुआ और उसे फटकारते हुए बोला—"ऐ नादान छोकरी ! तू क्या बकती है ! क्या तेरा दिमाग खब्त तो नहीं हो गया है, भला पुरुष को भी कहीं लड़का पैदा होता है?" लड़की सुअवसर देखकर विनम्रता पूर्वक बोली—"पृथ्वी नाथ ! जब पुरुष को लड़का नहीं हो सकता तो बैल को दूध कैसे होगा?"

बादशाह को अपनी पहली बात स्मरण हो आई चकित होकर लड़की से पूछा—"क्या तू बीरबल की लड़की तो नहीं है?"

लड़की ने उत्तर दिया—"जीहाँ, पृथिवीनाथ! आपका अनुमन बिल्कुल ठीक है।" बादशाह उसकी इस चतुरता से बड़ा प्रसन्न हुआ और उसको आभूषण और द्रव्य पुरस्कार में देकर बड़ी इज्जत से पालकी में बैठाकर बिदा किया। लड़की ने घर पहुँचकर पिता का चरण स्पर्श कर रात की घटनाका सारा वृतान्त कह सुनाया। बीरबल अपनी बुद्धिमती कन्या से बहुत प्रसन्न हुआ और उसका पुरस्कार उसे लौटाकर बहुत आशीर्बाद दिया।

पंडित की पदवी।

एक मूर्ख ब्राह्मण को पंडित कहलवाने की बड़ी प्रबल इच्छा थी। बिचारा सतत् प्रयत्न करने पर भी जब कामयाब न हुआ तो उसे बीरबल से मिलकर कार्य-साधन की तरकीब सूझी। वह तुरत बीरबल के मकान की तरफ प्रस्थान किया। बीरबल का घर उसके घर से दूर था। रास्ते का थका-माँदा जब वहाँ पहुँचा तो लोगों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि अभी बीरबल दरबार से नहीं आया है। 'मरता क्या न करता' वह तो पंडित कहलाने की धुन में चूर हो रहा था, तत्काल वहाँ से मुड़ा और दर्बारकी तरफ राही हुआ। मौन मारे चला जा रहा था, अचानक बीच रास्ते में उसकी बीरबल से मुलाकात हो गई। वह बड़ी विनम्रतापूर्वक अपना दोनों हाथ जोड़कर बीरबल से बोला—"बुद्धिवर प्रधान जी! मैं निरक्षर भट्टाचार्य्य हूँ, यानी मुझे पढ़ना लिखना कुछ भी नहीं आता

तिसपर मुझे पंडित बनने की बड़ी अभिलाषा है ! अपनी बुद्धि भर प्रयास करके हार गया पर मेरी मनोकामना सफल न हुई। अब लाचार हो कर आपकी शरण में आया हूँ। कृपया मुझे इसका उपाय बतला कर मेरी जीवन रक्षा कीजिये।"

बीरबल ने कहा—"इसमें आपके घबड़ाने की बात नहीं है, इसका उपाय तो बड़ा ही सरल है। जो तुम्हें पंडित कहलाने की इतनी कांक्षा है तो किसी चौराहे पर जाकर खड़े हो जावो, जब तुम्हें कोई पंडित कहकर पुकारे तो उसे मारने दौड़ना, बस फिर देखोगे कि तुम जहाँ २ जावोगे सर्वत्र लोग पंडित ही पंडित पुकारते फिरेंगे।" बीरबल की युक्ति से वह मूर्ख ब्राह्मण बड़ा सन्तुष्ट हुआ। तुरत आगे बढ़कर वह एक चौराहे पर खड़ा होगया। इधर बीरबल भी जा पहुँचा और वहाँ के खेलते हुए छोटे २ लड़कों के कान में कुछ कहकर समझाया। फिर क्या था; चारों तरफ से पंडित २ की आवाज आने लगी और वह उन्हें मारने को दौड़ाने लगा। उस चौमोहानी पर लोगों की भीड़ लग गई। लड़कों की देखा देखी बड़कों ने भी पंडित पुकारना प्रारम्भ कर दिया। ज्यों-ज्यों वह लोगों पर चिढ़ता त्यों-त्यों लोग और भी चिढ़ाते जाते थे। देखा-देखी थोड़े समय में ही वह मूर्ख सर्वत्र पंडित के नाम से ख्यात हो गया। जब उसका मतलब हल हो गया तो बीरबल की अनुमति से क्रमशः चिढ़ना बन्द कर दिया, परन्तु लोगों ने पंडित कहना नहीं छोड़ा !

दो पड़ोसिनें ।

दिल्ली शहर के एक महल्ले में दो पड़ोसिनें बहुत दिनों से आबाद थीं, परन्तु दोनों का स्वभाव भेद से उनकी पटरी नहीं खाती थी। उसमें एक तो गुणवती और सरल स्वभाव थी परन्तु दूसरी खोटी और कर्कशा थी। उनके मनमुटाव का यही खास कारण था। न वह उसकी विभूति को सहन करती और न वह उसकी। यहाँ तक कि कर्कशा हमेशा सरला की हँसी उड़ाया करती थी। जब वह किसी प्रकार भी सरला को न दबा सकी तो एक दिन उसने अपने लाड़ले पुत्र की हत्या कर चुपके से उस भलामानस के घर में छोड़ आई और आप स्वयं रोती बिलबिलाती हुई बादशाह के पास पहुँची।

जब बीरबल ने उसके बच्चे के कत्ल का हाल सुना तो वह उस भलीमानस औरत को बुलवाया, जिसपर की दुष्टाने अपने पुत्र के मारने का अभियोग लगाया था। बीरबल की आज्ञा पर वह तुरत हाजिर हुई और अपने को इस प्रकार आकस्मिक बुलाये जाने का कारण पूछा। बीरबल ने उत्तर दिया—"क्या तूने इस औरत के बालक की हत्या की है जैसा कि यह तेरे ऊपर अभिशाप लगा रही है? यदि नहीं, तो तेरे पास निर्दोष होने का क्या सबूत है, तुरत बतला?" वह बोली—"महाशय जी! न जाने कौन इस बालक की हत्या कर लाश मेरे घर में डाल गया है। मुझे इसकी बिल्कुल जानकारी नहीं। आप इसपर भलीभाँति विचार करें, मुझे

अधिक बोलने का अभ्यास नहीं है।

बीरबल दोनों स्त्रियों को वहीं रोक कर अपने एक सच्चे सेवक के कान में कुछ समझा कर उनके घर भेजा। वह उन स्त्रियों के चालचलन की जाँच कराना चाहता था। नौकर आज्ञा पाते ही उस महाल में गया; जहाँ ये रहती थीं। वह उनके अड़ोस पड़ोस के तमाम लोगों से उनके चाल चलन के संबंध में पूछ-ताछ की। उनकी जबानी मालूम हुआ कि जिस स्त्री पर अभिशाप लगाया गया है वह निहायत भलीमानस है और अभिशाप लगानेवाली स्त्री निहायत दुष्टा और फरेबिन है।

नौकर जैसा सुन कर आया था उसका सारा कच्चा चिट्ठा बीरबल से कह सुनाया। सच झूठ की पहचान के लिये बीरबल ने एक तरकीब निकाली। वह पहली भलीमानस स्त्री को बुलाकर पूछा—"यदि तूने सचमुच इस बालक का बध नहीं किया है तो अपना सारा वस्त्र उतार कर एक तरफ अलग खड़ी हो जा।" वह बोली—"मन्त्रिवर! मैं चाहे कलकी जगह आजही मार डाली जाऊँ, परन्तु मुझसे यह नहीं होने का। मैं मरने से उतना नहीं डरती जितना निर्लज्जतासे।"

तब बीरबल ने दुःशीला यानी दुष्टा औरत को बुलाकर पूछा—"यदि तू जानती है कि सचमुच इसने ही तेरे बालक का बध कराया है तो इस सभा के बीच अपना सारा वस्त्र अलग फेंककर एकदम नग्न खड़ी हो जा। वह तुरत वस्त्र उतार कर फेंकने को उद्यत हुई। उसकी ऐसी निर्लज्जता देखकर बीरबल स्वयं शरमिन्दा हुआ और उसे वस्त्र उतारने

से रोका। उसको निश्चय हो गया कि इसीने बालक का वध किया है।

बीरबल ने सिपाहियों को उसे पीटने की आज्ञा दी। उसका दोनों हाथ पाँव बाँध दिया गया और सिपाही मारने को उद्यत हुए। अब तो दुष्टा स्त्री का होश ठिकाने आ गया और उसने तुरत अपना कसूर स्वीकार कर लिया। बादशाह को उस मक्कारा की काली करतूत पर बड़ा रंज हुआ इसलिये उसे कारागार भुगतने की सजा दी और उस विनम्रा स्त्री को पुरस्कार देकर बिदा किया।

गुलाम को मारडाल।

सन्ध्या का समय था अकबर अपने बाग में दरबारियों के साथ राजकीय विषयों पर विचार कर रहा था, इतने में तानसेन ने अपनी सारंगी मिलानी शुरू की। सबका ध्यान तानसेन के बाद्य की तरफ आकृष्ट हो गया। दरबार का शेष कार्य स्थगित कर दिया गया। तानसेन ने एक मनहरन तान सारंगी पर छेड़ी। चारोतरफ से वाह वाह की ध्वनि आने लगी। बादशाह आनन्दमग्न तकिये के सहारे लेटा हुआ सुन रहा था। चारो तरफ आनन्द छा रहा था। इसी समय शहर का कोतवाल दो आदमियों को लिये हुए आया। उन आदमियों के कपड़े खून से लथपथ हो रहे थे।

कोतवाल के अचानक आ पहुँचने से बड़ा रंग में भंग होगया। बादशाह झल्ला गया और झिड़ककर कोतवाल

से बोला—"क्या तुमको इतनी भी तमीज न हुई कि यह समय दरबार का नहीं है, ऐसे मनबहलाव के समय बन्दियों का लाना कहाँ तक उचित था। ये कैदी रातभर हवालात में रक्खे जा सकते थे। कल्ह दरबार लगने पर इनके मामले पर विचार किया जा सकता था, फिर इतनी आतुरता दिखलाने का क्या कारण है?"

बादशाह की नाराजगी से कोतवाल सहम गया, परन्तु बिना असलियत बतलाये भी काम नहीं चलते देखा। कुछ सोच समझकरउसने कहा-"गरीबपरवर! इसमें सन्देह नहीं कि मैं इनको सुबह लेकर हाजिर हो सकता था परन्तु इनका मामला बड़ा बेढंगा है जिस कारण मुझको विवश होकर इसी समय आना पड़ा।" उससे ऐसा सुनकर बादशाह कुछ शान्त होकर बोला-"अच्छी बात है! इनका अभियोग सुनाओ।" कोतवाल ने कहा-"आज जब मैं नगर में गस्त लगाते हुए व्यापारियों की मंडी में पहुँचा तो क्या देखता हूँ कि एक जगह बहुतेरे आदमियों की भीड़ लगी हुई है, जब वहाँ गया तो इस अपरिचित मनुष्य को इस नगर व्यापारी से मार पीट करते देखा। यह अपरिचित मनुष्य नगर व्यापारी को झिड़क रहा था कि-"अरे दुष्ट! आज से पाँच सात वर्ष पहले तू मेरा दास था और वहाँ से छिप कर भाग आया है। बड़े परिश्रम के बाद आज तुझे पकड़ लिया है, अब मेरे रुपये अदा कर। इसको झिड़कते देख नगर व्यापारी बोला-"नालायक! दास तो मेरा तू है तुझे मैं आज कितने ही वर्षों से ढूँढ़ रहा था, भाग्यवश इससमय हाथ

लगा है। इन की आपस की ऐसी लड़ाई देखकर मैं इन्हें गिरफ्तार कर सरकार में लाया हूँ, अब आपकी जैसी मरजी हो इनका निपटारा कीजिये।"

बादशाह ने उनसे साक्षी माँगी। नगर सौदागर ने कहा—"गरीबपरवर! आज पाँच वर्ष का अर्सा हुआ कि मैं अपना शहर ईरान छोड़कर दिल्ली आ बसा हूँ और यह हमारा नौकर इससे दो वर्ष पहले ही मुझको छोड़कर भाग गया था। आज जब मैं बाजार में खरीद फरोख्त कर रहा था तो यह भी अचानक वहीं आ पहुँचा और मेरा हाथ पकड़ कर बोला—"तू मेरा गुलाम है, तू मेरा गुलाम है।" मेरे व्यापारी होने का सारा शहर साक्षी है।" जब पहला व्यापारी अपना बयान दे चुका तो दूसरा विदेशी व्यापारी बोला—"पृथ्वीनाथ! यह झूठ बोलता है। क्योंकि ईरान का व्यापारी मैं हूँ। इस शहर में मैं बिल्कुल नया नया आया हूँ; इस कारण यहाँ का एक भी नागरिक मुझे नहीं पहचानता। यह जो इस नगर में शेरअली के नाम से विख्यात हो रहा है सो इसका फर्जी नाम है। यह "नसीबा" नामी मेरा गुलाम है। सात वर्ष का जमाना गुजरा जब मैं इसे दूकान पर छोड़ बाहर व्यापार के लिये गया था। मौका देख यह मेरी बहुत बड़ी रकम चुराकर भाग आया है। तभी से मैं इसकी खोज में दरदर ढूँढ़ता फिरता हूँ। आज सात वर्षों के बाद यहाँ मिला है।" इनका अभियोग दरबार के सभी लोग बड़े गौर से सुन रहे थे, मामला भी बड़ा पेचीदा जान पड़ता था, दोनों ही सौदागर के लिबास में थे और दोनों की मुखाकृति

भी अमीरों की सी थी।

जब यह मामला चल रहा था इसी बीच एक सरदार साहब भी आ पहुँचे और नगर व्यापारी शेरअली को कैदी की सूरत में देखकर बोले-"शेरअली ! यह तुम्हारी क्या हालत है, तुम कैदी की सूरत में क्यों दिखाई पड़ रहे हो ?" शेरअली को इस सरदार के आनेसे बड़ी तसल्ली हुई और बोला-"सरदार साहब ! आप भी जानते हैं कि मैं कितने वर्षों से इस नगर में व्यापार कर रहा हूँ और यहाँ का बच्चा बच्चा मुझे पहचानता है। समय के फेर से वा दैव की अकृपा से आज मैं अपने ही दास द्वारा अभिशापित किया जा रहा हूँ।

सरदार बादशाह को चिताकर बोला—"गरीबपरवर ! यह शेरअली आजकल का व्यापारी नहीं है बल्कि लड़ाई के समय में इसने कई बार सरकार को रुपये की मदद देकर राजभक्ति प्रकट की है। (शेरअली की तरफ इशारा करके) "शेरअली ! यह तुम्हारी ही उदारता का कारण था कि मैंने गुजरात ऐसे सामर्थ्यशाली अधिपति पर विजय प्राप्त की थी तुम्हारी वह मदद हमारी नहीं बल्कि बादशाह की मदद थी।" सरकार की तरफसे तुमको अभी तक उसका कोई पुरस्कार नहीं मिला है ? सरदार की इस सारगर्भित शाक्षी से बादशाह खुश हो गया और बोला शेरअली को उस उपकार का बदला चुकाया जायगा।

बादशाह ने ईरान के सौदागर की तरफ इशारा करके कहा—"क्यों भाई ! तुमको भी किसीकी साक्षी दिलानी है, यदि

है तो उसे सामने लावो, सरदार की साक्षी से तो नगर व्यापारी का शेरअली होना साबित होता है। ईरान का व्यापारी बोला—"गरीबपरवर! मैं इस स्थान में पहले पहल आया हूँ, यहाँ की भाषा तक नहीं समझता और न यहाँ पर मेरा कोई परिचित ही है। अभी मेरा सामान भी बाहर ही पड़ा हुआ है, उसको यहाँ लाने में अभी कई दिन व्यतीत हो जायँगे, फिर मैं किसकी साक्षी दूँ। हाँ इतना जरूर है कि मैं दूर देशों से सुनता आ रहा हूँ कि आपके दर्बार में बड़ा सच्चा न्याय होता है इसलिये कृपया हमारा उचित न्याय करा दीजिये।

दोनों फरीकैनों की बातें सुनकर एक सभासद ने बादशाह से अर्ज किया—"पृथ्वीनाथ! यह मामला बड़ा ही बेढंगा दीख पड़ता है। इसका फैसला कवि गंग से कराया जाय। वे ऐसेर मामलातों को महज खिलवाड़ मात्र समझा करते हैं। विचारा कवि गंग बड़ा घबराया और झट बोल उठा—"हजूर। बीरबल के रहते इसका न्याय करने की दूसरे की आवश्यकता नहीं है अतएव इसका न्याय बीरबल से ही कराया जाय। वे इससे कभी इनकार नहीं कर सकते। बादशाह तो पहले ही से समझ रहा था, उसने बीरबल को आज्ञा दी—"इस मामले को अच्छी तरह जाँचकर न्याय करो।" बीरबल ने भी सहर्ष स्वीकार किया।

बीरबल की कार्रवाई शुरू हुई। वह दोनों व्यापारियों को पास बुलाकर उनसे बहुत प्रकार की पूछ-ताछ की परन्तु फिर भी कुछ मतलब की बात हासिल न हुई।

तब उसने एक नई सूझ निकाली। बीरबल उन दोनों सौदागरों को एक जगह खड़ा कराकर एक जल्लाद को नंगी तलवार लिये हुए बुलवाया। जब वह आकर हाजिर हुआ तो बीरबल उससे बोला–"क्या देखता है "गुलाम को अभी मार डाल।" बीरबल के मुख से इतना शब्द निकलते ही जल्लाद तलवार लेकर झपटा। उसका झपटना था कि नगर व्यापारी यानी नकली शेरअली अलग हट गया। बीरबल उसकी ऐसी हरकत देखकर तुरत ताड़ गया कि असल में यही गुलाम है। उसने उसकी कलाई पकड़ ली। नकली शेरअली ने भी अपना गुलाम होना स्वीकार कर लिया और वह तुरन्त कैद कर लिया गया। अनन्तर दरबारियों के पूछने पर उसने कहा–"असल में मैं ही अपने इस ईरानी मालिक असली शेरअली का गुलाम था। मेरी आदत धीरे धीरे बिगड़ने लगी, मैं हमेशा इसे हटाने को ताक में था जब मेरा मालिक मुझे दूकान पर अकेला छोड़कर बाहर चला गया तो मेरी नीयत बिगड़ी और उसका बहुत सा माल लेकर वहाँ से भाग निकला। घूमते फिरते यहाँ पहुँचा और उस चोरी के रुपयों से व्यापार करने लगा। चूँकि इस काम को मैंने अपने मालिक के यहाँ ही सीख लिया था इस कारण व्यापार चलाने में मुझे कोई दिक्कत न पड़ी और मेरा काम धड़ल्ले से चलने लगा। अब मैं असली शेरअली के नाम से विख्यात हो गया हूँ। इतने दिनोंके परिश्रम से जो मैंने भारतवर्ष में अपना नाम प्रख्यात किया था सो आज दैव के प्रकोप से मिट्टी में मिल गया। अब मुझसे गुलामी करते नहीं

बनेगी अतएव कृपाकर मुझे प्राण दण्ड की आज्ञा दीजिये।

बादशाह ने शेरअली से पूछा—शेरअली-"अब तुम इस आदमी को क्या करना चाहते हो।" शेरअली बोला—"गरीबपरवर! अब मुझे इसकी कोई जरूरत नहीं है मेरी बात रह गई अब आपके जी में जो आवे सो कीजिये। शेरअली के ऐसे सन्तोषप्रद वाक्यों से बादशाह को बड़ी प्रसन्नता हुई परन्तु उसने अपना राज किसी पर जाहिर न किया।

विचारा अपराधी नसीबा जीवन की आश त्यागकर एक तरफ खड़ा था। बादशाह उसकी तरफ लक्ष्य कर बोला—"नसीबा! तुम्हारा अपराध प्राण-दण्ड पाने के योग्य है परन्तु तूने मेरे साथ उपकार किया है और मैंने अभी तक तुझे उसका कुछ बदला नहीं चुकाया है अतएव तुझे जीवन-दान देता हूँ और पुरस्कार में तुझे दर्बार का एक काम सौंपता हूँ, अब तुम उसी काम के सहारे से अपना जीवन नर्वाह करो। नसीबा खुशी के मारे फूला न समाया और बड़ी प्रसन्नता से उस पद को स्वीकार किया। बादशाह ने मन में विचार किया कि इस न्याय में बीरबल ने कमाल किया है इसकारण उसको भी उचित पुरस्कार देना परमोचित है।

बादशाह ने तीन पोशाक मँगवाई। उसमें पहली कुछ आभूषणों के साथ असली शेरअली को और दूसरी बीरबल को तथा तीसरी नसीबा नामी गुलाम को देकर बिदा किया। नसीबा शेरअली के चरणों पर गिरकर अपने अप-

राध की माफी माँगी और उसको आदरपूर्वक अपने मकान पर ले गया। उसने अपना सारा धन शेरअली के हवाले कर दिया। शेरअली बहुत बड़ा व्यापारी था उसका सारा कारोबार ईमान पर चलता था। उसने विचार किया—"व्यापार से मेरे धन के अतिरिक्त जो कुछ नसीबा ने अधिक उपार्जन किया है वह उसके परिश्रम का है। उसने अपना असली धन लेकर शेष बचा धन नसीबा के हवाले किया और खुशी खुशी अपने ईरान शहर को लौट गया।

मोती की खेती।

एक दिन की घटना है कि बादशाह और बेगम दोनों भोजनोपरान्त बाग में झूला झूलते हुए सानन्द गपशप लड़ा रहे थे अचानक बेगम की उर्ध्ववायु खुली, जिससे बादशाह बहुत चिढ़ गया और बेगम को तुरत महल से बाहर निकल जाने की आज्ञा दी। बेगम शहर से बाहर एक बाग में कैदी की सूरत में नजरबन्द कर दी गई। बादशाह को वही धुन सवार थी। दूसरे दिन जब सबेरे दरबार लगा तो बादशाह ने सभासदों से पूछा—"क्या कभी तुमलोगों को भी अधोवायु निकलती है? अधोवायु निकलने के कारण बेगम का दण्डित होना सबपर विदित था इस कारण एक स्वर से सभों ने इन्कार कर दिया, और उस दिन का दर्बार समाप्त हुआ।

जिस दिन की यह बात थी उस दिन बीरबल किसी

सरकारी काम से बाहर गया था। इसलिये जब कई दिन पश्चात वह लौटा तो बादशाह ने वही प्रश्न बीरबल से भी किया। भला बीरबल कब चूकने वाला था, वह झट बोला—"पृथ्वीनाथ! जिस तरह से अन्य लोगों को अधोवायु होती है उसी तरह मुझे भी होती है।" बीरबल के इस उत्तर से बादशाह बहुत नाराज हुआ और उससे बोला—"वाह खूब अच्छे रहे! इस सभा में ऐसा एक भी आदमी नहीं है जिसे अधोवायु सरती हो, फिर तुम्हें कैसे सरने लगी? जब यही बात है तो तुम दरबार से बाहर चले जावो और जब तक मैं तुम्हें आने की आज्ञा न दूँ कदापि न आना।

बीरबल हाजिर जवाब था उसे उत्तर प्रत्युत्तर करने में हिचकिचाहट नहीं होती थी। परन्तु मौका देखकर काम करना बुद्धिमानो का काम है। बादशाह को अपने ऊपर बहुत नाराज देख वहाँ से वह तत्काल बाहर चला गया। बेगम को नजरबन्द हुए जब बहुत दिन हो गए तो एक दिन वह अपने नजरबन्दी के कष्टों से ऊब कर बीरबल को बुलवाया और उससे आजिजी कर बोली—"बीरबल! आपकी मदद के बिना मेरा उद्धार नहीं हो सकता कोई तरकीब निकाल कर मुझे इस निविड़ कैद से मुक्त करो। मेरा जीवन असंभव हो रहा है। बीरबल ने कहा—"दूसरे की वकालत वही कर सकता है जो निर्दोष हो मैं तो खुद हो तुम्हारे दोष में शामिल हूँ तुम्हारी मदद कैसे कर सकता हूँ?

बेगम बीरबल को भलीभाँति जानतीथी अतएव उसकी बात

बीच में ही काट कर बोली—"बीरबल! तुमको मैं भलीभाँति जानती हूँ, मेरा दृढ़ विश्वास है कि चाहे बादशाह तुम से भले ही नाखुश हों, परन्तु उनको मना लेना तुम्हारे बायें हाथ का खेल है! बेगम की इस युक्तिसंगत बात को सुनकर बीरबल खुश होकर उसके कार्यसाधन के निमित्त दश हजार रुपये की माँग पेश की। उसे तत्क्षण दशहजार की थैली समर्पण की गई।

बीरबल घर पहुँचकर एक सुनार को बुलवाया वह अपने काम का बड़ा पक्का था। बीरबल उसको रुपये की एक थैली देकर बोला—"सेठजी मुझे मोती मंडित सुवर्ण का एक जव की बाली दर्कार है, इसलिये आप उत्तम २ मोतियों को बाजार से संग्रह कर उन्हें सोने में इस प्रकार जड़ो कि देखने में हूबहू जव की बाली ही जान पड़े।" सुनार कुछ कालोपरान्त एक उत्कृष्ट बाली बना लाया। बीरबल उसे देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे कुछ द्रव्य इनाम में देकर बिदा किया। आप उस बाली को लेकर बादशाह के महल की तरफ चला। दर्बार में पहुँचते पहुँचते आधा दिन ढल गया।

पहरेदारों से अपने आने का सन्देशा बादशाह के पास यह भेजा कि—"पृथ्वीनाथ! मैं एक बड़े आवश्यक कार्यवश आपसे मिलने आया हूँ यदि आज्ञा हो तो अन्दर आऊँ।" बादशाह ने आज्ञा देकर बीरबल को दर्बार में बुलवा लिया। बीरबल बादशाह के पास पहुँचकर नियम अनुसार सलाम कर बगल में बैठ गया और मोती उसके हाथ में देकर बोला—

"गरीबपरवर! यह मोती का बीज एक बाहरी व्यापारी लेकर आया था जिससे मैंने बड़ी कठिनता से प्राप्त किया है। इसमें एक खास खसूसियत यह है कि यदि कोई पाक साफ आदमी इसको अच्छी जमीन में बोयेगा तो इसी के समान और बहुत सी मोतियाँ पैदा होंगी। मैंने देखा कि यह काम सिवा आपके दूसरा कोई न कर सकेगा अतएव आपकी सेवा में लेकर उपस्थित हुआ हूँ। कृपया इसको किसी अच्छी जमीन पर बो दीजिये, आपको आगे चलकर इससे बड़ा लाभ होगा। बादशाह उसकी बात मानकर तुरत आज्ञा दिया-"बीरबल! इसके योग्य जमीन ढूँढ़कर सूचना दो। परवाने में यह भी लिखा था कि जिस जमीन को बीरबल इस कार्य्य के लिये पसन्द करेगा वह चाहे बड़ी आलीशान मकानों से ही क्यों न सुशोभित की गई हो, तुरत साफ करा दी जायगी।

बीरबल की खूब बन आई उसने अपने पुराने बैरियों के मकानातों को आर्डर देकर तोड़वा दिया। कितने लोगों ने तो बीरबल के आतंक से बचने के लिये बड़ी बड़ी रकमों की घूसें दीं। पहले वह नाक भौं सिकोड़ कर लोगों को टरकाता, परन्तु जब न मानते और बहुत मिन्नत करते तो किसी से कम और किसी से बेस लेकर उनका मकान छोड़ देता। जब बीरबल का खासी रकम मिल गई तो बड़े बड़े महलों को गिरवाना बन्द कर दिया बाद को गरीबों की झोपड़ियों का चौगुनी कीमत देकर कुछ झोपड़ियाँ गिरवा कर एक खासी चौरस जमीन बना ली

और उसे खूब जोतवाकर उसमें उत्तम प्रकार की खाद डलवा दी। पंक्ति से आवपाशी कराकर उसको भली-भाँति सिचवा कर खेत को दुरुस्त करवा लिया। जब बीज बोने के काबिल खेत तैयार हुआ तब बीरबल ने एक दूत द्वारा बादशाह के पास खबर भेजी—"पृथ्वीनाथ! आपका खेत तैयार हो गया है अब आप सभा सदों के सहित पधार कर खेत का मुलाहिजा फर्मावें।

बीरबल उस मोती के बीज को लेकर सभा के सन्मुख आया और उसे बादशाह को दिखा कर बोला—"हुजूर! इस बीज को बोने वाला खूब पाक साफ मनुष्य होना चाहिये, जिससे दुर्गन्धि आती होगी उसके बोने से बीज से हरगिज मोती नहीं उगेगी। इसलिये जिसके शरीर से कभी वायु न सरती हो वही इसको बोये। आपके दर्बार में तो ऐसों की कमी भी नहीं है। किसी एक को आज्ञा दीजिये कि जो इस काम को प्रसन्नता पूर्वक करे।

बादशाह ने एक एक कर अपने सभी उपस्थित सभासदों से पूछा परन्तु कोई बीज बोनेके लिये हामी न हुआ। लगभग हजारों की संख्या में लोग उपस्थित थे पर सभों ने नहीं कर दिया। कारण कि यदि कोई यह कहकर कि मुझे हवा नहीं सरती, मोती बोने का साहस करता और कहीं बाद में मोती न उगती तो उसकी गर्दन मारी जाती।

तब बादशाह ने बीरबल को बीज बोने के लिये कहा। बीरबल बोला—"पृथ्वीनाथ! यह तो मैं आपसे पहले ही कह चुका हूँ कि मुझको वायु सरती है, आपके सामने बहुतेरे

लोगों ने इस बात की साक्षी दी है कि उनको वायु नहीं सरती तो बड़े अफसोस की बात है कि बीज बोने के लिये कोई तैयार क्यों नहीं होता। श्रीमान को भी वायु नहीं सरती अतएव अब इस काम को स्वयं आपही करें तो कितना उत्तम हो। बादशाह बीरबल के प्रस्ताव को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि मुझे भी तो वायु सरती है। इस संसार में ऐसा एक भी मनुष्य न निकलेगा जिसे वायु न सरती हो। तब बीरबल ने मौका देखकर कहा-"पृथ्वीनाथ! जब यही बात है तो बेगम और मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया था जिसके लिये हम दंडित किये गये। बीरबल की इस युक्ति से बादशाह का गुस्सा शान्त हो गया और बेगम को महल में बुलवाने की आज्ञा दी। बीरबल भी दीवान पद पर नियुक्त किया गया।

नया कौतुक।

अकबर बादशाह को ठट्ठेबाजी का बड़ा शौक था और दैवयोग से बीरबल भी बड़ा ठट्ठेबाज था। एक दिन बादशाह और बीरबल में ठट्ठेबाजी हो रही थी बादशाह ने कहा-"बीर-बल बहुत दिन हुआ कोई नया कौतुक तुमने मुझे नहीं दिखलाया अतएव अब कोई ऐसा नवीन कौतुक दिखलावो जैसा फिर कभी देखने में न आवे।" बीरबल हँसते हुये बादशाह की आज्ञा शिरोधार्य की और बोला-"हुजूर इसमें कोई कठिनता की बात नहीं है परन्तु उसकी तैयारी करने में

दो लाख रुपये खर्च पड़ेंगे। बीरबल को तत्काल दो लाख रुपये दिये गये। वह उन रुपयों को लेकर घर गया। दूसरे दिन स्नान ध्यान से निवृत्त होकर एक लाख तो ब्राह्मणों को दान किया बाकी एक लाख रुपये अपने काममें खर्च किया। जब रुपया लिये बहुत दिन हो गये तो एक दिन बीरबल के जी में आया कि जो बादशाह को किसी दिन कौतुक की बात याद आयेगी तो वह तत्काल तकाजा कर बैठेगा इसलिये इसको गुप चुप इसी समय कर दिखाना चाहिये।

वह बीमारी का बहाना कर दरबार जाना बन्द कर दिया, धीरे धीरे बीरबलके बीमारी की बात बादशाह के कानों तक पहुँची। वह घबड़ाकर इलाज के लिये बड़े बड़े हकीम और वैद्यों को उसके पास भेजा, पर उसकी बीमारी घटने के बजाय दिनोंदिन बढ़ती ही गई। यह समाचार सुन बादशाह एक दिन स्वयं बीरबल से मिलने गया। बादशाह को देखकर बीरबल रोने लगा और बोला—"पृथ्वीनाथ! अब मेरी जिन्दगी का अन्तिम दिन है, इस बीमारी से मैं बच नहीं सकता। बीरबल के असाधारण बीमारी से बादशाह को बड़ा खेद हुआ और वह बीरबल को तसल्ली देता हुआ बोला-"बीरबल! तुम जानते ही हो कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ; तुम्हारे बिना मेरा एक क्षण भी सुखपूर्वक नहीं बीत सकता। खुदा करे ऐसा न हो; नहीं तो तुम्हारी मौत से बढ़कर मेरी मौत होगी।"

बीरबलने उत्तर दिया-"गरीबपरवर! विधि के विधान में

कोई उलट फेर नहीं कर सकता। समय आने पर किसी की चाहे कितनी ही प्यारी वस्तु क्यों न हो; हाथ से निकल जाती है। आप से यह मेरी अन्तिम प्रार्थना है कि मेरे पीछे कृपाकर मेरे कुटुम्ब का पालन करते रहियेगा। आपके अतिरिक्त कोई उनको सहारा देनेवाला नहीं है। आह! ...आह... !! मेरा जी बहुत घबड़ा रहा है। इसप्रकार ढोंग रचकर बीरबल अपने तई को ऐसा बनाया मानों कोई सचमुच असाधारण बीमार हो। बादशाह बोला—"तुम किसी प्रकार की चिन्ता न करो, मैं तुम्हारे बाल बच्चों का अच्छी तरह पालन करता रहूँगा।" इसके बाद बादशाह वहाँ से बिदा हो अपने महल को चला गया। इधर जब रात्रि आई तो बीरबल के घर से रोने की आवाज आने लगी। बीरबल के मृत्यु का समाचार लोगों के कानों कान पहुँचा। क्रमशः खबर पाकर बीरबल के जाति बिरादरी के लोग एकत्रित हुये। सर्वसम्मति से उरद का एक पुतला बनाकर उसके साथ कुछ रिस्ते के लोग स्मशान पहुँचे और उसे चितापर विधिवत रखकर उसमें आग लगा दी। इधर बीरबल तहखाने की एक कोठरी में छिप रहा और अपने घर के लोगों से सख्त मनाही कर दी की उसके छिपने का हाल किसी पर विदित न हो। जब बीरबल के मृत्यु का समाचार बादशाह के पास पहुँचा, तो वह अपने प्यारे दीवान की मृत्यु पर शोक करने लगा, परन्तु अन्य मुसलमान अमीर उमराव बीरबल की मृत्यु से बड़े प्रसन्न हुए और इस खुशी में फकीरों को मिठाई खिलाई। हिन्दू प्रजा अनाथ सी होकर चारों तरफ शोक मनानेलगी।

लोगों ने कई दिनों तक अपना २ कार्य्य क्रम बन्द रक्खा। हर तरफ से बीरबल की मृत्यु का समाचार आने लगा। बादशाह ने बीरबल के बालकों को उसकी क्रिया करने के लिये काफी सहायता दी ;

कुछ दिनों तक अकबर बिना दीवान के ही सभासदों की सहायता से राजकीय कार्य्यों को निपटाता रहा, परन्तु जब प्रजावर्ग और बादशाह दोनों को क्रमशः बीरबल विस्मर्ण हो गया तो सभासदों की सम्मति से एक मुसलमान को अपना दीवान बनाया। नये दीवान की अन्धाधुन्धी से प्रजा वर्ग में बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ और चारों तरफ से त्राहि-त्राहि की ध्वनि सुन पड़ने लगी। अपनी मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् बीरबल अपने कार्य साधन के लिये तत्पर हुआ और अपने पुत्र को एक लाख रुपया देकर बोला–" तुम यहाँ से दो मील दूर किसी पहाड़ी पर एक बड़ा भव्य महल तय्यार कराओ। महल ऐसा हो कि उसकी लपट (चमक) कई मीलों तक पहुँचे। यह काम बड़े गुप्त रूपसे करना है, अतएव महल का पूर्णतया निर्माण एक ही रात में होना चाहिये।"

बीरबल का पुत्र बड़ा समझदार था। पिताके आदेश पर पहले महल में लगने वाली वस्तुओं को बड़ी सावधानी से संग्रह किया। जब उसे भली भाँति सन्तोष हो गया कि अब समान के अभाव में महल बनने का कोई काम न रुकेगा, तो वह गुप्त रीति से बहुत से कारीगरों को नियुक्त कर एक रात में हल्ला बोल दिया, और कारीगरों को भली-भाँति ताकीद करदी कि महल बननें का काम बड़ी गुप्त रीति

से किया जाय और महल एक ही रात में बनकर तय्यार हो। महल रातो-रात बनकर तय्यार हो गया। कारीगरों ने भली-भाँति दस्तकारी दिखलाई। लकड़ी पर इस सफाई से रोगन किया कि कोई भी देखकर नहीं कह सकता था कि वह लकड़ी का बना है। स्थान-स्थान पर शीशों को ऐसी खूबी से जड़ दिया कि उसकी चमक कोसों तक फैलती थी।

तब बीरबल खूब साफ सुथरे वस्त्रों से सुसज्जित होकर उस नये महल में आबाद हुआ। सबेरा होते ही वह बड़े ठाट बाट से सजकर नगर में पहुँचा। एक वर्ष का विश्राम पाकर बीरबल खूब तगड़ा हो गया था। अच्छी सेवा होने से उसके शरीर के अंग प्रत्यंग खिल गये थे। नगर में जाते समय उसे देखकर किसी को बीरबल होने का भ्रम न हुआ। इस प्रकार देखता भालता राजदरबार में जा पहुँचा। एक लब्ध प्रतिष्ठ आगन्तुक को देखकर सभासद्गण एकटक उसी की तरफ देखने लगे, सभा का काम बन्द होगया; परन्तु किसी ने उसको छेड़ा नहीं। अन्त में कुछ देर बाद बादशाह ने पूछा— "आप कौन हैं! कहाँ से आये हैं, और यहाँ आने का क्या प्रयोजन है?" बादशाहके ऐसे अपरिचितों से प्रश्नों को सुन कर बीरबल बोला—"गरीबपरवर! मैं आपका पुराना दीवान बीरबल हूँ।" बादशाह भौंचक सा हो गया और रुखाई से बोला—"अयं! बीरबल; तू तो मर गया था न, फिर सजीव कैसे लौटा। बीरबल ने उत्तर दिया—"हुजूर! मैं मर तो गया था परन्तु जब स्वर्ग लोक को गया तो इन्द्र मुझपर प्रसन्न होकर मुझे अपना मंत्री बना लिया, तबसे मेरा दिन बड़ा

सुखपूर्वक बीतता है, मेरी सेवा के लिये अप्सरायें नियुक्त हुई हैं। सर्वदा खाने को उत्तमोत्तम पदार्थ और पान करने के लिये अमृत प्रस्तुत रहता है।"

बीरबल की ऐसी बातें सुन बादशाह ने पूछा—"तो ऐसे आनन्द उपभोग को छोड़कर तुम्हारा यहाँ आना कैसे हुआ ?" बीरबल ने बड़ी विनम्रता से उत्तर दिया-"पृथ्वीनाथ ! आप हमारे पुराने अन्न दाता हैं, यह स्मरण कर इन्द्र से मुहलत लेकर आपसे मिलने आया हूँ, आपके किये हुए उपकार मेरे हृदय-पट पर अंकित हैं इसीलिये आपके निमित्त स्वर्गलोक से एक उत्तम महल और एक परी साथ लाया हूँ। उपरोक्त दोनों चीजें यहाँ से थोड़ी दूर एक पहाड़ी पर छोड़ आया हूँ, यदि आप वहाँ तक चलने का कष्ट करें तो मैं उन्हें आप को दिखला दूँ।

बीरबल की बातें बादशाह को सच्ची जान पड़ीं। उसने मनमें अनुमान किया—"जब बीरबल मर गया था तो बिना प्रयोजनके हुये लौटकर कैसे आया, और आया भी तो परी और महल इसके हाथ कैसे लगा। निःसन्देह बीरबल सत्य कहता है ! उन चीजों की परीक्षा के लिये नये दीवान और कुछ अन्य प्रतिष्ठित लोगों को उसके साथ भेजा। बीरबल सबके साथ२ चलकर उस पहाड़ीके समीप जापहुँचा और उन लोगोंको दूर से अँगुली का इशारा करके बोला-"देखो वह सातवें खंड पर बैठी हुई परी हम लोगों की तरफ ध्यानपूर्वक देख रही है। अधिक आदमियों को एक साथ अपने ही तरफ आते देखकर उसे ताज्जुब हो रहा है, उसका चन्द्रमुख कैसा चमक रहा है ?

उसकी बिखरी लटें क्याही काली नागिन के समान लपलपा रही हैं। आदि आदि कई प्रकार के चकमे देकर बड़ी मुलायमी से पूछा—"क्यों; वे सब बातें अब तक आप लोगों को दिखलाई पड़ीं वा नहीं, यदि न दीख पड़ती हों तो अभी मौका है उन्हें भली भाँति देखलें, ये सब बातें आप लोगों को बादशाह से कहनी पड़ेंगी। फिर किसी प्रकार हीला हवाली करने से काम न चलेगा।

बीरबल के साथ एक से एक सुप्रतिष्ठित नागरिक और दरबारी भेजे गये थे, वे ऐसी कौतूहल भरी बार्ता सुन मन में कहने लगे—"हो न हो यह बीरबल प्रेत होकर आया हो! क्योंकि सिवा महल के इसकी बतलाई एक बात भी हमें नहीं दीख पड़तीं। बीरबल के बारंबार पूछने पर उन लोगों ने एक स्वर से कहा—"अफसोस हमें सिवा महलके और कुछ भी नहीं दीख पड़ता।" तब बीरबल बोला—"आप लोग क्षमा करेंगे, मैं पहले आप लोगों से एक बात कहना भूल गया था, वह यह कि इस लोक के मनुष्य अधिक तर पाप कर्म में रत हैं, दूसरे बहुत से लोग वर्णशंकर भी हो गये हैं इसलिये इन दोनों श्रेणी के मनुष्यों के अतिरिक्त बाकी लोगों को ही ये स्वर्गीय चीजें दीख पड़ेंगी। एक बार फिर से देखकर आप लोग सत्यासत्य का निर्णय कर लें।" बीरबल फिर पहले की तरह सबको दिखलाना शुरू किया। इस बार लोग बड़ीसतर्कता से देख रहे थे, पर कुछ हो तब तो दिखलाई पड़े, सिवा [illegible]ल के उनकी दृष्टि में और कुछ भी न आया। परन्तु [illegible]शंकर बनने के भय से सब लोगों ने परी का दिखलाई

पड़ना स्वीकार किया और एक साथ ही बोल उठे-"वाह वाह! क्या कहना!! जो परी का नाम सुना था सो आज प्रत्यक्ष देखने में आई, ऐसी वारांगणा आज तक मृत्युलोक में किसी को दृष्टिगत न हुई होगी।"

बीरबल बोला—"आप लोग भली-भाँति पुनः पुनः देख लीजिये क्योंकि यह बात बादशाह के सामने कहनी पड़ेगी।" दरबारियों ने कहा-"निसन्देह हम सब इस बात को बादशाह के सामने भी इसी प्रकार ज्यों की त्यों कहदेंगे। पहले तो बीरबल इन लोगों की मूर्खता पर मन में बड़ी देर तक हर्ष मनाता रहा, परन्तु उनको अपने माफिक समझ कर शान्त रहा। इन्हें यह सब देखते सुनते बहुत देर हो गई। उधर बादशाह भी इनकी प्रतीक्षा करते करते घबड़ा रहा था, इसी बीच बीरबल सबको साथ लिये हुये जा पहुँचा। इनको देखते ही बादशाह प्रफुल्लित होगया और हर्ष के सहित नये दीवान तथा अन्य बड़े बड़े कर्मचारियों से वहाँ का समाचार पूछा। वे बीरबल के कथन की पुष्टि करते हुए महल और परी का होना स्वीकार किये, बल्कि कुछ और बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किये। नया दीवान बोला-"हुजूर लाहौल बिला कूवत! ऐसी परी क्या आज तक किसी को नसीब हुई होगी। नाहक यहाँ की स्त्रियाँ अपनी खूबसूरती का डींग हाँकती हैं। महल की शोभा और चमक तो सूर्य्य के तेज को भी मात करने वाली है।"

दीवान के मुख से वहाँ की प्रशंसा सुन बादशाह और भी भुलावे में पड़गया और उसका हृदय काबू से बाहर होने

लगा। बप तुरत बीरलब से बोला—"बीरबल ! उसको यहाँ लिवालावो।" बीरबल बादशाह की बात काटते हुए बोला—"पृथ्वीनाथ ! वह स्वर्ग की परी है, पैदल चलकर यहाँ नहीं आ सकती; हाँ यदि आप स्वयं चलकर उसे लिवा लावें तो भले ही आपके प्रेम में पड़कर शायद चली आवे।" वह तो दीवान के मुख से परी की प्रशंसा सुनकर मात हो चुका था, इनकार कब करता। तत्काल सवारी तैयार करने की आज्ञा दी और आप भी कपड़े लत्ते से लैस हो गया। थोड़ी देर बाद सवारी तय्यार होकर आन पहुँची, सभा के लोग पहले ही से सुसज्जित थे, सब लोग नगर से बाहर निकले। जिस समय बादशाह की सवारी इस ठाट बाट से निकली देखते ही बनती थी, अगर कोई अपरिचित मनुष्य उस समय के समाज को देखता तो उसकी और उसके वैभव की भूरि २ प्रशंसा करता।

मध्याह्न में बादशाह पहाड़ी के समीप जा पहुँचा, धूप बड़ी तेज पड़ रही थी। धूप की लपट महल के शीशों पर पड़ने से उसका प्रतिबिम्ब बहुत दूर तक पहुँचता था, जिससे महल की शोभा दिन दूनी रात चौगुनी हो रही थी। दृष्टि पड़ते ही आँखें चौंधिया जाती थीं। बादशाह ऐसे अपूर्व महल को देख सारे महलों की उत्तमता भूल गया और बीरबल के आग्रह से अपनी मण्डली सहित पहाड़ी पर चढ़ने लगा। थोड़ी देर चलकर महल के नीचे जा पहुँचा और महल की सुन्दरता देखने लगा।

बीरबल बोला—"गरीबपरवर ! ऊपर दृष्टि फैलाकर

देखिये वह सातवें खण्ड की खिड़की पर बैठी हुई परी हमलोगों की तरफ देख रही है, उसकी दासी पीछे से पान बीड़ा थमा रही है। यह दासी क्या है मानो सुन्दरता की सीमा है, इसकी जोड़ की सारे महल में एक भी बेगम नहीं है। वाह परी का क्या कहना! जिस की दासी ऐसी है उसके मालिकिन की प्रशंसा करना तो मानो सूर्य को दीपक दखाना है। बरंबार उँगली का संकेत कर उसे दिखलाने लगा फिर भी कुछ न देख पड़ने पर बादशाह ताज्जुब से बोला—"आप न जाने क्या देख रहे हैं; मुझे तो कुछ भी दिखलाई नहीं पड़ता।" बीरबल बोला—"यदि आपको मेरे कहने पर विश्वास नहीं पड़ता तो आप अपने दीवान और अन्य मुसाहिबों से पूछ लीजिये। वे लोग तो पहले ही से बीरबल के पंजे में पड़ चुके थे, एक स्वर से परी का दीख पड़ना स्वीकार किया और बादशाह को उसके न दिखाई पड़ने पर आश्चर्य्य प्रकट करने लगे। बादशाह विचार सागर में लहरें मार रहा था, उसका मन नितान्त चंचल हो रहा था। इसी बीच बीरबल ने कहा—"पृथ्वीनाथ! मैं पहले आपसे एक बात कहना भूल गया था, वह यह कि स्वर्गीय वस्तुएँ यहाँ के निवासियों को बड़ी कठिनता से दीख पड़ती हैं कारण कि आजकल अधिकतर लोग वर्णशंकर हो गये हैं और वर्णशंकरों को स्वर्गीय वस्तुएँ स्वप्न में भी नहीं दृष्टिगत होतीं; प्रत्यक्ष की तो बात ही निराली है। आप को खूब दृष्टि गड़ाकर ध्यानपूर्वक देखना चाहिये। देखिये दुइज का चाँद थोड़े अर्से के लिये अवश्य उदय होता है

परन्तु सभी देखनेवाले उसको नहीं देख पाते हाँ जो जन्मजा-कुलीन और कर्म से पवित्र होते हैं वे उसे तुरत देख लेते हैं।"

बीरबल की इन बातोंसे बादशाह और घबड़ाया और मनमें कल्पना करने लगा"–सबको तो वह स्वर्ग की परी और उसकी दासी प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ती है और मुझे नहीं; इसका क्या कारण है? हो न हो; मैं ही वर्णशंकर होऊँ। अब तक मैं अपने को वर्णशंकर नहीं समझता था, परन्तु आज इस स्वर्ग की परी के सामने परीक्षा होने पर मुझे अपना वर्णशंकर होना निश्चित हो गया। मेरे ऐसे पतित जीवन को कोटिशः धिक्कार है। अब मुझे इस भेद को छिपाना आवश्यक है नहीं तो प्रजावर्ग में मेरी बड़ी अपकीर्ति फैलेगी, मुँहपर तो सब वाह वाह करेंगे पीछे वर्णशंकर समझ कर मेरी हँसी उड़ावेंगे। इतने में बीरबल फिर अंगुली का संकेत करता हुआ बोला—"देखिये २ पृथ्वीनाथ! वह चन्द्रानना बैठी है और उसकी दासी बगल में खड़ी है। बादशाह ने लाचार होकर उसकी बात मानली और बोला–"हाँ हाँ अबकी बार वह मुझे प्रत्यक्ष दीख पड़ी। वह खिड़की में खड़ी होकर इधर को ही देख रही है।"

बादशाह को परी का देख पड़ना स्वीकार करने पर बीरबल सब सभासद और नये मंत्री के सहित महल के चौथे खण्ड पर गया। वहाँ पर पहले से मुलायम कोंच और मखमल की तकिया सुसज्जित रक्खी जा चुकी थी, बीरबल बादशाह को कोंच पर बैठाकर उनसे गपाष्टक मारने लगा, पर यह बात बादशाह को पसंद नहीं आती थी, उसका मन तो

परी के देखने में लगा था। वह तत्क्षण बादशाह के मनकी बात ताड़ गया, जल्दी में फूल और इत्र तथा गुलाबजल से सबका स्वागतकर बोला-"गरीबपरवर! आप और आपके साथी मृत्यु लोक के वस्त्राभूषणों को धारण किये हुए हैं, और ये सब नश्वर हैं, मैं सबको स्वर्गीय वस्त्र देता हूँ कृपया उसे धारण कर इहलोक और परलोक दोनों का सुख अनुभव करें। ये कपड़े मैं पहले ही से अपने साथ लेता आया हूँ और ये कभी नष्ट होने वाले भी नहीं हैं। भला बीरबल के चकमें से कौन निकल सकता था, बादशाह के स्वीकार करते ही सब लोग अपने कपड़े उतार २ कर अलग धर दिये और बीरबल के दिये कपड़ों को धारण करने पर उद्यत हुए। बीरबल कुछ सोच विचार कर बादशाह को तो असली बस्त्र पहनाया परन्तु दीवान आदिकों को इतना ही कहकर रह गया कि इन स्वर्गीय कपड़ों को पहन लीजिये।

नये दीवान ने अपनी आँखों के सामने कोई वस्त्र न देख कर मन में सोचा—"ऐसे कपड़े पहनने का अर्थ तो अपने को नग्न करना है; परन्तु बीरबल की बात नामंजूर कर वर्णशंकर कौन बने, इस बेइज्जती से तो नग्न होकर रहना ही अच्छा है। उसके बदन पर केवल पाजामा शेषथा उसे भी उतार कर अलग फेंक दिया और ऐसा ढोंग बनाया मानों लोगों के देखने में स्वर्गीय कपड़े ही पहन रहा हो। फिर कपड़े पहने हुओं के समान ऐंड़कर अपनी जगह पर नंग धड़ंग जा बैठा। उसके बदन पर यदि एक लगोट न रह गया होता तो गुप्तेन्द्रियाँ भी प्रगट दिखलाई पड़ने लगतीं। दीवान का ऐसा भेष

देखकर लोगों का हँसी आने लगी, परन्तु समय हँसने के विपरीत था इसलिये लोगों ने उसे प्रगट नहीं होने दिया। हँसकर वर्णशंकर बनना किसी को मंजूर नहीं था—"भाई तू भी चुप, मैं भी चुप।"

नये दीवान के नग्न हो जाने पर बीरबल ने बारी-बारी सबको नग्न कर दिया। क्या कहना था दरबार का दरबार नगोटिया हो गया; बादशाह मन ही मन आन की तान सोचता रहा अन्त में उसकी हृदय तंत्री बोली–"भाई स्वर्गीय चरित्र बड़े ही अद्भुत हैं।" तब बादशाह ने बीरबल से पूछा—"क्यों साहब अब तक लोग स्वर्गीय पोशाक पहन चुके वा नहीं?" "बीरबल ने उत्तर दिया"–जी हाँ, अब सब लोग एक दम कपड़े लत्ते से लैस हैं, परन्तु एकाएक वहाँ (परी के पास) सबको न लिवा चलकर पहले मैं उसकी अनुमति ले लेना उत्तम समझता हूँ; आप लोग यहीं ठहरे मैं उसकी स्वीकृति लेकर तत्काल लौट आता हूँ। बीरबल बगल के एक कमरे में भीतर से सिटकुना बन्द कर छिप रहा, कुछ समय बिताकर बाहर निकला और बादशाह से प्रार्थना कर बोला–" गरीबपरवर! परी की ऐसी अनुमति है कि यह दिन का समय है, इस वक्त सब लोग वापस जावें रात्रि में मुझसे मिल सकते हैं। उसने एक बात और भी कहा है–"अपने मालिक से बोलना कि मुझे इस पहाड़ों की आबहवा बड़ी सुहावनी और निरोग जान पड़ती है इसलिये कुछ दिनों तक मेरा यहीं रहने का विचार है। मैं पहले से बादशाह की हो चुकी हूँ तदर्थ किसी न किसी दिन उनसे

अवश्य मिलूँगी । इस समय बादशाह के साथ और बहुत से लोग आये हुए हैं, मैं उनके सामने नहीं मिल सकती" स्वर्गीय परी का ऐसा सन्देशा सुनाकर बीरबल फिर बोला-"पृथिवीनाथ ! मुझे भी मुनासिब यही जान पड़ता है। हम लोग उसकी मरजी के अनुसार चलें, नहीं तो यदि हमारे ब्योहारों से ऊबकर कहीं वह रुष्ट हो गई तो फिर बना बनाया काम बिगड़ जायगा। इस समय लौट ही चलना बुद्धिमानी है।

कोई उपाय कार्य्यान्वित होते न देख बादशाह लाचार होकर मनगढंत परी की आज्ञा पालन करता हुआ नगर की तरफ चला। आगे २ बीरबल उसके पीछे बादशाह और सबके पीछे कतार से अन्य लोग चल रहे थे। बीरबल और बादशाह तो कपड़े पहने हुये थे लेकिन पीछे वाले सब नग्न शरीर केवल एक लगोटी पहने हुये थे। बादशाह विमुख लौटने के कारण बड़ा दुखी था; लेकिन चूँकि परी ने रात को उससे मिलने का वादा किया था इससे भीतर भीतर कुछ धैर्य भी बँधा हुआ था। इस प्रकार सबको लिये हुए बीरबल नगर में पहुँचा। शहर के रईसों को यों नंगधड़ंग घूमते देख नागरिकों को हँसी आने लगी। यह दल लिये हुये बीरबल जिस गली से होकर जाता वहाँ के लोग इन को देखकर हँस पड़ते। जब इनसे रहा न गया तो नागरिकों को डाटकर बोले-"तुम लोग बड़े मूर्ख हो जो हमको देखकर हँस रहे हो, तुम्हें मालूम नहीं कि बीरबल हम को स्वर्गीय आनन्द लुटा रहा है। हमारे इन पवित्र वस्त्रों को मृत्युलोक

निवासी देख नहीं सकते इसीसे तुम मुझे नग्न देख रहे हो।"

नगर निवासी निरे भोंदू नहीं थे; उनमें भी एक से एक धुरंधर विद्वान थे। आपस में बोले—"हो न हो! यह सब बीरबल के ही बहकावे में आ गये हो। तुम लोग जानते हो कि बीरबलको मरे आज कई वर्षों का समय बीत गया, फिर बीरबल कहाँ से आ पहुँचा। यह बात सबको स्मरण होगा कि एक समय बादशाह ने बीरबल से एक अजीब तमाशा दिखलाने को कहा था। जिस कारण इतने दिनों तक गुप्त रह कर आज बादशाह को अजीब तमाशा दिखलाता हुआ आ रहा है।" सब नागरिकों ने इस बात को स्वीकार किया और सब बीरबल की बुद्धिमानी पर और जोर जोर से हँसने लगे। नागरिकों के ऐसे हास्य और भाषण को सुनकर नग्न अमीरों के कान खड़े हो गये; परन्तु फिर भी वे बीरबलकी सारी बातें सच्ची मानकर नगर वासियों की उपेक्षा करते हुये महल की तरफ चले। बीरबल अपने दल के सहित सारे नगर में घूमता फिरता शाही दर्बार में जा पहुँचा। सब लोग जगह बा जगह खड़े हो गये, परन्तु बीरबल बादशाह को सबसे अलग ले गया और तब एकान्त में अपना दोनों हाथ जोड़कर बोला—"पृथ्वीनाथ! यदि मेरे अपराधों की माफी मिले तो मैं कुछ निवेदन करूँ।" बादशाह ने कहा—"अच्छा कहो, तुम्हें माफी दी जायगी।" तब बीरबल बोला—"हुजूर को स्मर्ण होगा कि एक समय वर्ष के भीतर मुझे एक अजीब तमाशा दिखलाने को श्रीमान् ने हुक्म दिया था और यह भी बचन दिया था कि उस अजीब

तमाशा के दिखलाने में मुझसे की गई गुस्ताखियाँ भी माफ कर दी जायँगी। उसी के मुवाफिक हुजूर को यह नया तमाशा दिखलाया गया है, कभी आपको इस प्रकार की नग्न सभा देखने में न आई होगी और न फिर भविष्य में देखने ही सकेंगे यही इसका अन्त है। पृथ्वीनाथ! कहीं मरा हुआ आदमी भी लौट कर आ सकता है? भला स्वर्ग की परी यहाँ क्योंकर आवेगी?"

बादशाह लाचार था वह बीरबल के कथनानुसार उसको पहले से माफी दे रक्खी थी, अतएव सभासदों से बोला— "दीवानजी! आजसे लगभग एक वर्ष पहले मैंने अपने दीवान बीरबल को एक अजीब तमाशा दिखलाने की आज्ञा दी थी और उसमें होने वाले सभी अपराधों के लिये उसको माफी भी दी गई थी। सो आज बीरबल ने वही अजीब तमाशा हमको दिखलाया है। आशा करता हूँ आप लोग उसपर रुष्ट न होंगे। यह जो कुछ भी हुआ सब मेरी आज्ञा के कारण हुआ है। इस बात का मुझे भी दुःख है कि उसने आपलोगों की बड़ी हँसी कराई है। मैं ऐसा नहीं चाहता था। मैं तो केवल अजीब तमाशा ही देखने की लालसा रखता था। आपलोग इस बात को एकदम भूल जायें और बीरबल से पहले सा ही प्रेम रक्खें।"

बादशाह की आज्ञा सुनकर समस्त हिन्दू दरबारी धन्य धन्य कहने लगे, परन्तु मुसलमान दरबारियों का मुँह लटक गया और मनही मन बीरबल की धृष्टता पर गालियों का बौछार उड़ाने लगे। बीरबल उनके वस्त्रों का गट्ठर पहले

ही से दर्बार में भेज चुका था इसलिये उसको खुलवा कर सबके हवाले किया। सब लोग असली वस्त्र धारण कर अपनी २ जगहों पर जा विराजे और सभाका दूसरा कार्यारम्भ हुआ।

पहले जन्म की वार्ता।

बैजर नामी ग्राम में दो आदमी बड़े मित्र भाव से बसते थे। उनमें एक का नाम पंडित सुशर्म्मा था जो अति विद्वान, सदाचारी तथा गंम्भीर प्रकृति का था। दूसरे मित्र का नाम सुदामा था। यह जाति का नाई था परन्तु विचार में बड़ा ही न्याई था। इनका आपस में ऐसा संगठन था कि बिना एक से पूछे दूसरा कोई नया कार्यारंभ नहीं करता था। एक दिन अकस्मात सुशर्मा के जी में यह बात आई-"हमें कोई ऐसा कर्म करना चाहिये जिससे भविष्य में राज्य ऐश्वर्य्य का सुख मिले।" इस विचारसे प्रेरित होकर उसनेसुदामा नामी अपने मित्र से इस की चर्चा की। सुदामा नाई ने कहा-" मित्रवर! मेरा धर्म भी यही कहता है कि आपको तपश्चर्या करने की अनुमति दूँ और तपश्चर्या के समय आपका सहयोग कर मैं भी अपना अगला जन्म सँवारू"। सुशर्मा अपने मित्र को अपनी सम्मति से सहमत देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और मित्र सुदामा नाई के सहित प्रयाग को चला गया। वहाँ पहुँचाकर त्रिवेणी के समीपही एक छोटी सी पर्णकुटीर बनवाकर तपश्चर्य्या में निमग्न हुआ।

सुशर्म्मा ने तन्मय होकर कई वर्षों तक उस पर्णकुटीर में तप किया परन्तु फिर भी देवताओं की प्रसन्नता न हुई तब ऐसी तपश्चर्य्या से उसका मन ऊब गया और उस प्रणाली को बदल कर संन्यास धारण किया। काशाय वस्त्र पहन कर पुनः तप करने में दत्तचित्त हुआ। सुदामा नाई भी क्षत्रछाया की तरह उसकी सेवा करता हुआ अपना धर्म पालन करने लगा; उसका अनुमान था कि सन्यासी की सेवा से मनोभीष्ट फल की प्राप्ति कर लूँगा। दोनों की प्रगाढ़ मैत्री थी। इन्हें आपस के सहयोग से कठिन से कठिन कार्य साधन में किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता था। जब इस ढंग से तप करते हुए भी बारह वर्ष बीत गये कुछ भी हासिल न हुआ, यानी देवता प्रसन्न नहीं हुए, तब इन दोनों को बड़ा दुख हुआ और एक दूसरे का मुख देखते हुए इस बात के अनुसन्धान में लगे कि अब कौन सा यत्न किया जाय कि, जिससे अभीष्ट फल की प्राप्ति हो। अपने मित्र सुदामा नाई को चुप देखकर संन्यासी बोला—"मित्र सुदामा! तुम भलीभाँति देख रहे हो कि हमें तप साधन करते चौबीस वर्ष का समय बीत गया लेकिन कार्य्य की सिद्धि न हुई, तब आखिर ऐसा कौन सा उपाय किया जाय कि जगत में हमारी अपकीर्ति न हो। मेरे मनमें तो यह आता है कि आत्महत्या के अतिरिक्त निवृत्ति का दूसरा मार्ग नहीं है, लेकिन इससे भी मुक्ति नहीं मिलती इसमें भी एक बात बड़े अड़चन की है। शास्त्रकारों ने आत्म-हत्या को बड़ा पाप बतलाया है। तब भाई तुम्हीं कोई ऐसी

युक्ति निकालो जिससे शास्त्रानुकूल सुख प्राप्त हो। "गतानि शोचानि कृतत्न भवन्ने।" अब बीती बातों की चिन्तना छोड़ आगे के लिये प्रयत्नशील होना चाहिये।

सुदामा मित्र बोला—"आप पंडित और ज्ञानी हैं, मैं केवल आपका अनुयायी सेवक हूँ; शास्त्रों के आदेश क्या हैं इसका मुझे कोई गम नहीं, तब इसमें आपही को कोई शोच विचार कर दूसरा उपाय निकालना चाहिये। सुशर्म्मा बोला—"हाँ एक मार्ग है, परन्तु जबतक तुम उससे सहमत न हो मैं कैसे कर सकता हूँ। शास्त्रों में ऐसा प्रमाण मिलता है कि जो प्राणी त्रिवेणी के तटपर बैठकर आत्म विसर्जन करता है उसको आत्महत्या का पाप नहीं लगता बल्कि अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है।"

सुदामा नाई पंडित सुशर्म्मा की इस सम्मति से सहमत हो गया और वे अपने सामानों का अलग २ दो गट्ठर बनाकर एक जगह गाड़कर चलता हुये। वहाँ से चलकर जगत जननी भागीरथी के तटपर आये। सुशर्मा के मन में राज सुख प्राप्ति की कांक्षा थी इसलिये वह पृथिवी मंडल का एकक्षत्र राज्य प्राप्ति के निमित्त और सुदामा को राज कर्मचारी होने की कांक्षा थी अतएव उसने मंत्री पद की अभिरुचि से त्रिवेणी जी के पवित्र जल में प्राण विसर्जन किया। वे मरती समय ध्यानमग्न हो ईश्वर से प्रार्थना कर बोले—"भगवन्! इसी जन्म के समान पुनर्जन्म में भी हमारा साथ इसी प्रकार बना रहे और इस समय की सब बातें हमें स्मरण रहें। तीर्थ राज प्रयाग की भूमि जिसमें त्रिवेणी जल का प्रभाव क्या कहना, उस

जल के पुण्य प्रभाव से उनको अभीष्ट सिद्धि मिली। अगले जन्म में सुशर्मा हिमायूँ बादशाह के घर जन्म लेकर अकबर के नाम से विख्यात हुआ और सुदामा नाई का जन्म उसी नगर के एक कुलीन ब्राह्मण के घर हुआ। इसके पिता के पुकारने का नाम स्वप्ननाथ था। ब्राह्मणपुत्र स्वप्ननाथ बड़ा ही बुद्धिमान और प्रतिभाशाली हुआ, जिस कारण थोड़े समय में इसने अच्छी विद्या हासिल करली। विद्या और बुद्धि के प्रभाव से बादशाह ने इसको दीवान पदपर नियुक्त किया और उसका नाम बदल कर बीरबल रक्खा।

घी का व्यवसाय।

दिल्ली नगर व्योपारों का केन्द्र था, इस लिये वहाँ बहुतेरे व्योपारी बसते थे। घी के दो व्योपारियों में कुछ अनबन हो गई। इसलिये उनमें का एक व्योपारी बादशाह के पास पहुँचकर बोला—"पृथिवीनाथ! अमुक व्योपारी मुझसे एक हजार रुपया कर्ज लेकर अब देने से हीला हवाली करता है। उसकी नीयत रुपये देने की नहीं है।" बादशाह न्याय के लिये उसका अर्जीदावा बीरबल के पास भेज दिया। बीरबल उसे पढ़कर दूसरे व्योपारी को तलब किया। जब वह आया तो पहले व्योपारी का अभिशाप पढ़कर सुनाया। तब वह व्योपारी बोला—"हुजूर को मालूम हो कि हम दोनों एकी चीज के व्योपारी हैं इससे व्योपारिक प्रतिद्वन्दिता के कारण वह मुझसे बुरा मानता है

और मेरे व्योपार में धक्का पहुँचाने की नीयत से आपके पास झूठा अर्जीदावा लेकर आया है, इसकी जाँच कराने पर आपको स्वयं झूठ सचका पता चल जायगा, इस संबन्ध में, मैं और कुछ कहना नहीं चाहता।

बीरबल ने उसकी बात मानकर उसको घर जाने की मुहलत दी। फिर पहले व्यापारी को बुलाकर बोला—"इस मामले में आपको अभी खामोश रहना पड़ेगा, समय पाकर मैं इसका उचित न्याय करूँगा। अभी आप इस ढङ्ग से रहें मानो कुछ हुआ ही नहीं है। वह बीरबल की बात मानने को लाचार था, चुप चाप अपने घर चला गया।

व्योपारियों के झगड़े का न्याव करना बीरबल को याद रहता, सोचते २ एक दिन उसे एक नई युक्ति सूझी। बजार से चार घी से भरे कुप्पे मँगवाये गये जिनमें कुछ अपना अलग २ निशान बनाकर दो खास कुप्पों में एक-एक मोहरें डाल दीं। फिर दोनों व्योपारियों को बुलवाकर बोला—"देखो यह चार घी के कुप्पे मेरे पास बहुत दिनों से पड़े हुए हैं अब इनके नष्ट होने का भय है, तुम दोनों इसमें से एक एक कुप्पा अपने साथ लेजाओ; बाकी दो कुप्पे मैं दूसरे व्यापारियों के हाथ बेंच दूँगा। कुप्पों को बाजार में उचित दाम पर बेंचकर जो मिले उसमें से अपना नफा निकाल शेष मूल्य मेरे हवाले करना।" वादी तो कुछ इतराज न किया, परन्तु दूसरा व्योपारी (यानी प्रतिवादी) बोला—"दीवानजी! इतने थोड़े घी के लिये चार व्योपारियों का क्या काम है, आप एक ही को चारो सुपुर्द कर दें। वह बेंचकर सबका

मूल्य एकमुस्त अदा कर देगा।"

बीरबल ने जवाब दिया—"नहीं; ऐसा नहीं हो सकता, हमारे लिये सभी समान हैं और हमें सबका ध्यान है। तुम एक एक कुप्पे अपने साथ ले जावो बाकी मैं दूसरों के हवाले करूँगा। बीरबल उन दोनों को दोनों गुप्त निशान वाले कुप्पे देकर बिदा किया। घी कुछ बिगड़ा हुआ था व्योपारियों ने सोचा कि बिना तपाये इसका ऐब दूर न होगा। इसलिये पहले व्यापारी ने कुप्पे को तपाना शुरू किया। जब घी पिघल गया तो उसे एक बड़े कराह में छोड़कर खराया। जब उसके मर्जी के मुवाफिक घी एकदम तय्यार हो गया और उससे सुगन्धि आने लगी तो उसने फिर घी को उसी कुप्पे में भरना प्रारम्भ किया। जब घी पेनी में पहुँचा तो किसी चीजके खड़कने की आवाज सुनाई पड़ी। उसे बाहर निकाल कर देखा तो वह अकबरी मुहर थी। व्योपारी मन में सोचने लगा—"यह मुहर बीरबल की है भूल से इस में आ पड़ी है। उसकी वस्तु उसीको देना मुनासिब है।" व्योपारी मुहर को लेकर बीरबल के पास पहुँचा और उसकी मुहर उसे देकर अपने घर लौट आया। बीरबल मुहर पाकर सोचने लगा—"यह व्योपारी सच्चा है।" दूसरे व्योपारी के कुप्पे से भी उसी प्रकार मुहर निकली, प्ररन्तु उस लालची को सोना देखकर लोभ समा गया उसे अपने जेठे पुत्र को देकर बोला—"इसको यत्न से अपने पास रक्खो, जरूरत पड़ने पर मुझे लौटा देना।

इधर जो दो कुप्पे बिना असरफी के थे दूसरे दो व्योपारियों

को देकर बीरबल बोला-"इसे बेचकर चौथे दिन सबके साथ मूल्य लेकर हाजिर होना।" इस प्रकार यत्रतत्र कुप्पों को बेचने और धन संग्रह करने में चारो व्योपारी जा लगे। जब रुपया जमा करने की निश्चत तिथि आई तो वे सब बिक्री के रुपये लेकर बीरबल के पास आये। बीरबल ने तीन व्यापारियों का द्रव्य सहेज लिया जब चौथे की (प्रतिवादी की) बारी आई तो उसका द्रव्य सहेजते हुये बोला-"तुम्हारे कुप्पे में अन्य व्योपारियों से अधिक घी था यानी तीन में तो एक एक मन था, परन्तु तुम्हारे कुप्पे में सवा मन था।" बीरबल की यह बात सुनकर प्रतिवादी घबड़ा गया और बोला-"हुजूर क्या कह रहे हैं, मेरे कुप्पेमें भी एकही मन था। गरमाते और तौलते समय उस जगह मेरे घर के और प्राणी भी मौजूद थे, आपको विश्वास न हो तो उनको बुलवाकर जाँच कर लें, घी की वजन सबके सामने की गई थी।"

बीरबल अपने एक सेवक के कान में कुछ समझाकर बोला-"तू उसके लड़के से जाकर कहो कि तुम्हारा बाप कुप्पे से निकली अशर्फी को तुरत माग रहा है, तू उसे अभी लेकर मेरे साथ चल।" वह कर्मचारी जाकर व्योपारी के लड़के से बोला-"तेरा पिता बादशाह की सभा में बैठा है घी के कुप्पे से निकली अशर्फी लेकर तुझे बुलाया है, लड़का साथ हो लिया। अपने पुत्र को एकाएक दर्बार में उपस्थित देख व्योपारी चिन्ताग्रस्त हुआ, परन्तु विवश था, बीरबल के सामने उससे कुछ कह भी नहीं सकता था। बीरबलने लड़के

से पूछा—"क्या तुम मुँहर लेकर आये हो?" "जी हाँ!" कहता हुआ लड़का पिता के सामने ही मुहर को बीरबल के हवाले किया। बीरबल ने कहा—"वाह, क्या खूब, यह तो एकही मुँहर है और तुम्हारा पिता बतलाता था कि उस घीके कुप्पे से इसी तरह की चार मुँहरें निकली हैं।"

लड़का बाप की तरफ देखकर बोला—"पिताजी! चार मोहरें कब निकली थीं, आपने तो मुझको यही एक मुहर दिया था न।" पिता इशारे से पुत्रको दबाते हुए बोला—"भला यह तू क्या कहता है; कुप्पे से कब मुहर निकली थी?" लड़का बिचारा भला अपने बाप की मंशा क्या जानता था, वह विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया—"क्यों पिताजी! जब घी का कुप्पा तपाया जा रहा था तो उसमें से एकही अशर्फी निकाली थी न।" बाप बोला—"लोग अपने ही से हारते हैं।" फिर गुस्सा मन में मार कर कहा—"तू इतना बड़ा हुआ परन्तु अभी तक तुझ में किसी बात की समझ न आई, भला तू मेरे व्योपार को कैसे कायम रक्खेगा?" इसी तरह बाप बेटों में कुछ देर तक गपड़चौथ होती रही। तब बीरबील बोला—"यह तुम्हारा घरू चरखा फिर चलता रहेगा अब साफ २ बयान करो कि तुम्हें मुद्दई का रुपया देना मंजूर है वा नहीं?

बीरबल की बात का मुद्दालेह ने कुछ उत्तर नहीं दिया। तब भीतर से चिढ़कर वह बोला—"तू अब पट्टी पढ़ाकर मुझे धोखा नहीं दे सकता। जब एक मुहर के लिये ईमान छोड़ रहा है तो भला पाँच सौ की गठरी कब न दबाना चाहेगा।" बीरबल तो इतना कह गया, परन्तु व्योपारी

को जूँ तक न रेंगी, इसकी धृष्टता देखकर बीरबल एक दम खिझला गया और एक सिपाही को तुरत आज्ञा दी—"इस झूठे को अभी सौ कोड़े लगाओ।" सिपाही कोड़ा लेकर मारने को उद्यत हुआ, इस बीच व्योपारी का लड़का फिर बोल उठा—"वाह पिताजी ! अभी उस दिन तो आप स्वयं कह रहे थे कि इस महाजन का मुझे पाँच सौ का ऋण चुकाना है, परन्तु चिन्ता की कोई बात नहीं है इस समय रुपये मेरे पास मौजूद हैं, किसी दिन चुका दूँगा। तब आप उन रुपयों को इसे क्यों नहीं दे देते?" लड़के की सभ्यता देखकर बाप ने हार मानली और बीरबल के सामने उन रुपयों को चुका देना स्वीकार किया। किसी ने सत्य कहा है—"मार के आगे भूत भागता है।" न सौ कोड़े की नौबत आती न रुपया बरामद होता।

बीरबल ने तत्क्षण मुद्दई के रुपयों को दिलवा दिया और प्रतिवादी (मुद्दालेह) को सजा देकर रुपया मारने के अपराध में जेल भेज दिया। मुद्दई अपना धन पाकर बड़ा हर्षित हुआ और बीरबल के न्याय की भूरि भूरि प्रशंसा करने लगा। फिर बीरबल अन्य व्योपारियों को चिताकर बोला—"यहाँ पर आप लोग अधिकतर व्योपारी ही उपस्थित हैं, सबको उचित है की ईमानदारी का सौदा करें, बेइ-मानी करने के पहले तो भला मालूम होता है, परन्तु उसका परिणाम बुरा निकलता है। यह लड़का अभी तक बड़ा ईमानदार है, यदि इसको बुरों की सुहबत न होगी और बापका असर न आयेगा, तो आगे चलकर इसका व्योपार

तरक्की पर रहेगा।" फिर लड़के को चिताकर उसे सदैव सच्च बोलने की शिक्षा देकर बिदा किया। अन्य तीनों व्योपारी भी बीरबल की आज्ञा पाकर घर लौट गये।

आधी दूर धूप आधी दूर छाया।

एक दिन का हाल है कि बादशाह बीरबल पर खफा होकर उसको अपने नगर से बाहर निकाल दिया। बीरबल हरहालत में खुश रहनेवाला था, वह नगर से बाहर किसी ग्राम में जा बसा। इस प्रकार बास करते २ कई महीने व्यतीत होगये न बादशाह ने उसे बुलवाया और न वह स्वयं आया। समय समय पर बादशाह बीरबल को याद कर बड़ी चिन्ता करता, परन्तु उसका कहीं पता ठिकाना न मिलने के कारण लाचार था। जब किसी प्रकार बीरबल का पता न चला तो ढूँढ़ने के लिये बहुतेरे कर्मचारियों को गाँवों में भेजा, फिर भी बीरबल का अनुसन्धान न हो सका। तब बादशाह उसको ढूँढ़ने की एक नई तरकीब निकाली। नगर २ में ढिंढोरा फिरवा दिया कि जो सख्स—"आधी दूर धूप और आधी दूर छाया" में होकर मेरे पास आवेगा उसे एक हजार रुपये पारितोषिक दिये जायँगे।"

बहुतों ने पारितोषिक पाने की चेष्टा की, परन्तु किसी के दिमाग में "आधी दूर धूप आधी दूर छाया" में होकर आने की युक्ति न सूझी। यह बात क्रमशः फैलते फैलते

बीरबल के कान में पहुँची। वह अपने पड़ोस के एक बढ़ई को बुलाकर बोला—"तुम एक चारपाई अपने मस्तक पर रखकर बादशाह के पास जाओ और कहो कि मैं—"आधी दूर धूप आधी दूर छाया" में होकर आपके पास आया हूँ अतएव मुझे पारितोषिक मिलनी चाहिये।"

बढ़ई बीरबल को पहचानता था इसलिये उसकी बात मान-कर चारपाई सिरपर लेकर बादशाह के पास जा पहुँचा और एक हजार का पुरसकार पाने का उजुरदार हुआ। बादशाह इस बात को बढ़ई के समझ से बाहर की समझ कर बोला—"सचसच बतलाना होगा, कि तुम्हें यह सलाह किसने दी है" ढ़ई बोला—"पृथिवीनाथ! एक ब्राह्मण कुछ दिनों से हमारे ग्राम में आ बसा है, उसे लोग बीरबल के नाम से पुकारते हैं, उसीकी सम्मति से मैंने यह कार्य्य किया है। बादशाह किसान से बीरबल का नाम सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसको एक हजार रुपये देकर बिदा किया। उसके साथ अपना दो कर्मचारी बीरबल को लाने के लिये परवाने के साथ भेजा। इतने यत्न के पश्चात् बीरबल फिर बादशाह के हाथ लगा।

अधर महल

एक दिन दरबार के काम काजों से निश्चिन्त होकर बादशाह बीरबल के साथ गप्पें मार रहा था। गप्प शप के मानी मनोरंजन के हैं। उसी दिन उसको एक अधर महल

बनवाने की इच्छा जागृत हुई। इस अभिप्राय से प्रेरित होकर बोला—"बीरबल ! क्या तुम मेरे लिये एक अधर महल बनवा सकते हो ?" बनवा देना तुम्हारा काम है और रुपया खर्चना मेरा।' बीरबल ने सोच विचार कर उत्तर दिया—"पृथिवी-नाथ थोड़ा ठहर कर महल बनवाने का कार्यारम्भ करूँगा। इस कार्य के लिये कुछ मुख्य सामानों के संग्रह में समय की आवश्यकता है। बादशाह इश पर राजी हो गया।

फिर बीरबल ने एक दूसरी बात छेड़कर बादशाह का मन दूसरे कामों में उलझा दिया, सायंकाल अवकाश पाकर घर लौट गया। दूसरे दिन बहेलियों को रुपये देकर जंगल से तोतों को पकड़ लाने की आज्ञा दी। हुक्म की देर थी बहेलिये उसी दिन सैकड़ों तोते पकड़ लाये। बीरबल ने कुछ तोतों को चुन कर खरीद लिया। और उनके पढ़ाने का भार अपनी बुद्धिमती कन्या को सौंप आप दरबार का आवश्यक कार्य्य करने लगा। लड़की ने बुद्धिमानी से पिता के आदेशानुसार तोतों को पढ़ाकर पक्का कर दिया। जब बीरबल ने उनकी परीक्षा ली तो वे उसके मरजी के माफिक निकले। फिर क्या था बीरबल तोतों को लिये हुए दरबार में हाजिर हुआ। उन को दीवान खाने में बन्द कर आप बादशाह के पास गया। तोते पिंजड़ों से बाहर निकाल कर छोड़ दिये गये थे। सब तरफ से किवाड़ बन्द था। तोते भीतर ही भीतर अपनी शिक्षा के अनुसार अलग अलग राग अलाप रहे थे।

बादशाह को सलामकर बीरबल बोला—"पृथ्वीनाथ !

आपकी मरजी के मुवाफिक अधर महल में काम लगवा दिया है, इस समय उसमें बहुतेरे पेशराज और मिस्त्री काम कर रहे हैं, आप चलकर मुवाइना कर लें।" बादशाह महल देखने की इच्छा से बीरबल के साथ हो लिया। जब बीरबल दीवान खाने के पास पहुँचा तो उसका किवाड़ खोलवा दिया। तोते बाहर निकल कर आकाश में उड़ते हुये बोलने लगे—"ईंटा लाओ, चूना लावो, किवाड़ लाओ, चौखट तय्यार करो, दीवार चुनो।" इस प्रकार आकाश में तोतों ने खूब शोर गुल मचाया। तब बादशाह ने बीरबल से पूछा—"क्यों बीरबल! ये तोते क्या कह रहे हैं?" बीरबल अदब के साथ उत्तर दिया—"हुजूर आपका अधर महल तय्यार हो रहा है, उसमें पेशराज और बढ़ई लोग लगे हुये हैं। सब सामान एकत्रित हो जाने पर महल बनना शुरू होगा।" बीरबल की इस बुद्धिमानी पर बादशाह हर्षित हुआ और उसको बहुत सा धन देकर बिदा किया।

सेर भर मांस

दिल्ली शहर में दीनदयाल नामी एक पुराना ब्योपारी रहता था। उसका कारोबार बहुत बड़ा था जिस कारण उसकी ख्याति दूर देशों तक पहुँचती थी। एक समय उसको कई हुण्डियाँ एक साथ सकरनी पड़ीं और उसके पास रुपया आने में तीन चार दिनों की देर थी। जो कुछ पास था उससे रोकड़ मिलाने पर पाँच लाख रुपये की

कमी पड़ती थी। जब दीनदयाल को मौके पर रुपयों का प्रबन्ध होना असम्भव दीख पड़ा तो अपने मुनीम को हुण्डी वालों का हिसाब किताब मिलान करने की आज्ञा देकर आप रुपये की तलाश में बाहर निकला। उस समय नगर में एक महाजन के अतिरिक्त ऐसा दूसरा कोई भी बड़ा महाजन नहीं था जो एकमुस्त पाँच लाख की थैली उधार देता। दीनदयाल ने उसी से कर्ज लेकर हुण्डी सकर देने का निश्चय किया। वह साहूकार बड़ा धूर्त, दुष्ट और निर्दय था, परन्तु लाचार; कोई दूसरी सूरत न सूझ पड़ने पर दीनदयाल को उसके द्वार पर कर्ज के निमित्त जाना पड़ा। दीनदयाल ने उस महाजन से बारह दिनों की अवधि पर पाँच लाख रुपये कर्ज माँगा। उसका विश्वास था की उपरोक्त समय के अन्तरगत उसके पास बहुत सा रुपया आ जावेगा। उसने मारवाड़ी को उसकी इच्छानुसार सूद देने का पक्का विचार कर लिया था। केशवदास बराबर दीनदयाल को समूल नष्ट करने की चेष्टा में लगा रहता कारण की उसका और दीनदयाल का व्योपारिक द्वेष था। दीनदयाल का कारोबार इतना बड़ा और समुन्नत था कि उसके आगे दूसरे व्योपारियों का व्योपार चलना कठिन था। दीनदयाल निःसन्तान था अतएव अगले डाह के कारण मारवाड़ी इस घात में लगा हुआ था कि यदि किसी प्रकार दीनदयाल मारा जाय तो फिर उसका कारोबार भलीभाँति

ऐसी ईर्ष्या वश केशवदास उसको अपने पंजे में फाँस लेना चाहता था। उसे विश्वास था कि यदि वह रुपये न देगा तो दीनदयाल की इतनी ख्याति है कि कहीं न कहीं से रुपये अवश्य प्राप्त कर लेगा। सुअवसर आया देख उसने अपनी दुष्ट प्रकृत्यानुसार एक तरकीब खूब सोच विचारकर निकाली और दीनदयाल से बोला—"महाशय जी ! आज आप कर्ज लेने के विचार से पहले पहल मेरे द्वार पर आये हैं अतएव मैं इतने अल्प समय के लिये रुपयों का सूद लेना उचित नहीं समझता; परन्तु इसके साथ आपको भी मेरी एक शर्त माननी पड़ेगी। यदि आप एक हफ्ते में मेरे रुपये वापस न करदेंगे तो मैं अपने हाथ से आपके शरीर के किसी भी भाग से एक सेर मांस काट कर निकाल लूँगा।"

दीनदयाल ने रुपया लौटाने का पहले ही से इतना थोड़ा समय रक्खा था कि उसके अन्तरगत उसका लौटाया जाना कठिन था। अब तो मारवाड़ी ने तीन दिनों की अवधि और कम कर दी। परन्तु हुण्डी सकरने की कोई दूसरी सूरत न देख दीनदयाल को लाचार होकर मारवाड़ी के शर्तनामे पर हस्ताक्षर कर रुपये लेने पड़े। घर पहुँच कर उन रुपयों से उसने हुण्डी की रकम अदा करदी। लेनदार रुपये पाकर लौट गये और ईश्वर की कृपा से उसकी धाक जस की तस बनी रही।

दीनदयाल को किसी कार्य्य विशेष के कारण एक दूसरे नगर को जाना पड़ा। जब लौट कर घर आया तो उसको मारवाड़ी के रुपये चुकाने की बात याद आई। इतने अल्प

समय में उसके पास पाँच लाख रुपये इकत्रित नहीं हुये थे, फिर भी इधर उधर से संग्रह कर सूद के सहित रुपये लेकर उसके पास गया। मारवाड़ी तो एक सेर मांस का भूखा था, इधर शर्तनामे की तिथि भी बीत चुकी थी इसलिये रुपया लेने से साफ इनकार कर दिया और शर्तनामे के अनुसार उससे एक सेर मांस माँगा। दीनदयाल बाहर जाकर अस्वस्थ हो गया था अब मांस देने की चिन्ता से और भी बीमार हो गया। बीमारी के बहाने से टाल मटोल में दो तीन दिन का समय और निकल गया।

जब महाजन ने देखा कि इस प्रकार काम बनना कठिन है तो वह शर्तनामे को पेशकर अदालत से एक सेर मांस पाने के लिये दादख्वाह हुआ। दीनदयाल तलब किया गया। वह लाचार होकर बीमारी की हालत में पालकी में बैठकर न्यायालय में उपस्थित हुआ।

मुकदमा पेश हुआ, काजी ने दीनदयाल से पूछा—"क्या इस शर्तनामे के मुताबिक तुमने इस मारवाड़ी से एक हफ्ते की मुद्दत पर पाँच लाख रुपये उधार लिये हैं? शर्तनामे में लिखा है" कि यदि निर्धारित समय के अन्तर्गत रुपये न चुका सकोगे तो मारवाड़ी के इच्छानुसार तुम्हें अपने शरीर के किसी भाग का एक सेर मांस देना पड़ेगा। वह इतना विख्यात व्योपारी होकर झूठ नहीं कहना चाहता था। इसलिये बोला—"काजी साहब! शर्तनामे की बात सही है, उस समय मुझसे और मारवाड़ी से ऐसी ही शर्तें तयँ पाई थीं, परन्तु इस समय मैं मय सूद के इसका रुपया अदा करने को प्रस्तुत हूँ।

पहले भी एक बार नौकर के हाथ रुपया सूद के सहित भेज दिया था, परन्तु यह रुपया लेने से इन्कार कर मेरे से एक सेर मांस माँगता है।। सरकार इस पर भलीभाँति विचारकर उचित न्याय करें।"

साहूकार और दीनदयाल के अन्तरगत तय पाई शर्तों को सुनकर काजी बोला—"इसका न्याय अब हमारे बूते का नहीं है, न्याय तो तुम्हारा शर्तनामा ही कर रहा है। मैं हुक्म देता हूँ कि यह मारवाड़ी इसी समय आपके शरीर का एक सेर मांस अपनी इच्छानुसार काटकर ले लेवे।" दीनदयाल के रहे सहे होस हवास भी जाते रहे। बड़ा चिन्तित हुआ अन्त में कुछ सोच समझकर काजी से बोला—"मैं इस मामले को शाहनशाह के पास ले जाऊँगा, कृपया आप अपने आर्डर को तब तक के लिये मंसूख रक्खें जब तक कि वहाँसे कुछ फैसला न हो जावे।" काजी को लाचार होकर उसकी अर्जी मंजूर करनी पड़ी। उस मारवाड़ी को एक महीने की मुद्दत देकर काजी ने अपना काम समाप्त किया।

दीनदयाल दूसरे ही दिन बादशाह की अदालत में समय से पेस्तर जा पहुँचा, और बादशाह को अदब से सलाम कर उदास मुख एक तरफ आसन लगाकर बैठ गया। उस समय बादशाह अपने फौज का प्रबन्ध कर रहे थे। जब वह काम शेष हो गया तो उनकी दृष्टि दीनदयाल पर पड़ी। उसका चेहरा उतरा हुआ देखकर बादशाहने उसके उदासी का कारण पूछा। दीनदयाल अपने और मारवाड़ी के बीच जो कुछ मामला चल रहा था ब्योरेवार कहकर समझाया। यह एक

नवीन घटना थी, सुनकर बादशाह दंग हो गया। वह इस सौदागर को भलीभाँति जानता था, वह दिल्ली नगर का बहुत प्राचीन व्योपारी था। उसने अनेक औसरों पर अपना तन धन लगाकर सरकारी सहायता की थी जिस कारण बादशाह को उसकी दशा पर बड़ी तर्श आई और उसकी रक्षा का भार स्वयं अपने शिर लिया। तत्क्षण साहूकार को घर जाने की आज्ञा देकर आप दीवानखाने में पहुँचे। बीरबल स्वागत के लिये अपने आसन से उठ खड़ा हुआ और बादशाह उसकी बगल में एक कुर्सी पर जा बैठे। दोनों में अन्तरंग गोष्टी होने लगी।

बादशाह बीरबल को दीनदयाल का सारा कच्चा चिट्ठा सुना कर बोला-"बीरबल! इस साहूकार का न्याय ऐसो युक्ति से करो, जिसमें उसकी जान बचे और अन्याय भी न हो, मैं इसकी दैन्य दशा पर बड़ा चिन्तित हो रहा हूँ। बीरबल बोला-"पृथ्वीनाथ! चिन्ता करने की कोई बात नहीं है आपकी आज्ञा का यथोचित पालन करूँगा। उधर वे बीरबल को समझा कर अपनी सभा में पहुँचे इधर बीरबल उसके छुटकारे की तरकीब सोचने लगा। एकाएक उसका चेहरा प्रफुल्लित हो गया और फिर अपने कार्य्य में दत्तचित्त हुआ।

उधर केशवदास मारवाड़ी को भी नींद नहीं आती थी, वह तो दीनदयाल के पीछे हाथ धोकर पड़ा हुआ था पाँच छः दिनों की मुहलत देकर फिर बादशाह की अदालत में दावा दायर किया-"शर्त के मुवाफिक अदालत दीनदयाल से उसके शरीर का एक सेर मांस दिलवा दे।" बीरबल इस अभियोग

का न्यायाधीश बनाया गया। वह बादशाह की आज्ञा स्वीकार करते हुए बोला—"पृथ्वीनाथ! मैं यथाशीघ्र इसका न्याय करने का प्रयत्न करूँगा।"

वह मारवाड़ी को एक ठौर बैठाकर दीनदयाल को बुलाने के लिये एक कर्मचारी को भेजा। जब आया तो उसे मारवाड़ी के सामने खड़ा कराकर बीरबल ने पूछा—"क्या तुम्हें अपना रुपया लेना मंजूर नहीं है? मारवाड़ी रुपया लेना नहीं चाहता था इससे साफ इनकार कर दिया। तब बीरबलने कहा—"मुझे काजी का फैसला शर्तनामे के बमूजिब स्वीकार है अतः मारवाड़ी को हुक्म देता हूँ कि सौदागर के शरीर से एक सेर माँस का टुकड़ा अपने हाथ से निकाल ले; परन्तु ध्यान रहे; अगर टुकड़ा जरा भी छोटा बड़ा हुआ कि वह सकुटुंब जान से मारा जावेगा। घर बार तथा उसका सारा कोष उसी अपराध के कारण जब्त कर लिया जायगा।"

इस विज्ञप्ति से मारवाड़ी दहल गया और उससे कुछ उत्तर देते न बना। बीरबल उसे चुप देखकर जवाब के लिये बारबार उत्तेजित करने लगा। तब वह बोला—"दीवान जी! मुझे माँस लेने की खाहिश नहीं है, मैं केवल पाँच लाख रुपये लेकर अपने मामले को उठा लेना चाहता हूँ, सूद भी छोड़े देता हूँ।" बीरबल ने कहा—"यह हरगिज नहीं हो सकता, तुम्हें मांस का टुकड़ा ही लेना पड़ेगा, क्योंकि पहले तूँ साहूकार से रुपये लेना नामंजूर कर चुका है।" यदि तूँ शर्तनामे के अनुसार माँस न लेगा तो राजाज्ञा भंग करने के अपराध में तुझे सात लाख रुपये जुरबाने लगेंगे। इस बार

खूब सोच समझ कर उत्तर दो, दोनों बातों में किसे मंजूर करते हो और किसे नामंजूर? मारवाड़ी गरदन नीची करके बोला—"दीवान जी! मुझे कुछ भी नहीं चाहिये।"

बीरबल ने कहा—"जो तू अब कुछ भी नहीं लेना चाहता तो तुझे पहले की राजाज्ञा न मानने के अपराध में सात लाख रुपये दण्ड देने पड़ेंगे, और दूसरा अपराध यह है कि तू ने दीनदयाल को कष्ट पहुँचाने की नीयत से उसके शरीर का मांस काट लेने की शर्त करायी थी, इस कारण चार साल की सजा और भुगतनी पड़ेगी।" मारवाड़ी का होश ठिकाने न रहा। राजदूत बीरबल की आज्ञा से उसे पकड़ लिये और वह उसी क्षण जेलखाने में बन्द कर दिया गया। मारवाड़ी के घर वालों से सात लाख रुपये वसूल किये गये। बीरबल के इस न्याय को सुनकर बादशाह बहुत प्रसन्न हुआ और बीरबल के बुद्धि की प्रशंसा की।

चूँकि दीनदयाल नेकनीयती कर पहले ही उसके पास रुपये भेज दिये था, इसलिये उसकी दूकान की प्रतिष्ठा रखने के लिये बादशाह ने उसको पारितोषिक देकर विदा किया। जो रुपये मारवाड़ी से दंड में लिये गये थे वह बीरबल को मिले।

न स्त्री हैं न पुरुष

एक दिन बादशाह और उसके खोजे से आपस में कुछ बातें हो रही थीं, इसी बीच बीरबल की बात आई। तब

खोजे ने बीरबल की बड़ी दुर्निन्द की। यह बादशाह का मुँहलगा खोजा था इसलिये खुलेआम उसकी अवहेलना करना उचित न समझकर प्रमाणों द्वारा मुहतोड़ उत्तर देना शुरू किया। वह बोले-"तुम स्वयं विचारकर देखो कि मेरे दर्बार में बीरबल सा हाजिर जवाब एक आदमी भी नहीं है।" खोजा बादशाह के मुख से बीरबल की प्रशंसा सुनकर मनही-मन भड़क उठा और बोला-"हुजूर यदि आप बीरबलको हाजिर जवाब बतलाते हैं तो वह मेरे तीन सवालों का जवाब दे। यदि ठीक २ उत्तर दे देगा तो मैं भी उसे श्रेष्ठ मान लूँगा। बादशाहने उससे सवाल पूछने को कहा। खोजा बोला-"(१) आकाश में तारों की कितनी संख्या है (२) दुनियाँ में स्त्री पुरुष अलग २ कितने हैं। (३) धरती अपना बीच कहाँ रखती है।"

बादशाह खोजे को अपने पास बैठाकर बीरबल को बुलवाने के लिये सिपाही भेजा। जब वह आया तो उससे खोजे के तीनों सवालों का उत्तर माँगा। बीरबल चुपके बाजार से एक बड़ा मेढ़ा खरीद लाया और उसे बादशाह के सामने खड़ा कर बोला-"खोजा साहब! इसके पीठ के बालों की गणना कर लेवें। इसके शरीर में जितने बाल हैं उतने ही आकाश में तारे भी हैं। फिर इधर उधर गोड़ से पड़ताल कर एक जगह जमीन में खूटी गाड़ कर बोला-"पृथ्वीनाथ! पृथ्वी का मध्य यही है, यदि खोजे को यकीन न हो तो स्वयं नाप ले, जब पहले और तीसरे सवालों के बाद दूसरे की बारी आई तो बीरबल हँसा पड़ा परन्तु

अपना असली भाव छिपाकर उत्तर दिया—"गरीब परवर स्त्री पुरुषों की संख्या तो इन खोजों के कारण बिगड़ गई है क्योंकि ये न तो स्त्रियों की संख्या में आते हैं और न पुरुषों के ही। यदि सब खोजे जान से मरवा दिये जायँ तो ठीक-ठीक गणना निकल सकती है।"

खोजे का मुँह छोटा होगया। उसके मुँह से एक बात भी न निकली। बादशाह ने बहुत कुछ उसे भला बुरा सुनाया। बिचारा लाज का मारा, दुम दबाकर जनानखाने में चला गया। बादशाह ने बीरबल को पारितोषिक देकर बिदा किया।

चार मूर्ख

एक दिन मनोरञ्जन के समय बादशाह के मनमें यह बात आई—"संसार में मूर्खों की संख्या तो अमित है; परन्तु मैं ऐसे चार मूर्ख देखना चाहता हूँ जिनकी जोड़ के दूसरे न हों।" उसने बीरबल से कहा—"बीरबल! चार मूर्ख इस ढंग के तलाश करो कि जिनकी जोड़ के दूसरे न मिलें।" वह बादशाह की आज्ञा मानकर नगर से बाहर निकला। ढूढ़ने वालों को क्या नहीं मिल सकता, केवल सच्ची लगन होनी चाहिये। कुछ दूर जाकर बीरबल को एक आदमी दिखलाई पड़ा जो थाली में पान का एक जोड़ा बीड़ा और मिठाई लिये हुये बड़े उत्साह से नगर की तरफ जल्दी २ भागा जा रहा था।

बीरबल ने उस आदमी से पूछा—"क्यों साहब! यह सब सामान कहाँ लिये जा रहे हो, जो आपका पैर खुशिहाली के कारण जमीन पर नहीं पड़ता, आपके मर्म को जानने की मुझे बड़ी इच्छा है अतएव थोड़ा कष्ट कर बतलाते जाइये।" उस आदमी ने पहले तो इस ख्याल से कुछ हीला हवाली किया कि कहीं उचित समय पर पहुँचने में देर न हो जाय। परन्तु जब बीरबल ने उसे छेड़कर कई बार पूछा तो वह मटक कर बोला–"यद्यपि मुझे विलम्ब हो रहा है परन्तु आपके इतना आग्रह करने पर बतला देना भी जरूरी है। "मेरी औरत ने एक दूसरा खसम कर लिया है उससे उसे लड़का पैदा हुआ है, आज बरही है। मैं उसीका बधावा लिये हुए न्योते में जा रहा हूँ। बीरबल ने उसे अपना नाम बतला कर रोक लिया और बोला "तुझे मेरे साथ बादशाह के पास चलना पड़ेगा, जब मैं छुट्टी दूँगा तब जाना। वह बीरबल का नाम सुनकर डर गया और लाचार होकर उसके साथ हो लिया। वह उसको साथ में लेकर आगे बढ़ा, दैवयोग से रास्ते में एक घोड़ी सवार मिला। वह आप तो घोड़ी पर सवार था परन्तु अपने सिर पर घास का बण्डल ढो रहा था। बीरबल ने उससे पूछा–"क्यों भाई! यह क्या मामला है, आप अपने सिर का बोझ घोड़ी पर लादकर क्यों नहीं ले जाते?" उसने कहा–"गरीबपरवर! इसका कारण यह है कि मेरी घोड़ी गर्भिणी है ऐसी दशा में उसपर इतना बोझ नहीं लादा जा सकता, मुझे ले जा रही है यही क्या कम गनीमत है।

बीरबल इस घोड़ी सवार को भी अपने साथ ले लिया और दोनों को लिये दिये बादशाहके पास पहुँचा। तब बीरबल बोला—"पृथिवीनाथ! चारों मूर्ख आपके सामने उपस्थित हैं।" बादशाह तो दो को ही देख रहा था अतएव बोला-"तीसरा मूर्ख कहाँ है?" बीरबल ने कहा-"तीसरा नम्बर हुजूर का है जो आपको ऐसे २ मूर्खों के देखने की इच्छा होती है। चौथा मूर्ख मैं हूँ जो उन्हें ढूढ़कर आपके पास लाता हूँ।" बादशाह को बीरबल के ऐसे उत्तर से बड़ी प्रसन्नता हुई और जब उन्हें उनकी मूर्खता का परिचय मिला तो खिलखिलाकर हँस पड़े।

बीरबल की चतुरता

एक बार आश्विन के महीने में बीरबल बीमार पड़ा जिस कारण महीनों दर्बार में नहीं आया। एक दिन बादशाह को उसे देखने की इच्छा हुई। वह दो कर्म चारियों के साथ उसके मकान पर गया। बीरबल बादशाह को देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसका कुम्हिलाया हुआ हृदय-कमल कुछ खिल सा गया। ये आपस में बड़ी देर तक वार्तालाप करते रहे न बीरबल बादशाह को छोड़ना चाहता था और न बादशाह बीरबल को ही, बातचीत में कई घंटों का समय व्यतीत हो गया। इसी बीच बीरबल को पाखाना मालूम हुआ। ऐसी विवशता के कारण वह बादशाह से कुछ देर की मुहलत लेकर बगल की एक कोठरी में

पाखाना फिरने गया। इस बीच बादशाह के जी में बीरबल के बुद्धि-परीक्षा की बात समाई, उसने ख्याल किया कि बीरबल महीनों से बीमार है; शायद उसकी चतुरता में कुछ कमी पड़ गयी हो। जानना चाहिये कि अब यह कितना चतुर रह गया है। नौकरों द्वारा उसके पलँग के चारों पायों तले चार कागज के टुकड़े रखवा कर खामोश रहा। थोड़ी देर बाद बीरबल पाखाने से लौटकर आया और अपनी पलँग पर लेट रहा। बादशाह उसकी परीक्षा के अभिप्राय से इधर उधर की बातें छेड़कर उसे भुलावा देने लगा। बीरबल एक तरफ बादशाह की बातें सुनता जाता था दूसरी तरफ किसी चीज की खोज में व्यस्त था। वह ऊपर नीचे इस प्रकार से देख रहा था मानों किसी चीज का अनुसंधान कर रहा हो। बादशाह ने उसकी उसक पुसक का कारण पूछा। बीरबल ने कहा-"पृथिवीनाथ! जान पड़ता है कि यहाँ पर कुछ रक्को बदल हो गया है? वे अनजान सा मुँह बनाकर बोले—"क्या रक्को बदल हुआ है?" बीरबल ने उत्तर दिया-मुझे मालूम होता है कि या तो इस मकान की दीवाल कागज भर नीचे को दब गई है वा मेरी पलँग एक कागज ऊँची हो गई है। बादशाह ने कहा-"हाँ हाँ अक्सर देखा जाता है कि बीमारी की दशा में निर्बलता के कारण लोगोंके दिमागमें तुम्हारे समान ही फितूर आ जाता है परन्तु दरअसल में वह बात ठीक नहीं रहती।" बीरबल ने उत्तर दिया-"पृथिवीनाथ! ऐसा नहीं हो सकता, मैं बीमार हूँ तो मेरी बुद्धि बीमार नहीं है।" बादशाह बीरबल की

पहले ही सी चतुरता देखकर बड़ा प्रसन्न हुए और उससे असली भेद प्रकट कर दिया।

—०:※※:०—

अपनी मनमानी दूँगा

दिल्ली का एक नागरिक बड़ा सूम था। वह अपने परिश्रम और कृपणता के कारण रत्नों का एक बड़ा कोष संग्रह किये हुए था। वह उन रत्नों को एक ऐसी साधारण सन्दूक में छिपाकर रक्खे हुए था कि जिससे देखने वाले को उसमें रत्न होने का भ्रम न हो सके। उसका घर भी साधारण गृहस्थों के समान कच्चा और टूटा फूटा हुआ था। भला ऐसे भग्न मकान में रत्न होने की कौन संभावना कर सकता था? दैवात एक दिन मध्य रात्रि में उसके घर में आग लगी। कंजूस उस आग को बुझाने की कोई तरकीब न देख कर कुछ साधारण वस्त्रों को लेकर घर से बाहर निकल आया। ये वस्त्र उसके रोजमर्रा के काम आने वाले थे। घर जलने की चिन्ता में विचारा कंजूस छाती पीट पीटकर रुदन करने लगा। उसके रोने का शब्द सुन और आग की लपट देखकर उसके अड़ोस पड़ोस के बहुतेरे आदमी इकत्र हो गये। उन आदमियोंमें एक लोहार भी था। लोहारने कंजूस को फटकारते हुए कहा—"इस साधारण झोपड़े के लिये तूँ इतना रुदन क्यों कर रहा है, इसमें तेरा कौन सा बड़ा नुकसान हो जायगा?" सूम बोला—"भाई तू झोपड़ा जलता देखता है और मैं अपने रत्नों को जलते देख रहा हूँ; फिर तू

ही बता कि क्यों कर न रोकूँ।" लोहार ने कहा–"वह धन कहाँ और किस चीज़ में रक्खा हुआ है। तब सूमड़ा उँगली से बगल की एक कोठरी दिखलाते हुए बोला–"उसी कोठरी में एक काठ की पुरानी सन्दूक रक्खी हुई है जिसमें सात लाख के जवाहरात बन्द हैं।" लोहार ने कहा–"यदि मैं उन जवाहरातों को बाहर निकाल लाऊँगा तो अपने मन मानी तुझे दूँगा और बाकी मैं लूँगा।" सर्वस जाता देख कंजूस ने उसकी बात मान ली। लुहार अग्नि से बचने की तरकीब जानता था इसलिये उस जलती हुई आग में साहस कर कूद पड़ा और कोठरी में पहुँच कर उस सन्दूक को बाहर निकाल लाया। इस प्रकार पिटारी को अपनी बगल में रखकर अग्नि-काण्ड देखने लगा।

थोड़ी देर बाद जब अग्नि का वेग घट गया और लोगों के हृदय में शान्ति आई तो पिटारी का मामला उपस्थित हुआ। जिस वक्त लोहार और कंजूस में ऐसी शर्तें तय पाई थीं उस समय लोहार ने एक और चालाकी की थी। उस जगह के दो मनुष्यों को अपना गवाह बना लिया था। गवाहों के सामने ही वह पिटारी खोली गई। पिटारी खुलते ही जवाहरातों की चमक बाहर तक फैल गई। जैसे धन देखकर गँवारों की दशा होती है वही दशा लुहार की भी हुई। उस अमुल्य [illegible]त्नों की ढेरी को देखकर उसका मन फिर गया। वह [illegible]ी का सारा धन तो आप ले लिया और उस खाली [illegible] को विचारे कंजूस के हवाले किया। कंजूस लुहार [illegible]ा अनीति देखकर बहुत चकराया और गिड़गिड़ा

कर उससे कहने लगा–"भाई आधा धन मुझे दो और बाकी आधा आप ले लो, इसमें मेरी राजी है।" लुहार डाटकर बोला–"क्या पहले मेरे तेरे बीच ऐसी शर्तें पक्की नहीं हुई थीं कि मैं तुझे अपनी मनमानी दूँगा! अब चीं चप्पड़ क्यों करता है?"

दोनों में बाता विवाद होते होते सम्पूर्ण रात्रि व्यतीत होगई और सूर्य्योदय का समय आया। सूमड़ा आधा रत्नों को पानेके लिये बहुतेरा प्रयास किया परन्तु लुहार उसकी एक भी सुनने को तय्यार नहीं था सूमड़े ने लाचार होकर बादशाह के पास अर्जी गुजारी। मामला पेचीला देखकर बादशाहने बीरबलको बुलाया और उनका सारा हाल सुनाकर उसे न्याय करने की आज्ञा दी। बादशाह की आज्ञा सिरोधार्य कर बीरबल ने उन दोनों से अलग अलग बयान लिया, और उन बयानों को पृथक पृथक दो कागजों पर लिखकर उस पर उनके हस्ताक्षर कराये। फिर उन दोनों से बारी बारी शाक्षी लेकर प्रमाणित कराया कि उनका कहना बिल्कुल सत्य और उन्हें मान्य है। तब बीरबल ने पहले पहल लुहार से पूछा–"तुमको इसमें से क्या क्या लेना मंजूर है?" लोहार बोला–"मेरी इच्छा जवाहरात लेने की है।" बीरबल ने तुरत निर्णय कर दिया—"तू जवाहरात इस कंजूस को दे दे और स्वयं खाली पिटारी ले ले।" यह निर्णय सुनकर लोहार ने शर्तनामें की तरफ इशारा किया। बीरबल बोला–"तूँ पहले ही अपनी शर्तों में लिख चुका है–"मैं अपनी मन मानी दूँगा।" तो तेरे मन में जवाहरात लेने का है अतएव तेरी

जबान से ही निर्णय हो गया। अब जवाहरातों को इसे देकर आप खाली पिटारी लेकर चला जा। इस प्रकार लुहार के हाथ खाली पिटारी लगी और कंजूस सानन्द जवाहरातों को लेकर घर लौटा।

बीरबल और मदिरा

दरबार के समय में बादशाह को गप्प लड़ाने का मौका नहीं मिलता था इसकारण जनाने महल में ही गप लड़ा लिया करता था और इसी समय में आपस की गोष्ठी भी हो जाया करती थी। यह बात सब पर विदित थी जिस कारण बीरबल को जनाने महल में जाने की कोई मना ही नहीं थी। जब वार्तालाप करके बादशाह संतुष्ट हो जाता तो एक ऐसी नशीली चीज का सेवन करलेता जिससे कुछ समय पश्चात उसका चेहरा बदल जाता और बातें भी और की तौर करने लगता था। बीरबल नित्य बादशाह की ऐसी दशा देखा करता; परन्तु उसकी समझ में न आता कि दरअसल वह किस वस्तु का सेवन करता है। उस चीज के सेवन से बादशाह की स्मरणशक्ति बदल जाती। ऐसी दशा में बादशाह अनेक भूलें भी कर डालता था।

एक दिन बीरबल के मन में उस वस्तु की जानकारी प्राप्त करने की सूझी। वह बीमारी का बहाना कर कई दिनों तक दरबार में नहीं आया। बादशाह ने एक दो दिन तो यह समझ कर कि साधारण बीमारी होगी, उसकी कुछ

खोज खबर न ली। परन्तु जब सोचते सोचते तीन चार दिनों का अरसा बीता और वह नहीं आया तो उन्हें बीरबल को देखने की इच्छा हुई। वे अपने चन्द सिपाहियों के साथ बीरबल के मकान पर गये। जब उसे बादशाहके आगमन की सूचना मिली तो झट दूसरे दरवाजे से होकर बाहर निकल गया और लोगों की आँख बचाकर सीधे दरबार में जा पहुँचा। गुप्त मार्ग से जनाने महल में पहुँचकर उस नशीली चीज की तलाश करने लगा। जब बाहर उसका सुराख न लगा तो वक्स को तालीके फिराक में पड़ा, दैवात ताली मिल गई, वह एक कोने में अच्छी तरह छिपाकर रक्खी हुई थी। बक्स का ताला खोलकर उसके अन्दर की चीजों को देखा। एक तरफ कोने में एक बोतल रक्खी हुई मिली, उसे चुपके से बाहर निकाल कर अपनी शाल के अन्दर छिपा लिया और द्रुत वेग से घर की तरफ राही हुआ।

बादशाह को उसके घर वालों से पूछने पर विदित हुआ "थोड़ी देर हुआ दरबार की तरफ गये हैं।" यह सुनकर उसको कुछ चिन्ता सी हुई और बीरबल के जाने का कारण जानने के लिये व्याकुल हो उठा। मनमें शोचा—"बिना किसी अनिवार्य कारणके बीरबल ऐसी दशामें नहीं जा सकता था। वह अपने साथियों सहित लौटने लगा। अभी दो चार सीढ़ी ही उतर कर गया था कि सामने से बीरबल आता हुआ दिखाई पड़ा। बीरबल मनहीं मन सोचता हुआ आरहा था कि बादशाह के पूछने पर क्या उत्तर दूँगा। इसी बीच बादशाह की दृष्टि उसपर जा पड़ी और वह वहीं रुक गया। पास

पहुँचकर बादशाह ने पूछा-"तुम इस समय महल की तर
क्यों गये थे और तुम्हारे बगलमें यह क्या चीज है।" बीरब
ने कहा-"कुछ तो नहीं।" फिर भी बादशाह का शक ब
ही रहा क्योंकि उसकी काख तले चदरे के भीतर से कोई ची
दिखाई पड़ रही थी। बादशाह ने दुबारा पूछा-"बीरबल !
झूठा क्यों बोल रहा है, तुम्हारी काख के भीरत कोई ची
अवश्य छिपी हुई है।" बीरबल ने कहा-"हाँ वह तोता है।"
बीरबल के ऐसे रूखे उत्तर से बादशाह को सन्तोष नहीं हुआ
और क्रोधित होकर बोला-"तुम्हें आज इतना मजाक क्यों
सूझी है।" बीरबल अविलम्ब बोला-"पृथ्वीनाथ ! अश्व है।"
बादशाह बड़ा हैरान हुआ और भौंह चढ़ाकर कहा-"मैं देखता
हूँ कि आज तुम्हारा दिमाग आसमान पर चढ़ता जा रहा
है।" बीरबल ने कहा-"नहीं नहीं हाथी है।" बादशाह ने
कहा-"क्या तुमने भाँग तो नहीं खाई है, ठीक ठीक समझ कर
उत्तर दो।" बीरबल कब चुप रहने वाला था बोला-"गधा
है, गधा।" बारंबार बीरबल के टालमटोल की बातें सुनकर
बादशाह बहुत ही चिढ़ गया और पूछा-"क्या आज तुमपर
मृत्यु तो नहीं सवार हो गई है, काँख में की छिपी वस्तु
का नाम ठीक ठीक क्यों नहीं बतलाते हो ?" इस बार बीरबल
ने साफ बतला दिया—हुजूर ! शराब है !" फिर अपनी बगल
से बोतल निकाल कर बादशाह के हवाले किया। बीरबल
ऐसे धर्म परायण ब्राह्मण के पास शराब की बोतल देखकर
बादशाह को आश्चर्य हुआ और उसका कोप कुछ शान्त हो
गया। वह बीरबल को अपने साथ जनाने महल में लिवा

ले गया। वहाँ जाकर देखा तो उसके कमरे की सारी चीजें इधर उधर बिखरी पड़ी हैं, सन्दूक का ताला भी खुला हुआ है। बादशाह तुरत ताड़ गया कि इसी को चुराने के लिये बीरबल अकेले में यहाँ आया था, परन्तु फिर भी इतने ही से उसे शान्ति न मिली। उसने विचारा कि यह तो हुई यहाँ की बात, रास्ते में बीरबल अंटसंट क्यों बतलाता था? तब वह बोला–"बीरबल! मालूम होता है आज तुम कुछ नशा खा गये हो; नहीं तो ऐसी ऊटपटांग बातें कभी न करते। तुम्हारी काँख तले शराब की बोतल मौजूद थी फिर भी तुमने उसे बैल, गदहा आदि आदि कैसे बतलाया।"

बीरबल को अपना राज बादशाह पर खोलने का मौका मिल गया और उसे इस ढंग से प्रगट करना प्रारम्भ किया—"पृथिवीनाथ! न तो मैं नशा खाये हूँ और न मेरी बुद्धि ही भ्रष्ट हुई है, मैंने जो कुछ भी कहा है वह मेरे काँख तले थी।" –"अच्छा हुजूर सुनिये–"पहले पहल मैंने आप से बतलाया था कि कुछ भी नहीं है, सो मद्यपान के प्रथम प्याले की बात थी, उस समय बात करनेवाला कुछ भी नहीं देखता। दूसरी बार मेरी जबान पर तोते का नाम आपने सुना होगा। इसका अभिप्राय यह था कि दूसरा प्याला पीलेनेपर मनुष्य तोते के समान बकने लगता है। फिर मैंने घोड़े का नाम लिया था। उसके मानी यह था कि तीसरा प्याला पी चुकने पर मद्यपी घोड़े के समान हिनहिनाना प्रारम्भ कर देता है। चौथी बार हाथी बतलाया था। सो इस कारण कि चौथे प्याले के सेवन के पश्चात् मद्यपी मस्त

हाथी की तरह झूमना प्रारम्भ करता है। पाँचवीं बार गधा बना देता है। छठवें में मद्यपी नशे में गुप्त हो जाता है, यहाँ तक कि उसको अपने शरीर तक की भी सुधि बुध नहीं रहती। यही कारण था कि अन्त में मैंने शराब का नाम लिया था।" एक बोतल में केवल छः प्याला शराब रहती है। प्रत्येक प्याला सेवन के पश्चात् मनुष्य की पृथक पृथक दशाएँ हो जाती हैं।

बादशाह बीरबल की इन बातों को बड़े ध्यान पूर्वक सुन रहा था कारण कि उसे इस बात का पहले ही से विश्वास था कि बीरबल जो कुछ भी कहे वा करेगा उसके अच्छे के लिये ही। बीरबल का अभिप्राय भी बादशाह का मद्य पान छुड़ाना ही था। उस की इस शुभ कांक्षा से बादशाह बड़ा हर्षित हुआ और उसे उचित पुरस्कार देकर बिदा किया।

शिर के बाल मुड़वा दूँगा।

दिल्ली नगर में एक बड़े सुप्रतिष्ठित और विद्वान ब्राह्मण रहते थे, उनके श्रेष्ठाचरण से दरबार में उनका बड़ा सम्मान था। पंडित जी का स्वभाव था कि वे बिना समझे बूझे किसी कार्य्य में हाथ नहीं डालते थे और जिस बात को मुख से एक बार कह देते उसको प्राणप्रण से पालन करते थे। उनसे उनका भृत्य समुदाय सदा भयभीत रहता। एक दिन ऐसी घटना घटी, जब उक्त पंडित जी चौके में

में बैठकर भोजन कर रहे थे। उनकी थाली में परोसे खाद्य पदार्थ में एक बाल निकला जिसकारण पंडितजी को बड़ा रंज हुआ और अपनी स्त्रीको संबोधित कर बोले—"देखो! आज तो मैं तुम्हारी पहली चूकके कारण तुम्हें क्षमा करता हूँ परन्तु फिर यदि ऐसी असावधानी करोगी (खाद्य पदार्थ में बाल निकलेगा) तो तुम्हारे शिर के बाल मूड़ लूँगा।" "हरि इच्छा भावी बलवाना।" यद्यपि बिचारी स्त्री अपने स्वामी का जिद्दी स्वभाव समझ कर बराबर भयभीत रहा करती थी और भोजन बनाने वा परोसने के समय अपने बालों को खूब सम्हार कर बाँधे रहती थी, परन्तु होनी को कौन रोक सकता है, वह तो होकर ही रहती है। कुछ दिनोपरान्त एक दिन जब युक्त पंडितजी फिर भोजन करने बैठे तो उनकी खाद्यसामग्री में एक बाल निकला, पंडितजी बहुत नाराज हुए और अपने स्त्री का बाल मुड़ा देने के लिये नाई को बुलवाया। अपने स्वामी को नितान्त क्रोधित देखकर स्त्री ने भीतर से किवाड़ बन्द कर लिया। पंडित जी ने हजार हूँ डाट फटकार सुनाई परन्तु स्त्री ने किवाड़ नहीं ही खोला। इतना सब होजाने पर भी पंडित जी अपनी जिद्द पर तुले ही रहे। स्त्री ने सोचा "अब इस प्रकार काम चलना कठिन दीख पड़ता है, कोई उपाय तत्काल करनी चाहिये। उसने एक आदमी को पीहर भेजकर अपने भाइयों को सहायता के लिये बुलवाया।

उसके चार भाई थे, अपनी बहिन को इस प्रकार अपमानित होते सुन उन्हें अपने बहनोई के हठवादिता पर बड़ा खेद हुआ और उसके उद्धार का उपाय सोचने लगे। इतने में उसके बड़े

भाई को बीरबल से पुराना परिचय होने का स्मरण हो आया। वह तत्क्षण बहन के उद्धार का उपाय पूछने के लिये बीरबल के घर पहुँचा। उस समय बीरबल चारपाई पर पड़े २ पुस्तक पढ़ रहा था, अपने मित्र का सन्देशा सुन उसे पास बुलाकर उसका कुशल समाचार पूछा। वह अपने बहिन की दुर्दशा का आद्योपान्त कारण बतलाकर बोला-"मैं आपसे अपने बहिन के उद्धार की तरकीब बूझने आया हूँ। मेरी मदद कीजिये।"

बीरबल बोला—"तुम चारो भाई नंगे सिर होकर अपने बहनोई के पास इस ढंग से जावो मानो कोई मर गया हो; तब तक मैं भी आ पहुँचता हूँ। उधर पंडितजी स्त्री के द्वार न खोलने पर क्रुद्ध होकर नौकरों से कहा-"अभी बढ़ई को बुला लाकर दरवाजे को तोड़ डालो। इसी बीच वे चारो भी नंगधड़ंग सिर खोले आ पहुँचे। इनके आनेके थोड़ी देर पश्चात बीरबल भी शवदाह का सब सामान लिये हुए आया और पंडितजी के पेन द्वार पर टिकठी बाँधने लगा। उधर स्त्री के भाइयों ने पंडितजी को जबरन चारोतरफ से कपड़े से ढक कर कफनियाना प्रारम्भ किया, जब पंडितजी ने चींचप्पड़ मचाया तो वे क्रोधित होकर बोले-"खबरदार! चुपचाप पड़े रहो, बिना पहले तुम्हें कफनियाये किसकी मजाल है जो मेरी बहन को हाथ लगाये।" वे पंडितजी को बाँध कर बीरबल के पास ले गये। इस नवीन कौतूहल को देखने के लिये वहाँ पर आदमियों की जमघट सी लग रही थी। अपने पड़ोसियों के सामने अपनी ऐसी दुर्गति देख पंडितजी का शिर लज्जा के बोझ से दब गया और अपनी रहाई के लिये चारो सालों से अनुनय

विनय करने लगे। उसकी स्त्री समीप की कोठरी से छिपकर सारी दुर्दशाएँ देख रही थी, पति को भाइयों से गिड़गिड़ाते देख उसे दया आ गई और उसका पवित्र हृदय धर्म-सागर में गोते मारने लगा। स्त्री ने कहा–"चाहे जो हो, मैं पति की ऐसी दुर्दशा अपनी आँखों नहीं देख सकती। वह मेरा देवता है, उसके कोप करने से मेरा सर्वनाश हो जायगा। पतिकी हँसी कराकर कुलटाएँ भलेही प्रसन्न हो सकती हैं; परन्तु पतिपरायणा नहीं। वह कपाट खोलकर बाहर आई और अपने भाइयों से उसे छोड़ देने का आग्रह करने लगी। भाइयों को बहन कहने पर अमल न करते देख बीरबल स्वयं उनसे क्षमा-प्रार्थी हुआ और उसके पति को छोड़ देने की आज्ञा दी। पण्डितजी छोड़ दिये गये। अन्त में उन्हें अपनी हठधर्मी पर पड़ा पश्चात्ताप हुआ।

इस स्वाँग से बीरबल का अभिप्राय था कि पति के जीवितावस्था में स्त्री का मुंडन नहीं हो सकता था। पहले पति मर ले तो स्त्री का मुंडन किया जाय। बीरबल पंडितजी को छोड़वा और उनकी स्त्री का कष्ट निवारण कर लौट गया। चारो भाई अपनी बहन के घर मिहमानी करने के लिये टिकरहे। धन्य है हमारी उन भारत ललनाओं को जो आने पर कठिन संकट उठा कर भी पतिव्रत की रक्षा करती हैं। ऐ देवियों! पति से कष्ट उठाकर भी पति सेवा करना तेरा ही काम है। अपने पति को कष्ट में देख; भला तुम कैसे सहन कर सकती हो। पति को ईश्वर तुल्य मानकर पूजन करने वाली संसार प्रसिद्ध एक मात्र भारतललना ही है।

संदेह की निवृत्ति

एक दिन बीरबल और बादशाह मे बहुत देर तक वार्तालाप होने पर भी उसबीच कोई हँसीकी बात नहीं आई, जिस कारण बादशाह ने अपने मनमें सोचा-"कुछ नहीं, बीरबल स्वाभाविक बुद्धिमान नहीं है, बल्कि इधर उधरसे कुछ व्योहार की बातें संग्रह कर बुद्धिमान बन बैठा है। एक स्वाभाविक बुद्धिमान को इतने देर की बार्तालाप में हास्यरस लादेना कोई बड़ी बात न थी। अगर वह ऐसा किये होता तो वार्तालाप के साथ ही साथ मेरा मनोरंजन भी हो जाता। ऐसे मूर्ख को अपने पास रखने से कोई लाभ नहीं है।" मनमें ऐसी दृढ़ धारणा बनाकर वह प्रकट रूप से बोला-"बीरबल! आज मुझे तेरी बुद्धि का थाह लग गया।" बीरबल उड़ती चिड़िया का दुम पहचानने वाला व्यक्ति था। इतने ही उद्‌गार से उसे निश्चित हो गया कि बादशाह मनोरंजन चाहता था जो उसको अभी तक नहीं मिला। उसकी बात काटकर बोला-"पृथ्वीनाथ! अब मेरे शरीर में आपको बुद्धिका लेशमात्र भी नहीं दिखाई पड़ेगा, आप उसे क्योंकर देख सकेंगे। मेरी बुद्धिका निवासस्थान तो एकमात्र मेरा दिमाग है। यदि आप उसे देखने के लिये अकुला रहे हों तो आपकी मंशा पूरी हो जायगी, केवल पहले सा पागल बन जाइये।

इतना सुनते ही बादशाह का भ्रम निवारण हो गया, वे संगति के प्रभाव से बहुत कुछ सुधर गये थे। वह उसके प्रति दुर्बुद्धि का प्रयोग करना उचित न समझ कर चुप हो गये।

इसी लिये कहा गया है कि अच्छी संगत से अच्छी और बुरी संगत से बुरी बुद्धि उत्पन्न होती है।

बीरबल गाय राँधत

ऐसा देखाजाता है कि बादशाह को हँसी मजाक से बड़ा प्रेम था, इसी कारण बात बात में उससे और बीरबल से हँसी हो जाया करती थी। हँसी हँसी में अक्सर बादशाह क्रुद्ध भी हो जाता, परन्तु बीरबल कभी क्रोधित नहीं होता था। इस बात को मनमें विचार कर बादशाहने बीरबल को क्रोधित करने की एक नई युक्ति निकाली। वह बोला–"बीरबल गाय राधत" तब उत्तर में बीरबल ने कहा–"बादशाह शूकर राँधत।" बीरबल तो बादशाह के मुख से उपरोक्त पहेली के निकलते ही उसका अर्थ समझ कर क्रोधित न हुआ, परन्तु बादशाह क्रोधित हो गया और बीरबल से बोला–"तुम मुझे मजाक के बहाने शूकर खिलाते हो।" तब बीरबल बोला–"आप भी तो मुझको गाय खिलाते हैं।"

बादशाह अपने काफिये का अर्थ बदल कर बोला–"मैं तो तुम्हें राधते वक्त गाने को कहा था।" बीरबल ने उत्तर दिया–"गरीबपरवर! भला मैं शूकर राधने को कब कहा था। मैं तो कह रहा था कि बादशाह शूकर रखाय। याने आप (शुक) तोते की रखवाली करते हैं।" आप बिना अर्थ समझे अकारण क्रोधित होते हैं।" बादशाह निरुत्तर हो गया।

—o:***·o—

सबका ध्यान आपकी तरफ था

फारस का बादशाह बीरबल की बुद्धि की बड़ी प्रशंसा सुना करता था इसलिये उसे बीरबल को देखने के लिये उत्कट इच्छा हुई। अकबर के पास एक पत्र लिख कर भेजा उस में बीरबल के बुलाने की बात लिखी थी। वह अहलकार कई दिन की मंजिल तय कर दिल्ली पहुँचा और बादशाह को अदब से सलाम कर फारस के बादशाह का भेजा हुआ पत्र दिखलाया। अकबर बादशाह पत्र पढ़कर बहुत खुश हुआ और अहलकार को अपनी सराय में आराम करने की आज्ञा दी। वहाँ उसके आराम की सभी वस्तुएँ प्रस्तुत थीं। दूसरे ही दिन बादशाह ने बड़े ठाटबाट के साथ बीरबल को फारस भेज दिया।

बीरबल फारस पहुँचकर शहर के बाहर एक बाग़ में अपना डेरा खड़ा कराया और उस अहलकार को अपने आने की सूचना देनेके लिए फारस के बादशाह के पास भेजा। जब बादशाह ने सुना कि बीरबल नगर के बाहर मेरे हुक्म की इन्तजार कर रहा है, तो उसने अपने समस्त कर्मचारियों को अपने ही सा वस्त्राभूषणों से सुसज्जित करा सबके सहित दरबार में जा बैठा और बीरबल को आने की आज्ञा दी। अहल्कारे से बादशाह के बुलावे का पत्र पाकर बीरबल राजभवन में उस से मिलने आया। वहाँ की अजीब हालत थी, सब लोग एक ही तरह की पोशाक पहने हुए यत्रतत्र बैठे थे। बीरबल एक तरफ से सबको लक्ष करता हुआ धीरे २

बादशाह के पास जा पहुँचा और उसे अदब से सलाम कर उसके समीप आप भी बैठ गया। बादशाह फारस ने पहले उसकी बड़ी आवभगत की पश्चात् उससे पूछा-"बीरबल! तुमको कैसे मालूम हुआ कि मैं ही फारस का बादशाह हूँ।" बीरबल ने उत्तर दिया-"गरीबपरवर! आपका दृष्टिकोण सब पर था और सबका ध्यान आप पर था। इससे मैंने आपको बिना परिश्रम ही आसानी से पहचान लिया।"

—o:*:o—

सच्चे झूठे का भेद।

बादशाह और बीरबल में सिद्धान्त निरूपण हो रहा था इसी के अन्तरगत बादशाह ने बीरबल से सच्चे और झूठे का भेद पूछा। बीरबल ने उत्तर दिया—"पृथिवीनाथ! इन दोनों के मध्य उतना ही भेद है जितना कि आँख और कानों में है।" बादशाह की समझ वहाँ तक न पहुँच सकी इस वास्ते बीरबल से फिर पूछा—"क्यों, ऐसा काहे को होता है?" बीरबल ने उत्तर दिया-"पृथिवीनाथ! सुनिये, जो बात आँखों देखी रहती है वह तो सच्ची और जो कान से सुनी जाती है वह झूठी।" बादशाह बीरबल के युक्तिसंगत और तर्कपूर्ण उत्तर से सन्तुष्ट हो गया।

चुप्पा सबसे भला।

एक दिन बादशाह को एक नई तरंग सूझी। उसने बीरबल को तुरत आज्ञा दी—"बीरबल! एक ऐसा मनुष्य

ढूँढ़ ला जो सब सयानों का सरताज हो ?" बीरबल किसी बात से भला कब हताश होने वाला था, उसने झट उत्तर दिया—"पृथिवीनाथ ! शीघ्रातिशीघ्र ढूँढ़कर हाजिर करूगा। परन्तु इस काम में दस हजार रुपयों की आवश्यकता है।" बादशाह की आज्ञा से बीरबल को तत्काल दस हजार रुपयों की थैली दी गई। बीरबल रुपयों को लेकर अपने घर चला गया। थैली घर पर रख आप "सौ सयाने का एक सयाना" की फिराक में शहर की गलियों को छानने लगा। मशल मशहूर है—"जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।" दैवात उसे एक अहीर मिला। उसको दिहाती चतुर देख बीरबल ने उसे अपने पास बुलाकर उसके कान में समझाया—"देखो यदि तुम मेरे कहने के अनुसार करोगे तो मैं तुझे एक सौ रुपया इनाम दूँगा ?"

ग्वाला भला काहे को इन्कार करता, बिचारे ने इकट्ठी सौ रुपयों की गुल्ली आजन्म में नहीं देखी थी। उसको अपने अनुकूल समझ कर बीरबल बोला—"देखो मेरे साथ तुम्हें बादशाह के पास चलना होगा, यदि बादशाह तुमसे कुछ पूछें तो एकदम चुप रहजाना। वह बोला—"बहुत अच्छा ऐसाही करूगा।" बीरबल उस अहीर को अच्छे २ वस्त्रों से सुसज्जित कर शाही दरबार में ले गया और बादशाह के समक्ष खड़ाकर बोला—"पृथिवीनाथ ! आपकी आज्ञानुसार सयाना मनुष्य हाजिर है उसकी परीक्षा कर लें।" बादशाह उसे और समीप खड़ा करा कर यों प्रश्न करना प्रारम्भ किया—"तुम कहाँ रहते हो ? तुम्हारे मात-पिता तुमको किस नाम से पुकारते हैं ? कौनसी बात

विशेष जानते हो? बादशाह ने बारी बारी से इसी प्रकार अनेकों प्रश्न किया, परन्तु वह तो सोहबल्ले की तरह पहले से ही पढ़ाकर पक्का कर दिया गया था, उत्तर काहेको देता।

अब बीरबलको उसे सँभालने की बारी आई। वह बोला–"पृथिवीनाथ! आपके पूछने का इस आदमी ने यह अर्थ निकाला है कि न जानें बादशाह यह सब बातें पूछकर पीछे क्या करें। क्योंकि ऐसी कहावत उसे पहले ही से याद है–"राजा योगी अग्नि जल, इनकी उलटी रीति। डरते रहियो भाइयो थोड़ी पालें प्रीति।" पदार्थ मौन धारण कर लिया है। आपने सुना होगा—"चुप्पा सबसे भला।" बादशाह को बीरबल की शिक्षा से आनन्द प्राप्त हुआ और अहीर को घर जाने की छुट्टी मिल गई।

—o:*:o—

सौवाँ अंश।

एक दिन बादशाह दरबार के कामों से निपटकर संध्या समय आराम बाग में बीरबल से मनोरंजन की बातें कर रहा था। इसी बीच उसने भुलावा देकर पूछा–"बीरबल! तुम अनेकों बार अपनी स्त्री के हाथ से हाथ मिलाया होगा, क्या बतला सकते हो, उसके हाथ में कितनी चूड़ियाँ हैं?" बीरबलने उत्तर दिया–"गरीबपरवर! इधर बहुत दिनों से मुझे अपनी बीबी के हाथ से हाथ मिलानेका सुअवसर नहीं मिला फिर भी मैं विश्वास के साथ कहने को तैयार हूँ कि आप जिस दाढ़ी पर अपना हाथ नित्य फेरते और उसे देखा करते

हैं उसके सौवें हिस्सेके बराबर मेरी स्त्री के हाथमें चूड़ियाँ हैं यदि आपको विश्वास न हो तो उन्हें गिनकर अपनी शंका समाधान कर लें।"

अधिकतर प्रिय क्या है ?

एक दिन बादशाह अपने दरबार में बैठा था और दो वर्षीया शाहजादा सलीम उसकी गोद में सानन्द खेल रहा था। उसकी बाल-चपलता देखकर बादशाह आनन्द-मग्न हो गया और आनन-फानन उसके मनमें यह प्रश्न उपस्थित हुआ—"जीवधारी को अधिकतर प्रिय क्या है ?" बादशाह को चुप देखकर सलीम उसका ध्यान अपनी तरफ आकृष्ट कारने के अभिप्राय से तुतला कर कुछ बोला-"उसकी तोतरी बातों ने बादशाह के आनन्द को और भी बढ़ा दिया। आनन्दवश वह अपने मनोगत भावों को दबा न सका और तत्क्षण समस्त दरबारियों की तरफ लक्ष करके पूछा—"इस पृथिवी पर के प्राणियों को अधिकतर प्रिय क्या है ?"

दरबारी सोच में पड़ गये ! कोई कुछ कहता तो कोई कुछ। अन्त में आपस में गोष्ठी करने लगे, परन्तु फिर भी किसी सिद्धांत पर अटल नहीं हुए। बीरबल की अनुपस्थिति में इन विचारों पर कभी २ ऐसी बिपत्ति आ जाया करती थी। यदि बीरबल प्रस्तुत होता तब तो उनका पौ बारह था। बादशाह भी बीरबल के रहते ऐसी २ बातें किसी दूसरे दरबारी से कभी न पूछता था। आज की सभा में बीरबल

न था जिस कारण इनके ऊपर ऐसी आफत आई। कुछ देर सोच समझ लेने के बाद सर्वसम्मति मिलाकर एक वृद्ध दरबारी बोला-"पृथिवीनाथ! अधिकतर प्रिय लड़का होता है।" दरबारियों ने आपस की गोष्टी से निश्चित किया था कि इस समय बादशाह लड़के को गोद में लिये हुए खिला रहा है अतएव उसके प्रश्न का इशारा लड़के की तरफ ही है। बादशाह उस समय वृद्ध दरबारी का उत्तर स्वीकार कर लिया और सभा बरखास्त हुई।

बीरबल राजकीय कार्य से कहीं बाहर गया था दैवात दूसरे ही दिन आ पहुँचा। बादशाह को तो पहले की धुन बँधी हुई थी, बीरबल को सभा में बैठते ही वही प्रश्न उससे भी किया। वह बोला-"गरीबपरवर! प्राणी को अपना जीव सबसे अधिक प्यारा होता है। इसकी तुलना और किसी से नहीं की जा सकती, चाहे वह अपना कितना ही सगा संबन्धी क्यों न हो?" तब बादशाह अपने दरबारियों का मान रखने के लिये बीरबल की बात काटकर कहा-"तुम्हारा कहना गल्त है, क्या लड़का प्राण प्यारा नहीं होता?" तुमको यदि अपने कहने पर अटल विश्वास है तो उसे प्रमाणित कर दिखावो, बीरबल बादशाह की आज्ञा शिरोधार्य करता हुआ बोला-"पृथिवीनाथ! बागका एक बड़ा हौज खाली करनेकी बागवान को आज्ञा दी जावे तब तक मैं बाजार से परीक्षा की चीजें लेकर लौट आता हूँ। आप सभासदों सहित बाग में उपस्थित रहें, वहीं पर मैं इस बात को प्रमाणित कर के दिखलाऊँगा।

बादशाह की आज्ञा पाकर बागवान ने प्राणपण से परिश्रम

करके थोड़ी ही देर में सबसे बड़े हौजको खाली कर सूचना दी। बागमें बैठने के लिये बादशाह की तरफसे समुचित प्रबंध किया गया और वे दरबारियोंके सहित बाग में दाखिल हुए। तब-तक बीरबल भी एक बँदरिये को उसके बच्चे सहित लेकर बाग में आया। बीरबल ने बँदरिया को बच्चे सहित हौज के मध्य भाग में बिठला कर ऊपर से पानी भरने की आज्ञादी। हौज में पानी भरा जाने लगा। पानी क्रमशः हौज के ऊपर चढ़ आया। बँदरिया बराबर अपने बच्चे को ऊपर उठाती गई। यहाँ तक कि बच्चा उसकी पीठ पर बैठ गया और पानी का बढ़ना बराबर जारी रहा। जब पानी बढ़कर उसके गले तक पहुँचा तो वह खड़ी हो गई और अपने बच्चेको अपने हाथ पर रखकर ऊपर उठा लिया। सब लोग इस नजारे को बड़ी गौर से देख रहे थे। बादशाह बीरबल को चिताकर बोला-"क्यों बीरबल ! क्या देखते नहीं हो कि किस प्रकार बँदरिया अपने प्राणों पर खेलकर बच्चे की रक्षा कर रही है, क्या अब भी पुत्र को सर्वोपरि प्रिय मानने को तैयार नहीं हो?" बीरबल ने उत्तर दिया-"पृथिवीनाथ! थोड़ा और ठहर जाइये, अभी बँदरिया के प्राण पर नहीं आई है, थोड़ी देर में आपही फैसला हो जाता है।"

अभी बीरबल और बादशाह में उपरोक्त बातें हो रही थीं कि बँदरिये के मुख में पानी भरना शुरू हुआ। पानी भरने के कारण उसका दम घुटने की नौबत आ गई, नाक में पानी भरने लगा, वह अधीर होकर बहने लगी। आखिरकार लाचार हो उसने बच्चे की ममता छोड़ दी और अपना

प्राण बचाने के लिये एक नया उपाय निकाला। झट बच्चे को पानी में डुबाकर आप स्वयं उसके ऊपर खड़ी हो गई, इस प्रकार उसका मुँह पानी से ऊपर हो गया। बीरबल ने बादशाह को उसे दिखला कर बागवान को पानी रोकने की आज्ञा दी। पानी आना तुरत बन्द हो गया और बँदरिया बच्चे सहित सजीव बाहर निकाल ली गई।

बीरबल ने कहा-"पृथिवी नाथ! आपने प्रत्यक्ष देखा है कि जब तक प्राण बचने की आशा थी तब तक बँदरिया बच्चे का प्राण बचाने की बराबर यत्न करती रही, परन्तु जब उसके ही प्राणों पर आफत आई तो वह बच्चे की जीवन-रक्षा भूल गई, बल्कि स्वयं उसके जान की गाहक होकर अपना प्राण बचाया। बादशाह दरबारियों सहित बीरबल के बुद्धि की श्रेष्ठता स्वीकार कर ली।

—o※o—

मिश्री के डेली का हीरा।

एक दिन रात्रि समय बीरबल किसी कार्यवश नगर से बाहर दूसरे ग्राम को जा रहा था, थोड़ी दूर जाने के बाद उसे एक झोपड़ा दिखाई पड़ा। उस झोपड़े से किसी के रोने की आवाज आ रही थी। अर्धरात्रि के समय फूट२ कर रोने का शब्द सुन बीरबल से न रहा गया। वह झोंपड़े के पास जा पहुँचा। दरवाजा बन्द था, बीरबल ने आवाज देकर कई बार पुकारा-"भाई! अभी इस झोपड़े में कौन आदमी रो रहा था? उस झोपड़े से एक बुड्ढा मनुष्य बाहर निकला और

लड़खड़ाते हुए बोला-"आपको रोने वाले से क्या गरज पड़ी है, मैं ही रो रहा था ?" बीरबल उसे अँधेरे में देखकर भलीभाँति पहचान न सका। वह एक बूढ़ा पुरुष जान पड़ता था। उसके शरीर के चमड़े झूल गये थे। कमर झुककर धनुधाकार हो रही थी।

बीरबल ने आग्रह पूर्वक उससे ऐसी रात्रि में रोने का कारण पूछा। तब बुड्ढा बोला-"भला आपसे रोने का कारण बतलानेसे मुझे क्या लाभ होगा, नाहक एक अपरिचित आदमी के सामने दुखड़ा रोकर अपनी अमर्यादा क्यों कराऊँ'?' बीरबल ने उसकी सहायता करने का बचन दिया, तब वह बुड्ढा बोला-"अच्छा यदि आप सुनना ही चाहते हैं तो सुनें। इस समय मेरी अवस्था सत्तर के लगभग पहुँच चुकी है, ईश्वर ने एक लाल दिया था सो भी चल बसा। घर में मेरी रखवाली वा भरण पोषण करने वाला कोई भी नहीं है, विचारा लड़का कमा कर लाता था उससे हम पिता पुत्रों का भरण-पोषण भलीभाँति हो जाया करता था। मेरे से काम नहीं हो सकता, बड़ी जोर लगाकर भी तीन चार पैसेसे अधिक की मजदूरी नहीं करपाता। महीने में ऐसा एक भी सौभाग्य का दिन नहीं होता, जिस दिन मैं भर पेट भोजन कर चैन की नींद सोऊँ। लड़के की सोच अलग मारे डालती है। आज तीन दिनों से बराबर फाँका कर रहा हूँ। उदर की ज्वाला अबर्दास्त होने से रो रहा था।"

बीरबल ने सोचा-यह अँधेरी रात है, चारो तरफ सन्नाटा ही सन्नाटा नजर आ रहा है। ऐसी हालत में तत्काल इस

आदमी की भला मैं क्या सहायता कर सकता हूँ, बेहतर होगा कि कल प्रातःकाल इसे अपने मकान पर बुलाऊँ। उसने प्रकट रूपमें कहा—"चाचा जी! यह रात्रिका समय है, थोड़ी देर और अपनी झोपड़ी में जाकर आराम कीजिए। तड़के उठकर दीवान-खाने में आना, मेरा नाम बीरबल है।" इतना कहकर बीरबल चला गया और बुड्ढा भी झोपड़ी में पड़ा हुआ सवेरा होने की प्रतीक्षा करने लगा, सारी रात उसको निद्रा न आई। सूर्यो-दय होते ही ठेगता हुआ दीवान के घर पहुँचा। बीरबल ने ने बुड्ढे की बड़ी आवभगत की और अच्छा अच्छा पदार्थ भोजन कराया। जब वह खा पीकर सन्तुष्ट हुआ तो बीरबल कहा—"चाचा जी! इस समय मैं आपको केवल पन्द्रह दिन का खर्च देकर बिदा करता हूँ। इसके बीच मिश्री की एक डेली लेकर उसे हीरे की शक्ल का बनाकर मेरे पास लाना, तब मैं आपको आगे की तरकीब बतलाऊँगा।" बुड्ढा बीरबल को आशीर्वाद देता हुआ घर लौट गया। आठ दस दिनों के अन्त-र्गत वह एक मिश्री के टुकड़े को खूब घिस छोलकर हीरे के आकार का बनाकर बीरबल के पास ले आया। बीरबल ने उस नकली हीरे को हाथ में लेकर देखा, निसन्देह वह बनावटी हीरा असली हीरेको मात कर रहा था। बीरबलने बूढ़ेसे कहा—"चाचाजी इसको लेकर कल फिर आइयेगा, आपको बादशाह के पास चलना होगा। मैं इसे बादशाह के हाथ बेचकर आपको एक अच्छी रकम दिलाऊँगा।

दूसरे दिन बीरबल बुड्ढे चाचा को साथलेकर रोज से पहले ही राज महल में जा पहुँचा। उसे देखकर बादशाह को कुछ

कारण विशेष जान पड़ा इसलिये उससे पूछा–"क्यों बीरबल आज इतनी जल्दी क्योंकर आना हुआ ?" बीरबल ने विनम्रता से उत्तर दिया—"गरीबपरवर ! यह कारीगर एक उत्तम हीरा लेकर मेरे साथ आया है, यह उस हीरे को बेचना चाहता है। मुझे विश्वास है कि यह चीज आपके पसन्द की होगी।" इतना कहकर उसने हीरे को बादशाह के हाथ में दे दिया। बादशाह ने हीरे को भली-भाँति देखकर कहा–"बीरबल ! हीरा तो लाजवाब है; परन्तु बूढ़े जौहरी से कहो कि इसे लेकर दो घन्टे पश्चात हाजिर होवे।" बुड्ढा वहाँ से हट गया। तब बादशाह ने बीरबल को उसकी भलीभाँति जाँच कराने की आज्ञा दी। बीरबल इधर उधर घूम फिर कर आ गया और बोला–"पृथ्वीनाथ ! इसके अच्छा होनेमें कोई सन्देह नहीं है। हीरे को आप अपने पास रक्खें।" बीरबल के इस उत्तर से बादशाहको सन्तोष हुआ और फिर बोला–"हीरे को खरीदने से पहले और जाँच करालो।" बीरबल बोला–"पृथ्वीनाथ ! इस समय हीरे को अपने मुख में रख लीजिये, फिर जाँच होती रहेगी।" बादशाह ने हीरे को मुख में छिपा लिया। बादशाह की आज्ञानुसार बूढ़े चाचा के आने का समय हुआ और वे ठेगते २ दरबार में पुनः हाजिर हुए। उसे देख बीरबल ने बादशाह से कहा–"गरीबपरवर ! देखिये वह हीरे वाला वृद्ध भी आन पहुँचा, उसे अब क्या कहकर उत्तर देना होगा।"

बादशाहने बीलबल की तरफ देखकर पूछा–"क्यों बीरबल ! वह हीरा तो मैं ने तुम्हीं को दिया था न।" बीरबल ने साफ इन्कार कर दिया और बोला–"पृथ्वीनाथ ! उसे तो आपने

अपने पास ही रखलिया था।" बादशाह को भी बीरबल की बात सच्ची जान पड़ी, खबर नहीं कि आखिरस उसे रक्खा किस जगह। उसने हीरे का बहुतेरा खोज किया, परन्तु जब कहीं हो तब तो मिले वह तो मुख में गलकर पानी होगया था। लाचार होकर बादशाह बोला-"अच्छा बीरबल! बुड्ढे व्योपारीसे उसका मूल्य निश्चित कर लो, परन्तु उससे कोई झकझक न करना।" हुक्म मिलते ही बीरबल ने बूढ़े चाचा से हीरे का मूल्य पूछा। वह बोला-"दीवान जी! हीरे का असली मूल्य दो हजार मुहरें हैं और दो सौ मुहरें मैं नफे में लूँगा।" बीरबल ने कहा-"नहीं तुम्हें नफे में पचास मुहरें ही दी जायँगी। बूढ़ा दुखित मन से बोला—"सरकार! यदि आपको मुनाफे की दो सौ मोहरें देनीं स्वीकार हों तब तो लेवें, नहीं तो कृपाकर मेरा माल मेरे हवाले करें।"

बीरबल मूल्यमेंकमी कराने के लिये उससे बारबार बनावटी माथापच्ची करता रहा, अन्त में झुंझलाकर बोला-"बुड्ढे! इतनी टिरटिर क्यों करता है, अच्छा पचास मोहरें और ले लेना।" परन्तु बूढ़े चाचा तो पक्के गुरु के चेला थे भला वे कब मानने लगे। मुँह बनाकर बोले-"दीवान जी! इस प्रकार मुझ गरीब को क्यों दबाते हैं, मैं दो सौ मुँहरों से एक कौड़ी भी कम न लूँगा।" बादशाह इन दोनों की बड़ी देर की झक झक सुन क्रोधित होकर पूछा-"क्यों बीरबल! व्योपारी क्या कहता है?" बीरबल ने उत्तर दिया-"पृथ्वीनाथ! वह हीरे की लागत दो हजार मुहरें बतलाता है और मुनाफे की दो सौ मुँहरें अलग से माँगता

है। मैं इसके नफे में कमी करवाता हूँ और केवल एक सौ मुँहरें ही देना चाहता हूँ।" बादशाह ने बीरबल को इशारे से मना किया और उदारतापूर्वक बूढ़े जौहरी को हीरे का मूल्य और दो सौ मुनाफे की मुहरें खजाँची से दिलवा कर विदा किया।

वृद्ध की प्रसन्नता बाँसों उछल पड़ी और मनोमन बीरबल को कोटिशः धन्यवाद देता हुआ अपने घर चला गया। शाम को दरबार से अवकाश पाकर जब बीरबल घर पहुँचा तो जौहरी बूढ़े चाचा को प्रस्तुत पाया। बूढ़ा बीरबल को देखकर प्रसन्नता से रोमांचित हो गया और बोला—"आपको और आपकी बुद्धि को धन्य है, दीवान साहब! आपजो मुझ सरीखे दीनों पर उपकार कर रहे हैं उसका फल ईश्वर आपको हाथों हाथ देगा। मुझे विश्वास हो गया है कि इस पृथ्वी मंडल पर आप ऐसा प्रजापालक दूसरा दीवान नहीं है"। उसकी ऐसी अनेकों प्रशंसा की बातें सुनकर उसके सन्तोषार्थ बीरबल ने कहा–"चाचाजी! इसमें मेरा क्या उपकार है। यह सब आपको आपकी बुद्धिमानी का प्रतिफल मिला है" बुड्ढा इस पर आवाक हो गया और कोटि कोटि आशीर्वाद देता हुआ अपने घर चला गया।

नकली बीरबल

जब से बादशाह को बीरबल के मृत्यु का समाचार मिला था तबसे उसके विछोह के कारण बड़ा दलगीर रहता और बराबर

उसका शोक मनाया करता था। बादशाह की उदासी मिटाने के लिये लोगों ने बड़ी बड़ी तरकीबें निकालीं, पर दिल की लगन बुरी होती है। जब उपायों से कार्य्य-सिद्धि न हुई तो करबारियों ने अष्टकौशल कर एक नई युक्ति सोच निकाली और कितने नागरिकों से कानों कान कहलाया कि अभी बीरबल जीवित है। जब इस हौवा से भी बादशाह को सन्तोष नहीं हुआ तो दूर दूर के शहरों तथा दिहातों से बीरबल के जीवित रहने का समाचार आने लगा। लोग कहते थे कि वह लड़ाई से बचकर एक दूसरे शहर में छिप कर बैठा है।

एक बार ऐसी घटना घटी कि किसी मनुष्य ने अपने को बीरबल कहकर घोषित किया, परन्तु उसका बादशाह से साक्षात न हो सका, वह आते२ बीच मार्ग में स्वर्गवासी हो गया। बादशाह का मनतव्य पूरा नहीं हुआ। जीवनपर्यन्त उसे अपने प्रिय मंत्री बीरबल से फिर साक्षात न हो सका।

एक गाँव सीड़ी था उसमें इस घटना के दो तीन वर्ष बाद एक द्विजाति कुलोद्भव ने अपने को बीरबल कहकर घोषित किया और लोगों में इस बात का खूब प्रचार किया कि मैं ही बीरबल हूँ। जब पठानों का युद्ध छिड़ा था तो मैं लड़ाई में आहत होकर एक महात्मा की कृपा से जीता-जागता निकल आया। महात्मा ने मेरी बड़ी शुश्रुषा की। जब मैं एक दम चंगा हो गया तो उस साधु से आज्ञा लेकर इस गाँव में आ बसा। उस आदमी की सूरत भी बीरबल से बहुत कुछ मिलती जुलती थी। वह बीरबल के जीवनकाल की सारी

बातें भलीभाँति स्मरण कर लिया था जिस कारण बीरबल सम्बन्धी प्रश्न उपस्थित होने पर वह उसका उचित उत्तर देता था।

कितने ही लोगों को धोखा हो गया। वे उसे असली बीरबल समझकर बादशाह के पास पहुँचाने आये परन्तु वह रास्ते में ही स्वर्गवासी हो गया। बादशाह उसकी प्रतीक्षा करता रहा। ऐसी ही ऐसी और भी कितनी अफवाहें बादशाहके कान तक पहुँचीं, परन्तु जब उनकी जाँच कराई गई तो सारी बातें झूठी निकलीं। उसके गुप्तचर सच्ची खबर नहीं देते थे जिससे कालान्तर में उनका भेद खुल गया। बादशाह दूतों के ऐसे विश्वासघात करने पर आग बबूला हो गया और उनको कठिन दण्ड दिया।

खुदा को अक्ल से पहचान करो

बादशाहों की सभा में चित्रकारों के रहने की पुरानी प्रणाली है। अकबर बादशाह के दर्बार में भी नियम-परम्परा के अनुसार कई चित्रकार विद्यमान थे। उनमें एक सर्व-प्रधान था। वह प्रति चित्र के बनवाई में पाँच हजार पुरस्कार लेता था। एक दिन उस चित्रकार के पास एक बड़ा आदमी आया और बोला—"महाशय जी! मुझे भी अपनी चित्र बनवानी है; यदि आप उसे सर्वांगपूर्ण बना सकेंगे तो मैं आप को पन्द्रह हजार रुपया इनाम दूँगा। चित्रकार सहमत हो गया और दूसरे ही दिन से चित्र बनाना शुरू किया। इस काम के सम्पादन में उसे कई मास का अरसा लगा। जब चित्र उसकी इच्छा नुकूल तय्यार हो गया तो उसे लेकर रईस

के पास गया। वह चित्र को लेकर अपने चेहरे से भलीभाँति मिलान किया। उसमें एक स्थानपर ऐब रह गया था। साहूकार ने चित्रकार को उसे दिखलाया। वह विवश होकर दूसरा चित्र बना लाने का बचन देकर खाली हाथ लौट गया और फिर से चित्र बनाना प्रारम्भ किया। इस बार पहले से भी अधिक तत्परता से चित्र तय्यार किया। उसका विश्वास था कि इस मर्तवा साहूकार को चित्र पसंद आजायगा। दूसरे दिन फिर चित्र को लेकर शाहूकार के पास पहुँचा और पुरस्कार का दावो हुआ।

भलेमानस ने चित्रका फिर से मिलान किया, फिर भी उसके गोड़ में ऐब रह गया था। इसी प्रकार सेठ और कई बार चित्रकार कोमूर्ख बनाकर लौटा चुका था। मनुष्य अपनी कामयाबी के लिये बार २ परिश्रम करता है, जब करते २ थक जाता है तो उसकी हिम्मत छूट जाती है और फिर उसके किये वह काम नहीं होता। इसी प्रकार वह चित्रकार भी अपनी नाकामयाबी से हताश हो गया और अपनी अपकीर्ति जन समुदाय में बढ़ने के भय से गंगा में डूब मरने का संकल्प किया। जिस समय गंगा तट पर पहुँचकर वह आत्मविसर्जन का उपाय सोच रहा था उसी समय हरेच्छा से बीरबल नामी एक ब्राह्मण का दीन लड़का भी वहाँ उपस्थित था। लड़का चित्रकार के मनोगत भावों को ताड़ गया और उसे ढाढ़स देने के विचारसे पूछा—"महाशय जी! आप इतना चिन्ताग्रस्त क्यों दिखाई पड़ते हैं, जान पड़ता है चिन्ता रूपी साँपिन ने आपको डस लिया है? कृपाकर मुझसे अपने दुख का कारण

साफ २ बतलाइये, मैं यथासक्य उसके निवारण का प्रयत्न करूगा। बालक के ऐसे विनम्र बचनों से चित्रकार की जीवन आशा पुनः जागृत हुई और अपना दुःखद समाचार कहकर सुनाया। लड़का बोला-"आप इस थोड़ी सी बात के लिये इतना अधीर क्यों हो रहे हैं ? धैर्य्य धारण कीजिये, मैं उसका तद्रूप चित्र बना दूँगा और फिर उसे ऐब दिखलाने का अवसर न मिलेगा, केवल थोड़ा और परिश्रम कर मुझसे उसका साक्षात्कार करा दें।

चित्रकार लड़के को साथ लेकर उस रईस के पास गया, बीरबल उस रईसको फाँसने के लिये रास्ते में ही एक तरकीब सोच चुका था वह बाजारसे एक शीशा खरीदकर अपने साथ लेता गया, चित्रकार को देखकर उक्त रईस ने पूछा-"क्या दूसरा चित्र तय्यार होगया?" बीरबलने उत्तर दिया-"हाँ तैयार करके लाया है।" चित्रकार आगे बढ़कर रईस को अपना दर्पण दिखलाया। दर्पण में रईस को अपना स्वरूप ठीक ठीक दीख पड़ा, फिर उसे आना कानी करने की कोई दूसरी तरकीब नहीं सूझी; लाचार होकर कौल के अनुसार पन्द्रह हजार रुपये देने पड़े। चित्रकार बीरबल की ऐसी युक्ति से बड़ा सन्तुष्ट हुआ।

वह रुपया लेकर घर लौट गया, परन्तु बीरबल रईस का चरण पकड़ कर बोला-"भगवन्! मैं आपको अब नहीं छोड़ूँगा क्योंकि आप मुझे मनुष्य के रूप में देवता जान पड़ते हैं।" बीरबल की हठधर्मी से विवश होकर देवता ने प्रत्यक्ष होकर दर्शन दिया और उसको बुद्धि बढ़ने का आशीर्वाद दिया। फिर बीरबल को सन्तुष्ट कर देवता अन्तर्ध्यान हो गये। चित्र में

बारंबार दोष निकालते देखकर बीरबल ने देवता को पहचान लिया था। उसी समय से लोगों की आँखें खुल गई और ऐसी जनश्रुति चल पड़ी–"खुदा को अक्ल से पहचान करो।"

शीशे में छाया चित्र

दिल्ली शहर में एक सनातनी धनवान रहा करता था, उसके कुकृत्यों से अक्सर लोगों को बड़ी तकलीफ होती थी, परन्तु वह धनाढ्य किसी की एक न सुनता। वह हमेशा गुप्त रूप से मनमानी किया करता था, परन्तु ऊपर से बादशाह के भयसे भलामानस बना रहता। एक दिन उसे एक नई शरारत सूझी। एक चित्रकार को बुलवाकर उसे अपना चित्र बनाने की आज्ञा दी। उस से पहले ही ऐसी शर्त तय करा ली कि अगर चित्र बनाने में बार भर भी अन्तर पड़ेगा तो पुरस्कार नहीं दिया जाय। दोनों की आपस में लिखा पढ़ी हो गई। वह घर जाकर बड़ी सावधानी से चित्र बनाने लगा। चित्र बनकर तयार होगया तो उसे लेकर धनवानके पास पहुँचा। जब उसके आने का समाचार नौकरों ने दिया तो वह अपनी सूरत बदल कर उसके सामने आया। उसे देख विचारा चितेरा दंग हो गया उसके मुख से कोई स्पष्ट उत्तर नहीं निकलत था, लाचार दूसरा चित्र फिर से बना लाने की प्रतिज्ञा कर घर लौट गया।

नये स्वरूप का जब दूसरा चित्र बनाकर ले गया तो फिर

उस रईस ने अपना आकार बदल कर उसमें अन्तर दिखलाया। इसी प्रकार चित्रकार ने क्रमशः पाँच चित्र बनाकर तय्यार किया, परन्तु उसकी धूर्तता के कारण कोई चित्र भी उसके चेहरे से न मिल सका। अन्तमें चित्रकार को उसकी ठगी पर सन्देह हो गया और वह उससे अपना पुरस्कार माँगा। रईस उसे फटकारता हुआ बोला-"तू इतना भी समझदारी नहीं रखता, जब मेरे अनुकूल चित्र ही नहीं बना सकता तो फिर पुरस्कार किस बात का लेगा। नाहक इसी बिरते पर अपने को चित्रकार बतलाकर लोगों को ठगता है। सीधे यहाँ से चला जा नहीं तो मैं तेरी धूर्तता का भलीभाँति बदला चुकाऊँगा। गरजे इसी प्रकार दोनों के दर्मियान देर तक तू तू मैं मैं हुई, फल कुछ न निकला। लाचार होकर बिचारा चित्रकार बीरबल की शरण में गया।

अपना सारा समाचार कहकर बीरबल को पाँचों चित्रों को दिखलाया। सब बातों को देख सुनकर बीरबल ताड़ गया कि उस रईस ने इस विचारे को ठगा है। उसको स्वरूप बदलने की विद्या हासिल है, जिस कारण इसे सहल में ही ठग लेता है।" वह बोला-"यदि तुम मेरे कहे अनुसार चलोगे तो तुम्हें अवश्य लाभ होगा। चित्रकार सहमत हो गया। बीरबल ने कहा-"बाजार से एक अच्छा शीशा खरीद लावो फिर दो तीन दिनों के पश्चात उसे लेकर उस रईस के पास जाना। साक्षी के लिये गुप्त रूप से मेरे दो कर्मचारी तुम्हारे साथ रहेंगे। उससे जाकर कहना कि इस बार मैं आपका उत्कृष्ट चित्र खींच लाया हूँ, जब देखने को माँगे

तो वही शीशा उसके सामने रख देना, शीशा में वह अपना स्वरूप बदल न सकेगा और इस भाँति आसानी से तुम्हारे काबू में आजायगा। कारण कि दर्पण में उसका तात्कालिक स्वरूप भाषित होगा।"

कई दिनों का अन्तर देकर चित्रकार बाजारसे एक हलब्बा शीशा खरीद लाया फिर गुप्तचरों के साथ रईस के घर गया और उससे मिलकर बोला-"महाशयजी! इस बार मैं बहुत होशियारी से आपका चित्र बना लाया हूँ, आशा है कि मेरे इस कठिन परिश्रम से आप खुश होंगे।" ऐसी चोखाई की बातें दर्पण रईस के सामने रख दिया।" धनाढ्य बोला-"वाह क्या खूब! यह मुझे आइना क्यों दिखला रहा है, वह चित्र दिखला जिसकी तू ने अभी इतनी प्रशंसा की है।" चित्रकार ने उत्तर दिया-"महाशय जी! यही आपका तद्रूप चित्र है।" तब तो रईस के कान खड़े हो गये और वह अपनी ठगी छिपाने के लिये उससे बोला-"तुझे मैंने अपना चित्र बनाने को भला कब कहा था?" चित्रकार ने कहा-"आप बात क्यों पलटते हैं; आपके आर्डर से मैंने बारी बारी पाँच चित्र बना कर दिखलाया; परन्तु हर बार आपने नापसन्द कर मुझे कोरा लौटा दिया। अब इस बार इतनी कतरब्योंत कर बना लाया तो नकारने पर कटिबद्ध हुए हो। यह नहीं होने का; मेरे आपके बीच जो शर्तें पहले निश्चित हो चुकीं हैं उसे पूरी कीजिये।"

रईस ने देखा कि यह तो अच्छी बला लेकर आया है, इसे मूर्ख बनाकर ठगना चाहिये। वह एकदम नकर गया।

तब बीरबल के गुप्तचर बोले-"आपको बादशाह के पास चलना पड़ेगा। आपने इससे छः बार चित्र बनवाया और रुपया एक भी नहीं दिया अब तुम्हारी ठगी नहीं चलने की।" रईस आँख दिखलाता हुआ उत्तर दिया-"वाह, अच्छे आये ? तुम मुझे दरबार में ले जाने वाले कौन होते हो ? तब गुप्तचरों ने अपना असली लिबास खोलकर दिखलाया। रईस का होश ठिकाने आ गया और विवश होकर चित्रकार को रुपये देने पर उतारू हुआ। मामला बढ़ चुका था इसलिये सिपाहियों ने उसे ऐसा न करने दिया और पकड़ कर बीरबल के पास ले गये।

बीरबल तो उसके ठगी का हाल पहले ही सुन चुका था, जब वह आया तो उससे बहुतेरा प्रश्न उसी सम्बन्ध का किया; परन्तु वह उन प्रश्नों का एक भी उचित उत्तर न दे सका। बीरबल ने उसे दस मिनट में सोचकर उत्तर देने की आज्ञा दी। फिर भी कुछ न बोला, बोलता कहाँ से कहीं बालू पर भीत उठाई जा सकती है? बीरबल ने सिपाहियों को कोड़े लगाने की आज्ञा दी, वे पास ही में उपस्थित थे। हुक्म पाते ही कोड़ा लेकर आगे आये। कोड़ा देखते ही रईस का होश ठिकाने आ गया और उसने तुरत अपना दोष स्वीकार कर लिया। बीरबल उसे कठिन दण्ड देकर जेल भेज दिया।

—:*:—

नया दीवान

यह तो किसी से छिपा नहीं है कि बीरबल अकबर का मुँहलगा दीवान था। वह उसको हर प्रकार से मात किये

रहता था। एक दिन बादशाह गुस्से में था। बीरबल उसके मनोगत भावों को ताड़ न सका और बातों २ में उसकी हँसी उड़ाने लगा। बादशाह को उसकी हँसी से मार्मिक वेदना हो रही थी। वह बोला-"बीरबल तुम्हारा मिजाज बहुत बढ़ गया है इसलिये बराबर बेअदबी किया करते हो, अब तुम्हें ऐसा मौका नहीं दिया जायगा। भविष्यमें यदि फिर कोई ऐसा कामकरोगे तो स्मरण रहे कठिन दण्ड के भागी होगे।" बीरबल ने अपनी बात रखने के लिये फिर कोई हँसी की बात निकाली; परन्तु बादशाह ने उसे बीच में ही क्रुद्ध होकर दबा दिया। अब बीरबल को बादशाह का क्रुद्ध होना प्रगट हो गया और वह चुप्पी साध गया। बादशाह बीरबल की बेअदबी से चिढ़ गया था जिसकारण आँखें लाल २ कर बोला-"अब तुम फिर मेरे दरबार में कभी न आना; अभी दरबार से बाहर निकल जाओ।"

बीरबल उत्तर देना उचित न समझकर चुपके से वहाँ से 'सटक सीताराम' हो गया। यह सोचकर मनमें ढाढ़स किया कि यह तो बादशाहों की गति ही है, जब काल आयेगा तो झख मारेंगे और बुलावेंगे। ऐसी २ बहुतेरी कल्पनाएँ करता हुआ घर पहुँचा और अपने घर वालों को सावधान कर महीनों गुम रहा। न उसकी बुलाहट हुई न फिर गया ही। इधर बादशाह ने एक दूसरा नया दीवान नियुक्त कर लिया। जब बीरबल को बादशाह का रुख बदलते न दिखलाई पड़ा तो वह चुपचाप वायु परिवर्तन करने के लिये नगर से बाहर किसी दूसरे शहर को चला गया। उसका जाना किसी को

मालूम नहीं था। अपना समूचा परिवार दिल्ली में ही छोड़ गया। येनकेन प्रकारेण कई महीना बीत गया, पर न बीरबल को दरबार का समाचार मिला और न बादशाह को बीरबल का ही।

नया दीवान बीरबल के टक्कर का नहीं था, इसलिये बादशाह का दिल उसपर भलीभाँति जमता न था। वह गुप्तरूप से एक दूसरे दीवान की खोज में था। कितनों की गुप्त छिपे रूप से परीक्षाएँ ली, परन्तु कोई उत्तीर्ण नहीं हुआ। तब लाचार होकर उसे विज्ञापनबाजी करने की धुन सवार हुई, उसने शहर शहर और दिहात २ में यह घोषणा करवा दी कि जो कोई मेरे प्रश्नों का उचित उत्तर देगा वह नया दीवान बनाया जायगा, उत्तर न दे सकने पर उसपर कुछ विचार न किया जायगा।

दरबारी लोग दीवान पद के लिये लालायित हो रहे थे; परन्तु परीक्षोत्तीर्ण होना कठिन समझ, उपहास के भय से खामोश रह गये। बादशाह ने अपनी घोषणा में एक मास की निश्चित तिथि निर्धारित की थी। समय अबकरीब आ पहुँचा और सभा का आयोजन किया गया। यह सभा दीवान के चुनाव की थी अतएव इसमें आम जनता को जाने का हुक्म नहीं था, केवल दरबार के लोग और कुछ वे लोग सम्मिलित किये गये जो दीवान पद के प्रलोभन से उम्मेदवार बन आये थे। उन उम्मेदवारों में एक आदमी ऐसा आया था जो देखने में बड़ा प्रतिभाशाली जान पड़ता था, उसकी दोनों आँखें बड़ी बड़ी और चमकीली थीं, सिर पर सफेद पगड़ी

बाँधे हुए था, दाढ़ी छाती तक लटक रही थी। उसके कुछ केस काले और कुछ सफेद थे। जिससे देखने में अधेड़ जान पड़ता था।

बादशाह की आज्ञा से एक परीक्षक बोला—"आज की सभा में जो मनुष्य उत्तीर्ण होगा वह दीवान पद पर नियुक्त किया जायगा। यदि उत्तर देने में भूल होगी तो दुबारा उसकी सुनवाई न होगी। पहला प्रश्न यों है (१) इस भौगोलिक सागर में मोती की सीपियों की गणना क्या है?" मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि दीवान पद प्राप्त करने के लिये पाँच उम्मेदवार आये थे सो उनमें चार तो इस प्रश्न को सुनते ही विचार सागर में निमग्न हो गये, परन्तु पाँचवाँ व्यक्ति जो कि साफा बाँधकर आया हुआ था और जिसकी दाढ़ी छातीतक लटक रही थी, उत्तर देने के लिये बड़ा उत्सुक जान पड़ा। बारी बारी सब से उत्तर माँगा गया। किसीने कहा—लाख, किसीने करोड़ और किसीने अरब तक की संख्या बतलाई, परन्तु साफे वाला मनुष्य सबके अन्त में बोला— "सम्पूर्ण मनुष्यों की आँखों की जितनी गणना है उतनी ही सीपियों की भी है।" उसका उत्तर सुनकर चारो तरफ से वाह वाह की ध्वनि आने लगी। बादशाह भी मन में प्रसन्न हुआ।

नियमानुसार चारो उम्मेदवार नाकामयाब हो गये एक साफे वाला ही बच रहा। प्रश्नकर्त्ता ने दूसरा प्रश्न किया— "इस शरीर का पहला सुख क्या है?" तब साफे वाले ने कहा—"हेल्थ इज दी रूट आफ हैपीनेस" शरीर के लिये स्वस्थ

रहना पहला सुख है।" तब दूसरे प्रश्नकर्त्ता बोले-"यद्यपि संसार में अनेकों प्रकार के शस्त्र विद्यमान हैं, परन्तु उनमें प्रधान शस्त्र क्या है?" उत्तरदाता ने कहा-"बुद्धि।" तब डोडरमल नामी तीसरे प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न हुआ-"यदि बालू के कण और चीनी किसी प्रकार एक में मिश्रित हो जायँ तो पानी डालकर अलग करने के अतिरिक्त दूसरा उपाय क्या है?" उत्तरदाता ने कहा-"दोनों मिश्रित वस्तुओं को जमीन पर फैला दें कुछ समय में चींटियाँ चीनी उठा ले जायँगी और बालू के कण जहाँ के तहाँ पड़े रह जायँगे।" पाँचवाँ प्रश्न नव्वाब खानखाना का हुआ-"क्या आप समुद्र का जल पान कर सकेंगे?" उसने उत्तर दिया-"हाँ, मैं भली भाँति पान कर सकता हूँ।" नवाब ने पूछा-"क्योंकर?" तब वह बोला-"पान करना तो आसान बात है, परन्तु पहले आपको उसमें गिरने वाली नदियों को रोकना पड़ेगा।" नव्वाब भी मात हो गया। जगन्नाथ प्रसाद का छठवाँ सवाल इस प्रकार हुआ-"मनुष्य चिता में जलाये बिना और कैसे भस्म किया जा सकता है?" उसने उत्तर दिया-"चिन्ता की ज्वाला में।" फिर साँतवाँ प्रश्न टोडरमल का हुआ-"सबसे हेठा व्यवसाय क्या है?" उम्मेद-वार ने बतलाया-"भिक्षाटन करना।" इसी प्रकार के और और सवालों का उत्तर देने की प्रतीक्षा में वह मनुष्य निर्द्वन्द बैठा रहा, परन्तु प्रश्नों का बौछार एक दम बन्द हो गया, उसके हाजिर जवाबी से सभा के लोग मात हो गये।

सब को चुप देखकर उम्मेदवार बादशाह की सम्मति

लेकर एक प्रश्न अपनी तरफ से किया। बादशाहने दरबारियों को उत्तर देने के लिये उत्तेजित किया। उसका प्रश्न इस प्रकार था—"किवाड़ बन्द करते समय उसमें चुरमुर चुरमुर शब्द किस कारण होता है।" यानी उसका भावार्थ क्या है? सब लोग अवाक होगये। उसकी शंका का समाधान करने में एक दरबारी भी समर्थ न हुआ। बादशाह उसकी बुद्धिकी बड़ी प्रशंसा की और मन ही मन बोला—"बहुत दिनों के बाद आज मुझे बीरबल सा निपुण दीवान मिला है।" उसके मन से बीरबल के अभाव की चिन्ता घट गई और दीवान के योग्य पोशाक पहना कर उसे बीरबल के स्थान पर नियुक्त करने का विचार प्रकट किया। तब उम्मेदवार बोला—"गरीबपरवर! मैं दीवान बनने की योग्यता नहीं रखता; कारण की जिसकार्य्य को बीरबल सा बुद्धिसम्राट निभाता था वह मैं कैसे निभा सकूँगा? बादशाह ने कहा—"मैं बीरबल को निकाल दिया है जिस कारण वह चिढ़कर यहाँ से कहीं बाहर चला गया है। मैंने उसको बहुतेरा ढुढ़वाया परउसका कहीं पता नहीं चलता, तब लाचार होकर दूसरा दीवान नियुक्त करने पर आमादा हुआ हूँ। जो मैं जानता कि बीरबल अमुक स्थान में है तो मैं यत्नपूर्वक उसे बुलवा लेता।

नये दीवान ने उत्तर दिया—"पृथ्वीनाथ आपका प्रताप पृथ्वी के कोने कोने में फैला हुआ है, यदि आप तनमय होकर उसका खोज कराते तो वह कभी का प्रगट हो गया होता।" बादशाह ने कहा—"नहीं ऐसी बात नहीं है, मैंने उसके लिये बहुतेरा प्रयास किया, परन्तु उसको ढूढ़ नहीं पाया। हाँ

अब एक युक्ति और बाकी है, यदि काम में लाई जाय तो सम्भव है कि उसका पता चल जाय।" उम्मेद्वार ने कहा-"पृथ्वीनाथ! यदि वह किसी समय स्वयं आपसे आ मिले तो फिर क्या करेंगे, उसे रक्खेंगे वा कोरा लौटा देंगे?"

बादशाह बोला-"हाँ, मैं उसके लिये बड़ा उत्सुक हो रहा हूँ। तब नये दीवान ने कहा-"गरीबपरवर मैं उसका पता जानता हूँ। बादशाह बोला-"यदि तुम उसको मिला दोगे तो मैं तुमसे बहुत प्रसन्न होऊँगा।" नये दीवान को जब भलीभाँति विदित हो गया कि बादशाह को बीरबल-प्राप्ति की बड़ी उत्सुकता है तो अपना साफा ऊपर को खिसकाते हुए अपनी ढकी आँखों को बाहर निकाला! और पाजामा और जामा दोनों उतार कर अलग रख दिया। नकली दाढ़ी उतार फेंकी। तब वह खासा बीरबल हो गया। बहुत दिनों के बिछुड़े बीरबल को प्राप्त कर दरबारी गद्गद हो गये बादशाह का तो क्या कहना, वह मारे आनन्द के विह्वल हो गया। सब तरफ से वाह वाही के शब्द आने लगे।

बादशाह के पूछने पर बीरबल ने अपने गुप्त बास का इतिहास इस प्रकार वर्णन शुरू किया-"पृथिवीनाथ! आपके पास से जाने के पश्चात् मैं एक मास तक घर पर बालबच्चों के साथ बिताया और सब से बराबर मिलता जुलता रहा, बाद को शहर छोड़कर बाहर चला गया और गुप्त रूपसे रहने लगा। मैं रात्रि में नगर रक्षा के निमित्त भेष बदलकर गस्त लगाया करता था, इतने दिनों के अन्तर्गत मैंने कितने

चोरों को पकड़ पकड़ कर उनका चोरी छुड़ाई है। जब मैंने जान लिया कि अब मुझे कोई दरबारी नहीं पहचान सकेगा तो गुप्त रीति से दरबार में आता और परोक्ष में यहाँ की निगरानी कर घर लौट जाता। इस प्रकार गुप्तवास का दिन काटता हुआ आपके सामने प्रगट रूपसे उपस्थित हुआ हूँ।

बादशाह बीरबल की इस तत्परता से बड़ा प्रसन्न हुआ और उसको नवीन वस्त्र प्रदान कर फिर से दीवान पद पर नियुक्त किया। यह समाचार नगर में चारों तरफ बिजली के समान फैल गया। प्रजा के लोग बीरबल के पुनः मिलने से बड़े प्रसन्न हुए और सब तरफ से बादशाह को बधाई के समाचार आने लगे।

ताक वाला देव और पाखाने का सेव

बीरबल अपनी चालाकी से बादशाह को बारम्बार नीचा दिखाया करता जिससे वह बीरबल से हमेशा शरमिन्दा रहता था। एक दिन बादशाह ने बीरबल से बदला लेने का विचार किया। अच्छे-अच्छे वैज्ञानिकों और कारीगरों से सम्मति लेकर अपने रहने के कमरे में एक ताख इस ढब का बनवाया कि जिसके जरिये बीरबल को धोखा दिया जा सके। उसमें कोई ऐसी वैज्ञानिक वस्तु लगा दी गई थी कि जिसपर हाथ रखते ही उससे चिपक जाता था। एक दिन बादशाह अपने कमरे में बैठा हुआ पुस्तकावलोकन कर रहा था, इसी समय बीरबल भी आ पहुँचा। बादशाह बीरबल

को देखकर मन में बड़ा प्रसन्न हुआ, प्रगट में बोला–"बीरबल ! ज़रा उस ताख पर का सेव तो लेते आना उसके लिये मैं बड़ी देरसे इन्तजार कर रहा हूँ।" सेव पहले से इसी अभिप्राय से रक्खा गया था; जिससे बीरबल का हाथ आसानी से उस वैज्ञानिक ताख में फँसाया जा सके। सन्देह हो जाने पर बीरबल हाथ में आने वाला असामी नहीं था।

आज्ञा पालन कर बीरबल सेव लेने के अभिप्राय से ताख पर अपना हाथ बढ़ाया। सेव पर पहुँचने से पहले ही उसका दाहिना हाथ उस ताख से चिपक गया। तब बीरबल ने अपना दूसरा हाथ पहले हाथ को छुड़ाने के अभिप्राय से लगाया। वह भी उसी में फँस गया, बीरबल बहुत घबड़ाया और मारे लज्जा के उसका शिर नीचा हो गया। बादशाह ने विचार किया कि बीरबल अभी तक नहीं आया, ताख में फँस कर घबड़ाता होगा इसलिये उसे छुड़ाना चाहिये। वह टहलता हुआ उसके पास गया और बीरबलको ताख में फँसा हुआ देखकर बोला–"क्या खूब ! मेरी चीजें बराबर चोरी जाया करती थीं परन्तु मुझे चोरका पता नहीं चलता था, आज सौभाग्यवश चोर की गिरफ्तारी हो गई है। जावो बीरबल ! तुम्हारा यह पहला कसूर समझकर माफी देता हूँ, लेकिन फिर कभी ऐसा काम न करना।"

बीरबल इस घटना से बड़ा लज्जित हुआ और उसके मुखसे कोई जवाब न निकला–तब बादशाह ने अपने राजगीरों को आज्ञा देकर उसका हाथ छुड़वा दिया। अब बीरबल को

छिपाने के लिये बादशाह को सच्चा मशाला मिल गया। वह बारबार उसका याद दिलाकर बीरबल को नीचा दिखाता और विचारा बीरबल चुप रह जाता।

एक दिन बीरबल ज्यों ही दरबार में आया त्योंही बादशाह ने उससे छेड़खानी की—"क्यों बीरबल! वह ताक का सेब कहाँ है।" बीरबल फिर भी कुछ उत्तर न दिया। बादशाह को इसमें बड़ा आनन्द आता और वह नित्य किसी न किसी समय 'ताक वाला सेब' कह कर बीरबल को लजवाता। बिचारा बीरबल चुप रह जाता। जब उसके नाकोंदम आ गया तो बादशाह के छिपाने की तरकीब सोचने लगा।

एक दिन बीरबल ने तीर्थयात्रा का बहाना कर बादशाह से दो मास की छुट्टी ली। उसकी छुट्टी मंजूर हो गई। बीरबल घर पहुँच कर एक नया ढोंग रचकर अपना वेष परिवर्तन कर साधु का स्वरूप धारण किया। इस प्रकार खूब बनठन कर थोड़ी रात गये घर से बाहर निकला और रातोरात उस जंगल में जा पहुँचा जहाँ बादशाह शिकार खेलने जाया करता था। एक सघन झाड़ी के अन्दर आराम से पड़ रहा। दैवात् सन्ध्याकाल में बादशाह भी शिकार खेलने गया। एक हिरन चौकड़ी भरता हुआ उसके आगे आया, बादशाह ने अपना घोड़ा हिरन के पीछे डाल दिया, वह इतनी तेजी से भागा कि उसके सब साथी पिछड़ गये। अन्त में हिरन एक घने जंगल में पहुँच कर आँख से ओझल हो गया। कोई आगे-पीछे नहीं दीख पड़ता था। बादशाह बहुत घबड़ाया क्योंकि उ से जंगल से बाहर

निकलने का कोई रास्ता नहीं मालूम था। दैवात् बादशाह को जोर से टट्टी लगी। वह घोड़े को एक पेड़ से बाँध कर घनी झाड़ियों की तरफ गया और पाखाने फिरने लगा। एक भयानक भेषधारी-राक्षस रूप, काला भुशुण्ड, बाल बढ़ाये, बड़े-बड़े दाँत आगे को निकाले विहंगम डीलडौल का दिखलाई पड़ा। वह डाकता कूदता तथा उछलता हुआ दहाड़ने लगा। थोड़ी देर बाद वह बादशाह के समीप आ पहुँचा और अपनी तेज आँखों से घूर कर बोला—"तू बड़ा प्रजापीड़न करता है; अतएव आ कर मेरा भक्ष बन !"

उसका इतना कहना था कि बादशाह एकदम भयकातर हो गया और काँपता हुआ उस देव से बोला—"हे देव ! मैं आपके सामने प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज से फिर प्रजा को कभी न सताऊँगा, आप कृपा कर मुझे जीता-जागता छोड़ दीजिये।" तब उस देव से अधिक कुछ करते न बना और बादशाह से कहा—"अब तेरे प्राण बचने का एकमात्र यही साधन है कि तू मेरे जूतों को अपने शिर पर रखकर एक फर्लाङ्ग मेरे साथ चले, अन्य कोई उपाय मेरे पास नहीं है यदि जान बचाना चाहता है तो आगे आ। 'मरता क्या न करता' विचारा बादशाह उसकी लाल पीली आँखें देखकर थरथर काँप रहा था। डरवश उसके प्रस्ताव को स्वीकार किया। बादशाह को जूता ढोने पर उद्यत देख विशालकाय दैत्य को दया आ गई और उसे बिना किसी प्रकार का दण्ड दिये ही छोड़ दिया। बादशाह नगर को चला गया—

बीरबल की छुट्टी पूरी हो चुकी थी अतएव अपनी ड्यूटी

पर हाजिर होने का निश्चय कर वह अपने घर आया। जब बादशाह को विदित हुआ कि बीरबल तीर्थाटन कर लौट आया है तो एक दूत उसे बुलाने को भेजा। बीरबल बादशाह के बुलावे पर तुरत दर्बार में हाजिर हुआ और अदब से सलाम कर अपनी जगह पर जा बैठा। बादशाह को अब भी पहली बात की ढक सवार थी। वह बोला—"बीरबल ताक पर का सेव।" बीरबल ने उत्तर दिया—"जी हुजूर पाखाने वाला देव।" बीरबल के इस उत्तर से बादशाह की आँखें खुल गईं और वह अपने किये पर शरमिन्दा हुआ। उसी दिन से सवाल का जवाब पाकर फिर उसने बीरबल से सेव की बात कभी न छेड़ी।

कालान्तर में उसे विदित हो गया कि जंगल वाला देव और कोई न था बल्कि वह बीरबल की ही करतूत थी। अतएव देव का भ्रम जो उसके हृदय में समा गया था वह क्रमशः जाता रहा और दिन सानन्द बीतने लगे।

—:※:—

दर्पण में मोहरें

एक रात्रि में किसी मनुष्य को जब कि वह अचेत निद्रा देवी की गोद में पड़ा २ विश्राम कर रहा था, ऐसा स्वप्न दीख पड़ा—"मैं किसी वेश्या के पास सोया हुआ हूँ। तमाम रात उसके साथ सोहबत करने के बाद उसे दस अशर्फियाँ देकर घर लौट रहा हूँ।" जब वह नींद से जगा तो उसे स्वप्न की सारी बातें ज्यों की त्यों स्मरण रहीं। उस का फलाफल जानने के अभिप्राय से उस मनुष्य ने स्वप्न की बातें अपनी मित्रमण्डली

में चलाई। उसके मित्र कुछ ज्योतिषी तो थे नहीं ! फल कैसे बतलाते। यह बात बढ़ते २ उस वेश्या के कान तक पहुँची।

वह उस को वज्र मूर्ख समझकर उन अशर्फियों को लेने की फिराक में पड़ी। उसको ज्ञात था कि मूर्ख ने इस बात को तमाम लोगों में बाँट दिया है, गवाहों की कमी न पड़ेगी। दूसरे ही दिन वह उसके मकान पर गई और अपना नाम बतला कर रात वाली अशर्फियाँ माँगने लगी। उस गरीब के घर अशर्फियों का दर्शन मिलना दुर्लभ था, देता कहाँ से। उसे झूठी कहकर नकर गया। वेश्या उससे जबरी करने लगी और उसे पकड़कर शहर कोतवाल के पास ले गई। कोतवाल ने उनका बयान लिया। जब उसे सच्च झूठ का ज्ञान नहीं हुआ तो लाचार होकर उन्हें बीरबल के पास ले गया।

बीरबल ने बारी-बारी दोनों का बयान लिया। उनकी बातें भलीभाँति समझ-बूझकर एक दर्पण और दश अशर्फियाँ बाजार से मँगवाया। तब एक ऐनक वेश्या के सामने रख कर अशर्फियों को इस चालाकी से रक्खा कि जिससे उनका विम्ब दर्पण पर पड़ता रहे। इस प्रकार बीरबल ऐनक में अशर्फियों को दिखलाकर वेश्या से बोला—"इस शीशे में की अशर्फियाँ तू ले ले।" तब वेश्या ने कहा—"भला मैं इन्हें कैसे ले सकती हूँ, यह तो अशर्फियों की शाया दीखती है ?" तब बीरबल को मौका मिला उसने उस वेश्या से कहा—"तुम को भी तो अशर्फियों का देना उसने स्वप्न में ही स्वीकार किया था न। अब तूँ उससे क्यों माँग रही है ?"

बीरबल के न्याय से वेश्या की गरदन नीची हो गई और उसने वहाँ से खिसकने का विचार किया। उसको जाते हुए देखकर बीरबल ने कहा–"क्यों कहाँ को चली, अपने किये का प्रतिफल लेती जा, तूने इस गरीब को नाहक परेशान किया है और इसके कार्यों में बाधा पहुँचाई है अतएव इस अपराध में तुझे दो मास का कारागृह वास करना पड़ेगा। इस प्रकार दण्ड देकर बीरबल ने उसे तुरत जेल भेजवा दिया और बिचारे गरीब की छुटकारा हुई।

बुलाता आ

एक दिन बादशाह प्रातः काल हाथ मुँह धोकर अपने एक नौकर से बोला–"बुलाता आ।" लेकिन आगेका मतलब नहीं बतलाया कि फलाँ को बुलाता आ। बिचारे नौकर ने बहुतेरा मूड़ मारा, पर उसकी समझ में कुछ न आया कि आखिरस किसको ले जावे। वह निरर्थक बहुतेरे आदमियों के पास दौड़ा, आया, गया परन्तु किसी कीं समझ में असल बात न आई कि बादशाह किसे बुलाया चाहते हैं।

वह विवश होकर बीरबल के घर पहुँचा और सब घटना कहकर इस बात का जिज्ञासू हुआ कि बादशाह किस को बुला रहे हैं। बीरबल ने उससे पूछा–"उस समय बादशाह क्या कर रहे थे।" तब नौकर ने जवाब दिया–"वे हाथ मुँह धोकर बैठे हुए थे।" बीरबल ने बतलाया कि वे हजामत बनवाना चाहते हैं, अतएव तू हज्जाम को लिवा ले जा।" नौकर हज्जाम को ले

गया। बादशाह हज्जाम को देख कर अति प्रसन्न हुआ और उस नौकर से पूछा—"यह राय तुझे किसने दी।" नौकर ने कहा—"पृथ्वीनाथ! जब मेरी समझ में आपकी बात न आई तो मैं बड़ा परेशान हुआ अन्त में हारकर बीरबल के पास जाकर सारा किस्सा कह सुनाया। बीरबल ने कहा—"बादशाह हज्जाम को बुला रहे हैं।" सो मैं उन्हीं की सलाह से इस हज्जाम को ले आया हूँ।" बादशाह बीरबल की कुशाग्र बुद्धि से बड़ा सन्तुष्ट हुआ।

रूपचन्द फूलचन्द जौहरी

दिल्ली शहर में कपूर चन्द जौहरी के दो पुत्र थे। बड़े का नाम रूपचन्द और छोटे का फूलचन्द जौहरी था। मरते समय कपूरचन्द काफी धन अपने दोनों लड़कों के लिये छोड़ गया था। बाप के क्रिया कर्म के पश्चात जो कुछ धन बच रहा उससे दोनों भाइयों ने कई वर्षों तक गुलछर्रे उड़ाये। आखिरकार उनकी नासमझी से सारा धन खर्च हो गया। तब इनको धनोपार्जन की चिन्ता हुई। जब दिल्ली में रहकर धनोपार्जन की इन्हें कोई तरकीब न सूझी तो परदेश जाने का ठहराया और गृहस्थी के निर्वाहार्थ दो तीन वर्षों के लिये सब सामग्री एकत्रित कर बाहर के लिये रवाना हुए। -

जब कुछ दूर निकल गये तो इन लोगों ने दिहातों से सामान खरीदना और अगले दिहातों में बेचना प्रारम्भ किया। इसतरह खरीद फरोक्त करते हुये बहुत दूर निकल गये, रास्ते

में एक जंगल मिला। उस जंगल के मध्य में एक तालाब था। इनको प्यास सता रही थी अतएव उस तालाब पर बैठकर निर्मल जल पान किया। फिर स्नान करने की इच्छा हुई। तालाब में स्नान करने के निमित्त दो-तीन सीढ़ी नीचे उतरते ही फूलचन्द् के पैर के नीचे कोई ठोस चीज पड़ी। उसने डुबकी मारकर उसे बाहर निकाला तो वह एक छोटी सी सन्दूक थी। सन्दूकमें एक छोटा सा ताला बन्द था। फूलचन्द् ने ताले को पत्थर से मार-मारकर तोड़ दिया उसमें दो वेशकीमत लाल बन्द थे। वह उनको देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और अपने ज्येष्ठ भ्राता रूपचन्द को दिखलाने के लिये बुलाया।

रूपचन्द् उसकी आवाज सुनकर नजदीक गया तो देखा कि फूलचन्द् के हाथ में दो लाल हैं। वह उन लालों को अपने भाई रूप-चन्द् को दिखलाकर बोला—"भाई! यह एक लाल आप अपने पास रक्खें और एक मैं लूँगा। रूपचन्द् ने कहा—"भाई इस दौलत को लेकर आप घर लौट चलें मैं भी यह सब तिजारती माल बेचता हुआ थोड़े दिनों में लौट आता हूँ। फूलचन्द् भाई की आज्ञा सिरोधार्य कर घर लौटने की तय्यारी करने लगा।" वह लाल दिखलाते हुए रूपचन्द् से बोला—"भैया! मैं घर तो लौट जाऊँगा, परन्तु आप अपने हिस्से का लाल ले लेवें।"

रूपचन्द् ने भाई को आगा पीछा समझा कर उत्तर दिया—"भाई आप जानते ही हो कि परदेश में अपने पास दौलत रखना कितना खतरनाक होता है अतएव यदि आप मुझे लाल देने की इच्छा रखते हैं तो घर पहुँच

कर मेरे हिस्से का लाल अपनी भाभी को देकर उसे छिपाकर रखने के लिये भलीभाँति समझा देना। मैं लौटकर उससे अपना लाल ले लूँगा। फूलचन्द अपने बड़े भाई का आज्ञापालक था, उन लालों को सावधानी से कमर में छिपाकर घर का रास्ता लिया। घर पहुँचकर माया की चक्कर में पड़ गया और रूपचन्द के भाग का लाल अपनी भाभी को नहीं दिया, बल्कि उन दोनों लालों को अपने ही पास छिपा कर रख लिया। पैसे के जोर से नगर में एक दूकान खोलकर जौहरी बन बैठा।

जब रूपचन्द दो तीन वर्षों के पश्चात चक्कर लगाता हुआ घर पहुँचा और अपनी स्त्री से लाल माँगा तो वह बोली–"कैसा लाल और किस ने कब मुझे दिया था, जो मैं सहेज कर रखती। स्त्री से ऐसा निरास उत्तर सुनकर रूपचंदने फूलचन्द से पूछा–"क्यों भाई मेरा लाल कहाँ है?" फूलचन्द ने उत्तर दिया "भैया वह लाल तो मैं आते ही भाभी को सौंप दिया था, बलिक उसे भली भाँति समझा भी दिया था कि देखो भैया के आने पर इसे उन्हें सौंप देना। जान पड़ता है कि अब लालच में पड़कर वह उसे आपको देना नहीं चाहती है। जिस कारण आप से झूठा बोल रही है।"

रूपचन्द को भाई के ऐसे उत्तर से बड़ा क्रोध उत्पन्न हुआ और घर आकर अपनी स्त्री को बहुत मारा पीटा, परन्तु फिर भी उसने अपने को निर्दोषी बतलाया। वह बोली–"लाल पाना तो बड़ी दूर की बात है; मैं तो इतना भी नहीं जानती कि लाल कैसा

होता है? उसका क्या रंग है।" तब रूपचन्द की आँखें खुलीं और उसने अपने मन में अनुमान किया कि यह सारा फरेब भाई का रचा हुआ है। लालच में आकर लाल को अपनी भाभी को नहीं दिया। अब मेरे पूछने पर उसपर दोषारोपण करता है।" वह इस फर्याद को लेकर बीरबल के पास गया और उसकी अदालत में दरख्वास्त लगाई। बीरबल ने एक निश्चित तिथि पर फूलचन्द को उसके शाखियों के सहित तलब किया। इधर रूपचन्द को भी उसकी स्त्री के सहित बुलाया। पहले उसने रूपचन्द और उसकी स्त्री का बयान लिया फिर उन्हें अलग अलग स्थानों पर बैठने की आज्ञा देकर फूलचन्द के साखियों को तलब किया-जब वे आये तो बीरबल ने पूछा-"देखो भाई! जो मैं आप लोगों से पूछता हूँ उसका ठीक ठीक उत्तर देना, नहीं तो यदि बात झूठी जान पड़ेगी तो दोषके उपयुक्त दण्ड पावोगे। क्या तुमने फूलचन्द को रूपचन्द की स्त्री को लाल देते हुये अपनी आँखों देखा था?" उन साखियों ने फूलचन्द का लाल देना स्वीकार किया। तब बीरबलने सोचा-"यह मसला इस प्रकार नहीं हल होगा। उन पाँचों साखियों को भी अलग अगल कोठरी में बन्द करवा दिया और बाजार से मोम मँगवाकर सात सात तोला उन पाँचों को देकर हुक्म दिया-"अच्छा यदि तुम लोगों ने लाल देते हुएदेखा है तो इस मोम से उसी शक्लका लाल बना डालो। रूपचन्द की स्त्री को भी लाल की शक्ल बनाने के लिये मोम दिया गया।

जब निर्धारित समय बीतगया और सभों से लाल लेने की बारी आई तो बीरबल ने पहले उन्हीं दोनों भाइयों का लाल

मँगवाया। उन दोनोंके लालों का आकार एक सा था। तब एक एक कर पाँचों साखियों का लाल भी मँगाकर देखा वे पाँचो पाँच ढंग के थे। उनमें लाल के आकार का एक भी न निकला। तब रूपचन्द के स्त्री की तलबी हुई, भला वह विचारी लाल का हाल क्या जाने निरा चुप रह गई। बीरबल ने उससे पूछा-"तू ने अपना लाल क्यों नहीं बनाया?" वह पर्दे की आड़ से बोली-"सरकार! आजतक मैं ने लाल आँखों से देखा भी नहीं है तो कौन सा आकार बनाकर आपको दिखलाती।" बीरबल ने उसकी करतूतों से उसे निर्दोष समझा और उसको यह भी प्रकट हो गया कि यह सारी करतूत फूलचन्द की ही है, केवल अपने भाई को ठगने के लिये ही यह सब प्रपंच रच रखा है। बीरबल फूलचन्द के साखियों को फिर से धमकाया, परन्तु वे भलीभाँति गढ़ छोल कर तय्यार किये गये थे। इसलिये उनमें से एक भी नहीं डिगा। तब बीरबल ने दो सिपाहियोंको इशारे से बुलाकर कोड़ा लगाने का संकेत किया। वे दोनों चाबुक लेकर आगे आये और बीरबल के दूसरी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। यह दशा उपस्थित देख उनमें से दो साखी फूट गये और वे सत्य२ बात कहने को प्रस्तुत हुये। उनका दूसरा बयान इस प्रकार हुआ-"पृथ्वीनाथ! हमारा कसूर माफ किया जाय क्योंकि हमने जो कुछ भी झूठ कहा है उसका कारण एकमात्र फूलचन्द है। उसनेही हमलोगों को बहकाकर झूठ बोलवाया है।"

बीरबल को फूलचन्द का ही सारा दोष प्रतीत हुआ और उसे लक्ष्यकर बोला-"अब बता, तू क्या कहता है, तेरे

साखियों ने अभी तेरे सामने क्या कहा है? फूलचन्द ने उत्तर दिया-"हुजूर मार की डरसे भूत भागता है, आखिर वे तो मनुष्य ही हैं। केवल मार से बचने के लिये ही सबों ने आपके सामने झूठ बोलना स्वीकार किया है।" इस पर बीरबल ने कहा-"तब ये मोम का पिंड लाल के आकार का क्यों नहीं बना लाये, यदि लाल को देखे होते तो जरूर बना लाते।" बेशक तू झूठा है और सजा के काबिल है।" बीरबल ने सिपाहियों को उसे कोड़े लगाने की आज्ञा दी। सिपाहियों ने दोनों तरफ से एक एक कोड़े जमाये। रूपचन्द भी ठिकाने आ गया और अपना कसूर गर्दान कर अर्ज किया-"हुजूर वे लाल मेरे ही पास हैं मैं उन्हें अभी ला देता हूँ।" लालों को मँगा कर बीरबल ने एक लाल रूपचन्द को दिया और दूसरा फूलचन्द के हिस्से का राज-कोष में जमा करा दिया। फूलचन्द और उसके साखियों को झूठा बोलने के कारण उचित दण्ड दिया गया।

—:※:—

सब सयानों का एकमत

एक दिन बादशाह ने बीरबल से पूछा-"क्यों बीरबल संसार के मनुष्यों की बुद्धि एक समान होती है वा उसमें कुछ अन्तर भी होता है।" बीरबल ने जवाब दिया-"पृथ्वीनाथ! क्या आपने इस कहावत को नहीं सुना है-"सब सयानों का एक मत।" यानी और सब बातों में तो लोगों की बुद्धि में विभेद पाया जाता है, परन्तु स्वार्थ सिद्धि में

सबकी मति एक समान ही देख पड़ती है।"

बादशाह बोला-"भला यह कैसे हो सकता है कि बुद्धि तो जुदी जुदी हो और विचार सबका एक हो?" बीरबल ने कहा-"पृथ्वीनाथ! "हाथ कंगन को आरसी क्या।" यदि आपको प्रमाण की आवश्यकता हो तो मैं कल्ह ही सिद्ध करके दिखला देने को तय्यार हूँ।"

बादशाह ने कहा-"बहुत बेहतर।"

दूसरे दिन प्रातः काल बीरबल ने बादशाह की अनुमति प्राप्तकर सरकारी बगीचे का एक बड़ा हौज जो पानी से लबालब भरा था रिक्त करवा दिया और सारे नगर में ढिढोरा पिटवा दिया कि सब लोग अपने अपने घरों से एक एक घड़ा दूध लाकर हौज को भरें। फिर हौज के ऊपर एक सफेद चादर बिछवाकर उसे भलीभाँति ढक दिया। ऐसी तरकीब कर बादशाह को देखने के लिये बुलवा भेजा। समय रात्रिका था लोगों ने विचार किया कि जब हौज में इतना घड़ा दूध पड़ेगा तो भला उसमें एकाध घड़ा जल छोड़ देने से खराबी क्या खराबी होगी। इसी विचार से प्रत्येक घरों से दूध की जगह पानी ही डाला गया। अँधेरी रात में किसी को भी न सूझा कि हौज में सभी लोग पानी ही छोड़ रहे हैं। उनका निजी अनुमान था कि मेरे सिवा अन्य नागरिक हौज को दूध ही से भर रहे हैं? यदि किसी ने साहस कर देखा भी तो चादर की सफेदी के कारण दूध का भ्रम हो गया, पानी तो नीचे छिपा हुआ था जब सबेरा हुआ तो बादशाह बीरबल के साथ हौज का दूध

खने के लिये गया। बीरबल ने बागवान को हौज की चादर
ठाने की आज्ञा दी। जब चादर उठा दी गई तो
ौज एकदम पानी से भरा हुआ निकला उसमें दूध
ा लेश मात्र भी नहीं था। यह अजीब तमाशा देखकर
ादशाह दंग हो गया और उसकी समझ में न आया कि
ाखिर मामला क्या है। जब बीरबल से उसका कारण
ूछा गया तो वह बोला—"गरीबपरवर! आपने अपनी आँखों
ख लिया अब भी "सब सयानों का एक मत" वाली कहावत
ानने को तय्यार हैं वा नहीं?

बादशाह ने सशंक होकर उत्तर दिया—"बीरबल कहावत
ो अक्षरसः सत्य प्रतीत होती है, परन्तु फिर भी मैं
ूर्णतया संतुष्ट नहीं हुआ हूँ अतएव इसमें और भी खोज बीन
रने की आवश्यकता प्रतीत होती है। अब मैं उसका
वयं अन्वेषण कर लूँगा तुझे कुछ करने की आवश्य-
ता नहीं है।

बीरबल तो हृदय से बादशाह का भक्त था इसलिये चुप
ह गया। दूसरे दिन जब बादशाह सोकर उठा तो उसे वही
ात वाली धुन समाई। वह अन्वेषण करने के अभिप्राय
े भेष बदल कर नगर की तरफ चला। कई चक्कर काटने के
ाद उसको एक मकान दृष्टिगत हुआ। इसकी दीवारें बहुत
ूँची न थीं और न कोई टीम टाम की सजावट ही थी,
रन्तु मकान खूब साफ सुथरा था। बादशाह ने इसी मकान को
पने अन्वेषण का केन्द्र ठहराया और द्वार पर पहुँच कर
कान की घुन्डी खड़खड़ाई। किवाड़ खुल गया। भीतर से

एक आदमी ने पूछा-"आप कहाँ से आये हैं और आपका यहाँ किससे और क्या प्रयोजन है?"

बादशाह बोला-मैं एक मुसाफर हूँ, कल का इसशहर में आया हूँ मैंने अपना डेरा सराय में डाला है, आज नगर देखने की इच्छा से निकला तो घूमते फिरते रास्ता भूलकर इधर आ पहुँचा, थकावट के कारण मेरे बदन में पीड़ा हो रही है इसलिये कुछ समय तक विश्राम लेकर अपनी थकावट दूर करना चाहता हूँ। बादशाह के प्रस्ताव को मकान मालिक ने स्वीकार करते हुये उसे भीतर बुला लिया और एक चारपाई दिखला कर विश्राम करने की आज्ञा दी बादशाह चारपाई पर जा पड़ा और मकान मालिक अपना निजी काम करने लगा। जब वह सब कामों से निपट चुका तो मुसाफर के पास आया और उससे कुछ खाने पीने का अनुरोध किया, परन्तु बादशाह ने उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उससे मकान मालिक से आपस दारी की बातें होने लगीं।

मुसाफिर (बादशाह)-"भाई कल्ह मैं इस नगर में आकर एक ढिंढोरा सुना था क्या यह बराबर प्रति मास पीटा जाता है वा इसी बार पीटा गया था। मैं बड़े आश्चर्य में पड़ गया हूँ कि इस ढिंढोरे से बादशाह का क्या प्रयोजन है।" मकान मालिक ने उत्तर दिया-"नहीं भाई पहले ऐसा कभी नहीं सुनने में आया था, कल्ही अचानक यह नई बात सुनने में आई, मुझे इसका भेद कुछ भी नहीं मालूम है।"

उसने फिर पूछा-"तो बादशाह इतने दूध को लेकर

आखिरश करेगा क्या।" मकानमालिक-"भाइ चाहे वह जो कुछ भी करे, परन्तु मैं आपसे सत्य २ बतलाता हूँ कि मैं तो दूध की जगह हौज में पानी ही डाल आया था।" मैंने देखा कि शहर में जब सभी लोग दूध की तलाश में है तो इतना दूध कहाँ से आवेगा और यदि हजारों घड़े दूध में इक घड़ा पानी ही डाल दूँगा तो उससे क्या होता जाता है!"

बादशाह ने मुस्करा कर कहा-"बेशक! युक्ति तो आपने अच्छी निकाली, परन्तु यह बात कहीं बादशाह की कानों तक पहुँचे तो फिर आपकी कौन सी दुर्गति हो, इसपर भी आपने कुछ बिचार किया था?" मकान मालिक ने कहा-"भाई यह बात किसी प्रकार प्रकट नहीं हो सकती।" बादशाह ने सोचा कि अब अपना असली स्वरूप इसपर प्रगट कर देना चाहिये ताकि अपनी धूर्तता पर इसे पश्चात्ताप हो। वह तुरत अपना ऊपरी लिवास हटाकर शाही लिवास में प्रकट हुए। मकान मालिक बड़ा भयभीत हुआ और उसका मुख मलीन हो गया। तब बादशाह उसे ढाढ़स बँधाते हुए बोले-"तुम घबराओ नहीं, इससे तुम्हारा कोई अनिष्ट न होगा। फिर असल बात तो यह है कि आपने अपने मुख से ही अपना दोष स्वीकार किया है, सुनो मैं यहाँ किसी अपराधी को दण्ड देने के अभिप्राय से नहीं आया हूँ केवल मुझे झूठ सच की जाँच करनी थी, जो मैं शाही लिवास में आया होता तो यह बात मुझे न मालूम होती।" इस प्रकार उस मकानदार को निर्भय कर बादशाह अपने चेहरे को फिर नकली लिवास में ढक लिया और उससे

बिदा हो एक दूसरे धनी के घर जा पहुँचे। यह धनी अपनी दयालुता के कारण सारे नगर में विख्यात हो रहा था। बादशाह ने उससे भी अपनी वही पहली युक्ति निकाली, यानी अपने को बहुत थका माँदा बतलाकर थोड़ी देर के लिये आश्रय माँगा। वह रईस बादशाह की थकावट सुन दयार्द्र हो कर बोला—"मियाँ मुसाफिर! यह घर आपका ही है, आप सानन्द जितनी देर जी चाहे विश्राम कर लो, वह सामनें कईचारपाइयाँ पड़ी हुई हैं। वहाँ पर आपको सब प्रकार का सुपास मिलेगा।"

बादशाह ने कहा—"महाशय जी! मैं अपने भार से आपको दबानें नहीं आया हूँ, बल्कि थोड़ी थकावट मिटाकर राही हो जाऊँगा।" फिर उन दोनों में देशकाल की बातें छिड़ीं। बातों २ में फँसाकर बादशाह ने फिर उससे वही बात छेड़ी। तब रईस बोला—"भाई! किफायत सभी को पसन्द है, दूसरे लोगों ने चाहे भले ही दूध डाला हो; परन्तु मैंने तो पानी ही डाला है। बादशाह ने कहा—"परन्तु इसपर आपने आगा-पीछा का विचार नहीं किया नहीं तो दूध की जगह पानी न डालते। अगर किसी प्रकार यह बात बादशाह को प्रगट हो जायगी तो आप राजाज्ञा भंग करने के अपराधी होंगे।" धनाढ्य ने कहा—"सिवा मेरे और आपके दूसरा कोई भी मनुष्य इस बात को नहीं जानता। यदि तुम नहीं कहोगे तो बादशाह किसी प्रकार नहीं जान सकता।"

बादशाह ने अपना नकली लिबास उतार कर अलग रख दिया औरउसके देखते २ असली लिबास में हो गया। "काटो तो बदन में लोहू नहीं।" बिचारा धनाढ्य एकदम ठिठुक गया

उसके हवास गुम हो गये। तब बादशाह उसे आश्वासन देते हुए बोला-"चिन्ता करने की कोई बात नहीं है, जैसे आपने किया है उसी प्रकार सभी लोग अपने २ घर किया करते हैं, परन्तु उसके लिये किसी को दण्ड नहीं दिया जाता।" उसे धीरज दे बादशाह शाही पोशाक बदल कर चला गया और बीरबल के पाण्डित्य की सतत प्रशंसा की।

थोड़ा और बहुत

एक दिन बीरबल अपनी छोटी कन्या को साथ लेकर दर्बार में गया। पहले बादशाह ने उस का बहुत प्यार किया जब वह प्रसन्न होकर कुछ बातें करने को उद्यत हुई तो बादशाह ने पूछा-"क्यों बेटी! क्या तुम बातें करना जानती हो?" तब उस लड़की ने जवाब दिया-'थोड़ा और बहुत।' बादशाह ने पूछा-इस "थोड़ा और बहुत" का क्या मतलब है?" लड़की बोली-"सरकार! इसका मतलब यह है कि बड़ों से थोड़ा बोलना जानती हूँ और छोटों से बहुत।' उस लड़की की ऐसी बुद्धिमत्तापूर्ण बातें सुनकर बादशाह को बड़ी प्रसन्नता हुई, और बीरबल के घराने की स्वाभाविक हाजिर जवाबी पर ईश्वर को कोटिशः धन्यवाद दिया।

—o:※:o—

घुँघची की माला

एक दिन धार्मिक बातों पर चरचा छिड़ी तो बादशाह ने बीरबल से पूछा—"क्यों बीरबल! तुम्हारे कृष्ण

भगवान घुँघची की माला क्यों पसंद करते हैं,? उन्हें एक से एक अमूल्य रत्नों की मालाएँ क्यों नहीं पसन्द आतीं ?" बीरबल ने उत्तर दिया—"पृथिवीनाथ ! हमारे शास्त्र में ऐसा लिखा है कि जो एक बार भी सोने से तौला जाता है वह पवित्र हो जाता है; फिर यह घुँघची तो बारंबार सोने से तौली जाती है। यही खास कारण है कि घुँघची के माले की इतनी प्रतिष्ठा की जाती है। इसी विचार से भगवान कृष्ण भी बहुमूल्य हीरे मोतियों की मालाओं को न पहनकर इसे अपने गले का हार बनाते हैं। इस उत्तर से बादशाह का चेहरा खिल गया और हँस पड़े।

बीरबल के कुटुम्ब की परीक्षा।

एक दिन बादशाह के मन में बीरबल के कुटुम्ब की परीक्षा लेने का उमंग उठा। वे अपना भेष बदलकर कई अन्य सभासदों के साथ बीरबल के घर पहुँचे। इस समय बीरबल के घर पर कोई बड़ा बूढ़ा आदमी नहीं था, वे लोग निजी काम से घर से बाहर चले गये थे। केवल बीरबल का एक छोटा लड़का और एक लड़की आपस में द्वार पर खेल कूद मचा रहे थे। लड़के ने बादशाह को देखकर कहा—"वह आये।" तब लड़की ने लड़के के प्रश्न का उत्तर दिया—"वह नहीं हैं।" बीरबल की स्त्री दालान में बैठी हुई कुछ दस्तकारी कर रही थी, वह भी इनकी बातें बराबर सुनती जा रही थी। वह बोली—"बच्चों ! यह भी होता है और वह भी होता है।"

इन तीनों की उपरोक्त गुप्त वार्ता सुनकर बादशाह लौट गया और दरबार में पहुँच कर समस्त दरबारियों के सामने इस बात की चरचा की और उसका अर्थ भी पूछा—"वह आये।" "वह नहीं हैं।" "और यह भी होता है वह भी होता है।" ऐसी भेदभरी बातें सुनकर सब लोग चकित होकर बादशाह का मुह देखने लगे। कितने दरबारियों ने तो लज्जा वश अपनी गरदन नीची कर ली और नाखून से जमीन कुरेदने लगे। जब बादशाह ने देखा कि इनसे कोई मतलब नहीं निकलेगा तो वह बीरबल को बुलवाया और उससे भी ऊपर कही बातें सुनाकर उसका अर्थ पूछा। बीरबल ने कहा-"गरीब परवर! यह वार्ता किसी मूर्ख पर छिड़ी थी। प्रश्नका तात्पर्य यह निकलता है कि किसी सभ्य के घर उसकी अनुपस्थिति में जाना उचित नहीं है और यदि कोई हठकर मूर्खतावश जावे ही और उसके घर वाले उसके लिये ऐसा कहें तो समझना चाहिये, "वह आये" यानी बैल राज आये। "वह नहीं है।" याने इनको सींग नहीं है। "यह भी होता है और वह भी होता है" "का यह अभिप्राय है कि किसी २ बैल को सींग रहती है और किसी किसी को नहीं भी।"

बादशाह बीरबल के ऐसे सारगर्भित उत्तर को सुनकर शरमिन्दा हुआ और उसने मन में ऐसी गुस्ताखी आगामी कभी न करने का प्रण कर लिया।

——०*०——

मित्र मित्र में ईर्षा।

लोग कहा करते हैं कि सन्तान पर माता पिता के खून का बड़ा असर पड़ता है; सो प्रत्यक्ष देखने में भी आया। बादशाह और दीवानके मैत्री का प्रभाव उनके लड़कों पर भी पड़ा। वे आपस में बड़े मित्र हो गए। यहाँ तक नौबत पहुँची कि वे दोनों अपना सारा कारोबार छोड़कर। मैत्रीभाव का पालन करने लगे। यह बात बढ़ते २ बादशाह के कान तक पहुँची, जिस कारण वह बहुत क्षुभित हुआ और उनकी मैत्री भंग करने का उपाय सोचने लगा। उसने इस काम का भार बीरबल को सुपुर्द किया। एक दिन वह भरी सभा में दीवान के लड़के को बुलाकर उसके कान से मुँह सटा कर अलग कर लिया, परन्तु कहा कुछ भी नहीं। फिर लोगों को सुनाकर बोला— "सावधान! इस बात को किसी दूसरे के सामने कदापि न कहना।" दीवान का लड़का वहाँ से विदा होकर चुपचाप अपने घर चला गया।

जब दोनों मित्र फिर अपने समय पर एकत्रित हुए तो शाहजादे ने पूछा—"कहिये मित्र! आपके कान से लगकर कल्ह सभा में बीरबल ने क्या कहा था?" तब दीवान के लड़के ने उत्तर दिया-"मित्रवर! उसने मुझसे कहा तो कुछ भी नहीं, परन्तु झूठमूठ मेरे कान से मुँह लगाकर हटा लिया।" शाहजादे ने कहा—"मित्रवर! आज यह नयी प्रणाली कैसी? आप तो कभी किसी बात की मुझसे छिपाव नहीं करते थे?" शाहजादे के मनमें इतनेही से खटका उत्पन्न हो गया, जिससे वह थोड़े समय में ही दीवान के लड़के से पृथक हो गया और फिर

कभी उससे मित्रता न की। इधर से दिल का झुकाव हट जाने से उसका मन निजी कारोबार में लग गया। बादशाह ने बीरबलकी इस बुद्धिमत्ता से बड़ा प्रसन्न हुआ और उसे खुश करने के लिये बहुत सा पुरस्कार दिया।

मट्टीचूस का द्रव्य।

दिल्ली नगर एक बड़ा शहर है, उसमें सभी श्रेणी के मनुष्य निवास करते हैं। इसी शहर में एक अति दीन मनुष्य भी रहता था। यह बड़ा कंजूस था। कंजूसी के कारण धीरे २ इसके पास बहुतेरी मुहरें इकट्ठी हो गईं। जब उसे मुहरों को घर में रखने से चोरी हो जाने की आशंका हुई तो उन को एक छोटे से बक्स में बन्द कर एक विस्तृत मैदान में आशापल्लव के नीचे गढ़ा खोदकर गाढ़ आया ताकि उसे कोई चुरा न सके। उसकी देखरेख करने के लिये कभी २ उस वृक्ष तले जाकर गुपचुप लौट आता।

एक दिन उसका द्रव्य वहाँ से गायब हो गया, और जब वह नित्य के अनुसार पेड़तले अपना द्रव्य देखने गया तो क्या देखता है कि वह जगह खुदी पड़ी है, वहाँ द्रव्य का नामो-निशान तक नहीं है। मारे चिन्ता के छाती पीट २ कर रोने और चिल्लाने लगा। इस प्रकार बड़ी देर तक कुँहुक २ कर रोता रहा, जब थककर लाचार हो गया तो हृदय को ढाढ़स देते हुए कुछ शान्त हुआ। वह रात्रि चिन्तना करते ही बीत गई। दूसरे दिन साहस कर बादशाह की अदालत में गया। वहाँ के कुछ दरबारियों की सम्मति से

एक कागज पर अपनी विपत्ति गाथा लिखकर बादशाह के पास पेश किया। बादशाह उसका समाचार पढ़कर बड़े चिन्तित हुए। सूमड़ा उनके सामने और भी फूट-फूटकर रोने लगा।

इसकी चिल्लाहट और रुलाई से सारा दर्बार घबड़ा उठा सब लोग अपना २ कामकाज बंद कर एकमात्र उसकी दर्दभरी रुलाई सुनने लगे। बादशाह के पूछने पर उस दुःखित सूमड़े ने अपना आद्योपान्त समाचार कहकर गिड़गिड़ाता हुआ बोला–"गरीबपरवर! मैं बेहद लुट गया, मेरे निर्वाह के लिये अब मेरे पास एक कौड़ी भी नहीं है, क्योंकर जीवन-रक्षा करूँगा।" बादशाह का हृदय पिघल गया खजांची को हुक्म दिया–"जबतक इसका द्रव्य नहीं मिलता तबतक इसे खाने पहनने को दर्बार से दिया जाय।" फिर सूमड़े को जाँच कराने की तसल्ली देकर बादशाह ने दूसरा कार्य्यारम्भ किया।

जब सब कामों से निश्चिन्त होकर बादशाह और बीरबल सन्ध्या समय एकत्रित हुए तो बादशाह सूमड़े के संबंध की बातें बतलाकर बोला–"बीरबल! इसका खोज कराना बड़ा जरूरी है।" यदि धन न मिला तो सूमड़ा रोते २ अपना प्राण गँवा देगा।" बीरबल ने कहा–"पृथिवीनाथ! मैं खोज कराकर उसका द्रव्य यथाशीघ्र ढूँढ निकालने की कोशिश करूगा।" तब बादशाह को कुछ शान्ति मिली और फिर बीरबल के सहित महल में दाखिल हुआ। वे एक अलग कमरे में बैठकर आपस में गुप्त परामर्श करने लगे। कुछ देर बाद बीरबल को एक युक्ति सूझी और वह उसे बादशाह से कहकर सुनाया।

उसकी युक्ति से बादशाह भी सहमत हो गया और उसे तत्क्षण कार्यान्वित करने के लिये बीरबल को आज्ञा दी। बीरबल का कार्यारम्भ हुआ।

वह बहुतेरे वैद्य हकीमों को बुलावा भेजा, जब वे आये तो उन से पूछा–"आपको जड़ी बूटियों का हाल भलीभाँति मालूम है— यदि न भी मालूम हो तो एक हफ्ते में छानबीन कर बतलावें कि आशापल्लव की पत्तियाँ और उसकी जड़ किन-किन दवाओं में काम आती है?" बीरबल की आज्ञा मानकर सब वैद्य लौट गये और घर पहुँचकर उसके अनुसन्धान में यथासक्य कोशिश करने लगे।

जब सप्ताह का अन्तिम दिन आया तो अपनी-अपनी सम्मति देने के लिये दर्बार में उपस्थित हुए। सभों ने अपनी खोज का पृथक २ वर्णन किया; परन्तु बीरबल के मतलब की बात किसीने नहीं बतलाई। तब उनमें से एक सर्वश्रेष्ठ वैद्य बोला–"दीवानजी! आपकी आज्ञानुसार मैंने भी अपने भरसक अनुसन्धान किया है। बड़ी खोजबीन के पश्चात् मुझे निघन्टु से एक बात मिली है। सुस्रुत और निघन्टु में लिखा है कि आशापल्लव के पत्ते का चूर्ण बना कर देने से पीलिया रोग वाले को तत्काल आरोग्य-लाभ होता है और जलन्धर वाले रोगी को इसकी जड़ की धूनी देने से जलन्धर का रोग जड़ से जाता रहता है।"

बीरबल ने पूछा–"क्या आप बतला सकते हैं कि इस महीने के अन्तर्गत कितने लोग जलन्धर के रोग से ग्रसित हुए थे और उससे बचने के लिये उन रोगियों ने किन-किन

औषधियों का सेवन किया था। इसका ठीक २ अनुसन्धान कर आप लोग पुनः एक हफ्ते के बाद मुझसे मिलें और सारी बातों का पूरा २ रिपोर्ट दें।"

वैद्यों ने घर पहुँचकर हर प्रकार से खोजबीन कर आठवें दिन फिर दर्बार में उपस्थित हुए। एक वैद्य ने कहा—"पृथिवी-नाथ! इस मास में केवल चार रोगियों की दवा की गई थी जिसमें एक रोगी को आशापल्लव के जड़ की धूनी से आरोग्य-लाभ हुआ था।"

तब बीरबल ने पुनः प्रश्न किया—"अच्छी बात है, अब बतलावो कि इसकी जड़ तुम लोग कहाँ-कहाँ से लाये थे, ध्यान रहे कि झूठ बोलने वाले को कठिन दण्ड दिया जायगा।" बीरबल की ऐसी सख्ती देखकर विचारे वैद्यों के रोंगटे खड़े हो गये, उनमें से एक जो आशापल्लव के जड़ का इस्तेमाल किये था; डरकर बोला—"महाशयजी! मेरा नौकर उसको जंगल से खोद लाया था, मेरा अपराध क्षमा किया जाय, आगे फिर ऐसा न करूगा।" बीरबल बोला—"पहले उस नौकर को उपस्थित करो फिर जैसा होगा उसपर आगे विचार किया जायगा।" वैद्य ने उसका पता ठिकाना बतला दिया। तब एक अर्दली को भेजकर उसे बुलवाया गया। नौकर तुरत हाजिर हुआ। बीरबल ने पूछा—"क्या तू आशापल्लव के वृक्ष को पहचानता है?"

नौकर ने उत्तर दिया—"बेशक! गरीबपरवर उसे मैं बखूबी पहचानता हूँ।"

बीरबल—"किसी दिन तू वैद्य की आज्ञा से उसका मूल

खोद कर लाया था।"

नौकर-"हाँ पृथिवीनाथ ! लाया था।"

बीरबल भृकुटी चढ़ाकर बोला-"क्या उस पेड़ के नीचे गड़ी अशर्फियों को तू ही खोद लाया है? बेहतरी चाहता है तो उन्हें जल्द लाकर उपस्थित कर, नहीं तो अभी तेरी चमड़ी उखाड़ ली जायगी।"

नौकर बीरबल की धमकियों में आकर घबड़ा गया और काँपता हुआ बोला-"पृथिवीनाथ ! मेरा अपराध क्षमा किया जाय तो मैं उन अशर्फियों को आपके सामने ला धरूँ। बीरबल ने उसे अभयदान दिया। वह अपने घर जाकर सारी अशर्फियाँ उठा लाया। बीरबल अशर्फियों को देखकर भीतर भीतर बड़ा प्रसन्न हुआ और उन अशर्फियों को मक्खीचूस के हवाले कर बिदा किया। विचारे वैद्य छोड़ दिये गये।

जलकुण्ड में बरहमन

एक दिन शीत काल में कुछ लोगों के साथ बादशाह हवा सेवन के लिये नगर से बाहर निकला। वह घूमते २ एक ऐसे स्थान पर जा पहुँचा जहाँ एक पुराना जलकुण्ड जल से लभालभ भरा हुआ था। उस कुण्ड पर आदमियों वा जानवरों का समागम भी बहुत कम था। बादशाह ने अपना हाथ कुण्ड में डुबोया, उसका जी सन्न हो गया, उस मैदान के तालाब का जल हवा और ओसके प्रभाव से अत्यधिक शीतल हो रहा था। बादशाह बड़ा रसिक और बहादुरों की कदर करने वाला था। अतएव अपने साथियों के परीक्षार्थ बोला-

"आप लोगों में कोई ऐसा भी बीर है जो इस जलकुण्ड में धँसकर एक पहर रात्रि तक खड़ा रहे।"

किसी को बादशाह के प्रश्न का उत्तर देने का शाहस न हुआ, आखिरकार फिर बादशाह ने एक दूसरी घोषणा की। उसने कहा–"जो कोई आज इस तालाब के जल में गले तक डूबकर रात्रि भर खड़ा रहेगा, उसको पचास हजार रुपये बतौर पारितोषिक के दिये जायँगे।"

फिर भी कोई मनुष्य उस जान लेवा देवा कर्तव्य के लिये उद्यत न हुआ। तब उसी गिरोह का एक बरहमन जो वस्त्राभाव के कारण अर्धनग्न हो रहा था, बढ़कर सबसे आगे आया। उसने अपने मन में सोचा–"रोज रोज की यातना से एक दिन में ही कष्ट सहकर प्राण त्याग देना उत्तम है; मैं किसी दिन भर पेट अन्न खाकर नींद भर नहीं सोता, रात दिन गरीबी की आग में जला करता हूँ, तो क्यों न इसी बहाने प्राण त्याग दूँ! यदि ईश्वर सहायक हुआ तब तो कहना ही क्या है। इस पुरस्कार से आजन्म सुखपूर्वक निर्वाह करूगा।" फिर बादशाह से अपना दोनों हाथ जोड़कर बोला–"पृथिवीनाथ! मुझे आपकी शर्तें मंजूर हैं।" बादशाह ने कहा–"अच्छी बात है, यदि तू अपने कौल का सच्चा निकलेगा तो मैं तुझे पचास हजार रुपयों के अतिरिक्त बहुत सा वस्त्राभूषण भी इनाम में दूँगा।"

तालाब के चारों तरफ बादशाह ने संतरियों का पहरा बैठा दिया। फिर वह दीन ब्राह्मण नंग धड़ंग होकर उस जल में पैठा और राम राम करके सारी रात बिता

दी। जब सबेरा हुआ तो रुपये लेने की लालचसे अपनी गीली धोती निचोड़ता हुआ गिरता पड़ता दर्बार में हाजिर हुआ। साथ में वे सब पहरे के सन्तरी भी थे। बादशाह ने सन्तरियों से बरहमन के सच्चे झूठे के निस्बत शाक्षी ली। सभों ने एक स्वर से उसका सच्चा होना स्वीकार किया। बादशाह ने बरहमन को रुपये देने की आज्ञा दी। मसल मशहूर है-"तेली का तेल जले और मशालची को पीड़ा हो।" परिश्रम किसने की और पुरस्कार कौन देगा, इसका ख्याल न कर कुछ कुटिल दर्बारी जल गये और वे इस उपाय में लगे कि येन केन उपायेन इसको यह द्रव्य न मिले।

उनमें से एक सर्वश्रेष्ठ कुटिल चुपके से उठकर एक संतरी से जा मिला और उसे उल्टी सीधी सिखाकर बादशाह के सन्मुख खड़ा किया। वह बोला-"पृथिवीनाथ! यह बरहमन तो जल में कंडा हो गया होता, परन्तु इसने एक चालाकी की थी जिससे जीता बच गया। सामने पहाड़ पर आग जल रही थी यह उसी को देखता हुआ उसकी गरमी के सहारे से खड़ा रह गया।"

बादशाह बोला-"क्यों, क्या यह संतरी सच कह रहा है?"

इस पर एक दूसरे संतरी ने भी हामी भर दी। तब बादशाह उस बरहमन से बोला-"देखो तुम अपने कौल पर नहीं रहे बल्कि अग्नि को देखकर रात बिताया है अतएव तुमको पुरस्कार के रुपये नहीं दिये जायँगे।"

उस उपस्थित मंडली में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं निकला जो उस दीन कीसहायता करता। अखिरकार रोता

बिलखता हुआ बीरबल के घर पहुँचा। उसका आद्योपान्त समाचार सुनकर बीरबल ने उसे ढाढ़स दिया और उसे चुपचाप घर जाकर बैठने की सम्मति देकर बिदा किया। दूसरे दिन जब बीरबल को दरबार जाने का समय हुआ तो एक नई तरकीब सोच कर निकाली। मार्ग में एक नदी का तट मिला वहीं पर रुककर झटपट पड़ोस के गाँव से एक बड़ा लम्बा बाँस मँगवाया और उसके सिरेपर एक काली हड़िया बाँधकर उसमें पानी और थोड़ा दाल चावल छोड़कर बाँस के तने को जमीन पर गाड़ दिया और उससे सटकर आग जलाना शुरू किया।

जब दरबार के समय बादशाह अपनी सभा में आया तो बीरबल अनुपस्थित था वह उसके आने की प्रतीक्षा करने लगा। जब इस प्रकार घंटों हो गया और बीरबल नहीं आया तो उसे चिन्ता हुई और तुरत बीरबल को बुलाने के लिये एक द्रुतगामी दूत को भेजा। बीरबल के घर पहुँच कर उस सिपाही को विदित हुआ कि बीरबल नदी तट पर किसी कार्य्य वश गया है। वह सीधे नदी तट की तरफ मुड़ा और वहाँ पहुँच कर बीरबल से बादशाह की आज्ञा सुनाकर बोला–"आपको बादशाह शीघ्र बुला रहे हैं।"

बीरबल ने कहा–"भाई थोड़ी सब्र कर फिर चलता हूँ।" सिपाही बोला–"यह आप क्या कर रहे हैं?" बीरबल ने उत्तर दिया–क्या तू इतना भी नहीं समझता, मैं खिचड़ी पका रहा हूँ।" सिपाही बीरबल के चरित्रों से परिचित था अतएव उसने उसमें कुछ रहस्य की बात समझकर हँसता

हुआ चला गया। दरबार में पहुँचकर उसने बीरबल का सारा वृतान्त कह सुनाया। बादशाह बीरबल से मिलने के लिये और भी उत्सुक हुआ। कुछ समय और प्रतीक्षा करने पर जब वह न आया तब उसे बुलाने के लिये एक दूसरे आदमी को भेजा। वह भी वही पहले सा सूखा उत्तर लेकर लौटा। बादशाह मिनट २ पर उसे बुलाने को आदमी भेजने लगा, परन्तु बीरबल सबको यही एक उत्तर देकर लौटाता—"भाई खिचड़ी पका रहा हूँ, थोड़ी देर में आता हूँ।"

बादशाह को बीरबल की बाट निहारते-निहारते कई घंटे हो गये और दरबार का सारा काम इसी आवा-जाही के कारण बन्द रहा। बीरबल की ऐसी धृष्टता बादशाह को असह्य हो गई और वह क्रोध में परिणत होकर बोला—"वाह मुझे प्रतीक्षा करते करते कई घन्टों का समय व्यतीत हो गया और अभी तक उसकी खिचड़ी न पकी। मैं स्वयं चलकर उसकी खिचड़ी देखता हूँ।" बादशाह कुछ लोगों को साथ लेकर स्वयं उस स्थान पर गया, जहाँ महाशय बीरबल की खिचड़ी पक रही थी। अजीब दृश्य था ऊपर बाँस के सिरे में बँधी हुई एक काली हाँड़िया टँगी थी और वह नीचे घास सुलगा कर खिचड़ी पका रहा था। बादशाह बोला—"बीरबल यह तूँ क्या कर रहा है?"

बीरबल ने उत्तर दिया—"पृथिवीनाथ खिचड़ी पका रहा हूँ!

बादशाह—"मैं देखता हूँ कि आज तुम्हारा दिमाग घूमा हुआ है? भला-आकाश में हड़ियाँ टाँगकर कहीं जमीन पर घास सुलगाने से खिचड़ी पक सकती है?"

बीरबल–"गरीबपरवर! जिस प्रकार एक कोस की दूरी से अग्नि की उष्णता देखकर ब्राह्मण जल में रात्रि समय जीवित रह सकता है, उसी प्रकार मेरी खिचड़ी भी थोड़ी देर में परिपक्व हो जायगी।"

बादशाह–बीरबल की इस दृष्टान्त भरी खिचड़ी से प्रसन्न हो गया और बोला–"बीरबल! अब मैं भलीभाँति समझ गया, तुम्हारा कहना सत्य है अतएव दरबार में चलो। बरहमन को शर्त के अनुसार इनाम दिया जायगा। बीरबल तो केवल, उतने ही के लिये नया नाटक तय्यार किये हुए था। जब उसकी मंशा बर आई तो उठकर बादशाह के साथ दर्बार को गया। बादशाह ने सिपाही भेजकर उस बरहमन को बुलावाया और उसको अपनी घोषणा के अनुसार द्रव्य और वस्त्राभूषण देकर बिदा किया। वह बीरबल को कोटि कोटि धन्यबाद देता हुआ अपनेघर चला गया।

मुल्ला की पगड़ी

अकबर बादशाह के दरबारियों में कितने मुल्ले भी शरीक थे। उन्हों में एक मुल्ला का नाम दुआजा था। यह बीरबल से प्रगट तो हँसी किया करता था, परन्तु भीतर २ उसे छिपा कर अपनी प्रधानता चाहता था। एक दिन जब दरबार भरा हुआ था बादशाह ने सबके सामने बीरबल की पगड़ी देखकर उसकी बड़ी तारीफ की। दुआजा बीरबल की इस प्रशंसा को सुनकर भीतर ही भीतर जल उठा, परन्तु अपना भीतरी भाव छिपाकर बादशाह से बोला–"यह कौन सी बडी बात है, मैं

इससे भी अच्छी पगड़ी बाँधकर दिखला सक्ता हूँ।" मुल्ला को दूसरे दिन पगड़ी बाँधने की कला दिखलाने की आज्ञा देकर बादशाह ने दरबार बरखास्त किया।

मुल्ला मन में मस्त था, प्रभात होते ही पगड़ी बाँधकर सभा में हाजिर हुआ। बादशाह को मुल्ला के पगड़ी बाँधने की कला पसन्द आई और लोगों के सामने उसकी बड़ी प्रशंसा की। यहाँतक कि उसकी पगड़ी को बीरबल की पगड़ीसे भी अधिक विशेषता दी। तब बीरबल बोला–"पृथिवीनाथ यह इनकी करतूत नहीं है; बल्कि इसका श्रेय इनकी स्त्री को मिलना चाहिये। उसी की मदद से मुल्ला साहब ने बाजी मार ली है। यदि मेरी बातों का यकीन न हो तो ये सबके सामने फिर से बाँधकर दिखलावें।" मुल्ला की पगड़ी उतार दी गई, परन्तु वे ऐनक की सहायता के बिना फिर वैसी पगड़ी बाँध न सके, अतएव बादशाह के सामने विचारे को चपड़ियाना पड़ा।

इस पर बादशाह को बड़ी हँसी आई और बोला–"धन्य हैं मुल्ला साहब! जो कर्म आपसे नहीं बन पड़ता वह जोड़ू से करवाते हैं।"

—:*:—

एकान्तवास की व्याख्या

बीरबल का नियम था कि दर्बार से फुरसत पाकर वह अपना कुछ समय एकान्तवास में बिताया करता था। एक दिन जब कि वह दर्बार से खाली होकर अपने घर लौट रहा था तो मार्ग में उसे एक आदमी मिला। वह बीरबल से पूछा–

"महाशय जी ! क्या आप कृपा कर मुझे बीरबल के घर का पता बतला सकते हैं?" बीरबल ने कहा-"क्यों नहीं बतला सकता।" तब वह उसको अपने घर का पता ठिकाना बतला कर वहाँ से चलता हुआ। वह मनुष्य पूछता २ बीरबल के घर जा पहुँचा और उसके घरवालों से बीरबल से मिलने का अनुरोध किया। वे बोले-"ताऊजी अभी बाहर गये हैं, ठहर जाओ थोड़ी देर में मुलाकात हो जायगी। वह आदमी बीरबल के द्वार पर बैठकर उसके आने की प्रतीक्षा करने लगा।

थोड़ी देर बाद बीरबल लौटकर आया, वह उसे पहचान कर आश्चर्य्यचकित होकर पूछा-'दीवान जी! रास्ते में आपसे मेरी मुलाकात हुई थी, परन्तु वहाँ पर आपने मुझे अपना परिचय क्यों नहीं दिया।" बीरबल ने कहा-"आपका कहना अक्षरसः सत्य है, परन्तु आपने मुझसे बीरबल के घर का पता पूछा था। इसलिये मैंने अपने घर का पता बतला दिया, यदि मेरा परिचय पूछे होते तो मैं आपको अपना परिचय देता।" उस आदमी ने कहा-"लोगों के मुखसे मैंने ऐसा सुना है कि आप नित्यप्रति अपना थोड़ा समय एकान्त बास में बिताते हैं, सो उसका क्या कारण है?" बीरबल बोला-"आपको समझना चाहिये था कि एकान्तबास से बड़ा लाभ होता है। अव्वल तो एकान्त बास में विचारों की सूझ भलीभाँति होती है, दोयम एकान्त मनन करने का सर्वोत्कृष्ट साधन है। यदि आप कहीं अलग बैठकर विचार करेंगे तो आपको अपनी परिस्थिति और की और ही देख पड़ेगी।" वह मनुष्य बीरबल के उत्तर से संतुष्ट होकर अपने घर लौट गया।

बीरबल की कुरूपता

बीरबल का रंग साँवला था। एक दिन दर्बार के समय लोगों में मनुष्य की सुन्दरता और कुरूपता पर बहस छिड़ी। बहुतेरे लोग बीरबल का स्मरण कर उसकी कुरूपता पर हँस पड़े। उस समय बीरबल दर्बार में उपस्थित नहीं था, जब कुछ कालोपरान्त लौटकर आया तो दर्बारी लोग उसे देखकर जोरर से हँसने लगे। बीरबल चाहता था कि उनके इस आकस्मिक हँसी का कारण पूछे, परन्तु कुछ सोच विचार कर चुप रह गया। इधर उधर की बातें होने लगीं। कुछ देर बाद बीरबल को अवसर मिला तो बादशाह से बोला—"पृथ्वीनाथ! आज आप लोग बड़े हँसमुख क्यों दीख पड़ते हैं?"

बादशाह ने हँसते हुए उत्तर दिया—"लोगों के हँसने का कारण तुम्हारी कुरूपता है, वे कहते हैं—"हम लोग गोरे और बीरबल काला कैसे हुआ?"

बीरबल बोला—"अफसोस कि अभी तक आपको इसका कारण ही नहीं ज्ञात हुआ।" बादशाहने कहा—"भला भाई बिना बतलाए यह लोगों को कैसे मालूम हो? आप यदि जानकारी रखते हों तो बतला कर सबका भ्रम निवारण करें।"

बीरबल ने उत्तर दिया—"पृथ्वीनाथ! जिस समय ईश्वर ने सृष्टि की रचना प्रारम्भ की सर्वप्रथम वृक्ष और बेलों की रचना की। पर इतना ही करके वह संतुष्ट नहीं हुआ, तब पशु और पक्षियों की बारी आई। इतना करके कुछ समय तक आनन्द उपभोग करता रहा, फिर उससे भी उत्तम

जीवों की रचना करने का विचार कर मनुष्यों की रचना की। तब वह अति आनन्दित होकर पहले उसे रूप, दूसरे धन, तीसरे बुद्धि और चौथे बल प्रदान किया।

चारों चीजों को जुदी २ रखकर सब मनुष्यों को फर्माया कि इन चारों में जिसे जो पसन्द हो अपनी इच्छानुसार ले लेवे। इस कार्य्य के लिये कुछ समय भी निर्धारित कर दिया था। मैं बुद्धि लेने में रह गया जब दूसरो चीज लेने गया तो समय बीत चुका था इसलिये कोरा लौटना पड़ा। मैं बुद्धि लेकर रह गया। आप लोग भी धन, रूप, बल के लालच में पड़कर बुद्धि लेना भूल गये। इसी कारण मैं कुरूप हुआ। बीरबल के उत्तर से बादशाह और दरबारियों का मन टूट गया और फिर वे कभी बीरबल की हँसी न उड़ाई।

—o:*:o—

चतुर माँ के सुपूत

एक दिन बादशाह बीरबल के साथ बाग में बैठा हुआ गपाष्टक कर रहा था। गरमी का दिन था। प्रातःकाल की मन्द मन्द हवा बह रही थी। बादशाह और दीवान गरमी की पोशाक पहने हुए थे। उस सुहावने समय में वे बड़े खुश मालूम होते थे। उनके बातों की लड़ी टूटती ही न थी। प्रसंग चलते २ बनियों का जिक्र आया। बादशाह ने बीरबल से पूछा—"बीरबल! क्या यह सच है, लोग अक्सर बनियों को चतुर माँ के बेटे क्यों कहते हैं?" बीरबल ने उत्तर दिया—"पृथ्वीनाथ! सचमुच बनिये ऐसे ही पाये जाते हैं।" बादशाह ने कहा—"अच्छी बात है; परन्तु इसका प्रमाण देकर मेरी शंका निवारण करो।

बीरबल ने तुरत एक सिपाही के द्वारा थोड़ी सी मूँग की फुरमाइस कर बाजार से चार बनियों को बुलवाया। दीवान का संदेशा मिलते ही बनिये मूँग के नमूने सहित तुरत हाजिर हुए। बीरबल ने पूछा—"साहजी इस अन्न का क्या नाम है?" बनिये विचार में पड़ गये और मन में सोचा कि यह अन्न एक प्रसिद्ध खाद्य है और इसका नाम भी किसी से छिपा नहीं है, कारण की परमातमा ने इसकी उपज भी अच्छी दी है। इसके अन्दर कोई भेद की बात जरूर है, नहीं तो बादशाह इसका नाम मुझसे क्यों पूछता? उत्तर भी सोच समझ कर देना चाहिये।" चारो बनियों ने मिलकर एक मत किया। उन्होंने सोचा कि यदि मूँग को मूँग ही बतलाया जाय तो बादशाह इससे प्रसन्न नहीं होने का तब आखिर ऐसा कौन सा नाम बतलावें की बादशाह की प्रसन्नता हो। अभी इनका मिसकाउट चल ही रहा था कि इसी बीच बादशाह ने फिर पूछा—"क्यों साहजी! आप लोग अभी तक क्या सोच रहे हैं, इसका नाम क्यों नहीं बतलाते?"

थोड़ी सी मूँग हाथ में उठाकर एक बनिये ने उत्तर दिया—"पृथिवीनाथ! यह तो मुझे उरद जान पड़ती है। दूसरे ने कहा—"यह मटर जान पड़ती है। परन्तु मटर मे छोटी है, इसका ठीक-ठीक नाम स्मरण में नहीं आता।" तीसरे ने कहा—"यह मिरच जान पड़ती है।" उनकी ऐसी चौरंगी बातें सुनकर बादशाह ने कहा—"तुम लोग मुझे खपतुलहवास जान पड़ते हो। यह मूँग है मूँग।" बनियों ने कहा—"हाँ गरीबपरवर! वही वही; जो आप कह रहे हैं।" बादशाह ने

फिर पूछा-"वही वही क्या? नाम क्यों नहीं बतलाते।" बनिये बोले-"गरीबपरवर! जो नाम अभी आपने बतलाया था वही।" बादशाह भी पर में पानी लगने देने वाला नहीं था। उसने कहा-"अभी मैंने किस चीजका नाम लिया था?" बनिये फिर चालाकी खेल गये और बोले-"गरीबपरवर! हम को विस्मरण हो गया है।"

बादशाह ने कहा-"हाँ हाँ मैंने मूँग का नाम बतलाया था।" बनियों ने कहा-"जी जी, पृथिवीनाथ वही।" इतना होने पर भी बनियों ने मूँग का नाम अपनी जबान पर न लाये। बादशाह उनकी इस चातुर्यता से अति प्रसन्न हुआ, और सब को घर जाने की अनुमति दी।

गौ की महिमा

एक दिन बादशाह के सामने लोग गौ की उपयोगिता पर विचार कर रहे थे; सभों ने गौ की एक से एक बढ़कर महिमा बतलाई। उस समय एक मौलबी साहब भी वहीं बैठे हुए थे, उन्होंने कहा-"गौ को मैं भी गुणवती कहने को तय्यार हूँ क्योंकि हमारी पुस्तकों में भी एक स्थान पर गौ के दूध को स्वास्थ्यवर्धक और मांस को अनिष्ट कर लिखा है।" यह सुनकर बीरबल से चुप न रहा गया, वह बोला-"तभी आप लोगों की कुरान के प्रारम्भ में ही बकर लिखा है। बकर गाय का नाम है। यह सुनकर सब लोग हँस पड़े, बादशाह भी प्रसन्न हुआ।

यकीनशाह पीर

आज बादशाह अपनी वर्षगाँठ मना रहा था, दूर-दूर के लोग इस उत्सव में अपना २ तोहफा लेकर आये हुए थे, एलचियों की तो मानो भरमार हो रही थी। जो आता अपनी नजर गुजार कर किसी रिक्त स्थान पर बैठ जाता। दरबारी लोग अपने २ आसनों पर मूर्तिमान बैठे हुए थे। शामियाने के अन्दर वेश्याओं का गान और वाद्य भी साथ ही साथ होता जा रहा था। बादशाह अपने दर्बार की सजावट देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ क्योंकि उसे अपने दरबारियों की बुद्धि और कला विशेषता पर बड़ा गर्व था। उसका ख्याल था कि उसके मंत्री के समान बुद्धिमान कही दुनियाँ के पर्दे में दूसरा मंत्री नहीं है।

बादशाह के दरबार में फकीर और मौलवियों का जमघट लगा हुआ था क्यों कि आज उसने हजारों फकीर जिमाये थे और बहुतेरों को मुँह माँगा दान दिया था। इसी समय बादशाह का सबसे बड़ा पीर आया। बादशाह ने भी पीर साहब की बड़ी आव भगत की और उन्हें सर्वोत्तम पदार्थ भेट में दिया। हर तरफ प्रसन्नता का साम्राज्य था जिधर देखो उधर लोग बादशाह को दुवा देते सुनाई पड़ते थे। इस नजारे को देखकर बीरबल हँस पड़ा? उसकी हँसी से बादशाह को नाराजगी तो नहीं हुई, परन्तु वह कुछ क्षुब्ध सा अवश्य हो गया।

जब सब लोग चले गये तो बादशाह ने बीरबल से पूछा– "क्यों बीरबल बतला सकते हो की पीर बड़ा होता है वा यकीन।" बीरबल ने उत्तर दिया–"पृथ्वीनाथ! यकीन बड़ा

होता है।" बादशाह ने बीरबल की बात काट दी और बोला—"भला कभी पीर से बढ़कर यकीन भी हो सकता है; बिना पीरके हुए विश्वास कैसे होगा।"बीरबल ने कहा—"नहीं शाहनशाह यकीन ही पीर से बड़ा है।" बादशाह उसके इस उत्तर से कुछ झल्लाकर कहा—"बीरबल यह तू क्या कहता है, कहीं पीर की मानता करनेसे वह नाखुश होता है।" बीरबल बोला—"पीर पर विश्वास करनेसे फल मिलता है।"हम हिन्दू मूर्तिका पूजन करते हैं, परन्तु वह मूर्ति हमे फल नहीं देती बल्कि उस पर विश्वास करने से हमें देवतों द्वारा फल मिलता है।"

बादशाह को बीरबल के ऐसे उत्तर से सन्तोष नहीं हुआ तदर्थ क्रोधित होकर बीरबल से कहा—"तुमको प्रमाणों द्वारा सिद्ध कर दिखाना होगा कि पीर से आस्था बड़ी है।" बीर-बल बोला—"मुझे स्वीकार है।"बादशाह ने कहा—"इसी वक्त सिद्ध कर दिखलाओ।" बीरबल ने उत्तर दिया—"पृथ्वीनाथ! यहकाम इतना सरल नहीं है, इसके लिये अवकाश मिलना चाहिये।" बादशाह बोला—"अच्छा, तुझे इसके लिये एक महीने की मुहलत दी जाती है, परन्तु ध्यान रहे कि अगर इतने समय में सिद्ध न कर सकोगे तो तुम्हारी गर्दन उड़ा दी जायगी।" बीरबल ने कहा—"मुझे स्वीकार है।" उस दिन का काम समाप्त हुआ। बीरबल बराबर अपना कार्य्य पहले सा करने लगा। जब उसे मालूम हुआ कि अब बादशाह का दिल दूसरी बातों में बहल गया है तो चार पाँच दिनों का अन्तर देकर बादशाह के पैर का एक पवाई जूता चुरा ले गया।

वह उस जूतेको शालके टुकड़ेमें भलीभाँति ढककर नगरके बाहर एक एकान्त जगह में छिपा कर रख आया दूसरे दिन उसको एक कब्र के अन्दर रख ऊपर से तीन पत्थरों को ऐसी विधि से रख दिया की वह एक खासी कब्र बनकर तय्यार हो गई। बाद को एक मुसलमान को नौकर रखकर उसका मुजावर बनाया। उसको हिदायत की कि जब कोई इसके निस्वत तुमसे पूछे तो कहना कि यह मकबरा यकीन शाह पीर की है और बराबर लोगों में इसकी सिद्धताई की चर्चा भी करते रहना।"

मुजावर ने बीरबल की आज्ञानुसार उस मकबरे का यकीनशाह पीर के नाम से नया नया ढोंग रचकर प्रचार करने लगा। धीरे धीरे यह बात सारे नगर में फैल गई। तमाम स्त्री पुरुष उस पर मानता मानने और चढ़ाने के लिये आने लगे। ईश्वर की कृपा से 'जंगल में मंगल' हो गया। यह बात फैलते २ एक दिन बादशाह के कान तक पहुँची। जैसा दुनिया का कायदा है, दरबारी लोग सूई की जगह फार से काम लिया। यानी बादशाह से यकीनशाह पीर की बड़ी सिद्धताई बखान की। कुछ लोगों ने तो बादशाह से यहाँ तक बतलाया कि—"आपके बाल्यावस्था में आपके पिता हिमायूँ ने भी इस पीर साहब की मानता की थी, और पीर साहब की कृपा से उन्हें बड़े २ कार्य्यों में सफलता भी प्राप्त हुई थी।

बादशाह लोगों के भड़काने में आ गया। उसने मन में संकल्प किया कि किसी दिन मैं भी चलकर पीर साहब

की दरगाहपर सिरनी चढ़ाऊँगा। एक दिन जब वह सबेरे सोकर उठा तो उसके मन में एकाएक पीर की दरगाह पर जाने की समाई, तुरत चन्द मुसाहिबों के साथ सवारी पर चढ़कर वहाँ पहुँचा। वहाँ की कुछ और ही हालत हो रही थी; कितने ही लोगों की भीड़ लगी हुई था। एक छोटी सी बाजार लग थी। बादशाह को उस स्थान के देखने से बड़ी प्रसन्नता हुई। वह अपने दरबारियों के सहित यकीनशाह पीर को बड़ी विनम्रता से प्रणाम किया। बीरबल चुपचाप खड़ा रहा। बादशाह ने बीरबल से कहा-"सब लोगों ने तो पीर को प्रणाम किया परन्तु तुमने नहीं सो क्यों। तुम्हें भी मुनासिब है कि पीर साहब को प्रणाम करो।" बीरबलने कहा-"मैं प्रणाम करने को तय्यार हूँ, परन्तु आपको भी मेरी एक बात माननी पड़ेगी, यानी पीरसे आस्था को ही प्रधान कहना पड़ेगा।"

बाहशाह ने उत्तर दिया-मैं इस समय भी यही कहने को प्रस्तुत हूँ कि आस्था से पीर बड़ा है और तुम्हारे सामने ही इस बात की मनौती भी करता हूँ कि यदि मैं प्रतापसिंह पर विजय प्राप्त कर लूँगा तो इस कबर पर मखमली चादर बिछाऊँगा और मलीदा चढ़ाकर यहीं पर मौलबी और फकीरों को खाना खिलाऊँगा।" बादशाह और दीवान इस विषय पर वादाविवाद कर ही रहे थे कि उसी के दर्मियान एक सवार तेजी से घोड़ा दौड़ाता हुआ आया और बादशाह को सलाम कर बोला-"पृथ्वीनाथ! शाहजादा सलीम ने कहलाया है कि मेवाड़ का राजा प्रतापसिंह ने अपनी हार स्वीकार कर ली है

और आशा है कि कुछ ही देर बाद मेरे आधीन भी हो जायगा।"

इस आनन्दवर्धक समाचार को सुनकर बादशाह के रोम २ प्रफुल्लित हो गये और बीरबल को नीचा दिखलाने के अभिप्राय से बोला-"कहो अब भी आस्था को पीर से प्रधानता देने को तय्यार हो वा नहीं। देखो इधर मनौती की और उधर से शुभ समाचार आ पहुँचा।" बीरबल बोला-"पृथिवीनाथ! बिना आस्था के हुए आपने पीर पर मन्नत नहीं की थी। यदि आप की पीर पर आस्था न हुई होती तो आप कदापि मानता न मानते; मुख्य आस्था ही है।" बादशाह ने कहा-"अब तुम अपनी धींगाधींगी बन्द करो, मुझे इस पर यकीन नहीं होता। चूँकि अभीतक तुम आस्था की प्रधानता सिद्ध नहीं कर सके हो अतएव मरने के लिये तय्यार हो जाओ।" बीरबल ने कहा-"मैंने आपको बहुतेरा समझाया, परन्तु आप नहीं मानते फिर इसमें मेरा क्या अपराध है।" बादशाह बीरबलके इस उत्तर से क्रोधित होकर बोला—"अब मैं तुमको इस अपराध का दण्ड स्वयं अपने हाथ से दूँगा, तुम्हारा काल आज तुम्हारे सिर पर चढ़कर बोल रहा है। क्या कोई हाजिर है, जाकर तुरन्त एक बधिक को बुला लाओ।"

बादशाह का रुख ताड़ कर बीरबल ने मन में निश्चय कर लिया कि अब और अधिक टाल मटोल करने से बादशाह अपने क्रोध को सम्हाल न सकेगा अतएव यकीन शाह को हाथ जोड़कर बोला-"हे यकीन शाह जो आज मैं जीता बचा तो आपकी कब्रपर मिठाई चढ़ाऊँगा और इस कबर के ऊपर एक सुन्दर मकबरा निर्माण करा दूँगा।" बीरबल के

इस मन्नत पर बादशाह ने हँस दिया और उसे संबोधन कर बोला—"क्यों बीरबल अब तुम्हारी अक्ल ठिकाने आ गई; आखिरश लाचार होकर तुम्हें भी मानता माननी ही पड़ी।" बीरबल ने उत्तर दिया–"बेशक! पीर साहब की ही शरण लेनी पड़ी।" पश्चात् वह सब दरबारियों सहित कबर के समीप जा पहुँचा और उसके बीच वाला पत्थर अपने हाथ से उठाकर अलग रख दिया और उसके भीतर से उस गठरी को निकाल कर बाहर किया। बादशाह इस बात को देखकर बड़ा हैरान हुआ और बीरबल से उसका कारण पूछा। बीरबल ने उत्तर दिया–"पृथ्वीनाथ! यही आपके यकीन-शाह पीर हैं और आपने इन्हीं की मानता की थी। बादशाह को उस शाल की गठरी के भीतर अपने जूते की पवाई देख-कर बड़ा आश्चर्य हुआ और लज्जित होकर अपनी गर्दन नीची कर ली। बीरबल बोला—"गरीबपरवर! अब आप ही फर्मावें कि आस्था बड़ी है वा पीर।" अपने मनका विश्वास ही मुख्य है। जब विश्वास नहीं रहता तो मानता भी निष्फल हो जाती है। इसलिये आपको कहना पड़ेगा कि मुख्य विश्वास ही है।"

बादशाह ने बीरबल की बात मान ली। यकीनशाह की बड़ी शोहरत हो गई थी जिस कारण वहाँ पर काफी धन संचित हो गया था। उस धन से बीरबल ने वहाँ पर एक मसजिद बनवा दिया। बीरबल की बुद्धिमानी से बादशाह को मात होना पड़ा।

कौन सा अच्छा

एक दिन बादशाह अपने दर्बार में बैठा हुआ दर्बारियों से दिल-बहलाव की बातें कर रहा था, इसी दर्मियान बीरबल भी आ पहुँचा! बादशाह ने बीरबल से पूछा— "बीरबल! क्या बतला सकते हो कि फल कौन सा अच्छा? दूध किसका अच्छा, पत्ता किसका अच्छा, फूल कौन सा अच्छा, मिठास कौन सी अच्छी, राजा कौन अच्छा?" उपस्थित मण्डली में एक भी ऐसा न था जो ऊपर के प्रश्नों का उचित उत्तर देता। तब बादशाह ने इसका भार बीरबल के ऊपर दिया। बीरबल बोला—"पृथिवीनाथ! फलों में बेटा अच्छा है जिससे बाप दादों का नाम पुस्त दरपुस्त चला जाता है। दूध माता का उत्तम होता है जिससे सब का पालन पोषण होता है। पत्ता पान का अच्छा होता है। इसके देने से नौकर स्वामिभक्त हो जाता है, यहाँतक कि उसके लिये प्राण तक न्योछावर करने को उद्यत हो जाता है। फूल कपास का अच्छा होता है कारण कि उसके सहारे संसार भर की लज्जा रहती है। मिठास बाणी की अच्छी होती है, जिसके फलस्वरूप बिना पैसा कौड़ी के लोग वश में हो जाते हैं। राजाओं में इन्द्र महान है जो पानी बरसाकर जगत को पालता है।" बीरबल के ऐसे उत्तर से सब सभासदों के सहित बादशाह अति प्रसन्न हुए और बीरबल को कई बीघे भूमि जागीर दी।

गरीब की आह

एक दिन तुर्किस्तान के बादशाह को अकबर की परीक्षा लेने का विचार हुआ। वह एक एलची को पत्र देकर कई और सिपाहियोंके साथ दिल्ली भेजा। पत्रका आशय यह था–"अकबर शाह! मुझे सुनने में आया है कि आपके भारतवर्ष में कोई ऐसा वृक्ष उत्पन्न होता है कि जिसके पत्तों के खाने से मनुष्य की आयु बड़ी होती है। यदि यह बात सच्ची है तो मेरे लिये उस वृक्ष के थोड़े पत्ते भेज देना।" बादशाह इस पत्र को पढ़कर विचारमग्न हो गया, फिर कुछ देर तक बीरबल से राय मिलाकर सिपाहियों सहित उस एलची को कैद कर एक सुदृढ़ किले में बन्द करा दिया। इस प्रकार कैद हुए जब उनको कई दिन हो गये तो एक दिन बादशाह बीरबल को साथ लेकर उन कैदियों को देखने गया। बादशाह को देखकर उनको अपने मुक्त होने की आशा हुई; परन्तु वह बात निर्मूल थी। बादशाह उनके पास पहुँच कर बोला–"तुम्हारा बादशाह जिस वस्तु को चाहता है वह मैं तबतक उसे न दे सकूँगा जबतक कि इस सुदृढ़ किले की एक एक ईंट न ढह जाय। उसी वक्त तुम लोग आजाद भी किये जावोगे। तुमको खाने पहनने की तकलीफ न होगी; मैंने उसका यथोचित प्रबन्ध कर दिया है।" इतना कहकर बादशाह चले गये, परन्तु उन कैदियों की चिन्ता और भी बढ़ गई। वे अपने मुक्त होनेका उपाय सोचने लगे। उनको अपने स्वदेश के सुखों का स्मरण कर बड़ा दुख होता था।

वे सब कुछ देर तक इसी चिन्ता में डूबे रहे, अन्तमें उनका ध्यान ईश्वर प्रार्थना की तरफ झुका और अपने मुक्त होने के लिये ईशवन्दना करने लगे। "हे भगवन्! क्या हम इस बन्धन से मुक्त न किये जायँगे! क्या हमारा जन्म इसी किले में बन्द रहकर कष्ट भोगने ही के लिये हुआ था! आप दीना-नाथ बजते हैं, अपना नाम याद कर हम असहायों की वेगि सुधि लीजिये।"

जैसे २ उनकी मुक्त होने की आशा विलीन होती गई तैसे २ नित्य परमेश्वर से उस किले के टूटने के लिये प्रार्थना करने लगे। ईश्वर की दयालुता प्रसिद्ध है-एक दिन बड़े जोरों का भूकम्प आया और किले का कुछ भाग भूकम्प के कारण धराशायी हो गया। सामने का पर्वत भी टूटकर चकनाचूर हो गया। इस घटना के पश्चात् एलची ने बादशाह के पास किला टूटने की सूचना भेजी। बादशाह को अपने बचन का स्मरण हो आया। इसलिये उस एलची को उसके साथियों सहित दर्बार में बुलवा कर बोला-"आपको अपने बादशाह का आशय विदित होगा और अब उसका उत्तर भी तुमने समझ लिया है, यदि न भी समझे हों तो सुनो, मैं उसे और भी स्पष्ट किये देता हूँ। देखो तुम लोग गणना के केवल सौ ही मनुष्य हो, परन्तु तुम्हारी आह से ऐसा सुदृढ़ किला ढह गया, फिर जहाँ हजारा मनुष्यों पर अत्याचार हो रहा है वहाँ के बादशाह की आयु कैसे बढ़ेगी, बल्कि दिनोंदिन घटती ही जायगी और यथाशीघ्र लोगों की आह से उसका पतन हो जायगा। तब बादशाह की आयु

क्योंकर बढ़ सकती है। हमारे राज्य में तो अत्याचार भरसक नहीं होने पाता है। गरीब प्रजा पर अत्याचार न करना और उसका भलीभाँति पालन पोषण करना ही आयुवर्धक वृक्ष है बाकी सारी बातें मिथ्या हैं।

दो०—दुर्बल को न सताइये, जाकी मोटी हाय।
मुए खाल को स्वाँस सों, सार भसम ह्वै जाय॥

इस प्रकार समझा बुझाकर बादशाह ने उस एलची को उसके साथियों सहित स्वदेश लौट जाने की आज्ञा दी और उनका राह खर्च भी दिया गया। वे तुर्किस्तान में पहुँच कर यहाँ की सारी बातें अपने बादशाह को समझाया। अकबर की शिक्षा को सुनकर बादशाह दरबारियों सहित उसकी भूरि भूरि प्रशंसा करने लगा।

जूते की मार

अकबर बादशाह के राज में दिल्ली के निकट ग्राम में एक स्त्री रहती थी। उसका दिमाग बहुत चढ़ा हुआ था, जिस कारण वह नित्य अपने पति को दस जूते मारा करती थी। उसको एक पुत्री भी थी। जब वह सयानी हुई तो उसके विवाह की चरचा छिड़ी। उसने वर के लिये दूर २ के गाँवों में अपना पैगाम भेजा, परन्तु कोई उस कन्या से अपने लड़के का विवाह करने के लिये राजी न हुआ। कारण कि सबको उस कन्या के माता की करतूत मालूम थी। वे लोग

यही सोचते थे कि जैसी माता है उसकी पुत्री भी उसीके समान होगी।

उन दिनों भगवान की कृपा से बीरबल की बड़ी ख्याति हो रही थी। जिसकारण कितने ही लोग क्या जात क्या परजात भीतर भीतर उससे ईर्षा करने लगे। सबों ने मिलकर सोचा कि यदि इस लड़की से बीरबल का विवाह हो जावे तो इसकी कीर्ति की जगह अपकीर्ति फैलने लगे।" एक दिन बीरबल की बिरादरी का एक ब्राह्मण जो कि पुरोहिती करता था उससे मिलने आया। थोड़ी देरतक इधर उधर की बातें कर वह बीरबल से उस लड़की के साथ विवाह करने का आग्रह किया। बीरबल ने कहा-"पंडितवर! आप जानते ही हैं कि मेरा विवाह हो चुका है, फिर एक स्त्री के रहते हुए दूसरी के साथ विवाह करना अनुचित होगा; हाँ यदि आपकी ऐसी ही इच्छा है तो आप मेरे भाई को पसंद करें। वह काशी जी पढ़ने गया है, मैं उसका विवाह करने के लिये तय्यार हूँ।"

पुरोहित की मंशा बर आई, बीरबल नहीं तो उसका भाई ही सही। घरमें अशान्ति होने से बीरबल को भी कष्ट होगा। ऐसी पक्की धारणा बनाकर वह राम बाई के घर पहुँचा, वहाँ की अजीब हालत थी। रामबाई पतिदेव के मस्तक पर नौ जूता चढ़ा चुकी थी। दसवें के लिये भी तैयार थी, इसी बीच पुरोहित जी उसके मकान में दाखिल हुये और हँ! हँ! हँ करके उसे रोकना चाहा, परन्तु वह कुलटा भला कब माननें वाली थी। अपना दसवाँ जूता भी विचारे पति को जड़कर ही शान्त हुई।

जब उसका मिजाज कुछ ठिकाने आया तो उसने पुरोहित के आनेका कारण पूछा। पुरोहित बीरबल का नाम लेकर बोला– मैं तुम्हारी लड़की की शादी के लिये एक वर देख आया हूँ। लड़का काशी में पढ़ रहा है; केवल तुम्हारी अनुमति की देर थी। यदि कहो तो विवाह निश्चित किया जाय। रामबाई पुरोहित से बड़ी प्रसन्न हुई और उसका आदर सत्कार कर बोली–"मुझे मंजूर है, आप जाकर पक्का कर आइये।"

पुरोहितजी फिर उल्टे पाँव बीरबल के पास पहुँचे और दोनों पक्ष को राजी कर रामबाई की कन्या और बीरबल के छोटे भाई की शादी पकी कर दी। बीरबल पुरोहित का आन्तरिक भाव पहले ही ताड़ गया था। इसलिये झूठ मूठ अपना छोटा भाई होना बतला कर पुरोहित को फाँस लिया था। इधर जब विवाह पक्का हो गया तो वह एक सजातीय अनाथ लड़के की खोज में पड़ा। कहा भी है—

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ।
हौं बौरी ढूढ़न गई, रही किनारे बैठ॥

दो तीन दिनों के प्रयास करने हो से उसे एक लड़का २०, २५ वर्ष का मिल गया। वह अपने पेट पालन के फिराक में दिहात से ऊबकर दिल्ली नगर में आया था, हाँ इतना अवश्य था कि उसने पहले कुछ विद्या भी हासिल कर ली थी। बीरबल उस लड़के को आश्रय देने का वचन देकर अपने घर ले गया और उसको समझा बुझा कर बोला–"देखो मैं तुम्हारा विवाह रामबाई की कन्या से करा दूँगा और तुम्हें निर्वाह मात्र के लिये सारा सामान भी दूँगा, परन्तु एक बात तुमको

भी करनी पड़ेगी। लोगों में तुमको मेरा छोटा भाई होना विख्यात करना पड़ेगा, बल्कि यत्र तत्र इसका प्रचार भी काफी तौर से करना होगा, वह लड़का बहुत प्रसन्न हुआ और बीरबल का छोटा भाई बनना सहर्ष स्वीकार किया। "मरत रहे एक चना के, पाय गये दो दाल।" भला इस जमाने में ऐसा कौन होगा जिसको अपना विवाह होना न भावे।

अब दोनों तरफ से विवाह की तय्यारी होने लगी। जब अच्छा मुहूर्त आया तो बाजे गाजे के साथ उसका गठबन्धन हो गया। लड़की के बिदाई की शायत शोधकर पुरोहित फिर रामबाई से मिला और उसे कन्या के रुखसती का दिन बतला कर बोला-"बाईजी! मैं चाहता हूँ कि आप जैसी मिजाज की तेज हैं और अपने पति को दबाकर उसपर अपना पूरा प्रभाव जमाये रहती हैं; उसी प्रकार आपकी लड़की आपसे भी बढ़कर हो, तब तो तुम्हारा नाम, नहीं तो सब व्यर्थ होगा।"

इतना कहकर पुरोहितजी अपने घर चले गये। रामबाई बड़े चिड़चिड़े मिजाज की औरत थी उसने अपनी लड़की को बुलाकर समझाया-"देखना बेटी! तुम हमारे नाम को कायम रखना; अपने पति को हर समय दबाये रहना, मैं तो अपने पतिको प्रतिदिन दस ही जूते मारती हूँ, तुम पन्द्रह का हिसाब रखना। अगर मेरे कहे अनुसार न चलेगी तो मैं फिर आजन्म तेरा मुख नहीं देखूँगी।"

क्रमशः लड़की के बिदाई की घड़ी भी आ पहुँची। रामबाई ने अपने पति को उसे ससुराल पहुँचाने के लिये

भेजा। लड़की को घर आते ही बीरबल ने अपना रुख ऐसा बनाया कि वह कन्या बीरबल के सामने गाय की तरह काँपने लगी। इधर बीरबल ने अपने बनावटी भाई को भी उससे चिड़चिड़ा बनकर रहने की सीख पहले से ही दे रक्खी थी। इन दोनों के चिड़चिड़ेपन को देखकर बिचारी कन्या का जूता जड़ने का भाव काफूर होगया और डरके कारण अपने माँ के दिये जूते को एक कोनेमें गुप्त रीति से छिपा कर रख दिया।

बीरबल ने लड़की के बाप यानी अपने ससुर को कुछ दिन वहीं ठहरने का आग्रह किया जिस कारण वह कुछ दिनों के लिये वहीं रुक गया। बीरबलने देखा कि अब यहाँ तो सफलता मिल गई, दूसरी तरफ भी हाथ साफ करना चाहिये। एक दिन अपने भाई के स्वसुर विटोकड़ा विष्णु से वार्तालाप करता हुआ प्रेम से गद्‌गद्‌ होकर उनके पीठ पर हाथ फेरने लगा। पीठ में गढ़े तो पड़े ही थे, उसने द्रवित होकर पूछा–हैं ! आपकी पीठ में ये गढ़े कैसे हैं ?" लड़की का पिता दुखित होकर अपना सारा समाचार कह सुनाया। बीरबलने कहा–"भाई दुख मनाने से दुख न छूटेगा, बल्कि निवृत्ति के लिये कुछ उपाय करना चाहिये। यदि आप करें तो मैं एक रास्ता बतलाऊँ, उससे आप का दुःख अवश्य छूट जायगा।"

उसने बीरबलकी बात मान ली। तब बीरबलने कहा— "आपको मेरे यहाँ लगातार चार महीने रहना पड़ेगा और नित्य सूर्य के सामने मुख कर के इतने दण्डवत करने होंगे कि जिससे आपका शरीर पसीने से तर न हो जाय। वह नित्य

बीरबल के बतलाये क्रमानुसार सूर्य्य को दण्ड प्रणाम करने लगा। उधर बीरबलने उसके खाने पीने का अच्छा प्रबन्धकर दिया। पौष्टिक पदार्थ खाने को मिलने से चार महीने में वह मुटाकर लड़की का कुन्दा हो गया। तब बीरबल ने लुहार को आर्डर देकर एक सुन्दर दंडा बनवाया, उसमें स्थान २ पर ऐसे लोहे जड़वा दिये कि वह खासा लुहाँगी बन गया। बीरबल उस लुहाँगी को उसे देकर बोला—"देखो लोगों के पूछने पर इस लुहांगी को अपना गुरुभाई बतलाना। फिर उसे भलीभाँति शिक्षित कर उसको घर भेज दिया।

इधर रामबाई नित्य के जूतों का हिसाब जोड़कर उसका घाटा जोड़ा करती थी। जब उसका पति पाँच महीने में हृष्टपुष्ट होकर आया तो वह देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। कहाँ तो बिचारा थकामाँदा मंजिल मार कर आया था, कहाँ उसे जूता जमाने की सूझी। वह कुलटा पतिको जूता खानेके निश्चित स्थान पर ले गई, वह चुप चाप बैठा रहा, परन्तु अपने गुरुभाई यानी लुहाँठी को नहीं भूला। ज्योंही उसकी स्त्री ने उसके सिरपर पहला जूता लगाया कि वह उठकर लुहाँठी को तानकर उसके सिर पर ऐसा जमाया कि उसका सिर भन्नाने लगा—वह बोली—"अरे! राम राम यह तो मार ली रे।" पति ने थोड़ा अन्तर देकर एक दण्डा और जमाया। अभी तीसरा मारने ही जा रहा था कि इतने ही में अड़ोस पड़ोस के कुछ लोग जमा हो गये और पीछे से उसका हाथ पकड़ लिये। स्त्री डर के कारण काँपने लगी और उसने

उठकर अपने पति से क्षमा प्रार्थना की। वह सदैव के लिये उसकी चेलिन हो गई।

बीरबल के द्वेषियों का दिल टूट गया और उसी तारीख से लोगों ने उसका अनिष्ट सोचना छोड़ दिया।

—o*o—

गद्दी पर पाखाना

सिंहल द्वीप का बादशाह दिल्लीधीश्वर से कुछ भीतर२ कुढ़ा करता था। एक दिन उसे नीचा दिखानेके अभिप्राय से एक वेश्या को कुछ सिखला पढ़ाकर दिल्ली भेजा। वह वारांगना महासुन्दरी और नृत्य कला की पूर्ण पण्डिता थी। उसने दिल्ली नगर में पहुँचकर एक बढ़िया मकान सड़क के चौराहे पर किराये में लिया और उसमें नित्य सायंकाल में शृङ्गार कर गायन वाद्य किया करती थी। तबला और सारंगी बजाने वाले भी सिंहल द्वीप ही से अपने साथ लायी थी। धीरे२ इसकी शोहरत नागरिकों में फैली। वे उसके पास अधिक संख्या में आने जाने लगे, वह किसी से कुछ नहीं लेती थी बल्कि आगतोंकी बड़ी प्रीतिपूर्वक स्वागत करती थी।

इसकी ऐसी प्रतिष्ठा सुनकर बादशाह के कितने दरबारी भी गुप्तरूप से उसके पास आये और उसकी आवभगत और कलाविशेषता से मुग्ध होकर लौटे। यह बात बड़े तेजीसे अमीर गरीबके कानों तक फैल गई। जब बादशाह ने इस नवयौवना वेश्या की प्रशंसा अपने दरबारियों के मुख से सुनी तो उसे भी उसको देखने की इच्छा हुई। वह उसके मकान पर नहीं जा सकता।

था अतएव उसे अपने यहाँ बुलवाने का निश्चय किया। दूसरे दिन दीवानखाना खूब सजाया गया। उस कमरे में भारतवर्ष की एक से एक सजावट की वस्तुएँ अपने २ करीने से सजाकर रख दी गईं। दरबारियों के बैठने के लिये आसन भी खूब सजाकर लगाया गया। जब इस प्रकार से बादशाह ने अपने यहाँ तय्यारी कर ली तो एक चपरासी द्वारा उस नवागत बारांगणा को बुलावा भेजा। वह भला कब नाहीं करने वाली थी यह तो उसकी मनचाही बात थी। उसने बादशाह के दरबार में जाना सहर्ष स्वीकार किया। फिर सायंकाल में खूब सार श्रृङ्गार कर अपने सफरदाइयों को लिये हुये दरबार में दाखिल हुई। उसकी लुनाई से दिल्ली दर्बार रौशन हो गया।

बादशाह ने चपरासी भेजकर अपने सब दरबारियों को बुलवाया। वे बादशाह का निमंत्रण पाकर नवीन वेश्या का नृत्य देखने की इच्छा से आये। यह नायका अपने रूप लावण्य और कला कौशल से कितनों को मोहित कर चुकी थी, फिर बादशाह क्यों न मुग्ध होता—"उसने बड़ी निपुणता से लगातार छः सात घण्टों तक नृत्य गान किया। सभी लोग उसकी तारीफ करने लगे। बादशाहने भी मुक्तकंठ से प्रसंशा की। बादशाह ने अपने मन में अनुमान किया कि यह द्रव्योपार्जन के निमित्त यहाँ आई है इसलिये इसको द्रव्या-भूषण देकर संतुष्ट करना चाहिये। बादशाह दीवान से राय मिलाकर उसके लिये बहुत सी अशर्फियाँ और सुन्दर २ वस्त्र देने के लिये मँगवाया। वह उनको देखकर विनम्रता से बोली—"पृथ्वीनाथ ! मैं यह नृत्य गान आपको गुणग्राही

समझकर किया है, मुझे अपना मन प्रसन्न करना अभीष्ट था, इनाम की चाहना नहीं है।"

बादशाहने मनमें सोचा-"शायद इतने पारितोषिकको न्यून समझकर यह संतुष्ट नहीं हुई है अतएव इसे कुछ और धन पाने की लिप्सा है। वह उस वेश्या से बोला-"यदि तुझे और कुछ माँगने की इच्छा हो तो उसे भी माँग सकती हो?" वेश्या ने कहा-"पृथ्वीनाथ! मुझे केवल एक वस्तु माँगने की इच्छा है, परन्तु आप पहले बचनबद्ध हों तो माँगू।" बादशाह कुछ सोच विचार के बाद बोला-"मेरी घर की निजी वस्तुओं के अतिरिक्त जो कुछ माँगोगी तुझे दिया जायगा। मैं अपनी बात एक बार कहकर फिर लौटाता नहीं हूँ।" वह कुछ देर खामोश रहकर फिर बोली-"गरीबपरवर! मैं आपके गद्दी पर पाखाना फिरने की इच्छा रखती हूँ।"

उस वेश्या की इस ढिठाई पर सब दरबारी सन्न हो गये। उसने खुल्लमखुल्ला बादशाह का अपमान किया था। बादशाह भीतर २ बड़ा क्रोधित हुआ, परन्तु चूँकि बचनबद्ध हो चुका था इसलिये प्रगट रूप से खामोश रहा। सबको बड़ा सोच हुआ। किसी की अकल काम नहीं करती थी। आखिर बीरबल से राय मिलाई गई। बीरबल ने बादशाह को ढाढ़स दिलाया। वह वेश्या लोगों को फुस-फुस करते देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और उसके चेहरे पर हठात् हँसी आने लगी। बीरबल बोला-"इसको बचन दिया जा चुका है इसलिये उसका पालन किया जायगा।" वेश्या बोली-"मैंने पहले ही आपसे आज्ञा प्राप्त करली है तब माँगा है। यदि नाहीं

कर दिया जायगा तो मैं बिना उज्र चली जाऊँगी।"

बीरबल उसे डाँटकर बोला–"रे वेश्या! तुझे ज्ञात होना चाहिये था कि यह दिल्लीधीश्वर का दरबार है और ये जगत बिजयी बादशाह हैं; यहाँ पर आकर यह क्या गंदी बात मुँह से निकालती है, यदि तुझे माँगना ही था तो कोई अलभ्य वस्तु माँगती जिससे तू अजाचक हो जाती और तेरी कीर्ति देशदेशान्तर में फैलती।" वह बोली–"दीवान महोदय! मैंने जिस चीज को आप से माँगा है यदि उसे देना मंजूर हो तब तो देवें नहीं तो इन्कार करें, मैं अपने घर लौट जाऊँगी। आगा पीछा करने से क्या लाभ? हाँ तो हाँ, नहीं तो नहीं।"

बीरबल ने बादशाह से कहा–"पृथ्वीनाथ! मैंने इस विदेशी वेश्याको आगा पीछा दिखलाकर बहुत कुछ समझाया, परन्तु वह एक भी मानने को राजी नहीं है, बचन का पालन करना आवश्यक है, नहीं तो संसार में आपकी बड़ी अपकीर्ति फैलेगी। बादशाह ने बीरबल के मत को स्वीकार किया। तब कौल बीरबल ने वेश्या से कहा–"बादशाह की आज्ञा है, तू अपना मनोभिलषित पूर्ण कर ले। यानी गद्दी परपाखाना कर ले। हाँ एक बात याद रखना कि पाखाना के समय पेशाब न निकले। जो तू इस बात में जरा भी चूकेगी तो तुरत जान से मार डाली जायगी।" अब तो उस भठियारिन के कान खड़े हो गये; कुछ देर तक आगा पीछा करती रही, फिर बादशाह को सलाम कर चुपके से चली गई।

उसका काम समाप्त हो गया इसलिये वह अब दिल्ली

शहर में टिककर निरर्थक समय खोना अच्छा नहीं समझती थी। डेरे पर पहुँचकर तुरत स्वदेश लौटने की तैयारी कर सिंहलद्वीप चली गई। पहुँचकर दिल्लीधीश्वर के दरबार का सब समाचार यथातत्थ्य कहकर अपने राजा को सुनाया। वहाँ के लोग बीरबल की बुद्धि की सराहना करने लगे।

झख मार रहे हैं

एक दिन जमुना किनारे एक मल्लाह मछलियों का शिकार कर रहा था उसी समय बीरबल को लिये दिये बादशाह भी वहीं पर जा पहुँचा "देखा-देखी पाप, देखा-देखी पुन्य।" बादशाह को भी शौक हुआ और वह वहीं बैठकर मछलियाँ मारने लगा। मछली मारते-मारते उसे कोई ऐसा काम स्मरण हो आया कि उससे बीरबल को बेगम के पास भेजना पड़ा। बीरबल हुक्म पाकर बेगम से जा मिला। कुशल भलाई के बाद बेगम ने पूछा—"बादशाह क्या कर रहे हैं?" बीरबल ने कहा—"कर क्या रहे हैं, जमुना जी के किनारे बैठे २ झख मार रहे हैं।"

बीरबल के मुख से उपरोक्त उत्तर पाकर बेगम भीतर २ बड़ी नाराज हुई, परन्तु बीरबल से कुछ बोल न सकी। जब रात्रि समय में बादशाह आया तो वह कुपित होकर बोली—"पृथ्वीनाथ! बीरबल को आपने बहुत सिर चढ़ा लिया है जिस कारण वह बड़ा ढीठ होता जा रहा है। वह आपके निस्बत पूछने पर मुझसे कह गया है कि झख मार रहे हैं; आपको उचित है

कि उसको ऐसा कठोर दण्ड दें ताकि वह फिर ऐसी गुस्ताखी न करे।" यह सुनकर बादशाह को बड़ा विस्मय हुआ और उसी क्षण बीरबल को दण्ड देने का प्रण किया। कुछ समय बाद चपरासी द्वारा बीरबल को बुलवाया। जब वह आया तो बादशाह ने कहा-"बीरबल! तुम बड़े घमंडी होगये हो?" बीरबल बोला-"पृथ्वीनाथ! मैं तो अपने को ऐसा अनुमान नहीं करता, परन्तु यदि मुझसे कोई अपराध हुआ हो तो आपको अधिकार है कि मुझे दंड दें।" बादशाह तो बेगम से सब सुनही चुका था। वह बोला-"तुमने बेगम से मेरे निस्वत क्या कहा था, मुझसे झख मरवाते थे, क्या यह सही नहीं है?"

बीरबल बाअदब हाथ जोड़कर बोला-"पृथ्वीनाथ! मेरी गुस्ताखी माफ की जावे तो कहूँ। मेरी जबान में यानी संकृत में मछली को झख कहते हैं और आप उस समय मछली ही मार रहे थे। अतएव मैंने बेगम के पूछने पर आपको झख मारना बतलाया था।" बीरबल के इस उत्तर से बादशाह और बेगम दोनों ही प्रसन्न हो गये और बीरबल को पुरस्कार देकर बिदा किया।

काली ही न्यामत है

एक दिन सन्ध्या समय बादशाह और बीरबल हवा सेवन के लिये कहीं जा रहे थे। नगर के बाहर जाकर बादशाह ने देखा कि एक कुत्ता एक फूली और कई दिन की

सड़ी होने के कारण काली पड़ी हुई रोटी को बड़ी चाव से खा रहा है। उसे देख बादशाह को मजाक करने की सूझी और बीरबल को सम्बोधन कर बोला—"देखो बीरबल! कुत्ता काली को खा रहा है।" बीरबल अपने हाजिर जवाबी के लिये तो विख्यात ही था, वह झट बोला—"पृथ्वीनाथ! उसे वही न्यामत है।" इसपर बादशाह कुछ चिड़चिड़ा सा गया क्योंकि नियामत उसकी माता का नाम था और काली बीरबल की माता का नाम था। उसने कहा—"बीरबल तुम मेरी माता को कुत्ते को खिला रहा है।" बीरबल ने उत्तर दिया—"क्या आप ने मेरी माता से पहले कुत्तेको नहीं खिलाया था?"

बादशाह ने उत्तर दिया—"मैं तुम्हारी माता को नहीं उस काली रोटी के लिये कह रहा था।" बीरबल बोला—"मैं भी तो यही कहा था कि रोटी चाहे कैसी भी सड़ी गली क्यों न हो; परन्तु उसके लिये तो वही नियामत है।" बादशाह संतुष्ट हो गया औह उस समय से फिर बीरबल से कोई दूसरा मजाक नहीं किया।

और क्या? कढ़ी

एक दिन बीरबल को बिरादरी भोज में जाना था, अतएव वह बादशाह से अवकाश लेकर भोज में शामिल हुआ। जब भोजन करके लौटकर आया तो बादशाह ने उससे पूछा—"क्यों बीरबल! आज भोज में कौन२ सा पदार्थ खाये हो।" बीरबल ने पहले तो उस जगह की सुन्दरता का वर्णन किया

फिर भोजन की सामग्री बतलाने लगा। वह क्रमशः सारी चीजों का नाम बतला कर चुप हो गया। बादशाह को इतने पर भी सन्तोष नहीं हुआ इसलिये बीरबल से फिर पूछा— "और क्या था" बीरबल याद कर और दो चार चीजों का नाम बतलाया। परन्तु बात की शृंखला न टूटी बीरबल ज्यों-ज्यों अधिक बतलाता बादशाह बराबर और और की धुन बाँधे रहता। हरेच्छा से वह बात अधूड़ी ही रह गई, बीच में एक ऐसा जरूरी काम आ पड़ा कि दोनों पृथक २ चले गये।

कई महीने बाद एक दिन वह बात बादशाह को फिर स्मरण हो आई अतएव बीरबल की याददास्त समझने के लिये बोला—"बीरबल! और?" बीरबल ने तत्काल उत्तर दिया— "पृथिवीनाथ! और क्या, कढ़ी।" बादशाह बीरबल की याददास्त से बड़ा सन्तुष्ट हुआ और उसे तत्क्षण एक सुन्दर मोती की माला प्रदान की। दूसरे सभासद इस बात को देखकर बड़े चकित हुए, उन लोगों ने अपनी अकल लड़ायी— "हो न हो बादशाह को कढ़ी से बड़ा प्रेम है, तभी तो कढ़ी का नाम लेते ही खुश होकर बीरबल को मोती की माला दी।

दूसरे दिन मोती की माला के लालच से दरबारी लोग भी अपने २ घरों से उत्तमोत्तम मट्ठे की कढ़ी बनवा लाये। उनके साथ नौकर भी थे। वे कढ़ी का पात्र सिरों पर लिये हुए खड़े थे। यह दृश्य देखकर बादशाह ने दरबारियों से इस समारोह का कारण पूछा—वे उत्तर दिये—"गरीबपरवर! आपके लिये हम लोग कढ़ी बनवा कर लाये हैं?" बादशाह उनकी ऐसी मूर्खता पर बहुत चिड़चिड़ा गया और कढ़ी लाने वालों के हाथ

और पैरों में बेड़ियाँ जकड़ने की आज्ञा दी। वह बोला—"ये महामूर्ख हैं, केवल नकल करना जानते हैं। बीरबल ने जो कढ़ी का नाम लिया था उसका तात्पर्य दूसरा ही था। बादशाह के क्रोध के सामने सबका छक्का छूट गया और सबों ने एक साथ करबद्ध प्रार्थना कर अपने अपराधों की माफी माँगी।

—:*:—

माला दे ?

एक दिन बीरबल को जमुना नहाने की इच्छा जागृत हुई इसलिये वह तड़के उठकर जमुना जी नहाने गया। स्नानोपरान्त एक जगह आसन बिछाकर रुद्राक्ष की माला जपने लगा। उसी समय हवा खोरी से लौटकर घूमता २ घोड़े पर सवार बादशाह भी वहीं जा पहुँचा। वह घोड़े से उतर पड़ा और बीरबल से बोला—"बीरबल! मुझे मा ला दे।" बीरबल बड़ा लाल बुझक्कड़ था, वह तुरत ताड़ गया कि बादशाह दुअर्थी कहकर मजाक कर रहे हैं। वह मुँह से तो कुछ न बोला परन्तु उसी समय अपना दुपट्टा नदी के जल में छोड़ दिया—बादशाह यह देखकर फिर बोला—"बीरबल! देखो दुपट्टा बहता है।" अब बीरबल को औसर मिला वह तुरत बोल उठा—"पृथिवीनाथ! बहने दो।"

बादशाह बीरबल के दुअर्थिक उत्तर को समझ कर बड़ा नाराज हुआ और भृकुटी बदलकर बीरबल से पूछा—"क्यों बीरबल! तूँ हँसी हँसी में मेरी बहन माँग रहा है?" बीरबल बोला—"पृथिवीनाथ! आप भी तो हमारी माँ माँगते हैं।" बादशाह

जरा नरमा कर फिर बोला—"मैंने तेरी माँ कब माँगी है, क्या मैंने किसी का नाम लिया था ?"

बीरबल ने कहा—"गरीबपरवर ! मैंने आपके बहन का नाम कब लिया था और कब उसे माँगा था। मैंने तो आपसे केवल दुपट्टा बहने देने की अर्ज करी थी। आपकी बहन मेरे बहन के समान है। मैं उसका नाम अपनी जबान पर कैसे ला सकता हूँ।" बादशाह को आगे बढ़ने का कोई मार्ग नहीं मिला अतएव खामोश रह गया।

भाग्य बड़ी है कि उद्योग

एक दिन बादशाह ने अपने दरबारियों से भरी सभा में पूछा—"भाग्य बड़ी है वा उद्योग।" सब दरबारियों ने एक मत होकर बतलाया—"पृथिवीनाथ ! उद्योग बड़ा है ?" परन्तु बीरबल की राय सबसे भिन्न थी। वह अपनी तरफ से अकेला होकर बोला—"महाराज ! मेरी सम्मति से भाग्य बड़ी है।" बादशाह ने बीरबल से पूछा—"यदि उद्योग न किया जाय तो भाग्य क्या कर सकती है, भला उस मनुष्य को जो भाग्य के भरोसे बैठ रहे, कभी खाना नसीब हो सकता है ?" बीरबल ने उत्तर दिया—"चाहे कोई कितना ही उद्योग क्यों न करे, परन्तु जो बात उसके भाग्य में लिखी न होगी, कदापि नहीं मिल सकती। यह सब देखते हुए भाग्य को ही प्रधानता मिलनी चाहिये।"

एक दरबारी को बीरबल की यह दलील बहुत खटकी

और वह बादशाह से निवेदन कर बोला—"पृथिवीनाथ! जब बीरबल को भाग्य की प्रधानता मालूम है तो इसका कोई सबूत भी होगा। बादशाह ने झट बीरबल से पूछा—"हाँ बीरबल! इस बात का कोई सबूत दो।" बीरबल बोला—"पृथिवीनाथ! यह कोई ऐसी वैसी बात नहीं है जो कोई गाँठ में बाँधे फिर रहा हो और तुरत खोलकर दिखला दे, आपकी ऐसी ही इच्छा है तो कुछ दिनों में सिद्ध कर के दिखला दूँगा।" उस दिन का कार्य्य समाप्त हुआ और लोग अपने २ घर गये।

एक दिन बादशाह को जमुना में शैर करने की इच्छा हुई अतएव कुछ दरबारियों को साथ ले एक खास नौका पर बैठकर यमुनाजी में जल विहार करने लगा—बीच दरिया में पहुँच कर फिर उसे भाग्य और उद्योगवाली बात स्मरण हो आई, उसने बीरबल से कहा—"क्यों बीरबल! अभी तुम्हारा दिमाग ठिकाने आया की नहीं—"बोलो उद्योग को प्रारब्ध से प्रधान मानते हो वा नहीं?" इस बार भी बीरबल ने पहले ही सा उत्तर दिया। बीरबल की इस हठधर्मी पर बादशाह चिढ़ गया और तत्क्षण अपने हाथ की अँगूठी निकालकर जमुना जलके मध्य में छोड़ दिया और बोला—"अच्छा बीरबल! यदि अपनी भाग्य की प्रधानता से तू एक मास के अन्तरगत यह अँगूठी मुझे न मिला सकेगा तो तेरी गर्दन उड़ा दी जायगी।"

बादशाह के उस आकस्मिक कोप से सब लोग थर्रा गये। सब लोगों ने देखा कि यहाँ पर जमुना जी का जल बहुत गहरा है। यहाँ से अँगूठी का मिलना असम्भव हो

नहीं बल्कि नितान्त असम्भव है। अब बीरबल की जान नहीं बच सकती, परन्तु बीरबल ने कुछ जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप बैठा रहा। नाव किनारे पर आ लगी। घर लौटते समय बादशाह ने उस जगह अपने सिपाहियों की पहरा चौकी बाँध दी ताकि बीरबल किसी प्रकार उस अँगूठी को जल से बाहर न निकाल सके।

बीरबल प्रारब्ध के भरोसे चुप्पी साधकर बैठा रहा। जब सत्ताइस दिन व्यतीय हो गये तो बादशाह ने बीरबल से पूछा-" क्यों बीरबल अँगूठी मिली ?' बीरबल ने इन्कार किया। तब बादशाह ने कहा--"देखो बीरबल! अब भी उद्योग की प्रधानता स्वीकार करलो मैं तुम्हें माफी दे दूँगा।" बीरबल ने उत्तर दिया--"पृथ्वीनाथ ! भाग्य के सामने उद्योग नहीं टिक सकता, मशल मशहूर है-"घड़ी में घर जले नौ घड़ी भद्रा।" अभी तीन दिन का समय और है इतने में तो कितना उलट फेर हो सकता है।" बादशाह के क्रोध रूपी अग्नि में और भी आहुति पड़ गई, वह एक दम क्रोधित हो गये।

जब अवधि का दिन बीत गया तो चौथे दिन फिर बादशाहने बीरबलसे अपनी अँगूठी माँगी। बीरबल ने कहा-"पृथ्वीनाथ ! मेरे भाग्यसे अँगूठी नहीं मिली।" बादशाह क्रोधित होकर बोला-"तबमरने के लिये प्रस्तुत हो जाओ।" बीरबल तो पहले से ही कमर कस चुका था, वह बादशाहके सामने निर्भय खड़ा हो गया। उसकी मुस्कें कसकर बाँध दी गईं। बीरबल की दशापर बादशाह को फिर तरस आ गई और बोले-"बीरबल! अब भी मौका है, तुम उद्योग की प्रधानता स्वीकार कर लो, मैं तुम्हें

माफ कर दूँगा।" बीरबल ने उत्तर दिया-"गरीबपरवर! मरते को मारना अच्छा नहीं, आप तुरत मुझे मारे जाने की आज्ञा दीजिये।" बादशाह ने कहा-अच्छी बात है, तब तो आगे ही आ रहा है।"

बादशाहने वधिक को बीरबल को फाँसीघर ले जाने की आज्ञा दी। वह घर मकान के चौक के पास ही बना हुआ था। बीरबल की यह दशा देख समस्त प्रजा घबड़ा उठी क्योंकि बीरबल के समय में सबको रामराज्य था। न राजा का जुल्म प्रजा पर चलने पाता था और न प्रजा का राजा पर। सबके चेहरे पर मुरदनी छा गई। बीरबल के घर वाले भी चुपचाप मलीन मुख किये सब कार्य कलाप देख रहे थे, वे अब अपना धैर्य कायम न रख सके और सबके सब सुसक सुसक कर रोने लगे। बीरबल फाँसी के तख्ते पर चढ़ाया गया। नियम के अनुसार वधिकों ने बीरबल से पूछा-"आप की अन्तिम इच्छा क्या है, उसको पूरी करने के लिये दस मिनट का समय और दिया जाता है। बीरबल अभी कुछ कहने भी नहीं पाया था कि एक फकीर प्रगट हुए। उनको आते किसी ने नहीं देखा था जिससे ऐसा प्रतीत हुआ मानो जमीन को फाड़ कर प्रगट हुए हों। फकीर ने कहा-"बीरबल! यह तुम्हारे फाँसी का समय है अतएव मरने से पहले एक पुण्य कर्म करता जा। यह सबेरे सबेरे का समय है और मुझे भूख बहुत लगी है इससे तू मेरे भोजन का प्रबन्ध कर। इससे बढ़कर दूसरा दान नहीं है, सा सदा ऐसे लोग कहते आये हैं। मैं मछली खाना चाहता हूँ, इसलिये एक अच्छी मछली पका कर खिला

और मुझ क्षुधित का आशीर्वाद ले।"

बीरबल बड़ी असमंजस में पड़ गया एक तो मरण काल दूसरे फकीर की याचना सो भी मछली। वह बोला—"शाह साहब! आपको ज्ञात होना चाहिये कि मैं एक कुलीन ब्राह्मण हूँ; हमलोग अपने चौके में मछली माँस का प्रयोग नहीं करते फिर आपको क्योंकर खिलाऊँ।" फकीर बोला-"यह सब सही है, परन्तु यदि तू इस मरणकाल में मेरी क्षुधा मिटायेगा तो इस पुण्य से तेरा बालबच्चों के सहित कल्याण होगा। वहाँ पर उस समय जितने लोग एकत्रित थे सभों ने बीरबल से फकीर की इच्छा पूर्ति का अनुरोध किया। कुछ काल तो योंही बात चीत में टल गया अन्त में मत विशेषता के कारण बीरबल को अपनी जिद्द छोड़नी पड़ी।

एक आदमी बाजार जाकर एक मल्लाह से एक खूब मोटी और बड़ी मछली खरीद लाया। जब उस मछली को बीरबल छूड़ी लेकर चीरने बैठा तो उसके पेट में कोई ठोस चीज दिखाई पड़ी, उसका संपूर्ण पेट काटते ही बादशाह की वह जलमें फेकी हुई अँगूठी बाहर निकल आई। बादशाह अपनी खिरकी से गरदन निकाल कर बीरबल की फाँसी का दृश्य देख रहा था। उसने देखा कि बीरबल एक मछली फाड़ रहा है, परन्तु उसके और उस फकीर के अन्तर्गत क्या क्या बातें हुईं इसका उसे कुछ भी गम न था। बीरबल उस अँगूठी को हाथ में लेकर खड़ा हो गया और शाह साहब को देखने लगा। वे उसके खड़ा होने से पहले ही अन्तर्ध्यान हो गये थे।

बीरबल ने एकत्रित मंडली से कहा—"आप लोगों की अनुमति प्राप्त कर मैं एक बार पुनः बादशाह से मिलना चाहता हूँ, कृपाकर मुझे फिर बादशाह के समीप ले चलें। उन लोगों ने मछली का पेट फाड़ते समय कुछ निकलते हुये अवश्य देखा था पर क्या निकला सो कोई नहीं जानता था। वे बड़ी प्रसन्नता से कर्मचारियों के सहारे बीरबल को बादशाह के पास ले गये। बीरबल को अपने समीप आते हुये देखकर बादशाह ने अनुमान किया—"हो न हो बीरबल डरकर अब उद्योग की प्रधानता स्वीकार करने के लिये मेरे पास आ रहा हो परन्तु अब मैं अपनी आज्ञा भंग न करूँगा। इसी लिये इसके पहले ही मैंने उसे कई बार मौका दिया था, परन्तु उस समय उसने मेरी बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया।"

बीरबल पास पहुँचकर बादशाह को सलाम किया। तब बादशाहने कहा—"बीरबल! अब तुम्हारा प्रयास करना वृथा है, इस समय चाहे तुम उद्योग की प्रधानता मान भी लो परन्तु मैं अपनी आज्ञा रद्द नहीं करूँगा। बीरबलने कहा—"प्रभु! जरा पहले मेरी बातें सुन लें; मैं उद्योग की प्रधानता मानने नहीं आया हूँ।" बादशाह ने कहा—"अच्छा कहो।" तब बीरबल बोला—"आपको अँगूठी देने आया हूँ इसे पहन लीजिये।" बादशाह ने उसे हाथ में लेकर देखा तो सचमुच वही राज मुहर वाली अँगूठी थी। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि वे उसे जमुना के अगाध जल में फेंक आये थे। कई बार खूब उलट पलट कर देखा जब उसके निस्वत कुछ

सन्देह न रहा तो बोले–"बीरबल यह अँगूठी कैसे प्राप्त हुई?" बीरबल ने जवाब दिया–"गरीबपरवर ! मेरा प्रारब्ध घसीट लाया है। तब उसके मिलने का सब किस्सा बीरबलने बादशाह को सुनाया। बादशाह बीरबल से बहुत प्रसन्न हुए और दस हजार मुहरें, एक सुन्दर वस्त्र तथा कई बाहन पुरस्कार में दिये। उसके घर वालों को भी सुन्दर २ वस्त्र दिये गये। उपस्थित जनता के सहित बादशाह ने प्रसन्नता से प्रारब्ध की प्रबलता स्वीकार कर ली।

—o:*:o—

बादशाह और कवि गंग

एक दिन बादशाह जनाने महल में गाना सुन रहे थे, उसके कुटुम्ब की सारी स्त्रियाँ उपस्थित थीं। वहाँ पर सिवा बादशाह के दूसरा कोई मर्द नहीं था। यह जुमावड़ा बादशाह की बेगमों के मत से हुआ था। उनका विचार था कि बादशाह प्रेम में फाँसकर कुछ दिनों तक महल में रक्खे जायँ। उनका उद्योग भी कुछ २ सफल होते दिखलाई पड़ा, बादशाह उनके प्रेम में फँस गये। एक बेगम जिसका कोकिल कंठा नाम था, सब के अन्त में एक वियोग मिश्रित गजल गाना शुरू किया। उसकी ऐसी दीनता भरी गजल से बादशाह पिघल गये और उससे पूछे "इस गाने से तुम्हारा क्या तात्पर्य है ?" बेगम ने कहा– "प्रभु आपका अधिकतर समय लड़ाई ही में बीतता है और यहाँ हम घर में पड़ी २ आपके वियोग की एक एक

घड़ियों को वर्ष के समान काटती हैं। प्रभु क्या यह अनुचित नहीं है ? मैं अपने हृदय की गवाही अपने मुख से कहाँ तक दूं, उसे या तो हमारा मन या अन्तर्यामी ईश्वर ही जान सकता है। क्या आप बतलाने की कृपा करेंगे कि इस समय आप कितने समय के बाद लड़ाई से फुरसत पाकर महल में आये हुए हैं ?" अब यदि न्याय की दृष्टि से देखें तो आपको हमें छोड़कर जाना उचित नहीं है।

बादशाह ने कहा-"बेगम साहिबा! आप समझती हैं कि मैं एक लड़ाई ही के काम से बाहर रह जाता हूँ परन्तु दर-असल ऐसा नहीं होता, लड़ाई में तो कभी २ जाने का मौका लगता है। जो मैं अपनी प्रजाओं की देखरेख न करूँ तो भला इतना बड़ा साम्राज्य कभी टिक सकता है, मेरी अपकीर्ति संसार में फैल जावे। दो चार दिनों की तो तुम्हारी प्रार्थ-नाएँ भले ही स्वीकृत को जा सकती हैं। परन्तु एक साल, वा छ मास की गुंजायश नहीं है। मेरी अयोग सेवाओं से चिढ़कर मेरे सर्दार और शाहजादे मुझ से गदर मचा सकते हैं, फिर मैं कितनी कठिनाई में पड़ जाऊँगा; क्या कभी इसपर भी विचार दौड़ाती हो ? हाँ इतना भले ही कर सकता हूँ कि जो समय राजकीय कामों से बचाकर शिकार आदि में लगाता हूँ वह तुम्हारे पास ही रहकर बिताऊँगा। अब इससे अधिक और क्या चाहिये।"

बादशाह के ऐसे रूखे उत्तरसे सकुचाकर बड़ी बेगम साहिबा ने कहा-"प्रभु आप सारी बातें भलेही सही २ कहते हों, परन्तु फिर यह भी विचार करें कि हम घर में रहने वाली बेगमों

का दिन रात कैसे कटे क्या हम पशु के समान बँधी पड़ी रहें ?" तब एक दूसरी बेगम बोली—"प्रभु ! आपकी न्याय प्रियता सब पर विदित है, आप अपने छोटे से छोटे कर्मचारियों की प्रार्थनाएँ सुनते हैं तो क्या कारण है कि हम लोगों की न सुनेंगे, चाहे जो हो आज तो हम आपको यहाँ से हिलने न देंगी, आगे हमारा प्रारब्ध जाने। सेखी करना भूल है, पर हम लोगों की बिना आज्ञा लिये आप कैसे जायँगे। तीसरी बेगम मुसकराती और नेत्रों का बाण चलाती हुई बोली—"आप लोग भी क्या हैं ? हमारे स्वामी अपनी दयालुता के लिये विश्व विख्यात हैं, ये अब हमारी प्रार्थनाओं को मानकर आज से हम लोगों का साथ छोड़ कर कहीं न जायँगे; यदि तुम लोगों को मेरी बातों का विश्वास न हो तो मैं शर्त लगाने के लिये तय्यार हूँ। जिसका जी चाहे मुझसे आकर हाथ मारे। चौथी बेगम हाव भाव दिखलाकर बोली—" बहनो ! स्वामीजी तो नाहीं करते ही नहीं हैं आप लोग इतना आग्रह क्यों करती हैं, मौन्यं स्वीकृति लक्षणम् ।" उत्तर न देना ही स्वीकार कर लेना है।

बादशाह इन स्त्रियों के नेत्र कटाक्ष और हाव भाव में बँध गये, किसे क्या उत्तर देना चाहिये इसका उन्हें कुछ भी ज्ञान न रहा और विवश होकर बोले—"बेगमो ! आप लोगों के प्रेम से मैं गद्‌गद हो गया हूँ और आपको यकीन दिलाता हूँ कि अब तुम्हारे पास ही रहूँगा।" बादशाह के मुख से इतना निकलना था कि बेगमें प्रसन्नता से उछलने लगीं और उनके बहुतेरे नये नये नखरे और हावभाव होने लगे। नित्य

के नये नये प्रेम और नई नई मनबहलाव की बातों से बादशाह का मन ऐसा लग गया कि उन्हें अपने दरबार तक की सुध बुध न रही, राज में क्या होता है और क्या नहीं इसकी कुछ भी चिन्ता न रही। कई महीनों का समय इसी प्रकार गुजस्त होगया, परन्तु बिचारे दरबारियों को बादशाह की खोज करते ही बीत गया; उन्हें यहाँ तक भेद न मिला कि आखिरश बादशाह किस पर्दे में जा छिपे हैं। जनाने में रहने का तो हवा भी नहीं लगने पाई थी। इधर राज्य में गदर हो जाने की आशंका उत्पन्न होगई। ऐसी दशा में दरबारियों को बादशाह का अभाव बहुत खलने लगा।

बेगमें दरबारियों से बड़ी सतर्क थीं, वे सब पहले ही से दृढ़ संगठन कर चुकी थीं कि बादशाह का भेद दरबारियों को न मिलने पावे नहीं तो हमारे रंग में भंग डालने को उद्यत हो जायँगे और कोई न कोई चाल चलकर स्वामी को हमारे कब्जे से बाहर निकाल ले जायँगे। बादशाह प्रेम पास में ऐसे जकड़ गये थे कि उन्हें इतना भी गम नहीं था कि कहाँ सुबह हो रहा है और कहाँ साम। बेगमों को अन्य दरबारियों से तो उतनी चिन्ता न थी, परन्तु बीरबल और गंग कवि का उन्हें बराबर खटका बना रहता था। उनको विश्वास था कि यदि इन दोनों में से एक को भी किसी प्रकार से बादशाह का महल में होना विदित हो जायगा तो ये हाथ मारकार बादशाह को हमारे कब्जे से बाहर निकाल ले जायँगे। इसलिये उन्होंने अपनी सहचरियों और पहरे के सिपाहियों को खूब सावधान कर दिया था

इतना ही नहीं उनको अच्छी चौकसी के लिये छिपेतौर से कुछ अधिक बेतन भी देती थीं और उन्हें हुक्म दे रखा था कि कोई भी मर्द महल के भीतर प्रवेश न करने पाये।

जो काम बादशाह के करने का था वह सब रुक गया। बाहर बाहर से कितने ही राजदूत आये, परन्तु उन्हें गद्दी खाली मिली। इस घटना को देखकर वे बहुत ही चकराये इधर नगर निवासियों के चेहरे पर भी कालिमा का पर्दा पड़ने लगा। आज नौ दस महीने से बादशाह का गुम हो जाना बड़े आश्चर्य की बात थी। धीरे धीरे लोगों का विचार पल्टा खाने लगा। वे अपनी मनमानी करने पर उद्यत हुए। दरबारियों को गुप्तचरों के जरिये सारी बातें विदित हो जाती थीं, इसलिये उन्हें भय था कि कहीं बाहरी राजदूत कोई नया फसाद न खड़ा करदें। बीरबल ने सोचा कि अब बिना बादशाह का पता लगाये अच्छा न होगा। अतएव इसका भार बीरबल ने अपने ही सिर उठाया।

मुख्य-मुख्य सभासदों की एक प्राइवेट गोष्ठी हुई। सबको संबोधन कर बीरबल बोला—"मित्रों! अब राजका काम सँभ-लते नहीं दीखता है, कारण कि बादशाह के गायब हो जाने का समाचार दूर देशों तक फैल चुका है बाहरी राजदूत टंटा फानने पर उद्यत दिखाई पड़ते हैं। ईश्वर न करे कि कहीं से शत्रुओं की चढ़ाई हो जाय; नहीं तो अपने उद्धार में बड़ी अड़चन पड़ेगी। ऐसी स्थिति में एक ही शत्रु नहीं होते बल्कि राज्य के लोभ से जो लोग मित्र रहते हैं वे भी सत्रु बनकर चढ़ाई करने पर उद्यत हो जाते हैं। फिर इस

स्थिति को हम कैसे सँभाल सकेंगे। इसलिये हमें मुनासिब है कि तन मन तथा धन से बादशाह की खोज में कटिबद्ध हो जावें।

टोडरमल नामी एक प्रधान दर्बारी बोला-"बीरबल ! मेरी अनुमति से आप पहले महल के उन स्थानों का अन्वेषण करें जहाँ तक कि आपको महलमें जाने की आज्ञा है।" बीरबलने कहा-"यह मैं इससे पहले ही कर चुका हूँ; परन्तु जब मेरा कुछ वश न चला तो आज यह बात आप लोगोंके सामने उपस्थित किया है।" गंग कवि बोला-"आप लोगों को विदित है कि मैं बादशाह को देखने के लिये कितना उतावला हो रहा था, सो कल्ह मुझसे बादशाह का साक्षातकार होगया। मानो सूखते विरवे पर पानी पड़गया, सबकी आँखें खुल गईं। बीरबल ने पूछा-"आपने बादशाह को कहाँ पर देखा था।" गंग ने उत्तर दिया-"वह दिलाराम बेगम के कमरे में सोये थे।" बीरबल ने कहा-"ठीक है, बेगम ने बादशाह को मोहित कर लिया है, भला ऐसी दशा में बादशाह दरबार में कैसे आ सकते हैं?"

गंग कविने कहा-"केवल पता लगाने ही में मुझे जानपर खेलने की नौबत आ पहुँची थी अब वहाँ से निकाल लाना कोई आशान बात नहीं है। बीरबल ने गंग को उसकाते हुये कहा-"फिर भी यह काम सिवा कविवर गंग के दूसरे के किये हो भी नहीं सकता।" एक अन्य दरबारी ने भी कहा-"भाई यह साधारण एहसान नहीं है, बादशाह को निकाल लाने वाले की कीर्ति अमर हो जायगी। कारण कि इससे अगणित लोगों का उपकार होगा। गंगजी तुरत कार्य संपा-

दन के लिये अग्रसर होइये।" गंग बोले-"क्या खूब! 'जान पड़ता है कि आप लोग मेरा ही प्राण लेने को उद्यत हुए हैं।" खानखाना अबतक चुप्पी साधे हुये था परन्तु गंग को कचड़ियाते देखकर बोला-"गंगजी इसमें आपके लिये कोई भय करने की बात नहीं है। यदि बादशाह क्रोधित भी रहेंगे तो आपकी तरफ देखते ही पानी २ हो जायँगे। यह कोई साधारण काम नहीं है इससे आपको एक बड़ा अहशान मिलेगा।"

गंग बोला—"क्या आप लोग उन बेगमों को कुछ कम समझते हैं जो बादशाह को अपने प्रेम फाँस में जकड़ कर आज दस महीनों से गुम किये हुए हैं यदि वे मुझसे रुष्ट होकर बादशाह को उलटा सीधा समझा देंगी तो बादशाह मेरी जान लेने पर उतारू हो जायँगे। मेरे बालबच्चे बिलबिला कर बे मौत मरेंगे। बादशाह को महल से बाहर निकाल लाना शेर का सामना करना है"

बीरबल बोला-"गंगजी! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि यदि अबकी बार बादशाह उन बेगमों के हाथ से छूटे कि समझ लेना कि फिर वे उनके हाथ न लगेंगे। इस बार ही उनसबों ने उन्हें कैसे फँसा लिया, मुझे तो इसी पर बड़ा आश्चर्य हा रहा है।" अब राजा टोडरमल की बारी आई वे बोले-"कविवर! आपको हतोत्साह होना शोभा नहीं देता; यह काम कवियों का ही है कि दूसरों को उत्साह देते हुए लड़ाई में स्वयं अपना प्राण भी विसर्जन कर देना। इसके अनेकों प्रमाण पुस्तकों में भरे पड़े हैं। लड़ाई में प्राण देकर हमारे प्राचीन कवियों ने केवल थोडे से आदमियों की जीवन

रक्षा की होगी यहाँ तो समस्त भारत को काल की गाल से बचाना है। आप धैर्य से काम लें, कामयाबी आपके ही द्वारा हासिल होगी। इस महान पुण्य का भागी होना विधाता ने आपही के करम में लिखा है।"

बीरबल गंगको प्रोत्साहित करने के लिये फिर बोला—हमारे कवि सम्राट तो सदासे सूरमा हैं; इस बार न जाने क्यों इनका मन कदरा रहा है? क्या राज का प्रबन्ध उलटने वाला तो नहीं है? हरेच्छा! भावी बड़ी प्रबल होती है।" गंग से चुप न रहा गया वे बोले-"दीवान साहब अब कुछ न कहो आपके बोलने से मेरा कलेजा फड़कने लगता है। आपने कोई जादूगरी तो नहीं सीख रक्खी है। या आपकी वाणीमें कोई मोहनी शक्ति तो नहीं घुसी हुई है। मैं आपकी बातें सुनते ही आप के फेर में आ जाता हूँ। टोडरमल ने कहा-"देखो गंग मोहनी सोहनी कहना तो टाल मटोल की बातें हैं अब आपको अपना विचार स्पष्ट कर देना चाहिये या तो हाँ करो वा नाहीं करके सारा बखेड़ा दूर कर दो। गंग बोले-"क्या खूब, आप सब लोग एक मत होकर मेरे पीछे पड़ गये हैं, परन्तु स्मरण रखना कि इस बार प्राण लेने देने की बारी है, जब सर कटाने की दशा उपस्थित होगी तो क्या उस समय भी मेरी रक्षा करोगे।" बीरबल ने सबको इशारा किया जिस कारण सब सभासद एक साथ हामी भरने को तय्यार हो गये।

बीरबल बोला—"कविवर! आपका एहसान इस सभासदों पर सबसे बढ़ कर होगा। क्या इतने लोगों के कहने पर बादशाह विचार नहीं करेंगे। टोडरमल ने कहा-"गंगजी अब

तत्काल बादशाहको महल से निकाल लाने का उपाय करो।" गंग बोला-"मैं दीवान बीरबल और राजा टोडरमल प्रभृत सभी दर्बारियों से आग्रह पूर्वक निवेदन करता हूँ कि इस समय मेरा दिल और दिमाग काम नहीं करता है अतएव इस समय यश प्राप्ति के लिये कोई दूसरा दर्बारी बीड़ा उठावे। मेरी सम्मति में तो ऐसा आता है कि बीरबल मानसिंह टोडर मल और खानखाना, प्रभृत कोई भी दर्बारी इस काम का भार अपने सिर ले तो अति उत्तम हो।" राजा टोडरमल बड़ी चिन्ता में पड़ गये उन्होंने विचार किया कि जिस बात को हम लाग घंटों परिश्रम कर इतने ऊँचे पहुँचाया था वह थोड़े ही में गिरना चाहती है यदि सचमुच में गिरही गई तो यह आज की सभा निष्फल हो जायगी। उन्होंने कहा-"जो काम जिसके करने का है वही उसके करने का असली हकदार है। कविवर! यह काम कवियों का है; इसे कोई दूसरा नहीं कर सकता।" गंग कबि इस बार बिल्कुल निरुत्तर होगया। असल में बात भी सही थी, सही के आगे हरएक विचारवान पुरुष को झुकना पड़ता है। उसने हामी भर ली और बोला-"चाहे जैसे भी हो अब बादशाह को जनाने महल से बाहर निकाल कर ही दम लूँगा।"

समस्त दरबारी आनन्दविह्वल हो गये। इस खुशखबरी के उपलक्ष में सभों ने ईश्वर पूजा करने की मनौती मानी। इसके पश्चात सभा का काम बन्द हुआ। लोग दूसरे कार्य्यों का सँभाल करने लगे।

उधर गंगकी और ही हालत थी। उसने विचार किया कि

जो काम मुझेही करना जरूरी है उसमें व्यर्थ आगा पीछा करना उचित नहीं। मैं इस कार्य्य को आज ही सम्पादन करूँगा। यह राजदरबार है। गुप्तचर बराबर लगे रहते हैं, कहीं यह सुराख बेगमों को लग गई तो फिर काम होना असम्भव हो जायगा। वे बादशाह को ऐसी गुप्त कोठरी में छिपा देंगी कि वहाँ तक मेरा पहुँचना ही कठिन हो जायगा। फिर एक कवि की ऐसी युक्ति भी है—

"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होयगो, बहुरि करोगे कब॥"

गंग का ऐसा विचार करना झूठा नहीं था वह बेगमों के नस नस से वाकिफ था, दूसरे स्त्रियों के भेद भावों का पूर्ण ज्ञाता भी था। प्रातःकाल ही अपने कार्य साधन का निश्चित कर जब अर्ध रात्रि का अमला आया तो अपनी पोशाक बदल कर भयावनी सूरत बना ली। दिन मे ही एक काला बुरका और एक हाथ भर की ऊँची काली टोपी सिलवा कर दुरुस्त करवा लिये था। जब मध्य रात्रि आई तो बुरका और टोपी को धारण कर हाथ में एक मोटा सा लट्ठ बाँध घर से बाहर निकला। एक हाथ में माला भी लटक रही थी। उसने अपनी सूरत राक्षस की बनाई थी। रास्ते में लोगों से साक्षातकार न हो जाय इस भय से हटता बढ़ता निर्धारित स्थान की तरफ अग्रसर हुआ। जनाने बाग के द्वार पर पहुँच कर आगा पीछा सोचने लगा। उसके मनमें यह समाई कि अगर सदर फाटक से चलता हूँ तो निश्चय है कि पहरे वालों से मुडभेंट हो जायगी। अतएव गुप्तद्वार से चलने में ही कल्याण

दीख पड़ता है। तदर्थ उसने गुप्त द्वार का ही आश्रय लिया। रात्रि का चतुर्थ पहर था–लुकते छिपते वह एक ऐसी जगह जा पहुँचा जहाँ से हल्का प्रकाश बाहर को आ रहा था। बादशाह पाखाने से निवृत्त होकर दातून कर रहा था, उसके चारों तरफ बारांगनाओं की चौकी थी। बादशाह का आनन्द उपभोग देखकर गंग चकरा गया। और मन ही मन सोचा–"भला ऐसा कौन त्यागी होगा जो ऐसा इन्द्रभवन का उपभोग त्यागकर दुनिया के बखेड़ों में फँसकर जीवन व्यतीत करेगा। किसीके आनन्द में बाधा पहुँचाने से बड़ा प्राश्चित लगता है, परन्तु क्या करूँ मैं तो कर्तव्य की बेड़ी पहन चुका हूँ, मुझे तो उसका निर्वाह करना ही पड़ेगा। फलदाता ईश्वर है उसे जो पसन्द होगा करेगा।

ऐसा संकल्प विकल्प कर अपने मनको भली-भाँति पक्का कर लिया फिर खिड़की के समीप पहुँच कर एक गहरी ललकार देकर बोला–"ऐ बादशाह! तू अभी तक अपने को मनुष्य समझकर अचेत पड़ा है; परन्तु बाहर के लोग तुझे घोड़े और गदहे की उपाधि वितरण कर रहे हैं, क्या तुझे इसका भी कभी ध्यान आता है, मौका है अब भी सँभल जा।" इतना कहना था कि वह बड़ी तेजी से निकल भागा, उसके भागने की गति इतनी तेज थी कि चाहे कोई कितना ही दौड़ाक क्यों न होता परन्तु उसका हाथ नहीं मार सकता था। बादशाह भीतर से पुकार कर बोले–"अरे कोई है, इस नालायक को अभी जान से मार डालो।" बादशाह को गंग ऐसा प्रख्यात कवि का शब्द ज्ञात था उसकी आवाज से उसने गंगका होना

निश्चत किया और उसके कहने का भावार्थ भी उनकी समझ में आ गया, लेकिन यहाँ कौन आकर बोल गया यह उनके मन में स्थिर न हो सका। वह भली भाँति से जानते थे कि इस स्थानपर आने में पशु पक्षी तक भयभीत होते हैं भला कोई मनुष्य कैसे आ सकता है। उधर विचारा गंग प्राण लेकर भागा तो सही परन्तु फिर भी चौकीदारों की हद से बाहर नहीं जा सका; आखिरश पकड़ा ही गया। चौकीदारों ने देखा कि यह तो कविवर गंग हैं, इनका यहाँ आना मतलब से खाली न होगा। अगर कोई चोर घुसा होता तो हम उसे मार डालते; परन्तु इनको मारना उल्टे हम लोगों का प्राण घातक होगा। वे उसे सजीव छोड़ दिये। विचारा गंग कैद कर लिया गया, बादशाह क्रोध से तम तमाया हुआ महल से बाहर निकला, बेगमों ने हरचन्द उन्हें रोकने की कोशिश की परन्तु किसी की एक न सुनी। कवि गंग की घोड़े और गदहे वाली उपमा उनके मनमें उबल रही थी। बेगमों को अपने दरबारियों की इस हरकत पर बड़ी नाराजगी हुई और वे उन्हें लाखों प्रकार की बददुआयें देने लगीं। अन्त में यह जानकर उन्हें कुछ तसल्ली हुई कि जिसने हम लोगों के रंग में भंग डालकर बादशाह को बाहर निकाला है उसका प्राणदण्ड की सजा मिलेगी और आज से सबपर विदित हो जायगा कि ऐसा कर्म करने वाले की कैसी दुर्गति होती है। दरबारियों का जब बादशाह का बेगमों के फन्दे से छूटना और कवि गंग पर आई विपत्ति का समाचार मिला तो हर्ष और शोक दोनों को एक साथ ही प्राप्त हुए।

बादशाह बाहर निकलने के दूसरे ही दिन सारे नगर में अपने प्रगट होने का ढिढोरा पिटवा दिया जिससे प्रजावर्ग में आनन्द की वर्षा होने लगी और अत्याचार यानी बगावत करने की इच्छा करने वालों को भय उत्पन्न होगया। दरबार के समय नगर के हर एक विभाग से दरबारी गण और प्रजावर्ग के लोग आ आ कर दरबार को भरने लगे। बादशाह क्रोधोन्मुख सिंहासन पर आ विराजे। इतने दिनों के पश्चात आज बादशाह को लोगों ने सिंहासन पर आरूढ़ देखा। लोग बादशाह को सलाम कर करीने से अपनी २ जगहों पर जा बैठे। बादशाह से रुख मिलाने की किसी में शाहस न थी, सबका सिर नीचे को झुका हुआ था। इसी बीच सिपाही लोग गंग कवि को रात्रि वाली पोशाक में बाँधकर दरबार में ले आये। गंग को प्रोत्साहन देकर भेजने वाले दीवान प्रभृत सभी दर्बारियों ने गंग के निराले ढंग को देखा। वे मनही मन ईश्वरसे उसकी खैर मनाते हुए सुअवसर की प्रतीक्षा करने लगे। वे तन मन से उसकी जीवन रक्षा करने के लिये तत्पर थे।

बादशाह गंगको न पहचान कर बोले—"मैं क्या देख रहा हूँ; क्या यह कोई प्रेत वा पिशाच तथा भूत तो नहीं है?" तब गंग कवि को सुअवसर मिला और वह बधा बँधा झुक कर बादशाह को सलाम किया। सलाम करते समय उसकी लम्बी टोपी जमीन पर गिर पड़ी जिससे उसका चेहरा साफ साफ दिखाई पड़ने लगा। बादशाह गंग को देखकर पहचान गये और बोले-"गंग! तुमने किस अधिकार से

रात्रि के समय मेरे जनाने महल में प्रवेश किया था? तुम्हारा कसूर प्राण दण्ड पाने का है।" गंग लाचार था, उसने अपने मुख से कुछ भी उत्तर न दिया। बादशाह की आज्ञा पातेही बधिक उसे कतल करने के लिये म्यान से तलवार निकाल कर सामने आये।

गंग अपनी अन्तिम घड़ियाँ गिनने लगा; फिर उसका ध्यान उन दरबारियों की तरफ गया जिनकी कृपा से वह इस दशा को प्राप्त हुआ था। वह बारी बारी सबके मुख की तरफ फिरकर देखा। इशारे से हरचन्द लोगों को अपनी सहायता के लिये प्रोत्साहित किया; परन्तु प्राण जाने के भयसे सहायता करने की कौन कहे कोई सिर उठाकर उसकी तरफ देखा तक नहीं। बादशाह गंगकी सारी हरकतों का मनोमन निरीक्षण कर रहे थे; आखिरकार उनसे न रहा गया और गंग से बोले—"गंग! तू आज यह कौन सा ढोंग निकाला है दरबार है या तमाशे का घर। गंग से रहा न गया; कल की सभा के परामर्श दाताओं की काली करतूत उसे सूल की तरह बेध रही थी। अभी कल्ह तो वे उसे विमानारूढ़ कर सदेह स्वर्ग पहुँचाने पर तुले हुए थे और आज किसी के मुख में छेद ही नहीं दिखाई पड़ता। ऐसा प्रतीत होता है कि अगली बातों से इन्हें कुछ भी परिचय नहीं है। जब मुझे काल के गाल में जाना ही है तो इन्हें भी विश्वासघात का मजा चखाकर जाना चाहिये ताकि सबको आगे के लिये मेरा सबक याद रहे।

कवि गंग दरबारियों की तरफ हाथ का इशारा करके बोला—"पृथ्वीनाथ! इन्हीं दरबारियों की काली करतूतों के

कारण आज मैं इस दुर्गति को प्राप्त हुआ हूँ, इसमें इन सबों का सारा अपराध है। फिर उसने सब के सामने प्राइवेट सभा का होना और उसमें लोगों का उसे उभाड़ कर भेजना आदि २ बातें एक एक कर कहना शुरू किया।

गंग कवि की बातों से बादशाह को बड़ा कौतूहल हो रहा था, इस पर तो वे खिलखिला कर हँस पड़े जब कि गंग द्वारा उसे मालूम हुआ कि दरबारी लोग कलह की सभा में उसे बचाने का कस्द करके अब मुँह से चूँ तक नहीं बोलते। बादशाह ज्यों ज्यों गंग कवि से उसकी कहानी सुनते गये त्यों त्यों उनके क्रोध में कमी आती गई। अन्त में वे प्रसन्न होकर गंग कवि के प्राणदण्ड की सजा रद्द करदी और उसके कर्तव्यों को उपकार की दृष्टिसे किया जाना समझ कर उसे अच्छी पारितोषिक प्रदान किये। बादशाह ने कहा—"देखो कविवर! मेरी बातें गठिया कर रखलो; जो लोग मधुर भाषी होते हैं वे कभी भी अपने वादे के सच्चे नहीं निकलते। इसलिये किसी की मीठी मीठी बातें सुनकर उसके फेर में तबतक नहीं आना चाहिये जबतक कि उसका दिली भाव न समझ में आ जाय।"

बादशाह को अपने दरबारियों की धूर्तता से कुछ खेद सा उत्पन्न हो गया था इसलिये उनकी तरफ इशारा करके बोले—"आप लोगों ने इस विचारे वृद्ध को मरने के लिये तो भले ही उसका कर काम निकाल लिया, परन्तु उसके छुड़ाने का किसी ने कुछ भी प्रयास नहीं किया क्या तुम्हें यही करना यथोचित था।"

बीरबल बोला—"पृथ्वीनाथ ! हम लोग कविवर के बड़े आभारी हैं क्योंकि इन्होंने अपनी जानपर खेलकर हजारों की प्राणरक्षा की है। हम इस बात से भली भाँति परिचित हैं कि आप परिणामदर्शी हैं, इसलिये उन्हें मरने न देंगे। यदि बीच में हमलोग आप से कोई छेड़ छाड़ करते तो आपकी क्रोधाग्नि और भी भड़क जाती, फिर उस समय हमलोगों के सँभाले न सँभलती, इन्हीं सब परिणामों पर दृष्टिपात कर सब लोग खामोश रह गये।" फिर यह काम समाप्त कर बादशाह पिछड़े राजकीय कामों के करने में तत्पर हुए और पहले के समान बराबर दर्बार में उपस्थित होकर सारे पिछड़े हुए कामों को थोड़े दिनों में ही सँभाल लिया। दर्बारियों की इस चातुर्य्यता से आतंक फैलाने वालों का शिर नीचा होगया।

सबसे प्यारी वस्तु

एक दिन बादशाह जनाने महल में अपने सबसे प्रिय बेगम से कुछ बातें कर रहा था। बात बात में कोई ऐसा विषय आगया जिससे कि वह सिरसे पैर तक बेगम से फिरन्ट हो गया और उसे आज्ञा दी कि तुम आज शाम तक महल खाली कर दो। बेगम विचारी ने यद्यपि बादशाह के गुस्से को शान्त करने के लिये बहुतेरा प्रयास किया; परन्तु सब निष्फल गया। बादशाह उसी क्रोधावेश में महल से बाहर चले गये। बेगम भय से थरथर काँपने लगी। जब अपने बचाव के लिये बहुत मूड़मार कर भी कोई युक्ति न निकाल सकी तो उसका ध्यान बीरबल की तरफ गया। उसने दासको

भेजकर चुपके से बीरबल को महल में बुलवाकर अपना सारा हाल कह सुनाया। बीरबल उसे एक गुप्त परामर्श देकर तुरत महल से बाहर आया और फिर दर्बार के कामों को इस ढंगसे मौन होकर करने लगा मानो उसे इसकी कुछ खबर ही नहीं।

जब थोड़ा दिन ढलने को बाकी रहगया तो बेगम ने कुछ सामानों के अलग अलग कई गट्ठर बाँधकर बादशाह को बुलवाया। जब वे आये तो बेगम ने बहुतेरा अनुनय विनय किया; परन्तु फिर भी बादशाह का मन पल्टा नहीं खाया। वे बोले-"अब समय नहीं है, सूर्य्यास्त हो रहा है अतएव अपनी प्यारी सामग्रियों को लेकर फौरन मकान खाली करदो।" बेगम बोली-"स्वामी! जब आप मुझे त्यागते ही हैं तो मेरी एक अन्तिम प्रार्थना स्वीकार करें। मैं चाहती हूँ कि इस जुदाईके समय मेरे हाथ से एक गिलास शर्बत पान करलें। अब जब मेरा सौभाग्य कहीं फिर से उदय होगा तब न मुझे आपका दर्शन मिलेगा।" स्त्रियों की मोहनी भी क्या है, बादशाह बेगम के जाल में फँस गया।

बेगम एक प्याले में खूब अच्छी सराब भर लाई और बादशाह को अपने हाथों से पिला दिया। थोड़ी देर में बादशाह शराब की नशे में ऊँघने लगा। बेगम पहले ही से अपने नौकर को सावधान कर चुकी थी, वे बादशाह को ले जाकर एक पालकी में सुला दिया। फिर बेगम भी एक दूसरी पालकी में सवार होकर बादशाह के सहित अपने पीहर चली गई। वह बादशाह को एक पलँग पर सुलाकर आप स्वयं उसकी पहरेदारी करने लगी। दूसरे दिन जब बादशाह की नींद

खुली और नशे का झोका टूटा तो अपने को एक अपरिचित स्थान में पाया। उन्हें सन्देह हुआ—"क्या मैं स्वप्न देख रहा हूँ?" बेगम सामने पंखा झल रही थी बादशाह ने उससे पूछा—"क्या तुम बतला सकती हो कि मैं इस समय सोया हूँ अथवा जाग रहा हूँ।" बेगम ने उत्तर दिया—"स्वामीनाथ! पहले आप सो रहे थे, परन्तु अब सबेरा होने पर आपकी निन्द्रा भंग हो गई है। उठिये हाथ मुँह धोकर नमाज पढ़ लीजिये। बादशाह बोले—"पहले बतलाओ कि यह किसका महल है और हम कहाँ पर आये हुए हैं।" बेगम ने अपना दोनों हाथ जोड़कर कहा—"प्रभु! यह आप की ससुराल यानी मेरे पिता का घर है। मैं भी आपकी आज्ञा पालन करने के लिये यहाँ पर आई हूँ।" बादशाह ने फिर पूछा—"तब मैं कैसे आया।" बेगम ने उत्तर दिया—"स्वामी! आपने मुझे आज्ञा दी थी कि जो तुम्हारी सब से प्यारी वस्तु हो उसे अपने साथ लेती जाओ।" मैं ईश्वर की साक्षी देकर कहती हूँ कि महल भर में ही नहीं बल्कि समस्त ससार में आपसे बढ़कर मुझे कुछ भी प्यारा नहीं है। इसलिये मैं आपको अपने साथ लेकर यहाँ चली आई हूँ।" बेगम के ऐसे अनुराग को देखकर बादशाह दयाद्र हो गये और उसके अपराधों की माफी दी। फिर अपने ससुर से मिल भेट सबको राजी कर सास ससुर की अनुमति से उसी दिन बेगम के सहित अपने नगर को लौट आये।

कुछ दिनों के बाद जब फिर बेगम और बादशाह में भली भाँति प्रेम हो गया तो एक दिन ससुराल जाने वाली बात बादशाह के ध्यान में आ गई; तुरत बेगम से पूछा—"प्रिये! क्या

तू बतला सकती हो कि उस रोज तुम किसकी सम्मति से मुझे अपने पीहर ले गई थी।" बेगम ने उत्तर दिया-"स्वामी! वह आपके चतुर दीवान बीरबल की सम्मत्ति थी। उन्हीं की कृपा से मुझे आप फिर से प्राप्त हुए हैं।" बादशाह बीरबल पर प्रसन्न होकर उसे बहुत धन्यवाद दिये।

दीवान और काना नाई

एक दिन बीरबल गुप्त रूप से नगर पर्यटन के लिये निकला था। घूमते २ वह एक ऐसे स्थानपर जा पहुँचा जहाँ कि एक अमीर एक युवती कन्यापर बलात्कार करने की चेष्टा कर रहा था। यह युवती कुमारी कन्या थी। इसके रूप और यौवन को देखकर वह यवन मोहित हो गया था। वह बहुत दिनोंसे उसे फाँसने की चेष्टा में लगा हुआ था, परन्तु वह उसे अपने पास नहीं फटकने देती थी। आज अचानक किसी प्रकार उधर आ पड़ी थी इसलिये वह अपने कलुषित हृदय की अग्नि शान्त करने की फिराक में पड़ा हुआ था। उस कुमारिका के भाग्यवश उसी समय बीरबल भी वहाँ जा पहुँचा।

बीरबल की पोशाक मुसलमानी ढंग की देखकर उस यवन ने मुसलमान समझकर बीरबल से बोला-"महाशयजी! आप भी मुसलमान ही जान पड़ते हैं यदि आप में कुछ भी मजहब का जोश हो तो इस समय मेरी सहायता करें। यह हमारी स्त्री है, यह एक हिन्दू के बहकावे में आकर उसके साथ जाना चाहती है, और पूछने पर अपने को हिन्दू बतलाती है।

यदि आपकी थोड़ी मदद मिले तो मैं इसको घसीट कर अपने घर ले जाऊँ। मैं एक नामी रईस हूँ, शायद आपने सरदार खाँ का नाम कहीं न कहीं अवश्य सुना होगा। मेरा मकान भी यहाँ से करीब ही है।"

बीरबल ने कहा–"सच है; मुसलमान के नाते मैं आपकी मदद करने को उद्यत हूँ, परन्तु इस परिश्रम के लिये मुझे क्या पुरस्कार दोगे?" सरदार खाँ ने कहा–"मैं अधिक कुछ कहना पसन्द नहीं करता, परन्तु आपको इतना बचन अवश्य देता हूँ कि यदि आपकी सहायतासे मैं इस कार्य्यमें सफल हो जाऊँगा तो आपको खुश कर दूँगा।" बीरबल ने कहा–"अच्छी बात है, पहले मैं इस स्त्री को समझाकर रजामन्द करूँगा अगर नहीं मानेगी तो देखा जायगा। आपको मुनासिब है कि जब तक मैं इसे समझा बुझाकर राजी न करलूँ दूर खड़े रहें।" कामी कुत्ते को जैसे आगा पीछा नहीं सूझता और वह कुतियों के पीछे मारा मारा फिरता और निरादर सहता है, वही हालत अमीर खाँ की भी थी। वह बीरबल की बात मानकर अलग जा खड़ा हुआ। तब बीरबल ने उस स्त्री से पूछा–"ऐ स्त्री! तू अपना सच्चा सच्चा हाल मुझसे बयान कर, मेरा नाम बीरबल है। तेरी सच्ची वाकया सुनकर मैं तेरा छुटकारा करा दूँगा, मैं इस समय गुप्त रूप से नगर का हाल जानने के लिये गस्त लगा रहा हूँ।" बीरबल का नाम बच्चे बच्चेके कानोंमें गूँज रहा था। उसकी न्यायप्रणाली से आला से अदना सभी को उस पर विश्वास था। कन्या बीरबल का नाम सुनते ही निर्भीक होगई और बोली–" मैं एक ब्राह्मण

की कन्या हूँ और मेरे माता पिता मुझे लक्ष्मी के नाम से पुकारते हैं। यह पतित यवन बहुत दिनों से मेरे पीछे पड़ा है परन्तु मैं इसके हाथ नहीं आती थी। आज अचानक इस जगह इससे मेरी भेंट होगई, ईश्वर के नाम पर मुझे इसके हाथसे बचाइये, आपको सवाब होगा। यह पतित मेरी आबरू बिगाड़ने की फिराक में लगा है, प्रभु की कृपा से आप मेरे पिता तुल्य धर्म रक्षक मिलगये। इसका शीघ्र सत्यानाश होगा।" बीरबल ने उस कन्या को ढाढ़स दिलाया, फिर सरदार खाँ को बुलाकर बोला-"वाह मियाँ सरदार खाँ! आप सरकारी कर्मचारी हैं और आपका कर्तव्य प्रजाकी रक्षा करना है, इतना होते हुए भी आप एक ब्राह्मण की लड़की के साथ बलातकार करना चाहते हैं, आपको शाही हुकम पर जरा गौर करना चाहिये था बादशाह की आज्ञा है कि उसके साम्राज्य में कोई भी किसी पर अत्याचार न करे। यदि इस अपराध में कोई पकड़ा जायगा तो उसे कठिन से कठिन दण्ड दिया जायगा।

सरदार खाँ अपनी शेखी में भूला हुआ था अतएव धृष्टता कर बोला-" यह सोख औरत आपसे झूठ बोल रही है।" बीरबल ने कहा-" वह नहीं, बलिक तुम झूठ बोलते हो। यह कृपाशंकर व्यास की कन्या है; अब मेरे रहते तुम इसको छूने की शक्ति नहीं रखते हो, इसी में भला है कि चुपचाप अपने घर चले जावो; नहीं तो नाहक कष्ट भोगोगे! सरदार खाँ गीदड़ धमकी देखकर काम निकालना चाहता था इसलिये बीरबलको झिड़क कर बोला-"दुष्ट! तूँ मुझे अलग हटाकर इसे बहका

दिया है, परन्तु मेरे सामने तेरी दाल न गलेगी और झट म्यान से तलवार खींचकर बीरबल पर झपटा। बीरबल अपनी नकली पोशाक उतारकर खासा बीरबल बन गया।" सरदार खाँ बीरबल को पहचान कर सन्न हो गया और उसकी जबान एकदम बन्द हो गई। डरके कारण थरथर काँपने लगा।

बीरबल बोला—"ऐ प्रजा पर अत्याचार करने वाले सरदार खाँ! अब तुम मेरे कैदी हो गये हो। तुमको मेरे साथ चलना पड़ेगा। तुम प्रजा के रक्षा के निमित्त रक्खे गये थे धिक्कार है तुम्हारी इस करतूत पर।"

सरदार खाँ चुपचाप बीरबल के साथ हो लिया फिर बीरबल उस कन्या से बोला—"तू भी मेरे साथ चल। कल मैं तेरे पिता को बुलवाकर सारी बातें समझा कर तुझे उसके साथ भेज दूँगा। कन्या ने सहर्ष बीरबल के साथ जाना स्वीकार किया घर पहुँच कर बीरबल ने उसे अपनी स्त्री के हवाले किया। और सरदार खाँ को एक कोठरी में कैदी के रूपमें बन्द रक्खा। सबेरा होते ही उसे सिपाहियों के पहरे में बादशाह के सामने उपस्थित किया।

बादशाह तथा अन्य सभासद सरदार खाँ के सम्बन्ध में कुछ नहीं जानते थे। एकाएक उसको कैदी के रूप में देखकर चकित हो गये। बीरबल से उसका भेद पूछा और बीरबल अपने भ्रमण से लेकर सरदार खाँ के पकड़े जाने तक की सारी बातें बादशाह से कह सुनाया। बादशाह जो बात सुनने का स्वप्न में भी कयास नहीं करता था वह सुनकर और सामने सरदार खाँ कैदी को देखकर आग बबूला हो

होकर बोले-"ऐ नीच सरदार खाँ! तुमको मैंने इतना ऊचा पद प्रदान किया था जिसका तूने मुझे इस प्रकार से बदला चुकाया, जा मुँहमें कालिख लगाकर मेरी आँखों से ओझल हो जा। फिर बीरबल ने तुरत उसे कारागृह में भेज दिया। इसका प्रभाव दूसरे सरदारों पर भी बड़ा गहरा पड़ा। वे डरवश थरथर काँपने लगे।"

दूसरे दिन सरदारखाँ बादशाह की आज्ञा से भरी सभा में उपस्थित किया गया और सबके सामने उसको कड़ी सजा भुगतने का हुक्म सुनाया गया। मुसलमान दरबारी और सरदार लोग बीरबल से बहुत चिढ़गये और सभों ने आपस में मिलकर बीरबल को दर्बार से निकाल बाहर करने की गुप्त चेष्टा करने लगे। उन्होंने गुप्तरूप से बीरबल की बड़ी शिकायत की परन्तु बादशाह उनकी एक बात भी सच्ची नहीं मानते थे उनका बीरबल पर सच्चा अनुराग था और वे उसकी अनेकों परीक्षाएँ भी ले चुके थे। जिस कारण उन्हें बीरबल पर कभी अविश्वास नहीं होता था। उन लोगों का जब कोई चारा न चला तो एक काने नाई को मिलाया और उसे धन का प्रलोभन देकर इस काम के लिये अग्रसर किया। एक दिन वह नाई हजामत बनाते समय बादशाह को पिघला कर बाला-"पृथ्वीनाथ! आप रोज बड़ेसे बड़े कर्म किया करते हैं परन्तु एक बात पर आपने कभी विचार नहीं किया। आप के वाप दादों को स्वर्ग गये एक जमाना गुजर गया; परन्तु आपने उनकी सुधि तक न ली, भला वे अपने मन में आपको क्या कहते होंगे, कहीं वे आपसे नाराज़ हो जायँ तो फिर कौन

सा उपाय कीजियेगा?" बादशाह ने कहा-"इतने दिनों तक तो मुझे उनकी सुधि न रही, परन्तु अब तुम्हारे कहने से मुझे भी विचार करना पड़ा। भाई! सबसे बड़ी अड़चन की एक बात है कि आखिरस इस काम के लिये किसे भेजूँ।" तब उस काने नाईने कहा-"आप अपने पितरों की कमाई तो ले लेते हैं; परन्तु अब उनकी खोज खबर तक नहीं लेते, भला वे क्या कहेंगे।

बादशाह बोला—"आखिर इस काम को करने के लिये तुमने किसको उपयुक्त सोचा है।!फिर वह जायगा किस मार्ग से।" तब नाई बोला-"पृथ्वीनाथ! यह तो आप जाने कि किसे भेजना चाहिये; परन्तु जाने का मार्ग मैं आपको बतला सकता हूँ। बादशाह ने कहा-"भली बात है तू शीघ्र बतला।" काने ने कहा-"आप जिस आदमी को भेजना चाहें उसे स्मशान पर भेजकर पहले उसके ऊपर घास के बहुत से पुलिन्दे डलवा दें। जिससे ऊपर से देखने में वह मीनार के समान देख पड़े फिर उसमें आग लगा देने से वह आदमी धुयें के साथ पितर लोक में आपसे आप पहुँच जायगा (भीतर ही भीतर) बिना औषधि के ही बाधा दूर हो जायगी।"

बादशाह बोला—"यह तो हुआ परन्तु भेजें किसे, यह भी तू ही निश्चय कर दे।" वह बोला-"भेजे तो वह जिसे आगे पीछे दीपक भी दिखाने वाला कोई न हो, आपके यहाँ तो हजारों आदमी एक से एक धकड़ पड़े हुए हैं, हाँ वह काम बड़े चतुर आदमी का है।" बादशाह ने कहा-"भाई केवल इतना कह देने से मेरा काम नहीं सरता; आखिर तुम

अपनी समझ से किसे उपयुक्त समझते हो।" नाई ने उत्तर दिया-"पृथ्वीनाथ! मेरी समझ से तो इस काम के उपयुक्त अ-अ-अ-अरे हाँ, अच्छा बतला दूँ, हाँ! बीरबल है, आगे आपकी इच्छा चाहे जिसको भेजें।"

बादशाह ने कहा—"कहता तो तू बहुत ठीक है; परन्तु एक बात फिर भी बड़े अड़चन की आ पड़ती है, बीरबल के जानेके बाद यहाँ का कार्य कौन सँभालेगा।" नाई बोला-इसमें कौनसी बड़ी बात है, उस जगह पर अल्प काल के लिये कोई दूसरा ही आदमी नियुक्त कर दिया जायगा। यदि आप वह पद मुझे देना चाहें तो उतने समय तक मैं ही सँभाल दूँगा।" बादशाह हँस पड़े और बोले-"शाबस बच्चे! कैसा मुँहमें पानी भर आया?" तुमको भी दीवान पद के लिये उत्कण्ठा हो गई।" नाई कुछ सिटपिटा गया, परन्तु फिर भी मुँह आछत कायल होना अच्छा नहीं समझता था। उसने कहा-"पृथ्वीनाथ! इसमें कोई ऐसी बात नहीं है; मैं तो योंही कह रहा था। यदि आप कहेंगे तो मैं ही चला जाऊँगा परन्तु मैं जरा वैसा आदमी हूँ। यदि आप किसी को कत्तई न भेजेंगे तो आप पर पितृऋण बना ही रह जायगा। मुझे विश्वास पड़ रहा है कि जब आप बीरबलको जाने की आज्ञा देंगे तो वह अनेक प्रकार से निबुकने की कोशिश करेगा, परन्तु अपनी बात पर दृढ़ होकर अड़ जाँयगे तो जाने के लिये उद्यत होगा। बड़े बूढ़ों की प्रसन्नता के लिये किसी न किसी को भेजना बहुत जरूरी है, आगे आप स्वयं मुख्तार हैं। बीरबल ने नाई की अपील मंजूर करली और उसे घर जाने की आज्ञा

दो। वह बड़ी प्रसन्नतापूर्वक वहाँ से प्रस्थान किया और मुसलमानों की मण्डली में पहुँचकर सबको बधाई दी। वे लोग उसकी सारी बातें सुनकर बड़े प्रसन्न हुए।

दूसरे दिन दरबार में पहुँचते ही बादशाह को नाई की बात याद आई और बीरबल को बुलाकर बोले-"बीरबल! आज कितने समयों से हमें अपने पुरुषाओं का कुछ समाचार नहीं मिला है इसलिये इस समय मेरे मन में एकदम उच्चाट सा हो गया है, तुम जाकर उनका समाचार बूझ आओ। बीरबल की आँखें खुल गईं; उसने समझ लिया कि इसमें फँसाने की बातें हैं। अच्छा देखा जायगा। वह बोला-" पृथ्वीनाथ! यह दास जाने को नाहीं नहीं करता, परन्तु एक बात की अड़चन पड़ेगी। वह यह कि वहाँ पहुँचने के लिये कोई रास्ता नहीं है फिर क्या किया जाय? यदि मार्ग का प्रबन्ध आप करादें तो मैं सहर्ष कल की जगह आजही यात्रा करने के लिये मुस्तैद हूँ।" बादशाह बोला-"जो सुथनी सिलाता है वह पाखाना फिरने के लिये उसमें छेद भी बनवा लेता है। वहाँ पहुँचने की तरकीब काने नाऊ ने पहले ही बतला दिया है, उसकी युक्ति मुझे भी पसन्द आई है। उसने कहा है कि जाने वाले आदमी को स्मशान पर बैठा कर उसके ऊपर से घास की सवा लक्ष पूलियाँ रखकर उसमें आग सुलगा देने से काम बन जायगा, वह दूत उसी धूयें के साथ वहाँ (यानी स्वर्ग को) पहुँच जायगा। अतएव तुम दो चार दिनों में एकदम तयारी करके आओ।"

अब बीरबल समझ गया कि यह सब करामात उसी

काने नाई की है। परन्तु इस समय इससे बचने के उपाय सोचने चाहिये। बाद को मैं उससे निपट लूँगा।" वह बादशाह से बोला—"गरीब परवर! मशल मशहूर है कि लोग जाते तो अपने मन से हैं और आते दूसरों के मन से। जो आपके पितृलोग मुझे वहाँ कुछ समय के लिये रोक लगे तो मुझे विवश होकर उनका कहना मान कर रहना पड़ेगा। अतएव हमारे कुटुम्ब के भरण पोषण का प्रबन्ध होना चाहिये। वहाँ से मेरे लौटने का कोई निश्चित काल नहीं है, यदि मुझे सवा लाख सिक्के मिलें तो मैं घर का सब प्रबन्ध करके जाऊँ। मुझको इस कार्य के लिये दो मास का अवकाश मिलना चाहिये।

बादशाह ने बीरबल की मांग स्वीकार करली। उन रुपयों को बीरबल ने सुरंग खुदवाने में खर्च किया। यह सुरंग बीरबल के आँगन से प्रारम्भ होकर स्मशान तक पहुँचती थी। इसकी तयारी बड़ी सावधानी से की गई। बादशाह को इस बात की हवा तक न छूने पाई। दो मास में सुरंग बनकर तयार हो गई। अब बीरबल बादशाह के पास गया और सलाम कर बोला—"पृथ्वीनाथ! अब मैं अपने घरेलू कामों को बिल्कुल ठीक कर स्वर्ग जाने के लिये तय्यार होकर आया हूँ। बादशाह को इसमें बड़ी दिलचस्पी थी, वह तमाशा देखने के अभिप्राय से अपने दरबारियों के सहित स्मशान पर पहुँचा। काना नाई की तो पौ बारह थी, उसकी प्रसन्नता का कहीं ठिकाना नहीं था। वह ऐसा फूला हुआ था मानो किसीअहेरी ने बिना परिश्रमही बहुत बड़े बलिष्ठ जानवर

का शिकार किया हो।

बीरबल ने बादशाह से अनुमति लेकर गुप्त सुरंग के द्वार पर प्रसन्नता-पूर्वक जा बैठा और नाई के कथनानुसार उसके ऊपर घास फूँसों का पुलंदा सजाकर चुना जाने लगा। बीरबल समय की प्रतीक्षा कर रहा था। जब उसने देखा कि अब मैं घास के पुलिन्दों से भलीभाँति ढक दिया गया और यहाँ से खिसकने में किसी की दृष्टि नहीं पड़ सकती तो सुरंग का द्वार खोलकर उसके द्वारा कुशल-पूर्वक अपने घर जा पहुँचा। और फिर छद्म भेष धारण कर श्मशान की घटना देखने के लिये घाटपर जा पहुँचा। अभी तक घास चुनी जा रही थी। जब सब घास भलीभाँति चुन दी गयी तो बादशाह की आज्ञा से उसमें आग डाल दी गई, बहुतेरी हिन्दू जनता बादशाह की मूर्खता की समालोचना करने लगी कारण कि बीरबल की सुन्दर नीति से उन्हें बड़ा अनुराग था। इस प्रकार स्मशान पर एकत्रित जनता का एक बहुत बड़ा भाग बादशाह की आपकीर्ति फैलाने लगा—हाय! हाय! दीवान अब जीवित नहीं होगा, अब हमें फिर उसके दर्शन की आशा न रही। उसके कर्म में ब्रह्मा ने यही लिखा था।"

बीरबल क्रमशः उपस्थित जनता में घूमता फिरता मुसलमानों की टोली में जा पहुँचा। वे आपस में कह रहे थे—"हम लोगों के मार्ग का कंटक आज इस प्रकार से टला। अब कोई मुसलमान नया दीवान चुना जायगा। यह नालायक हम लोगों को कभी गर्दन सीधी करने का मौका ही नहीं देता। अब हमको आनन्द ही आनन्द का उपभोग होगा।"

और आगे बढ़कर बीरबल ने देखा तो काना नाई खूब डींग मार रहा है और बहुतेरे ही मुसलमान एकत्रित होकर उसकी बातें सुन रहे हैं। उसने कहा—"यह मेरी ही करतूत से आज इस अधोगति को प्राप्त हुआ है; यदि मैं इतनी युक्ति न लड़ाता तो भला कोई उसका एक बाल भी बाँका कर सकता था। मीर खाँ, अब आप अपने कौल के अनुसार मुझे पुरस्कार दीजिये।" आपने अपनी आँखों देखा है कि वह भीतर ही भीतर जलकर खाक हो गया, अब किसी को उसकी हड्डी गुड्डी भी देखने को नसीब न होगी।"

बीरबल उसकी डींग सुन सुनकर जहर की घूँट घोंट रहा था, कभी २ तो क्रोध के आवेश में आकर दाँतों तले ओठ दबाकर रह जाता था। वह मनही मन बोला—"न घबराओ, अबकी बीरबल के हाथ से तुम्हारा छूटना कठिन है। मेरी ओसरी खतम होगई; अब तुम्हारी बारी है। जब सब घास जल गई, तो लोग अपने अपने घर चले गये। बीरबल भी चुपके से अपनी गुप्त कोठरी में जा बैठा। परन्तु उसे चैन कहाँ। रातके समय नित्य नगर में फेरी लगाया करता था। गुप्तवास करते हुए जब कई महीने बीत गये तो बीरबल ने अपने प्रकट होने का निश्चय किया। इतने दिनों में उसकी दाढ़ी और मूछ पर्याप्त बढ़ चुकी थी। सिर पर बड़ी बड़ी जटाएँ उग आई थीं। इसी वेश में बीरबल ने दरबार में जाना उत्तम समझा।

तब एक दिन वह दरबारी कपड़ों से सुसज्जित होकर बादशाह के पास गया। नगर में उसे बहुतेरे परिचित मिले; परन्तु उसका रूपान्तर हो जानेके कारण वे उसे पहचान

ग सके। दरबार में पहुँचकर बीरबल बादशाहके सामने खड़ा होगया। जब बादशाह उसे न पहचान सके तो वह स्वयं बोला—"पृथ्वीनाथ! मेरा नाम बीरबल है, मैं आपकी आज्ञानुसार आपके पित्रों से मिलकर वापस आया हूँ।" बादशाह उस को भली-भाँति देखकर बोले—"वाहजी बीरबल, क्या तुम लौटकर आ गये? जरा मेरे पित्रों का समाचार वर्णन करो, वे प्रसन्न तो हैं न?" बीरबल ने कहा—"भला उनका क्या कहना है, आपके पुण्य प्रभाव से वे बड़े आनन्द से हैं, जब मैंने उनको आपका कुशल समाचार सुनाया तो वे बड़े हर्षित हुये और मुझे आपका दीवान जानकर तो मुझसे इतना प्रेम करने लगे कि मैं यहाँ आकर भी उन्हीं के प्रेम में विह्वल हो रहा हूँ। उनका सुख इन्द्रके सुखभोग को भी लजाने वाला है। वहाँ उन्हें सब बातों का सुख है केवल एकही बातकी कमी बतलाई है, वह यह कि उस लोक में हजामत बनवाने के लिये नाई नहीं मिलता। देखिये इसी से मेरी भी यह दशा हुई। मेरी तो केवल छ महीने में यह हाल है और उनके बाल तो इतने बढ़ गये हैं कि चलना फिरना दूभर हो रहा है। उनके सिर और दाढ़ी के बार जमीन पर लेटते चलते हैं। मेरे चलते समय उन्होंने आपसे एक चतुर नाई भेजने का अनुरोध किया है। मैं उन्हें आपकी तरफ से धीरज देकर आया हूँ।

वहाँकी बहुतेरी सामग्रियाँ वे मेरे साथ भेजने वाले थे; परन्तु फिर इस विचार से ठिठक गये कि नाई आने पर उसीके हाथसे भेजा जायगा। मैं उनको एक चतुर नाई तुरत भेजनेका आश्वासन दे आया हूँ। अब भेजना न भेजना आप की इच्छा पर निर्भर

है। मैं उनका सन्देश आपसे कह कर अपने पाप दोष से बरी होगया हूँ। तब बादशाह बोले-"बीरबल! मैंने तेरी बातें और अपने पित्रों का सन्देशा तो सुन लिया, परन्तु आखिर इसका उपाय क्या है, भला यहाँ पर ऐसा कौन नाई है जिसे भेजूँ?" बीरबल बोला-"हाँ इस विषय पर मैंने पहले विचार किया था और अब भी आँखें फैलाकर देखता हूँ तो मुझे अपने काने नाऊ के सामने दूसरा कोई भी नहीं जँचता। वह घास के धुएँ के साथ स्वर्ग में बड़ी आसानी से पहुँच जायगा।"

बादशाह को बीरबल की युक्ति जँच गई और वे काने नाऊ को बुलवाकर सब समाचार कह सुनाये। काने नाई को बीरबल का सजीव लौटना सुनकर बड़ा दुख हुआ। उसे स्वर्ग जाने के लिये उसे बाध्य होना पड़ा। बिचारे को अपनी मृत्यु प्रत्यक्ष नाचती हुई दिखलाई पड़ी। जान बचाने का कोई दूसरा मार्ग न देखकर उसने बादशाह से एक मास की मुहलत ली। इस मुहलत से उसका प्रयोजन छिपकर भाग जाना था। बादशाह इतनी लम्बी छुट्टी स्वीकार नहीं किये और बोले-"स्वर्ग में क्षौर कराने के लिये हमारे पितर बड़े आकुल हो रहे हैं; इसलिये तू अपने घर का पूरा पूरा प्रबन्ध करके एक हफ्ते के भीतर जानेके लिये तय्यार होकर लौट आओ यदि तुझे स्वर्ग से पलटने में देर होगी तो मैं तेरे कुटुम्ब के खाने पहनने का प्रबन्ध सरकारी कोष से करवा दूँगा। नाई ने अपने मनमें विचार किया-"अच्छा आठही दिन कहाँ का थोड़ा है, इतने दिनों में तो मैं कहाँ का कहाँ पहुँच जाऊँगा। बीरबल की युक्ति मुझे फाँस

न सकेगी। वह बादशाह को सलाम कर अपने घर का रास्ता लिया।" बीरबल भी परछाई की तरह इसके पीछे पड़ गया था; वह इसकी सारी हरकतों को ध्यानपूर्वक देखता जा रहा था। उसने समझ लिया था कि यह खोटा नाई बात छोड़ने की युक्ति निकाल रहा है। अतएव इसपर बिना सच्ची चौकसी किये काम न चलेगा।

बीरबल तो इसकी ताक में लगा ही था; ज्योंही काना नाई दरबार से बाहर निकला, वह अपने एक स्वामिभक्त नौकर को उसके पीछे लगा दिया। काना नाई रास्ते में अनेक प्रकार की युक्ति सोचता विचारता हुआ अपने घर पहुँचा। अपने कुटम्बके स्त्री पुरुषों से दरबार की सारी बातें समझा कर बोला-"यदि हमलोग गुप्त रीतिसे आज रात में ही नगर को छोड़कर इस राज्य से बाहर निकल चलें तो बीरबल के कुचक्र से जीवन रक्षा हो सकती है।" इसी बीच उसका छोटा लड़का दौड़ता हुआ घर के भीतर आया और अपने पिता (काने नाई) से बोला-"पिता जी आप यहाँ क्या कर रहे हैं, द्वार पर एक सिपाही आकर बैठा है।" नाई का चेहरा फक् हो गया, उसने कहा-"अब निश्चय मरना पड़ा। यह काम उसी बीरबल का जान पड़ता है। इसको भयभीत देख उसकी स्त्री बोली-"स्वामी! आप इतना डर क्यों रहे हैं; अभी चन्द रोज पहले बीरबल भी तो गया था। जैसे वह काम कर के सजीव लौटा उसी प्रकार आप भी लौट आइयेगा।" काने नाई ने कहा-"तू क्या जाने बीरबल कैसे लौट आया है, उसपर तो देवी की छाया है जिससे बच गया; मैं कदापि नहीं बच सकता। किसी

कवि का कहना है—

"जैसा को तैसा मिले, मिले नीच को नीच।
पानी को पानी मिले, मिले कींच को कींच ॥"

जैसी करनी वैसी पार उतरनी। मैंने दूसरे की बुराई की थी वह मेरे ही सिर बीती। खैर आगे का आगे देखा जायगा; आज ही से उसकी याद में क्यों मरूँ। सातवें दिन बादशाह ने उसे बुलाने के लिये अपना एक सिपाही भेजा। नाई हजामत बनाने का लुहखर लेकर बादशाह के पास गया। यहाँ उसे स्वर्ग भेजने की सब तय्यारी हो चुकी थी। बादशाह की आज्ञा से बीरबल ने पहले ही से स्मशान पर घास के पुलिन्दों का ढेर लगवा चुका था। काने को लेकर बादशाह स्मशान पर पहुँचे और उसे एक जगह बैठाकर ऊपर से घास के पुलिन्दों को सजवा दिया। जब यह काम समाप्त हो गया तो एक सिपाहीको आग लगाने की आज्ञा मिली। वह उसमें तुरत आग लगा दी। बीरबल ने इस प्रकार अपने बुद्धि बल से काने नाई का अन्तिम संस्कार किया।

जो दूसरे के लिये खंदक खोदता है उसके लिये ईश्वर मड़ार खोद देता है। हमें चाहिये कि दूसरों की बुराई से सदैव बचते रहें। कौन जानता है कि किस समय क्या का क्या हो जायगा। रुपये देने वालों को जैसे रुपयों के बदले रुपया और सूद नफा में मिलता है, उसी तरह सेर भर बुराई के बदले में सूद सहित सवा सेर भुगतनी पड़ती है, और उसकी सफाई मुफ्त में हो जाती है।

सौ गायों के एकमात्र अधिपति आप ही हैं

एक दिन तानसेन और बीलबल में कुछ विवाद छिड़गया, वे प्रत्येक अपने२ को एक दूसरे से गुणी बतलाते थे। बादशाहने कहा-"इस प्रकार तुम्हारा विवाद नहीं मिट सकता, इसके लिये किसी को मध्यस्त बनाकर अपना न्याय करालो।" वे बोले-"पृथ्वीनाथ! आपकी आज्ञा हमें सिरोधार्य है। हम दोनों इस बात पर सहमत हैं, परन्तु हमारी बुद्धि में नहीं आता कि हम किसको अपना मध्यस्थ बनावें। कृपया आपही इसका भी निपटारा कर दें। बादशाह ने कहा-"आपलोग महाराणा प्रतापसिंह के पास जावें।"

बीरबल और तानसेन दोनों ही एक साथ प्रतापसिंह से जा मिले। तानसेन तो गायनाचार्य्य था ही, वह वहाँ पहुँचतेही एक रागिनी छेड़ी। बीरबल अवसर की प्रतीक्षा करता हुआ खामोश बैठा रहा। जब उसने देखा कि तानसेन अपने गान वाद्यसे राणा को मोहित कर बाजी मार लिया चाहता है तो बोला-"राणाजी! हम दोनों एकही साथ साही दरबारसे चलकर आपके पास आये हैं और हम दोनोंही रास्ते में एक एक अलग अलग मिन्नतें मान चुके हैं। मैंने पुष्करजी में पहुँचकर प्रार्थना करी है कि यदि मैं दरबार से मानपत्र प्राप्तकर लौटूँगा तो एकसौ गौ ब्राह्मणों को दान करूँगा और मिया तानसेनजी ने खाजेखिजिर की दरगाह में जाकर अपनी मिन्नत की है कि जो मैं राणाजी से प्रसंशापत्र प्राप्त करूँगा तो यहाँ पर एक सौ गौवों की कुरबानी कराऊँगा। सौ गायों की जिन्दगी एकमात्र आपके हाथ है।

आप चाहे उन्हें जीवदान दें वा बध करावें। यदि जिलाने का विचार हो तबतो मुझे प्रसंशापत्र दीजिये और यदि सौ गौवों को मरवाना हो प्रो तानसेन को दीजिये। राणासाहब हिन्दू होकर भला गौवों की कुरबानी कब पसन्द कर सकते थे उन्होंने तुरत अकबर को पत्र लिख भेजा—"बीरबल बड़ा गुणग्य है, इसकी जितनी प्रसंशा की जाय सब थोड़ी है।" विचारे तानसेन की गरदन झुक गई। वह चुपके से वहाँ से चलकर दिल्ली पहुँचे अपने जीवन में फिर उन्होंने कभी बीरबल का सामना नहीं किया।

—०:*:०—

गरीब लड़की वेश्या के घर

दिल्ली नगर में एक अति दरिद्री मनुष्य रहता था। उसकी हालत बड़ी अबतर थी। यहाँ तक कि अन्न मिलता तो वस्त्र नहीं और यदि वस्त्र मिलता तो अन्न का ही अभाव रहता। उस मनुष्य को एक आठ वर्ष की कन्या थी, जो रूप रंग में भली और शरीर की सुडौल थी। एक दिन एक दुष्ट मनुष्य उस कन्या से मिला और उसे कुछ प्रलोभन देकर बहकाया। जब वह बालिका छोटी बुद्धि के कारण उसके बहकावे में आ गई तो वह उसे एक रंडी के घर ले जाकर बेच दिया। वेश्या के घर जाकर कन्या को सब उपभोग की सामग्रियाँ आसानीसे मिलने लगीं, खानेके लिये हरसमय नया नया और स्वादिष्ट पदार्थ मिलता था। ऐसे सुख के उपभोग में पड़कर

क़न्या अपने पिता को एकदम भूलगई। इधर विचारा पिता अपनी कन्या के लिये बहुत हाय हाय किया और अपने भर सक उसकी बहुत खोज बीन की, परन्तु जब उसका कहीं भी पता न चला तो लाचार होकर बैठ रहा।

वेश्या ने उस कन्या को नृत्य गान की शिक्षा दिलवाकर उसे अपने फन में गुणागरी बना दिया। वह धीरे धीरे सारे नगर में विख्यात हो गई। एक दिन ऐसी घटना घटी कि वह एक जगह मोहफिल में नाच रही थी और उसी बीच उसका पिता भी वहाँ पर जा पहुँचा। वह नाचने वाली कन्या को गौर करके देखा तो मालूम हुआ कि वह उसकी ही रामपियारी नाम्नी कन्या है। उसके बदन में काटो तो खून नहीं; परन्तु उस समय छेड़खानी करने से अपना अपमान समझ कर वह चुप मार गया और उस वेश्या का पूरा परिचय लेकर बादशाह के पास पहुँचा। जब बादशाह दरबार में आये तो अपना एक अर्जीदावा पेश किया। बादशाह उसे पढ़ने के लिये बीरबल को दिया। तब बीरलब उसे पढ़कर बादशाह को सुनाया। बादशाह ने वेश्या को उसकी लड़की के सहित तलब करने की आज्ञा दी। दूसरे दिन वेश्या कन्या के सहित दरबार में उपस्थित हुई।

बीरबल बादशाह की अनुमति से निम्नलिखित प्रश्न किया—"यह कन्या तुझे कहाँ से प्राप्त हुई है, और इसका पिता कौन है?" वेश्या तो वेश्या भला वह कब की चूकने वाली थी, इनकी पंडिताई सब पर विदित है, वह घर से ही कन्याको भलीभाँति सिखा पढ़ा कर दरबार में लाई थी। उसने

कहा-"पृथ्वीनाथ! यह एक फकीर की कन्या है, जब यह बहुत छोटी थी तभी वह फकीर इसे मेरे हाथ बेच गया था।" इसकी उम्र उस समय दो तीन वर्ष की थी। भली भाँति बातचीत भी करना नहीं जानती थी। मेरे घर रहकर कई वर्षों के बाद अब सयानी हुई है। लालन पालन के अतिरिक्त और बहुत सा व्ययकरके मैंने इसे शिक्षिता बनाया है।

बीरबल ने उस कन्या से पूछा-"क्यों री छोकरी! तू अपने माता पिता को जानती है, तेरा जन्म किस जगह हुआ था?" लड़की बोली-"ना सरकार! मैं तो अपने माता पिता की सूरत भी नहीं पहचानती, जब से होश सँभाले हूँ तब से आजतक बराबर इन्हीं का साथ है और मैं इन्हीं को अपनी माँ जानती हूँ।" बीरबल ने वेश्या से पूछा-"तू इस लड़की का नाम जानती है?" वेश्या बोली-"हाँ मैं इसको काशी के नाम से पुकारती हूँ?" बीरबल ने कहा-"अच्छा अब आज तुम अपने घर जावो कल्ह दरबार के समय फिर उपस्थित होना।"

दूसरे दिन बीरबल ने उससे पहले ही लड़की के पिता को तलब किया और उससे पूछा-"क्या तुम अपने लड़की का असली नाम बतला सकते हो?" पिता बोला-"हाँ सरकार! मैं उसे सुभद्रा नाम से पुकारता हूँ। यह हमारे अड़ोस पड़ोस के सभी लोग जानते हैं, आप उनसे भी पूछ सकते हैं। बीरबल को उनके नाम के सम्बन्ध में और पूछ ताछ करने की आवश्यकता नहीं जान पड़ी, इसलिये उसे वहीं तक रक्खा। इधर वेश्या भी समय पर उपस्थित हुई। इस मामले की

बड़ी शोहरत हो गई थी इसलिये दोनों तरफ से बहुतेरे लोग फैसला सुनने के लिये आये।

बीरबल ने चुपके से एक सिपाही को आज्ञा दी कि इस भीड़ में घुसकर सुभद्रा सुभद्रा कई बार पुकारा, जो कोई नाम को सुनकर कुछ भी संकुचित हो उसे पकड़ कर मेरे पास हाजिर करो। सिपाही ने चिल्लाकर सुभद्रा को पुकारा। उसके पुकारते ही सब लोग सन्न हो गये; परन्तु वह कन्या चुपके से खड़ी होकर इधर उधर देखने लगी। सिपाही बीरबल की आज्ञानुसार उसका हाथ पकड़ लिया और उसे उस के पास ले आया। वेश्या भी लड़की के साथ हो ली।"

बीरबल ने कन्यासे पूछा—"क्यों री! तेरा नाम तो काशी है न, फिर तू सुभद्रा के नाम से क्यों खड़ी हो गई।" लड़की ने उत्तर दिया—"सरकार! मेरे पिता मुझे सुभद्रा के नाम से ही पुकारते थे। अतएव सुभद्रा नाम के सुनते ही मेरे कान खड़े हो गये।" बीरबल ने कहा—"अभी तू कल अपने बयान में कह चुकी है कि मैं अपने पिता को नहीं जानती और आज इस प्रकार कहती है?" वह लड़की चक्करमें आ गई और डरवश थरथर काँपने लगी। वेश्या बीच बीचमें अपने बचन की पुष्टि के लिये बोलना चाहती थी; परन्तु बीरबल ने उसको डाटकर रोक दिया। वे बोले—"तू झूठी साबित हो चुकी है क्योंकि तेरे बयानों में अन्तर पड़ रहा है। मैं इस मिथ्या के बदले तुझे अभी दण्ड देता हूँ। यह कह कर बीरबल ने एक कर्मचारी से कुछ सांकेतिक

भाषण किया। कर्मचारी आज्ञा पाते ही एक कोड़ा हाथ में लेकर सामने आया। उसे देखकर वेश्या डर गई, और तुरत अपना कसूर गरदान लिया।" वह बोली-"पृथ्वीनाथ! मैं इस कन्या को आज से तीन चार वर्ष पहले एक आदमी से खरीदा था। वह आदमी मुझे झाँसा पट्टी पढ़ा इसके बदले में काफी धन हड़प ले गया है। आप मेरे अपराधों को क्षमा करें।"

लड़की का पिता बीरबल के इसारे से अपनी कन्या के पास खड़ा हो गया; बीरबल ने उस लड़की से पूछा-"क्या तू इस आदमी को पहचानती है? क्या इसकी शकल तेरे पितासे मिलती है?" लड़की को डर उत्पन्न हो गया, उसने सोचा कि अगर झूठ बोलती हूँ तो बीरबल बीच सभा में कोड़े लगवावेंगे। अतएव सच बोलना ही अच्छा है। उसने कहा-"हाँ हाँ यही मेरे जन्मदाता पिता हैं।" इतना कहकर वह अपने पिता के चरणोंपर गिर पड़ी, पिता ने उसे उठाकर छाती से लगा लिया। बीरबल ने कहा-"वेश्या अब तेरे पास और कोई सफाई देने की बात नहीं रही, तू एक साथही तीन अपराधोंमें गिरफ्तार हुई है। पहला अपराध अबोध कन्या के फुसलाने का, दूसरा दास व्योसाय को तरक्की देने का और तीसरा धोखा देने का है। इसलिये तुमको सात वर्षकी सजा दी जाती है।" वह सिपाहियों द्वारा तत्क्षण कैद करली गई और वे उसे लेकर कारागृह का मार्ग लिये। तब बीरबल उस वृद्ध पुरुष को समीप बुलाकर बोले-"मैं तुम्हारी कन्या को तुम्हें देता हूँ, परन्तु साथही इस बात की हिदायत भी करता हूँ कि अब यह लड़की तुम्हारे यहाँ न रह सकेगी, इसलिये

तुम्हारी और इसकी इसी में भलाई है कि एक अच्छे वर की तलाश कर इसकी यथाशीघ्र शादी कर दो।" बूढ़े मनुष्य ने दीवानकी उचित सलाह को मानने का बचन दिया और उससे बिदा हो अपनी कन्या के साथ खुशी २ घर लौट आया।

महाकाली के ठट्ठे

एक दिन बीरबल को डराने के विचार से महाकाली ने अपना हजार मुख वाला विकराल रूप धारण कर रात्रि समय में उसको दर्शन दिया। बीरबल महामाया को देख हँसते हँसते उनको प्रणाम किया और फिर सन्न मार गया। इसका यह हाल देख देवी विचार-मग्न हो गई। उसने मन में विचारा—"पहले तो मेरे ऐसे भयानक स्वरूप को देखकर इसे डरना चाहिये था, सो यह कुछ भी भयभीत न हुआ। दूसरे मुझे देखकर हँसा, तीसरे तुरत ही गमगीन भी हो गया। इसलिये इसकी मार्मिक बातों का भेद लेना चाहिये। वह प्रगट में बोली—"भक्तवर बीरबल! तू मुझे देखकर पहले तो हँसा फिर उदास क्यों हो गया।" बीरबल बड़ी दीनताई से बोला—"मातेश्वरी! आप अन्तर-यामिनी हैं, आपसे किसीका कुछ छिपाव नहीं है। फिर भी आपके पूछने पर बिना बतलाये भी अनुचित है। मेरे हँसने का यह सबब है कि आपका दर्शन कर मैं बड़ा आनन्दित हुआ, परन्तु दूसरा कारण मैं नहीं बतलाऊँगा।"

जब देवी ने उसे धीरज देकर अभयदान देने का वचन

दिया तो बीरबल बोला—"हे जगज्जननी जी! मैं अपने मन में अनुमान कर रहा था कि मुझे केवल दो हाथ एक सिर और एक नाक है और आपको हजार शिर हजार नाक और केवल दो ही हाथ हैं। मैं जोखाम होने पर एक ही नाक को अपने दोनों हाथों से साफ करते २ थक जाता हूँ, फिर जब आपको जुखाम होगा तो आप हजार नाकों को केवल दो ही हाथों से कैसे साफ करेंगी। मुझे इसी चिन्ता ने शोकित कर दिया था। देवी अपने भक्त बीरबल के उत्तर से सन्तुष्ट हुई और उसको आशीर्वाद देती हुईं अन्तर्धान हो गई।

हम दोनों एक साथ आवेंगे

एक दिन कोचीन नगर से चलकर दो व्योपारी दिल्ली शहर में आये और घूमते फिरते एक नगर सेठ के पास जा पहुँचे। नगर सेठ के सात्विक और सरल स्वभाव को देख कर इनके मन में बेईमानी समाई और उसे ठगने का विचार किया। ये थोड़ेसे आभूषण भी अपने साथ लाये थे, उसे व्योपारीको दिखलाकर बोले—"आप मेरे इन आभूषणों को बिकवा दें तो हमपर आपका बड़ा उपकार होगा।" व्योपारी आभूषणों को देखकर उत्तर दिया—"आपका कहना बहुत ठीक है, पर यह कोई लड़कों का खेल नहीं है जो इधर बनाया और उधर बिगाड़ दिया। जब मैं इसे कुछ लोगों को दिखलाऊँगा और उन्हें पसन्द आयेगा तब कहीं बिकेगा। आप लोग आभूषणों को मेरे यहाँ छोड़ जाइये, फिर दूसरे दिन दोपहर में आना।"

ठगों ने कहा–"बहुत अच्छा, हम कल दोपहर को आपके पास आवेंगे, परन्तु आप भी एक बातका ध्यान रखना कि जब हम दोनों ही एक साथ होकर आवें तो आभूषणों को देना अन्यथा नहीं।" वे ठग इस प्रकार उसे बातों में बाँधकर वहाँ से आगे बढ़े। कुछ दूर जाकर वे फिर वापस लौटे। उनमें से एक आदमी कुछ दूर मोड़ पर एक आदमी से झूठी गप्प मारने लगा और दूसरा उस सेठ की दूकान पर पहुँचकर बोला–"सेठजी! हमारा विचार रास्ते में जाकर पलट गया इसलिये हमको फिर लौटकर आपके पास आना पड़ा। हम चाहते हैं कि इस समय आप हमारे आभूषणों को लौटा दें, कल दोपहर को हम इनको लेकर आपके पास आवेंगे, तबतक आप भी ग्राहक ठीक कर रक्खें।" सेठने कहा–"तुम्हारी चीज तुमको लौटाने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है परन्तु तुमारा दूसरा साथी कहाँ है; उसको भीअपने साथ लेकर आओ।" ठगने अँगुली का संकेत कर उसे नुक्कड़ पर एक दूसरे आदमी से बातचीत करते हुए दिखलाया। व्योपारी ने देखा तो बात सही थी। वह नुक्कड़ पर खड़ा होकर किसी से कुछ वार्तालाप कर रहा था। व्योपारी को अब कोई शक न रहा, वह आभूषणों को तत्काल उसे दे दिया और अपने काम में दत्तचित्त हुआ। उसको इनकी तरफ से कोई शंका नहीं थी क्योंकि उसका हृदय साफ था। इससे वह दूसरोंको भी अपने ही समान समझता था।

दूसरे दिन दोपहर के समय दूसरा ठग आया और सेठ से अपने गहनों को माँगा। सेठने कहा–"गहने तो कल ही

यहाँ से ले गये अब फिर क्या माँगने आये हो। ठग बोला- "कौन ले गया?" सेठने उत्तर दिया-"तुम्हारा साथी।" वह कुछ क्रुद्ध होकर बोला-"आपने यह अनुचित किया है हमने आपको उसी समय सचेत कर दिया था कि जब हम दोनों एक साथ होकर आवें तो आप गहनों को वापस देना; फिर आप अकेले एकको क्योंकर दिया। आपकी यह थोथी दलील है, हमारा आभूषण हमें दीजिये।" सेठने जवाब दिया-"आप भी तो उस नुक्कड़ पर खड़े थे, जब कि आपका भाई लेने आया था।" ठग बोला-"इससे क्या! मैं उसे गहने वापस लेने को नहीं कहा था। आप मेरे आभूषणों को वापस दें नहीं तो मैं आप पर नालिश करूँगा और नाहक आपको भी जेरबार होना पड़ेगा।" सेठ भी कुछ कहता और यह भी कुछ कहता, यहाँतक कि कहासुनी में घण्टों बीत गया; परन्तु वह ठग किसी प्रकार राजी नहीं होता था। तब क्रुद्ध होकर नगर व्योपारी ने कहा-"जा जो तेरे जीमें हो सो कर, मैंने तेरा कुछ कर्ज नहीं खाया है जो मुझे धमकी देता है।"

ठग का तो मन बढ़ा ही था वह तत्क्षण बीरबल के पास जाकर फर्यादी हुआ। बीरबल उसकी फर्याद सुनकर तुरत व्योपारी को बुलवाया, जब वह आया तो बोला-"यह क्या कहता है, इसका व्योरा बतला।" वह व्योपारी शुरू से आखीर तक जो जो बातें हुईं थीं बयान किया और तीन चार प्रतिष्ठित पुरुषों को साक्षी दिलवाई। बीरबल सारी बातों को सुनकर निश्चित कर लिया कि नालिश झूठी है

परन्तु फिर भी बिना किसी अपराध में गिरफ्तार किये सजा भी नहीं दी जा सकती। अतएव वह नालिश करने वाले व्योपारी से बोला—"तुमने यही कहा था न कि हम दोनों जब एक साथ आवें तभी आभूषणों को वापस देना?" उसने कहा—"हाँ, जो आप कह रहे हैं बिल्कुल कौड़ी पाई सत्य है, यही बात पक्की हुई थी।" तब बीरबल बोला—"जब ऐसी शर्तें तय हुई हैं तो फिर तुम अकेले क्योंकर आये। आप अपने भाई को साथ लेकर आओ तो मिलेगा।"

ठग की दाल न गली बीरबल की ऐसी आज्ञा सुन वह वहाँ से खिसक गया। बीरबल नगर सेठ से बोला—"सेठजी! देखना, यदि यह इतने पर भी न माने और कदाचित आपसे फिर आभूषण माँगने आवे तो दोनों को मेरे पास पकड़ कर लाना। यदि दोनों ही साथ आवे तो अति उत्तम हो, नहीं तो इसे तो कदापि न छोड़ना।" सब लोग बीरबल की अनुमति से अपने २ घर गये; परन्तु ठगों का फिर कहीं पता न चला।

सुनार के हथकोड़े

एक रोज बादशाह ने बीरबल से पूछा—"क्या यह बात सही है कि कारीगर लोग मालिक की आँखों में धूर झोंककर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं? इस विषय की लोगों में बराबर चरचा सुनने में आती है।" बीरबल ने कहा—"पृथिवी-नाथ! यह तो आँख देखी और कान सुनी बात है। जो जिस काम को करता है, वह उसमें पंडित हो जाता है। बादशाह

ने फिर पूछा–"तो क्या सुनार लोहार दर्जी पेशा के सभी चोर ही होते हैं ?" बीरबल ने उत्तर दिया–"मैं यह कैसे कह सकता हूँ कि सभी कारीगढ़ चोर ही होते हैं, परन्तु फिर भी कितनों की चोरी सब को विदित हो चुकी है। जैसे सुनार ही को लीजिये। इनके सम्बन्ध में लोगों का विश्वास है कि कोई चाहे कितनी ही इनकी चौकसी करे, परन्तु ये येनकेन प्रकारेण माल में से चोरी कर ही लेते हैं। इनकी इस कला की चालाकी संसार में विख्यात है, लोग तो यहाँ तक कहते हैं कि दुनियाँ की बातें तो दरकिनारे रहीं। ये अपने माता पुत्री तथा बहनों के आभूषणों में से भी चोरी करते हैं। यदि कहीं चुराना भूल गये तो समझ लीजिये कि उस रात में उन्हें नींद हराम हो जाती है ये कपटमुद्रा कर जबतक उसमें से कुछ माल निकाल न लेंगे, तबतक इनके पेट में चूहे कूदा करेंगे।

इस सम्बन्ध की एक घटना मेरी आँखों के सामने भी घटी है, उसपर जरा विचार कीजिये। एक गाँव में एक वृद्ध सुनार रहता था बुढ़ापे के कारण वह सुनारी का काम नहीं कर सकता था। इसलिये विवश होकर दूकान में बैठा बैठा अपने एकलौते लड़केको सोनारी का काम सिखाया करता था। यदि लड़का कहीं चूक करता तो वह तुरत उसकी भूल सुधरवा देता था। दैवयोग से उस वृद्ध सुनार की लड़की ससुराल से पीहर आई। उसे भी कुछ सोने के गहने बनवाये थे। अतएव अन्य जगह न देकर उसने अपने भाई से ही गहने बनवाना उत्तम समझा। उसका ख्याल था कि भाई के हाथ

से बने हुए गहनों में फरक नहीं पड़ेगा। दूसरे सुनारों का क्या विश्वास।

वह अपना सब सोना भाई को देकर आप उसके पास बैठकर गहने वनवाने लगी। उसका बूढ़ा बाप भी वहीं दूकान में बैठा हुआ था। बूढ़े ने मन में अनुमान किया— "जो मैं लड़के से प्रगट रूप में कहता हूँ तो लड़की सारी बातें जान जायगी और यदि नहीं कहता हूँ तो लड़का बहन के गहने सोच कर उसमें से चोरी नहीं करेगा। तब तो मेरे इस पेशेका नाम कलंकित होगा।" वह अँगड़ाई लेता हुआ बोला—"अरे राम अपने लिये तो सभी एक समान हैं।" ठग जाने ठगही की भाषा, ताते उमा गुप्त करि राखा।" वाली घटना घटी। लड़का बाप की शिक्षा से धीरे धीरे पंडित हो चुका था। उसने अपने पिता के कहने का भावार्थ समझ लिया; परन्तु प्रगट रूप से पिता को कुछ उत्तर नहीं दिया। बूढ़े ने समझा कि शायद लड़के को मेरा सांकेतिक शब्द समझ में नहीं आया अतएव रह रह कर वही पहलेवाला शब्द पुनः पुनः कहने लगा। लड़का दत्तचित्त हो अपनी बहन से बातें करता हुआ गहने गढ़ रहा था। पिता के बारबार के टोकारे से खीझ कर बोला—"पिता जी! आज आप इतना राम राम क्यों कह रहे हैं। अरे राम ने तो बहुत पहले ही लंका नगरी को लूट लिया था, अब उसमें रक्खा ही क्या है।

अपने लाड़िले से ऐसा सन्तोषप्रद उत्तर पाकर वृद्ध गद-गद हो गया और उसे अपने पुत्र पर बहुत भरोसा हुआ।

वह लड़का "कौवा से कबेला चतुर।" वाली कहावत पहले ही चरितार्थ कर सोने की एक गुल्ली माल में से कपट कर राख में छिपा दिये था। इस घटना को सुनकर बीरबलने कहा- "पृथ्वीनाथ! कारीगर बड़े बज्र बेहया होते हैं। वे अपने कला में जब तक चोरी करना नहीं जानते तबतक उनको अपने कारीगर होने में सन्देह ही बना रहता है। आप इसे पक्का समझें कि जो जितना बड़ा कारीगर होता है वह उतनाही चोर भी होता है। यही इनकी विशेषता है कि माल चुरा लेते हैं और दूसरों पर इनका भेद प्रकट नहीं होने पाता। सुनार तो शास्त्रों द्वारा इस फन में विख्यात हैं। इनका नाम शास्त्रकारों ने "पश्यतो हर" बतलाया है। इसका भावार्थ यह है कि यह आँख के सामने ही चोरी करते हैं, परन्तु देखने वालों की बुद्धि कुछ काम नहीं करती।"

व्यसनी की लत

एक दिन बादशाह बीरबल के साथ नगर में होकर हवा खोरी के लिये निकला था। एक जगह नुक्कड़ पर उसे एक औरत दिखाई पड़ी। वह महा फूहड़ देख पड़ती थी। उसके मोटे मोटे होठों के बीच से दो बड़े २ दाँत बाहर को झाँक रहे थे। नाकसे पोटा जारी था। मलीन वस्त्र, खुले बाल और शरीर पर मिट्टी पानी मिश्रित दाग पड़े हुए थे। बात करते समय मुँह से थूक बाहर निकला आता था। कहाँ तक कहें वह सर्वांग फूहड़ थी। राजा की तो बात ही अलग है, उसके

हाथ के स्पर्श किये फल तक भी किसी रंक का खाने को जी नहीं चाहता था। वह स्त्री गर्भिणी थी। यह देखकर बादशाह को बड़ा आश्चर्य हुआ और वे बीरबल से बोले–"बीरबल! जरा कामदेव का प्रबल प्रभाव तो देखो! जिसके देखने मात्र से घृणा उत्पन्न होती है, उसके साथ रमण करनेवाला भला कैसा होगा?"

बीरबल ने उत्तर दिया–"पृथिवीनाथ! भूखे को जूठा मीठा नहीं सूझता। निद्रा देवी के आवाहन के समय मुलायम सेज वा जमीन का विचार नहीं उठता। उसी प्रकार कामकी ज्वाला के सामने भी भले बुरे का परिज्ञान भूल जाता है। उस समय काम से पीड़ित व्यक्ति को न जात सूझता है न कुजात। आपको अन्वेषण करने पर ऐसे बहुतेरे पुरुष मिलेंगे जो देखने में तो बड़े सुन्दर और फिटिक बाज होंगे, परन्तु ऐसी २ गलीज !जगहों में उन्हीं का नम्बर निकलता है।" बादशाह ने कहा–"हाँ तुम्हारा कहना भी सत्य हो सकता है। इसलिये मैं चाहता हूँ कि इससे रमण करने वाले की खोज की जाय। मैं उसे देखना चाहता हूँ। बीरबल बोला–"शायद कुछ देर अगल, बगल के लोगों से पूछताछ करने पर कुछ भेद खुले।

ऐसा विचार कर वे वहाँ से कुछ दूर निकल गये, परन्तु बीरबलको उस बात की ही धुन बँधी रही। वह बराबर उसी स्त्री की तरफ लगा हुआ था। थोड़ी देर बाद एक ऐसी घटना घटी कि एक कामी पुरुष उसके बगल से होकर निकला और उस स्त्री से कुछ संकेत द्वारा कहकर आप आगे निकल गया। वह देखने में किसी उच्च कुल का जान पड़ता था, परन्तु

स्वभाव से लम्पट प्रगट होता था। बीरबल ने उसे बादशाह को दिखाकर कहा–"पृथिवीनाथ! यही पुरुष उस स्त्री का यार जान पड़ता है।" बादशाह को बीरबल की बातों से आश्चर्य हुआ और वे बोले–"इसपर कैसे विश्वास किया जाय?" बीरबल ने उत्तर दिया–"उसकी तरफ कुछ देर तक ध्यान-पूर्वक देखने से आपको स्वयं सिद्ध हो जायगा।" बादशाह ने बीरबल के कहने का अनुशरण किया। वे अनजानों की तरह उसकी दृष्टि बचा कर बराबर उसी तरफ देखते रहे। कुछ कालोपरान्त वह लम्पट फिर घूम कर आया और अँगुली के संकेत से उसे कुछ कहकर आप अग्रसर हुआ। महामाया भी उसके पीछे२ चलीं। कुछ देरके बाद वे दोनों एक गली में मुडकर इनकी आँखों से ओझल हो गये।

यह देख कर बादशाह का भ्रम मिट गया और उन्हें उस लम्पट का जार उस होना निश्चित हो गया। परन्तु फिर भी उधर ही दृष्टि अड़ाये रहे। अब ये दोनों आगे बढ़े। बादशाह को बीरबल को परिख पर बड़ा आश्चर्य हो रहा था। इसलिये बीरबल को छेड़कर बोले–"बीरबल! तुम्हारी परिख तो बड़ी सच्ची निकली। परन्तु यह तो बतलाओ कि पहले तुमने उसको कैसे पहचाना था।" बीरबल बोला–"पृथिवीनाथ! यह सब आँखों की खूबियाँ हैं। हम लोग नगर में निकलते हैं तो बरा-बर रास्ते में आने जाने वालों की चाल ढाल का निरीक्षण किया करते हैं। जिससे आँखों को मनुष्यों से मिलकर वा दूर से देखकर उनके आचरण समझलेने की शक्ति प्राप्त हो गई है। मैं बहुत देर से बराबर उस लम्पट की हरकतों

को देख रहा था। पहले जब वह आया तो उसके हाथ पर केवल खैनी थी। चूने की तलाश में अगल बगल की दीवालों को देखता जा रहा था। दैवात् एक सण्डास पर ताजा चूना छूआ गया था। झट अँगुलियों से चूना पोछकर खैनी बनाकर खा लिया। अब आपही बतलावें कि जो सण्डास का चूना खैनी में मिलाकर खाने में नहीं हिचकता उसके लिये यह काम करना कौनसा आश्चर्य है।" उसी समय मुझे विदित हो गया कि यह व्यक्ति व्यसनों का सच्चा गुलाम है। बादशाह को बीरबल की ऐसी गुप्त पहिचान से बड़ी प्रसन्नता हुई और वह घर आकर उसको एक जोड़ी दुशाला पारितोषिक दिया।

—o✻o—

लोहा और पारश का स्पर्श

एक दिन सन्ध्या समय बादशाह बीरबल को साथ ले घोड़सवारी द्वारा हवा खाने के लिये महलसे बाहर निकले। ये आपस में वार्तालाप करते हुए मध्य बाजार में जा पहुँचे। वहाँ सब प्रकार की वस्तुएँ बिक रही थीं, परन्तु इन्हें क्या प्रयोजन जो कहीं उतर कर कुछ सौदा खरीदते। इसी बीच बादशाह की दृष्टि एक वृद्धा स्त्री पर पड़ी। उसके हाथ में पुरानी म्यान से ढकी हुई एक तलवार लटक रही थी। उसकी तलवार देखते ही बादशाह के जी में आया कि अक्सर पुराने लोगों के पास अच्छी वस्तुए निकल आती हैं। इसलिये

इस वृद्धा की तलवार को देखना चाहिये। वह घोड़े की राश को बुढ़िया की तरफ मोड़ दिया। जब घोड़ा उसके समीप पहुँचा तो बादशाह ने उस वृद्धा से पूछा-"यह तलवार लेकर तू शहर में क्यों खड़ी है?" बुढ़िया ने दीनता भरी बाणी से कहा-"गरीबपरवर! मैं इसे वेचना चाहती हूँ। यह तलवार बहुत दिनों से मेरे घर में पड़ी हुई है आज बड़ी गिरीवस्था को प्राप्त होकर और कोई दूसरा सामान न रहने पर इस बेचने की गरज से बाज़ार में लाई हूँ।"

बादशाह उससे तलवार माँग उसे म्यान से निकालकर देखने लगे। वह एकदल खराब हो गई थी। उस पर जंग का गहरा परदा पड़ गया था और उसकी धार भी कई जगह से टूट गई थी। बादशाह ने बुढ़िया की तलवार को ज्यों का त्यों लौटा दिया। वह उसको हाथ में लेकर बड़े गौर से देखने लगी। ऐसा मालूम होता था मानो उसकी तलवार बदल गई हो। इसको ऐसी भौचक सी हुई देखकर बादशाह ने पूछा-"क्या बात है! तेरी तलवार बदल तो नहीं गई है?" वह वृद्धा बोली-"पृथिवीनाथ! मैंने सुना था कि पारस के स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है, परन्तु यह हमारी लोहे की तलवार आपके पारस हाथों के स्पर्श से सोने की क्यों नहीं हुई। बस मैं यही देख रही हूँ।" बादशाह वृद्धा के इस उत्तर से गद्गद हो गये और उसको तलवार के बराबर सोना देने की आज्ञा दी।

बीरबल अभी तक खड़े खड़े इनकी सब बातें सुन रहा था। बुढ़िया की बुद्धिमत्ता भरी बातें सुन और बादशाह

की उदारता देखकर उसे बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। दोनों सानन्द घोड़ा बढ़ाते हुये नगर से बाहर निकले।

तुम बड़े गदहे हो

एक दिन बीरबल और बादशाह दोनों एक साथ बैठे हुये आपस में कुछ वार्तालाप कर रहे थे। इसी बीच बीरबल को वायु सरी। बादशाह ने कहा–"बीरबल तुम बड़े गदहे हो।" बीरबलने उत्तर दिया–पृथ्वीनाथ! पहले तो मैं ऐसा नहीं था परन्तु गधों की संगत में पड़कर गधा हो गया हूँ। बीरबल के ऐसे उत्तर से बादशाह की बोलती बन्द हो गई।

—:*:—

कौन कौन क्या क्या नहीं कर सकता

एक दिन का यह समाचार है कि अकबर बादशाह दरबार में बैठे हुए सरकारी कामों को दत्तचित्त होकर देख रहे थे। जब वे उन कामों से निवृत्त हुए तो उन्हें गपाष्टक करनेकी सूझी और कुछ मुसाहिबों को साथ में लेकर आकाश पाताल की बातें करने लगे। कोई किसी विषय को लेकर विवेचन, करता, तो कोई किसी विषय को। इसी बीच बादशाह को पुराने कवियों का कहा हुआ एक दोहा याद आया—

दोहा—"क्या नहिं अबला करि सकै, क्या नहिं सिन्धु समाय।
क्या नहिं पावक जर सकै, क्यो काल न.हिं खाय॥"

वे दर्बारियों से उपरोक्त दोहे का उत्तर पूछ बैठे, पर अफसोस कि एक दरबारी भी उत्तर देने को समर्थ न हुआ। तब बादशाह ने दीवानखाने से बीरबल को बुलवाया। जब वह आया तो उससे उसी दोहे का उत्तर पूछा–बीरबल अपनी बुद्धि से ऐसे ऐसे चुटकुलों को अँगुली पर नचाया करता था, वह तुरत बोलाः—

"पुत्र न अबला कर सके, यश नहिं सिन्धु समाय।
धर्म अग्नि में नहिं जलै, नाम काल नहिं खाय॥"

बीरबल के ऐसे सटीक उत्तर को सुनकर बादशाह बहुत सन्तुष्ट हुए और बीरबल को कई बहुमूल्य आभूषण पारितोषिक में दिया। सभासद बीरबल का मुख निहारते रह गये। उन लोगों ने बीरबल के बुद्धि की भूरि २ प्रसंशा की।

दीपक तले अँधेरा

एक दिन बादशाह अपनी सबसे ऊँची छतपर बीरबल के साथ बैठे हुए हवाखोरी कर रहे थे इसी बीच उनके सामने ही कुछ दूरी पर एक यात्री को कई चोर मिलकर लूटते हुये दिखाई पड़े। बिचारे यात्री का कुछ वश नहीं चलता था। सारा धन लुट जाने पर उस यात्री ने बादशाह के महल के समीप पहुँच कर बम लगाया–"बड़े दुख की बात है, कि मैं सरकार के देखते देखते सरे बाजार लुटगया। बादशाह को इस यात्री की करुण कथा पर बड़ी दया आई और वे बीरबल

को डाँटकर कहा—"क्यों बीरबल ! क्या ऐसा ही प्रबन्ध करते हो। जब हमारी आँखों के सामने बिचारे परदेशी लुटे जाते हैं तो आँख पीछे क्या होता होगा।" बीरबल ने उत्तर दिया— "पृथ्वीनाथ ! क्या आप नहीं जानते कि दीपक तो दूसरों को प्रकाश देता है, परन्तु उसके तले अँधेरा ही बना रहता है।" बादशाह बीरबल की बातें सच्ची मानकर खामोश रह गये।

—:*:—

बादशाह के चार प्रश्न

एक दिन जब कि कड़ाके की शर्दी पड़ रही थी। बादशाह बीरबलके साथ अपने बागमें टहलते हुए धूप खा रहे थे। उनके मन में अचानक एक तरंग उठी और उसके निराकरण के लिये बीरबल को मध्यस्त बनाकर पूछे:—

"कौन बोलने को चहै, और कौन चहै है चूप।
कौन चहै है बरसना, कौन चहै है धूप॥"

इतना कहने के साथही बादशाह बीरबल को धमका कर बोले—"यदि आजके चारों सवालों का समुचित उत्तर न दे सकोगे तो जान से मारे जावोगे।" बीरबल को बादशाह का कथन सुनकर बड़ी करुणा आई; क्योंकि बादशाह सचमुच उसकी जान मारने को उतारू होगये थे। दूसरे करुणा इसलिये आई कि इतने छोटे से प्रश्न के लिये बादशाह इतना उग्ररूप क्यों धारण करते हैं। इसका उत्तर तो एक बुद्धिमान लड़का भी समझ कर दे सकता है। खैर इस समय तो अपनी जान बचानी चाहिये। ऐसा विचार कर वह बोला—

"माली बरसन को चहै, धोबी के मन धूप ।
साईं चाहै बोलना, चोर चहै जू चूप ॥"

बादशाहको बीरबल का यह युक्तिसंगत दोहा बहुत भला मालूम हुआ, परन्तु वह उससे और भी सरलार्थ चाहते थे इसलिये फिर बोले-"बीरबल! आपका यह दोहा काटने लायक नहीं है; फिरभी मुझे इससे पूरा सन्तोष नहीं हुआ। इसलिये कोई दूसरी बिधि से और स्पष्ट कर मुझे समझावो। बीरबल ने कहा-"बहुत अच्छा, और यह दूसरा दोहा रचकर पढ़ सुनाया—

"अति का भला न बोलना, अति की भली न धूप ।
अतिका भला न बरसना, अति की भली न धूप ॥"

फिर भी बादशाह संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने बीरबल से दूसरा उत्तर माँगा। तब बीरबल बोला-"हे पृथ्वीनाथ! सबका मूलमंत्र यह है कि अपनी अपनी सभी चाहते हैं, मैं इस संबंध का एक दास्तान आपको सुनाता हूँ, शायद उससे आप सन्तुष्ट हो जायँ। एक गरीब बापके दो लड़कियाँ थीं। उसने उनमें से एक को तो बागवान के घर ब्याहा और दूसरी को कोंहार से। जब कुछ दिनों के बाद उनसे मिलने गया तो पहले बागवान के घर गया। वहाँ पहुँचकर कुशल प्रश्न के पश्चात अपनी कन्या का चेहरा उतरा हुआ देखकर उसके सोच का कारण पूछा? वह बोली-"हे पिताजी! मैं अपने दुखकी बात आपसे क्या सुनाऊँ। उसका छूटना ईश्वर के हाथ है। इधर कितनेही दिनों से अवर्षण होरहा है। जिस

कारण सारा बाग का बाग सूखा जा रहा है। उसमें न तो अच्छे फूल आते हैं और न फल ही। तब वह वहाँ से बिदा हो अपनी दूसरी लड़की से मिलने कोहार के घर गया। वह लड़की मन मारकर द्वार पर बैठी हुई थी। पिता से मिलकर बड़ी प्रसन्न हुई और अपना सारा दुखड़ा सुनाकर फिर मौन हो गई। पिता ने उसकी ऐसी उदासी का कारण पूछा तो वह बोली-"हे पिताजी! मैं आपसे अपने दुख की बात क्या कहूँ। इधर कई दिनों से मेह बराबर बरस रहा है। न बरतन सूखने पाते हैं और न सूखी गोहरी ही आँवाँ लगाने को मिलती है। सब हाल रोजगार बन्द है। न मालूम इस बारिस का क्रम कब तक जारी रहेगा।" पिता अपनी दोनों लड़कियों की पृथक पृथक चाहना सुनकर चुप रहगया और सोचने लगा-"यह सब कुछ नहीं, हम जीव धारी अपनी-अपनी चाहते हैं। परन्तु ईश्वर किसकी करे और किसकी न करे। वह जो कुछ करता है सब भला ही करता है।" इस दृष्टान्त को सुनाकर बीरबल ने कहा-"पृथ्वीनाथ! यों तो पेशे के अनुसार सब की चाहना अलग-अलग होती है, परन्तु आपके प्रश्नों का वही ठीक उत्तर है जो मैंने पहले दोनों दोहों में आपको सुनाया है। बादशाह बीरबल के उत्तर से बहुत सन्तुष्ट हुए।

शाही रामायण

एक दिन बीरबल और बादशाह की एकान्त में बातें हो रही थीं। इसी बीच बादशाह ने बीरबल से शाही रामायण बनाने की चर्चा की। बीरबल बोला–"पृथवीनाथ! यह कौन बड़ी बात है। शाही रामायण मैं बनाकर आपको दिखलाऊँगा परन्तु यह इतना आसान काम नहीं है जो थोड़े समय में कर दिखाया जाय। इसमें तीन माँस की देर लगेगी और रुपये भी काफी खर्च पड़ेंगे। इस समय मैं खर्च के रुपयों का ठीक ठीक आँकड़ा तो नहीं बता सकता, परन्तु इतना है कि पहले पहल कार्य्यारम्भ के लिये मुझे १५ हजार रुपये मिलने चाहिये।

बादशाह ने खजाने से पन्द्रह हजार रुपये दिलाकर बीरबल को तीन मास की मुहलत दे शाही रामायण तय्यार करने के लिये बिदा किया। वह रुपयों को लेकर सीधे अपने घर पहुँचा और उनसे स्थान २ पर मौका देखकर कुँआँ बावली खुदवाने का कार्य्यारंभ किया। इस प्रकार जब दो मास समाप्त होकर तीसरा भी समाप्त होने पर आया तो बीरबल को शाही रामायण की सूझी। वह बाजार से कोरा कागज मँगाकर उसकी एक मोटी पुस्तक तय्यार कराई और फिर उसे एक आदमी के सिर पर रख कर बादशाह के पास पहुँचा। बादशाह को पुस्तक दिखाकर बोला–"पृथिवीनाथ! अबतक रामायण तय्यार हो गई होती; परन्तु अभी इसमें कुछ काम बाकी हैं; जिसकी पूर्तिके लिये आपके पास आना पड़ा। कृपा

कर मेरे सन्देह को मिटाकर इसकी पूर्ति करा दीजिये। रामायण में एक नायक और नायिका का प्रधान होना आवश्यक है। नायक तो आप अकेले हैं। परन्तु आपके पास कई नायिकाएँ हैं। इसलिये इसमें किस बेगम को प्रधान मानकर नायिका बनाया जाय।"

बादशाह बोले-"प्रधान बेगम को ही इसकी नायका बनाओ।" बीरबल पुस्तक को लिये दिये बड़ी बेगम के पास पहुँचा और उनसे कुशल प्रश्न के पश्चात् पूछा-"रामायण की नायिका महारानी सीताजी को राक्षस राज रावण के घर रहना पड़ा था। इसलिये आप किसके घर रही हो।" आपसे इसका उत्तर मिलने पर मैं शाही रामायण तय्यार कर डालूँगा।" बीरबल की ऐसी बातें सुनकर बेगम सिर से पैर तक जल गईं और वे अपनी दासी को आज्ञा देकर उस रामायण को बीरबल के सामने ही जलवा दिया। बीरबल बेगम से बिदा होकर बादशाह के पास आया और बेगम के द्वारा चिढ़कर रामायण जलाये जाने का सारा किस्सा कह सुनाया। फिर हाथ जोड़कर बोला-"पृथ्वीनाथ! शाही रामायण फिर भी तय्यार हो सकती है। यदि आप चाहते हों तो दूसरी आज्ञा दीजिये।"

बादशाह हँसते हुए बोले-"बीरबल जो कुछ होना था सो हो गया, अब दूसरी रामायण बनाने का कष्ट आपको नहीं दिया जायगा। महाराज रामचन्द्र समर्थ थे, मैं उनकी तुलना नहीं कर सकता। तो मैं यह पहले ही समझ चुका था मुझे तो केवल तुम्हारी परीक्षा लेनी थी। सो ले लिया। मैं भली

भाँति जानता हूँ कि तुम्हारे हाथ से रुपये बुरे कामों में खर्च नहीं हो सकते। इसलिये समय कुसमय आने पर तुम्हें कुछ रुपये देकर इसी बहाने तुमसे अच्छे२ कामों को कराया करता हूँ। अब तुम घर जाकर विश्राम करो। कल से दरबार में हाजिर होकर अपना तीन मास का पिछड़ा काम सँभालो।

—o:*:o—

केवल लोटा न था

एक दिन आपस में कुछ पहेली बुझौवल की बातें छिड़ीं इसी बीच बादशाह ने पूछा—"गधा उदास क्यों दीखता था, ब्राह्मण क्यों प्यासा रहा?" बीरबल ने दोनों के लिये एक ही उत्तर देकर किस्सा समाप्त किया। उसने कहा—"के ल लोटा नहीं था।" उसका अभिप्राय यह था कि बिना लोटे गधा उदास था और लोटा ही न रहने से ब्राह्मण भी प्यासा रहा। बादशाह को बीरबल के इस दुअर्थी उत्तर से बड़ी प्रसन्नता हुई और वे बीरबल को इनाम देकर बिदा किये।

कौन ऋतु सर्वोत्तम है?

एक दिन बादशाह राजकीय कामों से अवकाश पाकर अपने दर्बार में बैठे थे। इधर उधरकी बातें भी हो रहीं थी। तब बादशाह ने पूछा—गर्मी, बर्सात, जाड़ा, हेमन्त, शिशिर और बसन्त इन छहों ऋतुओं में सर्वोत्तम ऋतु कौन है?" दरबारियों ने अपनी अभिरुचि के अनुसार किसी ने कुछ और किसी ने कुछ बतलाया, परन्तु उनका मतैक्य न हुआ। तब बादशाह बीरबल

से पूछे-"बीरबल ने तुरत उत्तर दिया-"पृथ्वीनाथ! पेट भरों को सभी ऋतुवें अच्छी होती हैं, भूखों के लिये एक भी नहीं। यानी सभी बुरी होती हैं।"

पीर, बावर्ची भिश्ती-खर

एक दिन बादशाह प्रफुल्लित चित्त हो अपने पुत्र को गोदी में लिये हुए खेला रहे थे। इसी बीच बीरबल भी वहाँ आ पहुँचा। बादशाह तुरत पूछ बैठे-"बीरबल! कोई लावे नर, पीर, बबर्ची, भिश्ती, खर।" बीरबल ने कहा-"पृथ्वीनाथ! मैं कल इस सवाल का जवाब ढूढ़कर लाऊँगा। जब संध्या समय वह लौटकर घर जाने लगा तो रास्ते में एक गरीब ब्राह्मण के घर पहुँचा और उसको पाँच रुपये देकर बोला-" देखो कल तुम्हें दस बजे मेरे साथ दरबार में चलना होगा। अपने खाने पीने का प्रबन्ध कर ठीक समय पर तय्यार रहना।" वह बोला-"बहुत अच्छा, ताबेदार हर एक आज्ञाओं को अक्षरसह पालन करने के लिये तय्यार है।"

दूसरे दिन बीरबल ठीक समय पर उसे लेकर दर्बार में हाजिर हुआ। बादशाह ब्राह्मण को देखकर बीरबल का भावार्थ समझ गये और उससे पूछे-"साबित करो कि इस मनुष्य में कलवाले चारो गुण विद्यमान हैं।" बीरबल दोनों हाथ जोड़कर बोला—"पृथ्वीनाथ! यह पुजाते समय पीर होता है और ब्राह्मण के हाथ का बनाया भोजन सभी लोग खाते हैं, इस संबंध से बावर्ची है, पौसरा चलाने का काम ब्राह्मण से लिया

जाता है, इसलिये पानी पिलाते समय यह भिश्ती बन जाता है। परदेश में जाने पर इसी के सर बोझ भी लादा जाता है इसलिये ऐसा काम करने से खर भी कहा जा सकता है।"

केवल एक ब्राह्मण को नौकर रखने से ये चारों काम आसानी से निकल आते हैं। पूजन के समय इसको पैर पूजा कर पीर बना लीजिये, समय पर रोटी बनवा कर बबर्ची बनाइये, प्यास लगे तो इससे भिश्ती का काम कराइये यानी वह पानी भी पिला देगा, और चाहे जब बोझा भी ढुलवा कर खर का काम भी सुगमता से करा लीजिये। यानी यह उन समस्त चारों कामों को भली भाँति कर सकता है।" बादशाह बीरबल का उत्तर सुनकर मन में प्रसन्न हो मुसकरा दिये। बीरबल उस गरीब ब्राह्मण को २५ रुपये पुरस्कार देकर विदा किया।

बनस्पति का बीज

एक दिन ऐसा हुआ कि बादशाह के बहुतेरे दरबारी उस पर चिढ़कर मौन धारण कर लिये। जब बादशाह स्वयं किसी को छेड़कर कुछ पूछते तो वे थोड़े में उसका उत्तर देकर चुप रह जाते। आज की सभा में बीरबल नहीं था। बादशाह अपने दरबारियों की खपकी को मन ही मन ताड़ गये और उनके ऐसे मनमलीनता का कारण पूछा। तब एक वृद्ध दरबारी बादशाह से विनती कर बोला—"पृथ्वीनाथ! मुझे एक बात का बड़ा खेद है, यदि आज्ञा पाऊँ तो कहूँ।" बादशाह ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। तब बुड्ढा बोला—"मैं २५ वर्ष से

आपका नमक खाता हूँ और अपना सब काम बराबर खैरख्वाही से करता आ रहा हूँ, फिर भी देखता हूँ कि आप एक कल के आये हुए छोकरे के सामने हम लोगों को कुछ भी नहीं समझते। आपको जो कुछ भी पूछना होता है बीरबल ही से पूछा करते हैं। इस बातकी हम लोगों को बड़ी चोट है।"

बादशाह बोले—"आप लोग इसके लिये कोई चिन्ता न करें, अच्छा मौका है। इस समय बीरबल भी यहाँ मौजूद नहीं है। मैं एक जरूरी बात पूछना चाहता हूँ आप में से कोई भी बतलावे कि बनस्पति के बीज कहाँ हैं।" दरबारियों ने इसका अनुसन्धान करनेमें महीनों सिर तोड़ परिश्रम किया, परन्तु सब बेफायदा हुआ। लाचार होकर एक दिन भरी सभा में बादशाह ने वही बात बीरबल से पूछा—"बीरबल तत्क्षण हाथ में गंगाजल लेकर जमीनपर छिड़क दिया और बोला—"बस पृथ्वीनाथ! वह बीज इसी ठौर पर है।" लोगों का मुख मलीन हो गया और फिर बादशाह के सामने ऐसी बातें कभी जबान पर नहीं लाये।

हौज के अण्डे

एक दिन बादशाह को बीरबल की हँसी उड़ाने की इच्छा जागृत हुई। अतएव वे बीरबल के आने के पूर्व ही बाजार से बहुत से मुर्गी के अण्डे मँगाकर अपने दरबारियों को एक एक कर बाँट दिया। केवल बीरबल ही खाली रह गया था। वह ज्योंही दरबार में हाजिर हुआ, बादशाह ने कहा–

"बीरबल! मैंने आज रातमें एक अजीब सपना देखा है, उसका तात्पर्य यह निकलता है कि जो मनुष्य इस हौजमें डुबकी लगा कर एक अण्डा मुरगी का न निकाल लावे उसे दो बाप का समझना चाहिये। मैं केवल तुम्हारी ही बाट देख रहा था। बेहतर है कि सबकी वारी२ से परोक्षा ली जाय। देखें स्वप्न का क्या प्रभाव पड़ता है।"

बादशाह की अनुमति से सभी दरबारी हौज में डुबकी मार कर हाथ में एक एक मुरगो का अण्डा लेकर बाहर निकले। जब बीरबल की ओसरी आई तो वह हौज में डुबकी मारकर खाली हाथ निकला। परन्तु उसके मुखारविन्द से कुकड़ू कूँ का शब्द निकल रहा था।" बादशाह ने कहा-मियाँ बीरबल तुम्हारा अण्डा कहाँ है, जल्दी दिखलाओ। बीरबल ने उत्तर दिया-"गरीबपरवर! तमाम अण्डा देने वाली मुर्गियों के बीच एक मैं ही मुर्गा हूँ। विचारे दरबारी सहम गये और बादशाह के ओठों पर मुस्कुराहट आ गई।

कोई धनी और कोई दरिद्र क्यों होता है

एक दिन बीरबल और बादशाह में विज्ञान की बातें छिड़ीं थीं। दोनों अपनी अपनीवा ली कहते थे, परन्तु उनका मन किसी सिद्धान्त पर स्थिर नहीं होता था इसी बीच बादशाह ने बीरबल से पूछा-"अच्छा बीरबल इसका विवेचन कर सिद्ध करो कि संसार में कोई तो धनी और कोई दरिद्री क्यों हो जाता है?" बोरबल ने तुरत उत्तर दिया—

राम झरोखे बैठ के, सब सौदा कर लेत।
जो जैसा कर लावता, वाको वैसहिं देत॥

अब मैं उसको भूल गया

एक दिन बादशाह बीरबल से हँसी मजाक करते हुए पूछ बैठे—"बीरबल! मैंने सुना है कि तुम्हारी स्त्री नितान्त सुन्दरी है दरअसल क्या है?" बीरबल ने उत्तर दिया—"पृथिवीनाथ! मुझे भी ऐसा ही गुमान था, परन्तु बेगम साहिबा को देखकर अब मैं उसे एकदम भूल गया हूँ।"

बीरबल को कुत्तों की हाकिमी

एक दिन बादशाह अपने चुने २ दरबारियों के साथ वार्तालाप कर रहे थे। इसी अन्तर्गत अब्दुलफजल नामी दरबारी को बीरबल की हँसी उड़ाने की सूझी। वह बीरबल को चिताकर बोला—"बीरबल! आज से तुमको कुत्तों की हाकिमी प्रदान की जाती है।" बीरबल झट बोल उठा—"फिर तो आपको मेरी आज्ञा पालन करनी पड़ेगी। उलटे मुँह खाकर अब्दुलफजल शरमिन्दा हो गया। फिर कभी उससे बीरबल से ऐसी छेड़खानी नहीं करी।

एक हजार जूते

एक दिन बादशाह बीरबल को झिपाने की नीयत से उसके जूते गुम करा दिये। जब घर जाने का समय हुआ

तो बीरबल अपने जूतों को तलाश करने लगा। जब वे न मिले तो बादशाहने कहा-"अच्छी बात है; बीरबलको हमारी तरफ से जूते दिये जायँ।" बीरबल नये जूतों को पहन कर ऊपरी प्रसन्नता दिखलाते हुए बोला-"मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ कि ईश्वर इसके पहले आपको हरलोक परलोक सभी जगह ऐसे ही हजार जूतें दे।"

बीरबल के ऐसे हास्यपूर्ण आशीर्वाद को सुनकर बादशाह खिलखिला कर हँस पड़ा। दरबारी लोग चकित होकर बीरबल का मुँह देखते रह गये।

चोर की दाढ़ी में तिनका

बादशाहके यहाँ एक दिन चोरी होगई यानी आलमारी से एक कीमती जेवर गायब हो गया। बादशाह ने बीरबल को अन्वेषण करने की आज्ञा दी। तब बीरबल ने चाल चलने की एक नई तरकीब सोचकर निकाली। वह पहले आलमारी से बारी२ अपना दोनों कान सटाया, गोया कोई बात सुनने की चेष्टा कर रहा हो। बाद फिर कान हटाकर बादशाह से अर्ज किया—"पृथिवीनाथ! वह आपकी आलमारी साफ बतला रही है कि चोर की दाढ़ी में तिनका है।" एक दरबारी सहम कर अपनी दाढ़ी से हाथ लगाया। बीरबलने झट उसे गिरफ्तार कर लिया। उस दरबारी ने थोड़ी देर बाद भरी सभा में अपना अपराध स्वीकार कर लिया।

—⁂—

सोया सो खोया

एक दिन बीरबल किसी मसलहत से कुजड़े का भेष बनाकर बादशाहके महल का चक्कर काट रहा था। अचानक बादशाह की दृष्टि उस पर जा पड़ी। बादशाह ने उसे कुँजड़ा समझकर पूछा–"अरे ओ कुँजड़े, सोया किस भाव पर बेचेगा?" कुँजड़ा भेषधारी बीरबल बोला–"टके का एक सेर।" बादशाह उसका उत्तर सुनकर बोले–"तब तो और भी चूका?" बीरबल ने कहा–"सोया सो खोया।" ऐसे उत्तर से बादशाह को सन्देह हो गया और भलीभाँति जाँच पड़ताल करने पर सोये वाले को बीरबल जानकर हँस पड़े।

लड़ाई में जीत किसकी?

एक दिन कहीं संग्राम में जाने के लिये उद्यत होकर बादशाहने बीरबल से पूछा "अच्छा बीरबल! मैं तुमसे पूछता हूँ कि आज की लड़ाई में किसकी जीत होगी?" बीरबल ने उत्तर दिया–"पृथिवीनाथ! यह बात मैं यहाँ से नहीं बतला सकता। हाँ युद्ध का मैदान देखकर आपको बतला दूँगा।" बादशाह जब संग्रामांगण में पहुँचे तो फिर वही बात बीरबल से पूछा। बीरबल ने उत्तर दिया–"पृथिवीनाथ! आपकी ही जीत होगी।" बादशाह बोले–"यह तुमने कैसे जाना?" बीरबल ने "–सरकार! मैं इससे कह रहा हूँ कि आपका शत्रु हाथी पर सवार होकर आया है और हाथी एक मनहूस

जानवर है। यहाँतक कि वह अपनी सूड से धूल उठाकर अपने ही शरीर पर फेका करता है और आप घोड़ेपर सवार हैं। घोड़ा बहादुर होता है। उसको लोग गाजीमर्द भी कहते हैं। बादशाह बीरबल के उत्तर से बड़ा प्रसन्न हुए और लड़ाई में जीत होने पर उसे भरपूर इनाम दिये।

मूर्ख से पाला पड़े तो चुप रहना

प्रकृति की समानता होने से बादशाह और बीरबल में उत्तरोत्तर प्रेम बढ़ता ही गया। जिस कारण बीरबल को गरीबों का हित करने के लिये अच्छा अवसर मिलता था। वह येनकेन प्रकारेण बादशाह को प्रेरित कर कुछ न कुछ नित्य गरीबों को दिला दिया करता था। एक दिन की ऐसी घटना घटी कि बादशाह के गुरु महाशय मक्का से चलकर दिल्ली आये। रास्ते में राह की जानकारी न रहने के कारण उन्हें बहुत भटकना पड़ा था। बादशाह ने अपने गुरु का भलीभाँति आदर सत्कार किया। जब वे प्रकार कुछ दिन रहकर तगड़े हो गये तो फिर मक्का शरीफ लौट जाने का विचार प्रगट किया। बादशाह ने बड़ी प्रसन्नता से उन्हें पर्याप्त वस्त्राभूषण तथा धन धान्यादि देकर विदा किया।

कितने दिनों के पश्चात् एक दिन बादशाह ने बीरबल से पूछा—"क्यों बीरबल ! जैसे ये पीर साहब हमारे गुरु हैं, वैसे ही तुम्हारे भी कोई गुरु होंगे ?" यदि हैं तो वे कहाँ रहते हैं ?

वे कभी तुम्हारे यहाँ आते हैं वा तुम ही उनसे मिलने जाया करते हो?" बीरबल ने उत्तर दिया—"पृथिवी-नाथ! मैं निगुरी नहीं हूँ, आपकी मेहरबानी से मेरे अनेकों गुरु हैं, परन्तु उसमें भेद केवल इतना ही है कि वे सबके सब बाहर रहते हैं। इसी कारण न कभी यहाँ आते हैं न हमको उनका दर्शन ही मिलता है। थोड़े दिन से मेरे सुनने में आया है कि हमारे एक गुरु यहाँ आ रहे हैं। मुझे उनके रहने का स्थान तक ज्ञात नहीं है, फिर वे बताने ही क्यों लगे उन्हें तो किसी के दाम टके की दरकार नहीं है। वैसे निस्प्रिय गुरु देखने में नहीं आते। यही कारण है कि इस दीनके द्वार पर कभी भी नहीं आने की कृपा करते। बादशाह को ऐसे गुरु से मिलने की इच्छा हुई और वे बीरबल से बोले—"दीवान जी! जो तुम्हारे गुरु में इतनी विशेषता है तो मैं भी एकबार उनका दर्शन करना चाहता हूँ। हो सके तो जल्दी से जल्दी मुझे उनसे मिलाने का प्रबन्ध करो। बीरबल बोला—"पृथिवीनाथ! जब आप उनसे मिलने की इच्छा प्रकट करते हैं तो मैं तत्परता से उनकी खोज कराऊँगा और यदि वे भी आपसे मिलने की इच्छा करेंगे तो मैं अवश्य आपसे उनका साक्षात् करा दूँगा।" बादशाह ने कहा—"मुझे अविलम्ब उनसे मिलाने की चेष्टा करो।"

बीरबल बादशाह को तसल्ली देकर वहाँ से बिदा हुआ। घर जाते समय रास्ते में एक वृद्ध लकड़हारे से उसकी मुलाकात हो गई। वह विचारा तमाम परेशानी उठाकर भी आज अपनी सम्पूर्ण लकड़ियों को नहीं बेंच सका था। बीरबलने

उससे बची हुईं लकड़ियों का मूल्य दर्याफ्त किया; फिर पैसा देने के मिस से उसका अपने घर लिवा ले गया। लकड़ी का मूल्य देकर बीरबल ने लकड़हारे से पूछा—"क्यों जी लकड़हारे! तुम हमें कोई सभ्य पुरुष जान पड़ते हो। समय के फेर से इस समय लकड़ियाँ बेंचकर अपनी गुजर करते हो। मेरा तुमसे एक जरूरी काम है। यदि तुम उसके करने पर उद्यत होजावो तो मैं तत्काल तुम्हें पचीस रुपये दूँ। काम हो जाने पर तुम्हारी गुजर माफिक काफी रुपये दूँगा।"

लकड़हारे ने मनमें सोचा—"यदि नाहीं करूँगा तो यह दीवान है जबरन बेगार में करावेगा। बेहतर है, कि इसकी राजी करूँ तिसपर रुपये भी काफी देनेको कहता है। मनमें ऐसा ठहरा कर वह बीरबल से बोला—"मैं आपकी छोटीसे छोटी आज्ञाएँ पालन करने के लिये तत्पर हूँ, आपकी सभी आज्ञाएँ मुझे स्वीकार होंगी।" बीरबल ने कहा—"अच्छा मैं तुम्हें कुछ कपड़े देता हूँ; इन्हें धारण कर हनुमान जी के मन्दिर के पिछवाड़े वाली कोठरी में जा बैठो, हाथ में माला लेकर बराबर जपते रहो। किसी की तरफ आँख उठाकर भी न देखना। तुमसे मिलने के लिये बहुत से अमीर उमराव आवेंगे। मुमकिन है स्वयं बादशाह भी आवें, परन्तु उनसे भी कदापि न बोलना। रुपयों के ढेर दें तब भी उधर नहीं देखना। देखो सावधान, मैं यहीं पर किसी जगह छिपकर तुम्हारी सारी बातें देखता रहूँगा, यदि मेरे कहने से जरा भी खिलाफ चलोगे तो तुम्हारी गरदन मार दी जावेगी।" बूढ़े लकड़हारे ने दृढ़ता पूर्वक उसकी आज्ञाओं का पालन करना स्वीकार किया।

तब बीरबल ने उसके सारे बदन में खाक मलकर कोपीन वस्त्र पहनाया और हाथ में एक रुद्राक्ष की माला देकर मस्तक पर कृत्रिम जटा बाँध दी। फिर उसे हनुमानजी के मन्दिर में एक मृगचर्म पर बैठाकर आप बादशाह के पास पहुँचा। बादशाह का दरबार उमरावों से ठसाठस भरा हुआ था। बीरबलने हाथ जोड़कर कहा—"पृथ्वीनाथ ! मेरे गुरुजी आये हुये हैं, आपके विषय में बातें करने पर उन्होंने आपसे मिलना स्वीकार किय है। परन्तु मुझे साथ जाने की मुमानियत करते हैं। यदि इतने पर भी आपके साथ जाऊँगा तो वे मुझसे बहुत नाराज होंगे। मुमकिन है कि चिढ़कर मुझे शाप भी दे दें। बादशाह ने पूछा—"इस समय वे कहाँ ठहरे हुये हैं?" बीरबल ने उत्तर दिया—"हनुमानजी के मन्दिर के बाहर की कोठरी में।"

बादशाह अपने दरबारियों को साथ लेकर बीरबल के गुरु से मिलने गये। वहाँ पहुँचकर बड़े अदब से प्रणाम कर बाकायदे उन के सामने बैठ गये और फिर पूछा—"भगवन् ! कृपाकर आप अपना नाम तथा ठिकाना इस दास से बतलावें, मैं इस कृपा के लिये आपका चिर कृतज्ञ बना रहूँगा।" स्वामी जी तो पक्के गुरु के चेले थे। उन्होंने उनकी बातों का कुछ भी उत्तर न देकर बराबर अपना माला घुमाते ही रहे। बादशाह फिर बोले-"स्वामी जी ! मैं समस्त भारतवर्ष का अधिपति हूँ मैं आपकी सारी इच्छाओं की पूर्ति कर सकता हूँ। यदि आपको किसी बात की चाहना हो तो मुझसे कहें। परन्तु स्वामी जी फिर भी कुछ न बोले बलिक आँख उठाकर उनकी तरफ देखा भी नहीं। तब बादशाह ने एक लाखका तोड़ा उनके सामने

रखवा दिया। उन्होंने सोचा कि शायद रुपयों के प्रलोभन में आकर स्वामीजी फेर में आ जावेंगे परन्तु वे न कुछ आशीर्वाद दिये और न रुपयों को तरफ देखा ही।

बादशाहको स्वामीजी की ऐसी निष्ठुरता सहन न हो सकी और वे झल्ला कर बोले—"अरे ऐसे अज्ञानियों से माथापच्ची करना मूर्खता है। यह तो कोई अज्ञानी है, जो मनुष्य होकर भी पशुवत ब्योहार करता है।" बादशाह रुपयों की थैली उठवाकर बीरबलके घर भेजवा दिये। उनका कस्द था कि दिये दानको फिर वापस नहीं लेते थे। वे सबभाँतिसे हारकर अपने महल को चले गये। दर्बार उठने के पश्चात् फिर जब बादशाह और बीरबल का एकान्त में समागम हुआ तो बादशाह ने स्वामी के पास जाने से लेकर लौटने तक का सारा समाचार कह सुनाया। अन्त में बादशाह ने कहा-"अच्छा बीरबल! यदि किसी को मूर्ख का सामना करना पड़े तो उस समय क्या करना चाहिये।" बीरबल ने तत्काल उत्तर दिया-" पृथिवी नाथ! एकदम चुप रह जाना चाहिये।"

बादशाह को उल्टी तोहमत लगी। पहले उनका विचार था-"इस प्रकार समझा कर बीरबल के गुरु का मूर्ख होना साबित करूँगा। लेकिन उनकी उस आशा पर एकदम पानी फिर गया। बीरबल ने उन्हें ही मूर्ख बना दिया। बादशाहने कहा— "सन्यासीको मैंने इतनी दौलत देकर बहुतेरा चाहाकि उससे कुछ वार्तालापकरूँ, परन्तु उसने धनका कुछ भी लालच नहीं किया बल्कि उल्टे मुझको ही मूर्ख बना चुप रह गया। आज से कस्द करता हूँ कि अब भविष्यमें जब कभी किसी महात्मा से मिलने

जाऊँगा तो उससे मुलायमियत का व्योहार करूँगा।" बाद-शाह को अपनी उच्छृंखलता पर बड़ा दुःख उत्पन्न हुआ और अपनी तरफ से बीरबलको उसके गुरुसे क्षमाप्रार्थी होनेके लिये भेजा। यह तो बीरबलकी मनचाही बात थी। वह उसी क्षण हनुमान जी के मन्दिर में जा पहुँचा। सूर्यास्त का समय था और सब लोग वहाँ से चले गये थे। बीरबल लकड़हारे को अपने घर लिवा ले गया और उसकी बहुत प्रशंसा कर बोला—"सावधान! यह बात कहीं प्रगट न करना, नहीं तो जान के लाले पड़ जायँगे। उसे एक सौ रुपये अपनी तरफ से और देकर बिदा किया। लकड़हारे ने इतना रुपया कभी नहीं देखा था। वह बीरबल के सामने उस बात को आजन्म गुप्त रखने की प्रतिज्ञा कर खुशी २ अपने घर चला गया।

बादशाह का नाखून

किसी देशके बादशाहका लड़ाईमें पैरका अँगूठा कट गया था। उस बादशाह के पास बहुतेरे हकीम इसी कामके लिये नियुक्त किये गये थे कि जब कोई लड़ाई में आहत होता तो हकीम लोग उसका इलाज किया करते थे। हकीमों ने बादशाह के अँगूठे पर फिर से मांस आ जाने का बहुतेरा प्रयास किया जिससे मांस तो बढ़ आया परन्तु नाखून नहीं उगा। इसलिये बादशाह हकीमों पर चिढ़कर उन्हें कैदकर लिया और विचारोंको जेलमें बन्द रहकर कैदकी यातना भुगतनी पड़ रही थी। बाद-शाह इतना करके भी सन्तुष्ट नहीं हुआ। उसने बहुतेरे हकीमों को

बारी २ से बुलवा कर अपने नाखून के जमने का इलाज पूछा परन्तु जब वे निरुत्तर रह जाते, तब उन्हें तुरत जेल का हवा खाने के लिये भेज देता।"

बादशाह की इस निष्ठुरता का समाचार क्रमशः दूर दूर देशों में फैल गया। विचारे वैद्य हकीमों को बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई। कितनों ने तो इस पेशे को त्याग कर दूसरा पेशा अख्तियार कर लिया। बहुतेरों ने जंगल पहाड़ों में छिपकर अपनी आत्म रक्षा की। विचारे रोगी चिकित्सकों के अभाव में तड़प तड़पकर मरने लगे। यह घटना क्रमशः हिन्दुस्तान के वैद्यों ने भी सुनी। वे भी डरे और चाहते थे कि इस पेशे को त्यागकर आजीविका उपार्जन का कोई दूसरा मार्ग निकालें। इसी बीच यह बात फूटते २ अकबर बादशाह के कानों तक पहुँची। बादशाह को ऐसे अत्याचारों को सुनकर बड़ा कष्ट हुआ और वे अपनी सभा बुलवा कर लोगों से दीन प्रजाकी रक्षा का उपाय पूछे—

बीरबल बोला—"पृथिवीनाथ! यदि मैं किसी प्रकार बादशाह तक जा पहुँचूँ तो कोई न कोई युक्ति लड़ाकर सब कैदियों को मुक्त करा दूँ।" बादशाह ने इस काम को करने के लिये बीरबल को एक मास की मुहलत दी। बीरबल वैद्य का सा रूप बनाकर उस शहर में जा पहुँचा और गरीबों की मुफ्त दवा करने लगा। धीरे२ वैद्यगी का सब सामान भी संग्रह कर लिया। इसकी दवा से बहुतेरे रोगी आरोग्य हो गये। जिस कारण इसका यश नगरमें बिजली की तरह फैलने लगा। शहर के कितने रईसों ने बीरबलको परोक्षमें समझाया—"इस नगर

को छोड़कर बाहर चले जावो, नहीं तो बादशाह आपको भी कैदकर मरवा डालेगा। वेगुनाह जान गँवाने से क्या लाभ।" परन्तु बीरबल ने उनकी बातों पर कान नहीं किया। वह बराबर अपना काम दत्तचित्त होकर करता ही रहा। क्रमशः यह बात धीरे २ बादशाह के कानों तक पहुँची। वह तो बराबर ऐसे हकीमों की फिराक में पड़ा ही रहता था। इसलिए दूसरे ही दिन अपना सिपाही भेजकर बीरबलको अपनी सभा में बुलवा कर बोला–"हकीम जी! मैंने आपका बड़ा नाम सुना है, यदि आप मेरा भी कुछ भला करें तो मैं आपका बड़ा उपकार मानूँगा। मेरे अँगूठे का नख लड़ाई में कट कर गिर गया है। मैंने उसको फिर से उगाने के लिये बहुतेरे हकीम और वैद्यों की दवाएँ की, पर कोई वैद्य आकृतकार्य नहीं हुए। यदि आपकी औषधि से लाभ होगा तो मैं सदैव आपका गुणगान करूँगा।

बीरबल बोला–"बेशक मैं आपका इलाज करूँगा, मुझे इस रोग की दवा मालूम है। उसके लगाने से पाँच दिनों के अन्तर्गत आपके नख फिर से उग आयेंगे। मेरे गुरु का इस दवा पर बड़ा भरोसा है। उन्होंने मुझसे बतलाया था कि यह दवा कभी व्यर्थ नहीं जा सकती। आप मेहरबानी करके मेरे बतलाने के अनुसार दवावों का संग्रह करा दीजिये। बादशाह प्रसन्न होकर बोला–"हकीमजी! मुझे अब तक बहुतेरे हकीमों से पाला पड़ चुका है; परन्तु आपसा अपनी दवा में दृढ़ता रखने वाला एक भी न मिला।" बीरबल बोला–"यदि परमात्मा सहायक रहा तो मैं आपसे निश्चयपूर्वक कहता हूँ कि

तीन दिन में फिर आपके नख पहले के समान उग आवेंगे। हाँ साथ ही इसके एक बात और है, मेरी दवा के नुसखे कुछ ऐसे आसान नहीं हैं, उनके एकत्रित करने में बड़ी कठिनता होगी।

बादशाह बोला—"कोई कठिनता नहीं है; क्या मैं इतना बड़ा बादशाह होकर दवाओं को संग्रह न कर सकूँगा?" बीरबल ने कहा—"चाहे जो हो; संग्रह करना आपका काम है। मैं तो ऐसा कहता भी नहीं हूँ कि आप उसे संग्रह नहीं कर सकेंगे। परमात्मा की कृपा से सब कुछ हो सकता है। केवल आपको एक शर्त लिखनी पड़ेगी कि अगर एक मास के अन्तर्गत आप दवावों का संग्रह न कर सकेंगे तो फिर आपका मुझपर कोई दावा नहीं रह जायगा और आपके यहाँ जितने हकीम और वैद्य कैदी हैं सबको छोड़ देना पड़ेगा। हाँ मैं आपको यकीन दिलाता हूँ कि जब कभी आप मेरी दवा मँगवा देंगे मैं बिला उज्र आपकी खिदमत में हाजिर होऊँगा।"

बादशाह ने अपने मन में अनुमान किया—"यह हकीम पहले पहल इस नगर में आया है इसलिये इसको मेरे खजाने का ज्ञान नहीं है। समझता है कि इतना द्रव्य बादशाह न खर्च कर सकेंगे कि जिससे दवा खरीदी जा सके। भला ऐसी वह कौनसी दवा होगी कि जिसे मैं न खरीद सकूँगा?" वह अपने मन में खूब संकल्प विकल्प कर अपने को दृढ़ बना कर बीरबल के कथनानुसार प्रतिज्ञा पत्र लिख दिया और फिर हकीम से दवा का नाम बतलाने की प्रेरणा की। बीरबल को भीतर २ बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने जान लिया कि अब निरपराध हकीम और वैद्यों के मुक्त होने का समय नजदीक

आ गया है, हरि इच्छा। प्रगट में बादशाह का यह शेर पढ़कर सुनाया—

"आना नहीं मुश्किल है कुछ नाखून का।
फूल गर गूलर के हों वा रोम हो भल्लूक का॥"

उसके उपरोक्त शेर को सुनकर बादशाह अपने दीवान को दोनों वस्तुओं को यथाशीघ्र मँगवाने की आज्ञा दी। दीवान अपने निमक खाये भर परिश्रम करके थक गया; परन्तु उसे सफलता न मिली। उधर एक महीने की शर्त भी पूज गई। बादशाह को लाचार होकर सब कैदी वैद्य और हकीमों को जेलसे मुक्त कर देना पड़ा। बादशाह ने कैद से छूटे हकीम वैद्यों को बुलवाकर उपरोक्त दवाका गुण पूछा—"बीरबल उन्हें पहलेही से सावधान कर चुका था इसलिये वैद्यों और हकीमों ने बीरबल की दवा की बड़ी तारीफ की। बादशाह को कहीं से बीरबल का छिद्रान्वेषण करने की जगह न मिली। अतएव वह उसे एक उत्तम कोटि का हकीम समझकर उस पर रुष्ट नहीं हुआ। बिचारे हकीम कैद से छूटकर उसे बहुत दुआ दिये और सभों ने आपस में सहयोग कर अपने प्राणरक्षक को एक अच्छी रकम भेट दीं। बीरबल वहाँ से चलकर कई दिनों के पश्चात दिल्ली पहुँचा और बादशाह के सामने वहाँ का आद्योपान्त समाचार कहकर सुनाया, बादशाह ने बीरबल के बुद्धिमानी की बड़ी प्रशंसा की ओर अन्य दरबारी भी सब तफर से वाह वाह करने लगे।

योगी का भेष

एक दिन बीरबल के स्पष्ट भाषण से बादशाह बहुत क्रुद्ध हो गये जिसकारण बीरबल गुप्त रूप से परदेश चला गया। वहाँ जाकर उसने वहाँ के लोगों पर अपना ऐसा प्रभाव जमाया कि उस नगर के लोग उसके सेवक होगये। एक तरफ सबका प्रेम और दूसरी तरफ बादशाह की नाराजगी को देख-कर बीरबल वहीं वर्षों गुप्त वास करता रहा। इधर बादशाह की बीरबल के विना दिनोंदिन बेचैनी बढ़ने लगी। वे बीरबल की तलाश में सब तरफ अपने दूतों को भेजे, परन्तु बीरबल का किसीसे सच्चा समाचार नहीं मिला। उधर जब बीरबल को बादशाह के बेचैनी का समाचार मिला तो वह बादशाह से मिलने के लिये बहुत उत्सुक हुआ और योगी का वेष धारण कर स्वयं दिल्ली पहुँचा। नगर से बाहर एक मंदिर में आसन मार कर भजन भाव करने लगा। यह हनुमानजी का प्रसिद्ध मंदिर था, वहाँ नित्य सैकड़ों दर्शनार्थी आया करते थे। उनकी दृष्टि बराबर बीरबल पर पड़ती, परन्तु बीरबल किसी से कुछ बोलता नहीं था। वह चुपचाप आसनमार ईश्वर का गुण गान करता रहा। उसकी ईश्वर में ऐसी निष्ठा देख सबका ध्यान उस योगी के तरफ आकृष्ट हो गया और वे आते जाते बीरबल को दण्ड प्रणाम करने लगे।

बीरबल तो नगर के बहुतेरे गण्यमानों के नाम से परिचित ही था इसलिये प्रसंग चलने पर बड़ी सरलता से उनका नाम ले लेकर सम्बोधन करता, इससे लोगों पर उसके सिद्धताई

था। दूसरे वे बीरबल के रहते हिन्दू धर्म के प्रतिकूल कोई काम भी नहीं कर सकते थे जिस कारण वे भीतर भीतर बीरबल से बहुत द्वेष रखते थे। एक दिन मुसलमानों ने गुट बाँधकर बादशाह का बीरबल से अविश्वास कराने का प्रण किया। वे झूठा झूठा फरेब रचकर दावा दायर करने लगे, परन्तु बीरबल अपने बुद्धि और विचार के बल से उनकी किल्ली लगने नहीं देता था। ऐसा सोच समझकर न्याय करता कि मुसलमान लोग दाँतों तले अँगुली दाबकर रह जाते। बादशाह को मुसलमानों की ऐसी अनीति बहुत खलती थी, परन्तु फिर भी उनको छेड़ता नहीं था। एक दिन उसके मन में यह बात आई कि इन सब फसादों का एकमात्र कारण बीरबल का हिन्दू होना ही है, यदि वह किसी प्रकार समझा बुझाकर मुसलमान बना लिया जावे तो फिर उससे मुसलमानों की बगावत मिट जावे।

ऐसा निश्चय कर बादशाह ने बीरबल को मुसलमान बनाने की एक सरल युक्ति ढूढ़ निकाली। वह जब महल में भोजन करने जाता।तो बीरबल को भी भोजन करने के लिये आग्रह कर्ता, परन्तु बीरबल कोई न कोई युक्ति लड़ाकर उसे टाल देता था। इस प्रकार बादशाह को आग्रह करते और बीरबल को टालते कई महीने व्यतीत हो गये। न बीरबल उनके साथ भोजन करने जाता और न बादशाह की मंशा बर आती। एक दिन बीरबल अपने कामों में दत्तचित्त होकर लगा हुआ था इसी बीच बादशाह ने कहा—"बीरबल कल दोपहर में यहीं भोजन करना।" बीरबल ने सपर बिना विचार किये ही कामों की विशेषता के कारण

हामी भर ली। वह उत्तर देने में चूक गया। बीरबल में इस बात की बड़ी विशेषता थी कि वह भरसक अपनी बातों को निभाने की कोशिश करता था। इस बात को बादशाह भी भलीभाँति जानते थे। "बीरबल ने मेरा निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।" इस बात को सोचकर बादशाह को बड़ी प्रसन्नता हुई। वे अपने बड़े २ मुसलमान दरबारियों को इसकी वधाई भेज दी। वे मुसलमान दरबारी भी ऐसा कह २ कर फूले नहीं समाते थे कि कल बीरबल मुसलमानी मजहब स्वीकार करेगा। इससे बढ़कर उन मुसलमान दरबारियों को और कौनसी शुभ सूचना हो सकती थी।

दो घण्टे की कड़ी परिश्रम के पश्चात् बीरबल अपने कामों से अवकाश पाकर वही लेट गया। उसी समय उसके साथ का एक हिन्दू कर्मचारी बोला—"दीवान जी! आज आपने बिना विचार किये ही बादशाह के सामने ऐसी कठिन प्रतिज्ञा कैसे कर ली।" अब बीरबल का होश ठिकाने आया, उसके आँखोंके सामने अन्धेरा छा गया। मन ही मन विचार करने लगा—"तो क्या कल मुझे मुसलमान बनना पड़ेगा? क्या मेरी इतनी दिनोंकी सब कीर्तियोंके विलीन होनेका समय आ गया? मैं अपने जात बिरादरी के लोगों की गालियाँ और तानाजनी को कैसे सहन कर सकूँगा। बादशाह के साथ भोजन कर लेने के पश्चात् हिन्दू जनता को फिर मैं अपना कौनसा मुँह दिखलाऊँगा।" ऐसी ही ऐसी अनेकों कल्पनाएँ एक साथ हो उत्पन्न होकर बीरबल को हतबुद्धि बना दीं और उसका दिमाग ऐसा व्यथित हो गया कि फिर काम

करने का उसे साहस न हुआ। घर पहुँच कर भी उसका मन चल ही रहा। इस चिन्ता के गहरे आघात से उसे शामको क्षुधा भी न लगी और न रात्रि में खूँखार निद्रा ही आई। एकदम अचेतन अवस्था में ही तमाम रात व्यतीत हो गई। मारे लज्जा के अपने घर वालों से भी कुछ कहते नहीं बना।

दूसरे दिन सबेरा होते ही बादशाह बीरबल के जेवनार की तय्यारी कराने लगे। भिन्न २ प्रकार के जेवनार तय्यार कराये गये। इस खुशहाली में नगर के बहुतेरे अमीर उमराव मुसलमान आमंत्रित किये गये। जब जेवनार का समय हो गया और अन्य मेजमान लोग एकत्रित हुए तो बादशाह ने अपने एक कर्मचारी द्वारा बीरबल को बुलवा भेजा। खाद्य पदार्थ भलीभाँति सजाकर सोने और चाँदी के बासनों में परसे गये और सब अमीर उमराव यथास्थान बैठ गये। उधर जब बादशाह का दूत बीरबल के पास पहुँचा तो उसका मुख मलीन हो गया। वह अपने दरबारी कपड़े पहन कर उस दूतके साथ हो लिया। रास्ते में वह बराबर अगल बगल के मार्ग की भूमि का संशोधन करता हुआ चलता था। दैवात् उसके मन में एक युक्ति अचानक समा गई। वह एक सुनार को सूअर की कूँची से आभूषणों को साफ करते हुए देखा। वह तुरत सुनार के पास जा पहुँचा और आग्रह करके उससे सूअर के बाल की कूँची मँगनी माँग ली। महल में पहुँच कर बीरबल ने देखा कि सब लोग यथास्थान बैठकर केवल उसकी ही प्रतीक्षा कर रहे हैं।

बादशाह बड़े प्रसन्न दिखलाई पड़ते थे। आज उन्होंने

बीरबल का और दिनों से अधिक सत्कार किया। बड़े २ अमीर मुसलमानों ने भी उठ२ कर बीरबल का स्वागत किया। मारे खुशी के बादशाह ने बीरबल को अपनी बगल में बैठने का प्रबंध किया। जब यह सब हो चुका तो बीरबल विनम्रता पूर्वक बोला-"पृथिवीनाथ! मैं तो भोजन करने आया ही हूँ; परन्तु आपसे थोड़ी आग्रह है। यदि मुझे अपने साम्प्रदायिक नियम के अनुसार भोजन करने को अनुमति दी जावे तो प्रति उत्तम हो।"

बादशाह ने कहा-"अच्छी बात है, तुम अपने सम्प्रदाय के नियमानुसार ही भोजन करो।" बीरबल बोला-"तो इन सब थालियों पर थोड़ा २ पानी छिड़कना पड़ेगा। यदि मैं ऐसा करूँ और कोई नाराज हो तब क्या करना होगा। आप पहले ही से इसपर विचार कर लीजिये।

बादशाह बोले-"तुम अपने सम्प्रदाय की रस्म पूरी करके भोजन करो। इसमें हम सबों को कोई आपत्ति न होगी।" फिर बादशाह ने अपने अन्य मुसलमान मेजमानों की तरफ दृष्टि फेर कर देखा, सबों ने अपनी गर्दन हिलाकर बादशाह का फर्मान स्वीकार किया। तब बीरबल सबको वाक्यबद्ध करके मस्त हो गया और उसकी साम्प्रदायिक प्रथा शुरू हुई। एक कटोरीमें पानी भरकर उसी सूअर के बार की कूँची को उसमें डुबा २ कर खाद्य पदार्थ से सुसज्जित थालियों पर छिड़कने लगा। सब थालियों पर छींटे डाल चुकने के पश्चात् बीरबल ने बादशाह की थालीपर भी थोड़ा सा पानी छिड़क दिया। एक अमीर जो बाद शाहके पास बैठा हुआ बीरबलका सारा चरित्र देख रहा था बोला "ओफ! यह तो बड़ा कठिन हुआ, यह कूची तो बाल की है।"

सब मेजमान भड़क गये और वे अपने आगे की थाली जस की तस यथास्थान छोड़ कर आप अलग जा खड़े हुए। सब लोग बीरबल को झिड़कियाँ देने लगे। यहाँ तक कि क्रोध के अधिक भड़कने पर बीरबल को धक्के दिलवाकर वहाँ से बाहर निकलवा दिये। पर इससे अधिक करने की किसी में ताब नहीं थी। बादशाह तो पहले ही से बचन हार चुके थे इसलिये वह भी कुछ न बोले बल्कि अपने मन को भीतर ही भीतर मसोस कर रह गये।

बीरबल के आनन्द की सीमा न रही, उसने शास्त्रों में पढ़ा था कि मनुष्य अपना प्राण देकर भी धर्म बचावे। बाहर बैठे हुए हिन्दू दरबारी देवता पित्तर मना रहे थे। बीरबल को इतना शीघ्र लौटकर बाहर आते हुए देखकर उनको कुछ धैर्य्य हुआ। बीरबल गुप्तरूप से महल की सारी व्यवस्था सुनाकर अपने घर चला गया और स्नान ध्यानसे निश्चिन्त हो भोजन किया। बादशाह भड़के हुए मुसलमानों को समझा बुझा कर शान्त किये और परसे पकवानों को तुरत फेंकवा दिया। जब फिर दूसरा बनकर तय्यार हुआ तो अपने मेजमानों को खिला-कर आप भी खाना खाये। बस उसी दिन से बादशाह को शिक्षा मिल गई और फिर बीरबल को कभी भोजन का निमंत्रण नहीं दिये।

एक कृपिण पुरुष

दिल्ली नगर में एक महा कंजूस धनवान रहता था।

एक दिन एक कवि अपनी कविता बनाकर उसके पास ले गया। कवि का अभिप्राय था–"उस धनाढ्य को प्रसन्न कर। उससे कुछ धन उपार्जन करना।" परन्तु उसकी सूरत देखते ही सूमड़े का मन पल्टा खा गया। उसने अपने मन में कहा–"यह कवि मुझे अपनी कविता सुनाकर मुझसे धन ठगने आया है, परन्तु इसने मुझे पहचानने में बड़ी भूल की है। अच्छी बात है जिस तरह यह कविता से मुझे प्रसन्न करना चाहता है उसी भाँति मैं भी अपनी मीठी २ बातों से इसे प्रसन्न कर कोरा लौटाऊँगा।" ऐसी युक्ति सोचकर वह धनाढ्य बोला–"कविवर! आपकी कविता तो बड़ी ही उत्कृष्ट है। इसका शब्दालंकार और अनुप्रास का जमक बड़ा ही उत्तम है। मैं अपनी जबान से अधिक क्या कहूँ इसकी जहाँतक विशेषता दिखलाई जाय सब थोड़ी है। कृपाकर आप दूसरे दिन फिर मुझसे मिलियेगा, मैं आपको प्रसन्न कर दूँगा।" उसके ऐसे प्रशंसनीय वाक्यों को सुनकर कवि फूला न समाया और तत्क्षण वहाँ से बिदा हुआ।

दूसरे दिन ठीक उसी समय कवि धनाढ्य के पास गया। बात छिपाने के लिये धनाढ्य उसे देखकर अपनी गरदन टेढ़ी कर ली, वह घंटों उससे पुरस्कार पाने की प्रतीक्षा में बैठा रहा अन्त में कोई अर्थ न निकलते देख सेठ के आगे जा खड़ा हुआ। सेठ ने पूछा–"तुम कहाँ के रहने वाले हो और मेरे यहाँ क्यों आये हो?" सेठने इस रुखाई से बात किया मानों उसकी उस कवि से कभी का परिचय ही नहीं था। विचारा कवि बहुत चकराया और मन ही मन देवता पित्तर मनाकर

आयोजन नहीं किया गया था। और लोग तो अपने घरसे भोजन करके आये ही थे, विचारा कंजूस ही भूखा तड़प रहा था। बहुत देरतक इस आसा में था कि अब भोजनकी बारी आती है। शायद भोजन की तय्यारी में कुछ कमी पड़ गई हो, जिससे इतना विलम्ब हो रहा है। जो कुछ था सो थाही। धीरे २ दिन ढलने लगा; फिर भी किसी ने कंजूसकी सुधि न ली। तब वह बोला-"क्यों भाई, अब भोजन में कितनी देर है, शीघ्रता करो।"

कवि का मित्र बोला-"कैसी शीघ्रता श्रीमानजी?" सूमड़े ने कहा-"क्या आपने मुझे आज के लिये निमंत्रण नहीं दिया था क्या?" तबतक बीरबल बोल उठा-"सो तो आपने ठीक कहा है, परन्तु यह बात केवल आपको प्रसन्न करने के लिये कही गई थी नहीं तो भला इतनी देर क्योंकर होती। हम लोग तो कभी के भोजन कर चुके हैं।" ऐसी कोरी चापलूसी से सूमड़े का मुख लाल हो गया और वह अपनी बड़ी बड़ी आँखें चढ़ाकर बोला-"तुम लोग बड़े उच्छृङ्खल जान पड़ते हो जो किसी को निमंत्रण देकर बुलाना और फिर उसकी हँसी करना?" इसी प्रकार की अनेक बातें कह कहकर वह कंजूस कमर कसकर लड़ने पर आमादा हो गया।"

बीरबल ने देखा कि अब बात बहुत आगे बढ़ जायगी इस लिये बीच बिचाव के अभिप्राय से बोला-"आप तो एक उच्च कोटि के रईस हैं, फिर आपको यह विचार पहले ही आना चाहिये था। क्या आपने इस कवि को ठट्टे बाजी में नहीं टाला था, क्या आपके उस मनोरंजन से इसको कष्ट नहीं हुआ था?"

सूमड़े ने कहा—"ठीक ठीक बतलावो वह कौन सा कवि है और आप कौन हैं?" बीरबल बोला—"मैं बीरबल हूँ, अब भलाई की बात यह है कि इसी समय इस कबि को राजी करो; नहीं तो कानूनन तुम्हें दण्ड दिया जायगा।" बिचारा सूमड़ा बीरबल के नाम से डर गया और तुरत अपने कहे के अनुसार रुपये देकर कवि को प्रसन्न कर दिया।" किसी ने ठीक कहा है। "सीधे अँगुली घी नहीं निकलता।"

लकीर छोटी होगई

एक दिन बादशाह ने बीरबल को छकाने के विचार से एक भूल भुलैया की चाल निकाली। वह एक लकीर जमीन पर खींचकर बीरबल से बोले—"बीरबल! इस लकीर को बिना काटे छाँटे छोटी कर दो। बीरबल तो पूरा गुरु घण्टाल था ही, उस लकीर को न घटाया और न बढ़ाया, बल्कि उसके पास ही अपनी उँगली से एक दूसरी लकीर उससे भी बड़ी खींचकर बोला—"लीजिये पृथिवीनाथ! अब आपकी लकीर इससे भी छोटी हो गई।" बादशाह बीरबल की बुद्धि से हार मान गया।

ब्राह्मणी पर मांसखोरी का अभियोग।

दिल्ली नगर में एक नौयोवना और स्वरूपवती ब्राह्मणी रहती थी। यह अपने पति परायणता के कारण सारे नगर में विख्यात हो रही थी। एक पठान नीचता वश गुप्तरूप से

इसके पीछे पड़ा हुआ था। इसको अपने वश में लाने के लिये उस नीचने बहुतेरा प्रयास किया, परन्तु फिर भी उसे सफलता न मिली। ब्राह्मणी के तेज के आगे उसका उद्योग गिरता ही गया। तब उसने दण्ड देकर उसको कावू में लाने की युक्ति निकाली। एक दिन जब कि वह सुन्दरी अपने वस्त्रों को पछारने के लिये नदी तट पर गई थी। यह भी मौका देखकर वहाँ जा पहुँचा। वहाँ और किसी को न देखकर गुप्तरूप से उसके तटपर पड़े वस्त्रों में थोड़ा सा मांस बाँध एक चौकीदार को घूस देकर झूठा मामला खड़ा किया। और वह चौकीदार को सिखला पढ़ाकर भेजा कि वह उस सुशीला पर एक पठान के यहाँ से मांस खरीदने का अभियोग लगाकर उसे गिरफ्तार करले। जब वह स्त्री अपने कपड़े पछाड़कर बाकी सूखे कपड़ों को उठाया तो उसमें मांस के टुकड़े बँधे हुए देखकर आश्चर्यचकित हो गई। तत्क्षण उस चौकीदार ने उसे जाकर गिरफ्ता कर लिया और बोला–"तू मांस भक्षण करती है इसकारण तुझे बादशाह के पास चलना पड़ेगा।" वह एक तरफ तो तुम्हारी धर्मरक्षा का इतना प्रबन्ध करते हैं दूसरी तरफ तूँ गुप्तरीति से मांस भक्षण करती है और फिर धोखा देकर अपने जात बिरादरी के लोगों को ठगती फिरती है।

सिपाही को ऐसा अपवाद लगाते देखकर विचारी अबला किंकर्तव्य विमूढ़सी होकर चुप रह गई। इसी बीच वह दुष्ट पठान जो छिपकर सब देख रहा था चौकीदार के पास उस स्त्री का पक्षपाती बनकर आया और उस से उसको

छोड़ देने का अनुनय विनय करने लगा। वह बोला—"चौकीदार साहब! आप इस स्त्री को छोड़ दीजिये, इसने यह मांस मुझसे खरीदा था। यदि बादशाह को यह बात मालूम हो जायगी तो वह इसके बदले मुझे दंड देंगे। आप जानते ही हैं कि मैं एक कुटुम्बी आदमी हूँ। मेरे कैद हो जाने से मेरे बाल बच्चे भूखों मरने लग जायँगे। इसलिये आप मेरी दीनता की तरफ ध्यान देकर इस मामले को यहीं पर दबा दीजिये। वर्ना बादशाह मुझे इस मामले में अपराधी पाकर मुझे फाँसी दिला देंगे।"

चौकीदार उसकी एक बात भी न सुनी, वह तो पहले ही से सिखला पढ़ाकर ठीक किया गया था। दोनों को पकड़ कर बादशाह के पास ले गया और बोला—"पृथिवीनाथ! आज यह स्त्री इस पठान से मांस खरीद कर घरवालों से छिपा नदी के किनारे बैठकर भक्षण कर रही थी। इसका दोनों चरित्र मैंने अपनी आँखों देखा है। इसलिये हुजूर के पास पकड़ लाया हूँ कि इसको उचित दंड दिया जाय।"

बादशाह को चौकीदार की बातें सुनकर बड़ा रंज हुआ और उसके नाते गोते के लोगों को बुलवाकर उस स्त्री की चाल चलन के संबन्ध में पूछताछ की। परन्तु उनकी जबानी उस स्त्री का ऐसा दूषित होना सिद्ध न हुआ। दर्बार का समय था। धीरे २ दर्बारी लोग भी आने लगे थे। इस बात को सुनकर सभी लोग चकित होगये। किसी को उस स्त्री का ऐसा दूषित स्वभाव होना संभव नहीं जान पड़ता था। परन्तु कोई उसकी शुद्धता का भी कोई निश्चित प्रमाण देनेको प्रस्तुत न था।

आखिरकार बादशाह ने उसके ब्राह्मण पति को बुलवा कर बोला—"जैसा की यह चौकीदार बयान करता है उस हिसाब से यह स्त्री भ्रष्टा हो चुकी है। अतएव इसे इस पठान को दे देना चाहिये और पठान को यह सजा दी जाती है कि वह इसके बदले सात सौ रुपये इसके विवाहिता पति को दंड स्वरूप देवे।"

बादशाह के ऐसे न्याव को सुनकर बिचारी पतिपरायणा ब्राह्मणी सूखकर काँटा हो गई। फिर अधिक क्या लिखें पाठक एक सती साध्वी का ऐसा अपमान होने पर कैसी दशा होगी, स्वयं अनुमान कर सकते हैं। एकदम न्याय का गला घोंटा जाने लगा। दयालू ईश्वर की सत्ता स्थिर न रह सकी। सुदर्शन चक्रधारी की प्रेरणा से कई ब्राह्मण इस बात की फरियाद लेकर बीरबलके पास गये। बीरबल को अन्याय सहन नहीं होता था, इसी कारण वह अपने पर जोखिम उठाकर भी अन्याय को रोकता था। वह अपना घरलू काम उसी क्षण बन्दकर दिया और कपड़े पहन उन ब्राह्मणों को साथ लेकर दरबार में हाजिर हुआ।

बीरबल ने बारी बारी से पठान, चौकीदार तथा उस ब्राह्मणी का बयान लिया, फिर स्त्री से यों पूछा—"भगने! घरसें निकलते वक्त कुछ खाया था या योहीं नदी के तटपर कपड़े पछाड़ने के लिये चली आई थी। इसका प्रमाण कोई दे सकती हो तो बतलावो।" सुशीला ने उत्तर दिया—"मेरी सासने मुझे दूध और रोटी दिया था बस उसीको खाकर घर से निकली थी।" बीरबल ने कहा—"बहुत अच्छा थोड़ी देर एक जगह बैठकर तबतक विश्राम करो मैं इसकी जाँच कराऊँगा।"

बीरबल ने एक चपरासी को भेजकर एक विख्यात वैद्य को बुलवाया, जब वह हाज़िर हुआ तो बोला-"वैद्यजी! इस स्त्री को ऐसी दवा खिलावो जिससे इसे वमन हो जावे। वैद्य ने वमन होने की एक गोली खिलाई; जिसके खानेके थोड़ी देर बाद ही उस स्त्री का खूब वमन हुआ। वमन का भली-भाँति निरीक्षण करने पर उसमें दूध रोटी के अतिरिक्त मांस का एक टुकड़ा भी नहीं निकला। इस दृश्य को देखने के साथ ही सबको उस स्त्री की पवित्रता पर विश्वास होगया। झूठा दोषारोपण के अपराध में पठान और सिपाही दोनों ही दण्डित किये गये। स्त्री को उसके पति के हवाले किया गया। बीरबल की इस अनुपम चातुर्य्यता का लोगोंपर गहरा प्रभाव पड़ा और वे एक स्वर से बीरबल की प्रशंशा करने लगे।

खटिक और तेली

एक दिन दिल्ली नगर के एक खटिक और तेली के अन्तर-गत कुछ विवाद खड़ा हो गया और वे आपस की लड़ाई को लेकर न्याय कराने के अभिप्राय से बीरबल के पास पहुँचे। तब बीरबल बोला—"आप लोगों में कौन वादी है और कौन प्रतिवादी। तेली अपने को वादी बतलाता और खटिक अपने को प्रतिवादी। बीरबल ने कहा-"अच्छी बात है। तुम लोग अपना ठीक ठीक हाल बयान करो।" तेली ने कहा-"दीवान जी! मैं अपनी एक छोटी सी दूकान अमुक महल्ले में रखता हूँ, एक दिन जब कि मैं अपनी दूकान पर बैठा माल खरीद

फरोख्त कर रहा था, यह खटिक मेरी दूकान पर आकर मुझसे तेल माँगने लगा, मैंने इसके बार२ माँगने पर और कामों का हर्ज करके इसको तत्काल तेल दे दिया, दूसरे-दूसरे कामों का बहुत झंझट था, फिर मैं उन कामों में लिपट गया। जब कुछ देर बाद उन झंझटों से खाली हुआ तो क्या देखता हूँ कि पैसे की थैली गायब है। उतने समय के बीच इसके अतिरिक्त कोई दूसरा व्यक्ति मेरी दूकान पर नहीं आया था, जिस कारण मुझे इस खटिक पर सन्देह हुआ और तुरत इसके पास दौड़ा हुआ गया, थैली खटिक के हाथ में ही थी, जब मैंने उससे अपनी थैली माँगी तो बोला-"क्या तेरा दिमाग खराब हो गया है, जो इस प्रकार दूसरे का धन देखकर उसपर लोभ करता है। यह थैली मेरी है।" यही मेरा मामला है जो आपके सामने सच्चा सच्चा बयान किया है। ईश्वर मेरा शाक्षी है जो मैं एक बात भी झूठी कहे हूँ।" आपसे अनुरोध करता हूँ कि इसका न्याय कर आप मेरी थैली मुझे दिलवा दें।"

तब खटिक के बयान की बारी आई। वह बीरबल से बोला—"गरीबपरवर! आज मैं अपने विक्री के पैसेका मिजान लगा रहा था; जब कि यह तेली मेरी दूकान पर तेल लेकर आया। यह मेरा निकट पड़ोसी है, मैं बराबर इससे तेल खरीद करता हूँ। यह तेल देकर तुरत चला गया। जब कुछ देर बाद मैं पैसों का मीजान लगा चुका तो उन्हें गिनकर रखने के लिये थैली की तरफ देखा। थैली गायब हो गई थी। इसके अन्तर्गत यही तेली मेरी दूकान पर आया था। मुझे शक हो गया और दौड़कर इसे रास्तेही में पकड़

लिया। यह मुझे देखकर सिटपिटाने लगा और चाहता था कि चकमा देकर मुझे कोरा लौटा देवे। मैंने झपटकर इसके हाथ से पैसों की थैली छीन ली।" यही मामला है, मैंने अपना सारा बयान सही सही दिया है। अगर एक शब्द भी झूठा हो तो ईश्वर मुझे दंड दे। हजूर समर्थ हैं मेरा न्याय कर देवें।"

उन दोनोंका बयान सुनकर उस समय बीरबल उन्हें घर जाने की आज्ञा दी और बोला—"कल्ह फिर तुम लोग इसी समय हाजिर होना। न्याय हो जाने तक इस पैसे की थैली को मेरे पास छोड़ जावो। थैली वहीं छोड़कर वे दोनों अपने अपने घर गये। इधर बीरबल ने एक नई युक्ति सोचकर पैसों को गरम पानी में धुलवाया; उसको धुलवाने से यह अभिप्राय था कि यदि तेली के पैसे होंगे तो उसमें तेल लगा होगा और तेल गरम पानी पर उतरा जायगा; परन्तु ऐसा न हुआ वल्कि पैसों से और प्रकार की महक आने लगी। बीरबल को अब निश्चित हो गया कि वे पैसे तेली के नहीं हैं। वह प्रलोभन में आकर झूठा फरेब रचता है। इसका असली मालिक खटिक ही है।

दूसरे दिन जब वे उपस्थित हुए तो बीरबल ने उनके हाथ पर गीता की पुस्तक और गंगाजल रखकर कसम खिलवाया। परन्तु उसमें भी कोई न हटा तात्पर्य कि उन दोनों ने ही कसम खाली। तब बीरबल ने उस थैली को खटिक के हाथ में सपुर्द कर दी और तेली को धोखेबाजी के अपराध में उचित दंड दिया। तेली की खूब कोड़ों से मरम्मत होने के पश्चात बिदाई की आज्ञा मिली।

दौलत ड्योढ़ी पर हाजिर है

एक दिन बादशाह किसी कार्य्य में त्रुटि पड़ने के कारण अपने दौलत नामी पुराने सेवक पर नाराज होकर उसे नौकरी से पृथक कर दिये। विचारा सेवक अपनी बचत का कोई दूसरा उपाय न देखकर बीरबल के पास अपने छुटकारे के लिये गया। बीरबल उसका सारा समाचार सुनकर बोला—"तुम एक बार फिर महल में जाकर कहो कि दौलत ड्योढ़ी पर हाजिर है, हुक्म हो तो रहे वा जाय।"

सेवक ने वैसा ही किया। बादशाह ने उसे बुलवाकर धीरे से समझाया—"दौलत मेरे यहाँ हमेशा कायम रहे।" बादशाह की और उस पुराने नौकर की अर्थभरी बातों को समझ कर सब दरबारी हँसने लगे। बीरबल की युक्ति से विचारे वृद्ध सेवक की जीविका बनी रह गई।

तानसेन और बीरबल की बुद्धि-परीक्षा

अकबर बादशाह का दरबार नौरत्नों से विभूषित था। उनमें एक रत्न का नाम तानसेन भी था। ये जाति का मुसलमान और गान और वाद्यविद्या में बड़े पंडित थे। इनकी गानेकी विशेष कला देश देशान्तर में फैली हुई थी, दूर देश के राजे अकसर तानसेन के गाने को सुनने के लिये दिल्ली आते थे और उसका गान सुनकर लौट जाते थे। अपने राज्य में जाकर वे तानसेन की बड़ी प्रसंशा करते इसलिये तानसेन

पर दिल्ली के मुसलमानों का बड़ा अभिमान था। वे समझते थे कि तानसेन दिल्ली दरबार में सर्वश्रेष्ठ पुरुष है। परन्तु वीरबलको इससे भी बड़े पद पर देखकर उनको बड़ा क्षोभ उत्पन्न होता था। वे हमेशा बीरबल को गिराने की ताक में लगे रहते थे। यहाँ तक कि छिपे तौर से समय समय पर बादशाहके सामने तानसेन की प्रशंशा किया करते थे।

एक दिन दरबार के समय बादशाह बैठे हुये थे और बहुत से मुसलमान दरबारी उनसे बातें कर रहे थे। एक मुसलमान ने मौका देखकर तानसेन की बुद्धि विशेषता पर वार्ता छेड़ी। वह जब कभी तानसेन की बड़ाई करता तो वहाँ बीरबल का नाम अपनी जवान पर नहीं लाता था। उसकी बराबर की प्रशंसा सुनते सुनते बादशाह ऊब गये और मुसलमान दरबारियों का भीतरी भाव समझकर बोले—"मैं तुम लोगों के मुख से तानसेन की बारम्बार प्रशंसा सुना करता हूँ और मुमकिन है कि तुम्हारा कहना सत्य भी हो, परन्तु फिर भी वह बीरबल को बराबरी करने योग्य नहीं है।"

बादशाह के इस मार्मिक फटकार से मुसलमान दरबारियों को बड़ा कष्ट हुआ परन्तु वे दरबार के समय और कुछ न कहकर चुप रह गये। जब दरबार समाप्त हो गया तो वे संध्या समय एक सरदार के यहाँ एकत्रित हुए और आपस में अन्तरंग मीटिंग कर उस सरदारकी बैठक को तात्कालीन सामग्रियों से खूब विभूषित किया। बैठक के मध्य में बादशाह को बैठने के लिये एक सुवर्ण निर्मित सोनेका सिंहासन सजाकर रक्खा गया। तानसेन भी अपने वाद्य सामग्रियों के सहित पधारे तब

कई गण्यमान्य सरदार आपसमें मिलकर बादशाह के पास गये और आग्रह कर उन्हें अपने सरदार की बैठक में ले आये। उधर सरदार के कर्मचारियों ने बादशाह के आनेके पहले ही कमरे में दीपकों को सजाकर रख छोड़े थे। दीपकें तेल बत्ती से लैसकर विना जलाये ही रखी गई थीं। बादशाह के आने पर तान-सेन को दीपक राग गाने के आज्ञा दी गई। तानसेन के दीपक राग छेड़ते ही सारे दीपक आपसे आप जल गये और सर-दार की बैठक एकाएक प्रकाशित हो गई। 'गरमी का मौसम था उस दिन बड़ी गरमी बढ़ रही थी। तानसेन ने देखा कि गरमी की अधिकता से बादशाह बेचैन हो रहे हैं अतएव तुरत मलार गाने लगा, मलार गाते ही वृष्टि होने लगी और थोड़ी ही देर में सब गरमी शान्त हुई। ऐसी उपयुक्त वृष्टि से सब लोग बड़े हर्षित हुए।

इन घटित घटनाओं को देखकर बादशाह को बड़ा हर्ष हुआ। मुसलमान सर्दार तो अपना मतलब गाँठने के लिये ही यह समाज एकत्रित किये हुए थे। बादशाह को हर्षित देखकर मुमताज उद्दीन नामी सर्वश्रेष्ठ उमराव हाथ जोड़कर बोला—"पृथिवीनाथ! अब आपको तानसेन की बुद्धि विशेषता पर सन्देह करने का कोई कारण शेष नहीं रह गया होगा। आशा है कि आप आजसे तानसेन की बुद्धि को बीरबल की बुद्धि से श्रेष्ठ मान लेंगे और न्याय की मर्यादा कायम रखने के लिये तानसेन को बीरबल का पद प्रदान करेंगे।" कई दूसरे सरदारों ने भी पहले सर्दार की प्रार्थना का अनु-मोदन किया। सब सर्दारों की सम्मति समझ चुकने के

पश्चात् बादशाह बोले-"हाँ यह आप लोगों का कहना सत्य है कि तानसेन बहुत बड़ा विद्वान् है, परन्तु फिर भी वह बीरबल की समता नहीं कर सकता, यदि तुम लोगों को विश्वास नहीं है तो वह दिन नजदीक है जब कि मैं सारी बातें प्रत्यक्ष करके तुम्हें दिखला दूँगा।

कुछ दिनों तक बादशाह ने इस बात की चर्चा नहीं की जब उन्हें भलीभाँति विदित हो गया कि अब सर्दारों को बात भूल गई तो एक दिन ब्रह्मदेश के बादशाह के नाम एक पत्र लिखकर तानसेन और बीरबल को एक साथ भेजने का निश्चय किया। पत्रके भीतर लिखा हुआ था कि इस पत्र को ले जाने वाले इन दोनों आदमियों को तुरत शूली दिला देना। पश्चात् बादशाह ने बीरबल और तानसेन को बुलाया और कुछ आवश्यक कार्य्यका बहाना कर दोनों को पत्र देकर ब्रह्मदेश के राजा के पास भेज दिया। इनको भेजते समय बादशाह बोले-"देखो तानसेन, यह बड़ा गूढ़ काम है, यदि दूसरे को भेजूँ तो यह हल नहीं हो सकता। इसलिये बहुत समझ बूझकर तुम दोनों को भेज रहा हूँ अविलम्ब ब्रह्मदेश के महाराज के पास जाओ और जैसे हो सके इसको निपटा कर शीघ्र वापस लौट आओ।" उन्होंने "बहुत अच्छा" कहकर पत्र को ले लिया और घरपर पहुँच रास्ते के लिये खाने पीने का प्रबन्ध कर ब्रह्मदेश के लिये प्रस्थान किया।

बीरबल रास्ते में मनो मन अनुमान करता जा रहा था-"हो न हो इस काम के अन्दर कोई गूढ़ भेद छिपा हो, खैर देखा जायगा, अब तो थोड़े दिन पश्चात् वह सामने ही

आनेवाला है, नाहक मूड़ मारने से क्या लाभ। समय आने पर विवेक से काम लेना होगा।"

इधर तानसेन ने अपने मनमें अनुमान किया—"यह कोई बहुत कठिन काम होगा जो केवल बीरबल के किये नहीं हो सकता था इसलिये बादशाहने मुझको भी उसके साथ भेजा है। लो अच्छा ही हुआ भ्रमण का भ्रमण होगा और गायन सुनाकर राजा को प्रसन्न कर पारितोषिक अलगसे लूँगा।" ऐसा अनुमान कर वह मनमें फूला नहीं समाता था। बादशाह ने इनको सवारी के लिये तेज घोड़े दिये थे इसलिये थोड़े ही दिनों की यात्रा के पश्चात् ये ब्रह्मदेश की राजधानी में जा पहुँचे।

जिस समय ये ब्रह्मदेश के सरहद पर पहुँचे सूर्यास्त हो रहा था। कोई परिचय का भी नहीं था, लाचार होकर वह रात्रि नगर के बाहर ही टिककर बितानी पड़ी। ब्रह्मदेश जंगल और पहाड़ों से भरा पड़ा है। इनको वहाँ की आव हवा का कुछ भी ज्ञान न था अतएव बीरबल की अनुमति से उन दोनों ने बारी बारी दो दो घन्टे की सोने और जागने की ओसरी बनाया। जब बीरबल सोता तो तानसेन पहरे पर रहता और जब तानसेन सोता तो बीरबल पहरे का काम करता। बीरबल अभी प्रथम पहर के पहरे पर था कि इसी बीच वहाँ पर एक वृद्ध पुरुष आया और इनका ढंग देखते हुए इन्हें परदेशी समझ कर बोला—"आप लोग मुझे परदेशी से जान पड़ते हैं और यह स्थान जंगली है; यहाँ पर सिंह का आक्रमण हुआ करता है। अतएव रात्रि में तुम्हारा यहाँ निवास करना अच्छा न होगा। तुम

लोग चलकर मेरी झोपड़ी में विश्राम करो, सुबह होते ही अपने रास्ते चले जाना।"

बीरबल ने पहले तो बूढ़े के प्रस्ताव को अनमनस्क होकर टाल दिया, परन्तु उसके बारंबार आग्रह करते रहने पर दोनों अपने २ घोड़ों पर सवार होकर उसके साथ हो लिये। कुछ दूर चलकर बूढ़े का झोपड़ा मिला। वह घोड़ों को अपने बाड़े में बँधवा कर उन्हें झोपड़े में लिवा ले गया और उनके विश्राम के लिये दो पृथक् पृथक् स्थान दिखला कर आप भी अपनी चारपाई पर जा लेटा। सवेरा होते ही बीरबल वहाँसे प्रस्थान करने की तय्यारी करने लगा। इतने में वह बुड्ढा ठेगता २ आ पहुँचा और बीरबल से आग्रह पूर्वक बोला-"आप लोग न जाने मेरे किस पूर्व पुण्य से इस झोंपड़ी में आ गये हैं। रात्रि में आपके भोजनादि का कुछ प्रबन्ध नहीं हो सका जिस कारण मैं बड़ा शरमिन्दा हूँ, परन्तु अब आपको यहाँ से बिना भोजन किये जाना मुनासिब नहीं है, मुझ दीन की यह क्षुद्र सेवकाई आपको स्वीकार करना उचित और धर्मसंगत है।" बीरबल ने देखा कि एक तो हम लोग एक दिन के भूखे हैं दूसरे परदेश का मामला है। कब भोजन की व्यवस्था होगी और कब नहीं, इससे बेहतर है कि इस बुड्ढे वाली करके चलें। बुड्ढा बीरबल की स्वीकृति प्राप्त कर प्रसन्न हो गया और तुरत जंगली खाद्य सामग्रियों को लाकर उनको भोजन कराया। तब दोनों प्रसन्न प्रसन्न बुड्ढे से अनुमति लेकर नगर की तरफ अग्रसर हुए।

ब्रह्मदेश की राजधानी आवा नगरी बड़ी मनोरम थी। वहाँ

की सड़कें और उच्च अट्टालिकाओं की उपमा दिल्ली नगर से कहीं बढ़ चढ़ कर थी। राजा बड़ा दयालु साहसी और प्रजावत्सल था, ऐसे राजा के सुशासन में प्रजा बड़ी खुशहाल थी। क्या मजाल कि कोई सबल किसी निर्बल पर प्रहार करे, शेर बकरी एक घाट पानी पीते थे। विशेष कहना वाक्य चातुरी दिखलाना होगा। वहाँ हर तरह से राम राज्य था। राज्य वर्ग के कर्मचारी बड़े धर्मपरायण और ईमानदार थे। घूस खोरी कत्तई बन्द थी, सिफारिश करने वाला स्वयं दंडिए किया जाता था। ऐसी सुन्दर नगरी की सुन्दर व्यवस्था को देखते सुनते तानसेन और बीरबल चले जारहे थे। इनकी उत्तम २ पोशाकों को देखकर वहाँ के निवासी उन्हें उच्च बंशीय समझ कर उनका सब जगह स्वागत करते थे। वे राज सभा को पूछते हुए नगर में चले जा रहे थे कि इसी बीच चोबदार ने पूछा–"आप लोगों का यहाँ आना किस निमित्त हुआ है और आपका कहाँ से शुभ आगमन हुआ है।" बीरबल बोला–"हम दिल्ली के निवासी हैं। बादशाह का पत्र लेकर यहाँके राजा से मिलने आये हैं।" इनका आशय समझकर चोबदार इन्हें राजा सभा में ले गया। और ड्योढ़ी पर ठहरा कर आप राजा के पास जाकर इनके आने की सूचना दी। राजाज्ञा प्राप्तकर वह इन दोनों को महाराज के सन्निकट पहुँचा दिया। ये बड़े अदबसे सलाम कर महाराज की आज्ञा से वहीएक स्थान पर बैठ गये। जब महाराज राजकीय कामों को खतम करके निश्चित हुए तो इनके आनेका कारण पूछा। बीरबल कुछ उत्तर न देकर बादशाह का दिया हुआ पत्र महराज